राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान संपादक – पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि
[सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

• • •

ग्रन्थाङ्क २१

[राजस्थानी–हिन्दी साहित्य–श्रेणी]

बाँकीदासरी ख्यात

• • •

प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JAIPUR
जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

[राजस्थानी - हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

प्रकाशित ग्रन्थ

(१) कान्हड़दे प्रबन्ध – महाकवि पद्मनाभ।

(२) क्यामखां रासा – नवाब अलफखां (कविवर जान)।

(३) लावा रासा – चारण कविया गोपालदान।

(४) राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १।

(५) बांकीदासरी ख्यात – महाकवि बांकीदास।

प्रेस में

(१) उक्तिरत्नाकर – पं० साधुसुन्दर गणि।

(२) वसन्त विलास – अज्ञात कर्तृक।

(३) गोरा बादल पदमिणी चऊपई – कवि हेमरतन।

(४) मुंहता नैणसीरी ख्यात – मुंहता नैणसी।

(५) राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज – एस. आर. भंडारकर।

(६) सुजान संवत् – कवि उदयराम।

(७) चन्द्रवंशावली – मोतीराम।

(८) जुगल विलास – कवि पीथल।

(९) वीरवांण – ढाढ़ी बादर।

(१०) राजस्थानी दूहा-संग्रह।

(११) कविन्द्र कल्पलतिका – कवीन्द्राचार्य।

बाँकीदासरी ख्यात

सम्पादन-कर्ता
पं० नरोत्तमदासजी स्वामी एम ए
अध्यक्ष
हिन्दी-विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर

*

प्रकाशन-कर्ता
संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर
जयपुर (राजस्थान)

*

[प्रथमावृत्ति, प्रति सं० ७५०]

विक्रमाब्द २०१३ } मूल्य ५ रु० ५० न० पै० { ख्रिस्ताब्द १९५६

मुद्रक—राजस्थान टाइम्स प्रेस लि० अजमेर और जयपुर लिमि०, जयपुर।

विषय-सूचि



प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

चारण-कवियो का हमारे इतिहास में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन कवियो ने अपनी ओजमई वाणी से सदा ही हमारा मार्ग प्रदर्शन किया है। चारणो में हजारो कुशल साहित्यकार हो गये हैं जिन्होंने भिन्न भिन्न विषयो पर रचना की है। चारणो का प्रसार मुख्यत राजस्थान, मध्यभारत और गुजरात में हुआ है और इन्ही देशो में चारण-साहित्य भी विशेष उपलब्ध होता है।

अपनी काव्य प्रतिभा और उज्ज्वल चरित्र से चारण हमारी जनता में आदरणीय रहे हैं और समय-समय पर देश सेवा में भी अद्‌भुत् उदाहरण प्रस्तुत करते रहे है। महाकवि दुरसा आढा, ईसरदास बारहठ, बाकीदास, मुरारीदान, महाकवि सूर्यमल, कविराजा श्यामलदास और केसरीसिंह बारहठ आदि हमारे देश के प्रमुख चारण साहित्यकार माने जाते है।

बाकीदास हमारे देश के एक महान् कवि और इतिहासकार हो गये है। अपनी काव्य प्रतिभा से ही उन्होंने एक निर्धन चारण कुल में जन्म लेकर जोधपुर के राज्य दरबार में सर्वोच्च सम्माननीय आसन प्राप्त किया था। महाकवि बाकीदास की काव्यात्मक रचनाएँ बाकीदास-ग्रन्थावली के नाम से तीन भागो में काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुकी है और इनके देखने पर कवि के काव्य-कौशल की सराहना करनी पडती है।

राजस्थान के निष्प्राण नरेशो ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अधीनता बिना ही युद्ध के स्वीकार कर ली थी। बाकीदास एक राष्ट्रीय विचारो के कवि थे और इसलिये उन्होंने अपनी रचनाओ में राजस्थानी नरेशो को अग्रेजी शासन स्वीकार करने के कारण प्रताडित किया था। "आयो अगरेज मुलकरे ऊपर" शीर्षक महाकवि का गीत राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध हो गया है और हाल ही में हुई खोज द्वारा महाकवि बाकीदास की अन्य राष्ट्रीय रचनाओं की जानकारी भी मिली है।

कवि होने के साथ ही बाकीदास एक इतिहासकार भी थे। प्राचीन काल में काव्य-लेखन इतिहास लेखन से भिन्न नही समझा जाता था। यही कारण है कि प्राचीन काल के कई कवि इतिहासकार भी माने जाते है और कई इतिहास ग्रन्थ पद्य में ही मिलते है। महाकवि सूर्यमल रचित "वशभास्कर" नामक ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ इस कथन का एक अच्छा उदाहरण है।

महाकवि बाकीदास की इतिहास विषयक कृति "बाकीदासरी ख्यात" राजस्थानी गद्य में लिखी गई है। राजस्थान का पूर्ण क्रमिक इतिहास तयार करने में यह रचना एक आधार ग्रन्थ के रूप में सहायक हो सकती है। महाकवि बाकीदास को इतिहास का अच्छा ज्ञान था और समय-समय पर वे अपनी जानकारी का सक्षिप्त विवरण के रूप में लिपिबद्ध करते रहे थ।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत् प० नरोत्तमदासजी स्वामी ने 'बाकीदासरी

ख्यात" के विवरणों को क्रमबद्ध किया है। राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के उद्देश्यों में एक प्रधान उद्देश्य राजस्थान के प्राचीन साहित्य को प्रकाश में लाने का है। तदनुसार "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" के अन्तर्गत इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वज्जनों के सम्मुख इस ग्रन्थरत्न को प्रस्तुत करते हुए हमें विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर,
दीपावली पर्व, २०१३ वि०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक



प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा का ऐतिहासिक गद्य-साहित्य और ख्यात

राजस्थानी में प्राचीन गद्य प्रभूत मात्रा में पाया जाता है। ऐतिहासिक गद्य उसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। प्राचीन ऐतिहासिक गद्य की ऐसी प्रचुरता असमिया को छोड़ कर भारतवर्ष की किसी आर्य-भाषा में नहीं मिलती। असमिया भारत की प्राच्यतम भाषा है तो राजस्थानी पाश्चात्य-तम।

राजस्थानी के ऐतिहासिक गद्य के अनेक रूप हैं, जैसे ख्यात, वात, वंसावळी, पीढ़ियावळी, पट्टावळी, विगत, हकीगत, हाल, याद, वचनिका, दवावैत आदि। ख्यात इतिहास को कहते हैं। वात में किसी व्यक्ति या जाति या घटना या प्रसंग का संक्षिप्त इतिहास होता है। ख्यात बड़ी होती है और वात छोटी। वंसावळी और पीढ़ियावळी में पीढ़ियां दी जाती हैं, जिनके साथ में व्यक्तियों का संक्षिप्त या विस्तृत परिचय भी प्रायः रहता है। पट्टावळी में जागीरदारों के पट्टे अर्थात् जागीरों का विवरण रहता है। जैनों की पट्टावलियां में विविध गच्छों के पट्टधर आचार्यों की पीढ़ियां और उनका संक्षिप्त परिचय होता है। विगत का अर्थ विवरण है। हकीगत और हाल में किसी घटना या प्रसंग का विस्तृत वर्णन होता है। याद याददाश्त को कहते हैं। वचनिका और दवावैत ऐतिहासिक काव्य होते हैं। इनमें गद्य वाक्यों के युग्म होते हैं जिनकी तुकें मिलती जाती हैं। वचनिका में साथ में पद्य भी मिश्रित होता है। सबसे प्राचीन वचनिका चारण शिवदास की बनाई हुई 'अचळदास खीचीरी वचनिका' है, जिसकी रचना सं० १४६० के लगभग हुई थी। दूसरी महत्त्वपूर्ण वचनिका खिड़िया शाखा के चारण जग्गा की बनाई हुई 'राव रतन महेसदासौतरी वचनिका' है, जिसका रचनाकाल सं० १७१५ के लगभग है।

विविध जातियों की वंसावळियां भाट, मथेरण आदि लिखते रहे हैं। जैन वंसावळियों के १०–१५ बड़े-बड़े पोथे श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह में हैं। वच्छावत वंसावळी आदि कई वंसावळियां तो इतिहास के लिये बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। जैन श्रीपूज्य लोगों के 'दफ्तर' अर्थात् पत्र-संग्रह (Records) भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक गद्य की कृतियां हैं।

विविध राज्यों की पीढ़ियावळियां प्राचीनकाल से लिखी जाती रही हैं, पर उनमें से अधिकांश अब उपलब्ध नहीं। ऐसी कुछ कृतियां बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय जैसे कई-एक संग्रहों में विद्यमान हैं।

सत्रहवीं शताब्दी में सम्राट् अकबर हुआ। उसे इतिहास से बड़ा प्रेम था। उसके शासन में इतिहास-लेखन को बहुत प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। राजपूत राजाओं को भी उसने प्रेरित किया और तब से राज्यों की ओर से नियमित ख्यातें लिखी जाने लगीं। इस समय उपलब्ध ख्यातें सत्रहवीं शताब्दी से ही आरम्भ होती हैं।

राजकीय ख्यातों के लेखक राजकीय कर्मचारी, पंचोळी आदि लोग थे। पर कई व्यक्तियों ने स्वतन्त्र रूप से भी ख्यातें लिखीं। इनमें नैणसी, दयालदास और बांकीदास के नाम

विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। इनकी ख्यातों का महत्त्व ऐतिहासिक ही नही, किन्तु साहित्यिक भी है। तीनो ही कृतिया प्राचीन राजस्थानी गद्य की अत्यन्त प्रौढ और उत्कृष्ट रचनाऐं कही जा सकती हैं।

'ख्यात' के दो प्रकार किये जा सकते हैं—

(१) जिसमे सळग या लगातार इतिहास हो, जैसे दयालदास की ख्यात।

(१) जिसमें अलग-अलग 'वातो' का सग्रह हो, जैसे नैणसी की ख्यात।

वाकीदास की ख्यात दूसरे प्रकार मे अन्तर्भूत होती है, पर नैणसी की ख्यात से वह भिन्न प्रकार की है। नैणसी की ख्यात की 'वाते' वडी-वड़ी हैं जो कई पृष्ठो तक चलती हैं। उनको क्रम से लगा देने से सळग इतिहास वन जाता है। पर वाकीदास की 'वाते' छोटे-छोटे फुटकर नोटो के रूप मे हैं। लेखक को जव जो वात नोट करने योग्य मिली, उसने तभी उसे नोट कर लिया। उनमे कोई क्रम नही है। क्रम से लगाने पर भी उससे शृङ्खलावद्ध और सळग इतिहास नही वनता। अधिकाश वातें दो-दो अथवा तीन-तीन पक्तियो की ही हैं। पूरे पृष्ठ तक चलने वाली वाते कोई विरली ही हैं।

वांकीदास

वाकीदास आसिया शाखा के चारण थे। चारणो के दो भेद काछेला (कच्छ के) और मारू (मारवाड़ के) हैं। आसिया मारू चारणो की एक शाखा है, जिसका आरम्भ आसा नामक व्यक्ति से हुआ। राजस्थान मे वहुत पहले नाग जाति का राज्य था, जिसके स्मारक के रूप मे नागौर, नागदा, नागादरी, नाग तालाव आदि नाम अभी तक चले आये हैं। आसिया चारण नागो के पोळ-पात (याचक) थे। नागो के वाद मारवाड़ मे प्रतिहारो (पड़िहारों) का राज्य हुआ। आसिया पडिहारो के पोळपात भी रहे। पड़िहारों के वाद राठोड़ मारवाड़ के स्वामी हुये। मारवाड़ के राव जोधा ने आसिया पूंजा को खाटावास गाव सासण में दिया। उसके कनिष्ठ पुत्र माला को सिवाणा के स्वामी राठोड़ देवीदास ने भाडियावास गांव दिया। माला की नवी पीढी मे वाकीदास हुये।

१. पूजो, २. मालो, ३. वैरसल, ४. भीमो, ५. खेतसी, ६. नाथो, ७. सूजो, ८. सगतीदान, ९. फतैसिंघ, १०. वाकीदास, ११. भारतदान, १२. मुरारिदान (जसवन्त जसोभूषण के कर्त्ता)।

कविराजा वाकीदास का जन्म भाडियावास गाव मे सं० १८३८ में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता की देखरेख मे हुई। सोलह वर्ष की अवस्था होने पर आगे शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से वे रामपुर के ठाकुर ऊदावत अर्जुनसिंह के पास गये। अर्जुनसिंह ने जोधपुर मे उनकी शिक्षा का प्रवन्ध कर दिया। वचपन मे किये हुये अर्जुनसिंह के इस उपकार को वे कभी नही भूले। *

---

* एक दिन कविराजाजी महाराज मानसिंह के साथ हाथी पर चढ़े हुए जा रहे थे। मार्ग मे अर्जुनसिंहजी मिले और उन्होने पुरानी वातो की याद दिलाई। उस समय वांकीदास ने यह दोहा कहा —

माळी ग्रीखम मांय, पोख सुजळ द्रुम पाळियो।
जिण-रो जस किम जाय, अत घण वूठां ही, अजा ॥

संवत् १८६० में बांकीदास जोधपुर-नरेश महाराजा मानसिंह के गुरु नाथपंथी आयस देवनाथ के संपर्क में आये। उन्होंने बांकीदास को महाराजा के सामने उपस्थित किया। महाराजा उनकी विद्या और कवित्व-शक्ति को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें लाखपसाव पुरस्कार दिया, जिसमें उन्हें दो गांव भी मिले। आगे चलकर महाराज ने उन्हें अपना 'भाषा-गुरु' बनाया। महाराज उनका बड़ा आदर करते थे। राजस्थान के अन्यान्य दरबारों में भी उनका अच्छा सम्मान था।

महाराजा के व्यवहार से प्रसन्न होकर बांकीदास ने 'अ-जाची' व्रत, अर्थात् महाराजा को छोड़कर और किसी से न मांगने का व्रत, ग्रहण कर लिया। एक बार उदयपुर के गुणग्राही महाराणा भीमसिंह ने उनको पुरस्कृत करने के लिये अपने सरदारों को भेज कर बुलवाया पर उन्होंने क्षमा प्रार्थना करली।

संवत् १८७० में जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ आये हुए कविवर पद्माकर का बांकीदास के साथ शास्त्रार्थ हुआ, जिसमें बांकीदास जयी हुए।

बांकीदास का देहान्त सं० १८६० में सावण सुदी ३ को जोधपुर में हुआ। मातमपुर्सी के लिए महाराजा मानसिंह कविराजा के स्थान पर पधारे और उनके विषय में ये मरसिये कहे—

सद्-विद्या बहु साज, बांकी थी बांका बसू।
कर सूधी कवराज, आज कठी गो, आसिया।
विद्या कुळ विख्यात, राज-काज हर रहस-री।
बांका ! तो विण वात, किण आगळ मन री कहां ?

(अनेक साजों वाली सुन्दर विद्या बांकीदास के कारण 'बांकी' थी। हे आसिया ! हे कविराज ! उसे 'सीधी' (अपनी बंकिमा से हीन) करके तू कहां चला गया ?

कुल विख्यात विद्या की, राजकाज की, लालसा की और आनंद की मन की बातें, हे बांकीदास ! आज तेरे बिना किसके आगे कहूं ?)

बांकीदास बड़ी स्वतन्त्र प्रकृति के और स्पष्ट वक्ता पुरुष थे। राजपूताने के राजाओं का बिना युद्ध के अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर लेना उनको बहुत अखरा और इसके लिये उनको उन्होंने बुरी तरह फटकारा। इस संबंध में उनका यह गीत बहुत प्रसिद्ध है —

आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंच उरां।
धणियां मरे न दीधी धरती, धणियां ऊभां गई धरा॥
फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खळा-डळा।
खवां खांच चूडै खावंद रै उणहिज चूडै गई यळा॥
छत्रपतियां लागी नंह छाणत, गढपतियां धर परी गुमी।
बळ नंह कियो बापडां बोतां, जोतां-जोतां गई जमी॥
दुय चत्र मास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगो नहीं चाकरी पकडी, दीधो नहीं मरैठो देस॥
बजियो भलो भरतपुर-वाळो, गाज गजर धजर नभ-गोम।
पैला सिर साहब रो पडियो, भड ऊभै नंह दीधी भोम॥

महि जाताँ, चीचाताँ महळाँ, ग्रै दुय मरण-तणा ग्रवसाण ।
राखो रे कीहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सळमान ।।
पुर जोधाण, उदैपुर, जैपुर, पहु थांरा खूटा परियाण ।
ग्रांकै गयी ग्रावसी ग्रांकै, वांकै ग्रासल किया वखाण ।।

[अंग्रेज देश पर चढकर ग्राया । उसने (सवके) पराक्रमों को खीच लिया । पृथ्वी के स्वामियो ने मरकर पृथ्वी को नही दिया । पृथ्वी तो उनके खडे-खड़े ही, उनके जीते-जी ही (अंग्रेज के अधिकार में) चली गई ।

अंग्रेज की फौजो को देखकर किसी ने फौजे नही सजायी । शत्रुग्रों को टूक-टूक नहीं किया । विधवा स्त्री पूर्वपति के चूड़े को फोड़कर दूसरे के घर जाती है, पर यह पृथ्वी, पूर्व-पतियों के जो पूरे चूड़े पहने हुए थी, उन्ही चूड़ों के साथ अंग्रेज के घर गई ।

राजाग्रो को इसका दु.ख नही लगा । गढपतियो की पृथ्वी गुम हो गई । संख्या में वहुत होते हुए भी ये बेचारे बने रहे, जरा भी वल नही दिखाया । उनके देखते-देखते पृथ्वी चली गई ।

मराठा दो-चार मास लडा तो सही । उसकी भूमि भी चली गई । पर यह तो भावी का लेख था । पर उसने दासता तो नही स्वीकार की ग्रौर न ग्रपने हाथों ग्रपना मराठा देश अंग्रेजो को सौंपा ।

भरतपुर का राजा भी ग्रच्छा लड़ा । तोपों की गर्जना हुई जिसकी धूम ग्राकाश ग्रौर पृथ्वी में छा गई । पहले ग्रंग्रेज का सिर कटकर गिरा फिर उसका कटा । वीर ने खड़े-खड़े, जीते-जी, ग्रपनी भूमि नही दी ।

भूमि जा रही हो या कोई स्त्री संकट में चिल्ला रही हो—मरने के लिये ये दो ग्रवसर है । ग्ररे हिन्दू ग्रथवा मुसलमान कोई तो मर्द वनो ग्रौर राजपूती की रक्षा करो ।

हे जोधपुर, उदयपुर ग्रौर जयपुर के स्वामियो ! तुम्हारा वंश समाप्त हुग्रा । भाग्य के ग्रंको (लेख) से गई हुई यह भूमि ग्रव भाग्य के ग्रंकों से ही वापिस ग्रावेगी (तुम्हारे वल पर नही) । ग्रासिया वाकीदास ने यह ठीक वात कही है ।]

वाकीदास ग्राशुकवि होने के साथ साथ ग्रनेक भाषाग्रो के ज्ञाता भी थे । राजस्थानी, व्रजभाषा, सस्कृत ग्रौर फारसी के वे ग्रच्छे विद्वान थे । इतिहास में उनको वड़ी रुचि थी । वे इतिहास-सम्वन्धी विषयो का निरन्तर संग्रह करते रहते थे । 'वांकीदास-री ख्यात' उनके इसी इतिहास-प्रेम का फल है ।

एक वार ईरान का एक शाही सरदार भारतवर्ष की सैर करता हुग्रा जोधपुर पहुँचा । उसके साथ भारत सरकार का एक मुशी भी था । उस सरदार ने जोधपुर नरेश से ग्रर्ज करवाई कि ग्रापके यहां इतिहास का ग्रच्छा विद्वान हो तो मै उससे मिलना चाहता हूँ । महाराजा ने वांकीदास को उनके पास भेजा । सरदार उनसे वातचीत करके वड़ा प्रसन्न हुग्रा । उसने महाराजा को कहलवाया कि इतिहास का ऐसा विद्वान मेरी दृष्टि मे दूसरा नही ग्राया; ईरान मेरी जन्मभूमि है, परन्तु ईरान के इतिहास का ज्ञान इनको मुझसे भी ग्रधिक है ।

बाकीदास की जीवनी से सम्बन्ध रखनेवाली अनेक कहानिया है, जिनमें से कई एक का सग्रह नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी, द्वारा प्रकाशित बाकीदास ग्रथावली, भाग १-३, की प्रस्तावनाओ म किया गया है।

बाकीदास की कृतियो के नाम इस प्रकार है—

१ सूर-छतीसी, २ सीह-छतीसी, ३ सुपह छतीसी, ४ सुजस-छतीसी, ५ सिधराव छतीसी, ६ हमरौट छतीसी, ७ कुकवि-बतीसी, ८ विदुर-बतीसी, ९ धवलपचीसी, १० वचन विवेक-पचीसी, ११ कृपण-पचीसी, १२ दातार बावनी, १३ सतोष-बावनी, १४ कायर-बावनी, १५ वीर विनोद, १६ भुरजाळ-भूषण, १७ जेहळ-जस-जड़ाव, १८ मोह-मर्दन, १९ नीतिमजरी, २० चुगल-मुख-चपेटिका, २१ कृपण दपण, २२ वैसक वार्ता, २३ वैस वार्ता २४ मावडिया-मिजाज, २५ झमाल-नखसिख और २६ गगालहरी। ये २६ कृतिया बाकीदास ग्रथावली के तीन भागो में प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त इनकी निम्नलिखित अप्रकाशित रचनायें बताई जाती हैं—

१ कृष्णचद्रिका, २ विरहचद्रिका, ३ चमत्कारचद्रिका, ४ चद्र-दूषण दपण, ५ मान-यशो-मडन, ६ वर्षाऋ-वार्ता सग्रह, (ऋतु वर्णन), ७ महाभारत का अनुवाद, ८ प्रकीर्णक गीत, ९ रस और अलकार का एक ग्रथ, १० वृत्तरत्नाकर भाषा (छदपथ)।

पर इनका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रथ ख्यात है, जो अब प्रकाशित हो रहा है।

बाकीदास-री ख्यात

ख्यात में लगभग २००० बातो का सग्रह है। ये बातें छोटे-छोटे फुटकर नोटों के रूप में हैं। लेखक को जो कोई बात महत्त्वपूर्ण लगी, उसे उसने नोट कर लिया। अधिकाश बातें दो तीन अथवा चार पक्तियो की ह। दो तीन पृष्ठो तक जाने वाली बातें कोई विरली ही हैं। ख्यात के सम्बन्ध में स्वर्गीय श्री ओझाजी लिखते ह—

> "पुस्तक बडे महत्व की है। ग्रथ क्या है इतिहास का खजाना है। राजपूताना के तमाम राज्यो के इतिहास-सम्बन्धी अनेक रत्न उसमें भरे पडे ह। उसमें राजपूताना के बहुधा प्रत्येक राज्य के राजाओ, सरदारो, मुत्सद्दियो आदि के सम्बन्ध की अनेक ऐसी बातें लिखी हैं जिनका अन्यत्र मिलना कठिन है। उसमें मुसलमानो, जैनो आदि के सम्बन्ध की भी बहुत सी बातें ह। अनेक राज्यो और सरदारो के ठिकानो की वशावलिया, सरदारो के वीरता के काम, राजाओ के ननिहाल, कुवरो के ननिहाल आदि का बहुत कुछ परिचय है। कौन-कौन से राजा कहा-कहा काम आये, यह भी विस्तार से लिखा है। अनेक राजाओ के जन्म और मत्यु के सवत, मास, पक्ष, तिथि आदि दिये ह।" [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र, बाकीदास-ग्रथावली, भाग ३, की प्रस्तावना में प्रकाशित, पृष्ठ, ६-७]

इस प्रकार ख्यात-साहित्य में बाकीदास की ख्यात का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रामाणिकता की दृष्टि से यह राजस्थान की अन्यान्य सभी ख्याता की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय है।

प्रस्तुत संस्करण

नैणसी, दयालदास और बांकीदास की ख्यातें राजस्थानी भाषा की प्रथम कोटि की गद्य-रचनायें हैं। इतिहास की दृष्टि से भी वे अन्यान्य ख्यातों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि इन तीनों के सुसंपादित संस्करण प्रकाशित किये जायं। इस सम्बन्ध में कार्य का आरम्भ भी मैंने कर दिया था, पर वह पूरा नहीं हो सका। अब बांकीदास की ख्यात का यह संस्करण मुनि श्री जिनविजयजी की कृपा से पाठकों के सामने आ रहा है।

हर्ष की बात है कि बाकी दोनों ख्यातों का भी प्रकाशन-कार्य आरम्भ हो चुका है। नैणसी री ख्यात श्री बदरीप्रसाद साकरिया द्वारा संपादित होकर राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर के ही तत्त्वावधान में मुद्रित हो रही है। दयालदास की ख्यात का एक अंश मेरे माननीय मित्र डा० दशरथ शर्मा तथा मेरे भूतपूर्व शिष्य श्री दीनानाथ खत्री द्वारा संपादित होकर प्रकाशित हो चुका है। श्री खत्री ने बाकी अंश के बहुत बड़े भाग को भी संपादित कर डाला है और आशा है कि संपूर्ण ग्रंथ निकट भविष्य में ही प्रकाश में आ जायगा।

बांकीदास की ख्यात से मेरा परिचय डाक्टर तासीतोरी के सूचीपत्र से तथा श्री ओझाजी के उल्लेखों से हुआ। जब मैंने ख्यात के संपादन का विचार ओझाजी पर प्रकट किया तो उन्होंने तुरन्त उसकी एक हस्तप्रति, और उनकी अपनी प्रतिलिपि, दोनों मेरे हवाले कर दीं।

ओझाजी की यह हस्तप्रति मारवाड़ी लिपि में पतले पीले कागज पर लिखी हुई है। उसे जोधपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसादजी ने उनको तय्यार करवाकर दी थी। उसी की प्रतिलिपि उन्होंने अपने उपयोग के लिए देवनागरी लिपि में करवाई थी। इस संस्करण का संपादन इसी प्रतिलिपि के आधार पर किया गया है। मूल हस्तप्रति से भी आवश्यकतानुसार सहायता ली गई है।

बांकीदास ने ख्यात की इन बातों का संग्रह बिना किसी क्रम के किया है। उनसे कोई शृंखलाबद्ध वृतान्त नहीं बनता। एक ही व्यक्ति के सम्बन्ध की बातें अनेक भिन्न-भिन्न स्थानों पर आई हैं। कई-एक बातें पुनरावृत्त भी हुई हैं, अर्थात् दुबारा-तिबारा भी आ गई हैं। श्री ओझाजी के शब्दों में—

> "परन्तु उसमें कोई क्रम नहीं है। एक बात मालवे की है तो दूसरी गुजरात की और तीसरी कच्छ की। इस प्रकार एक महासागर सा ग्रंथ है।....एक राज के ताल्लुक की बातें सौ-पचास जगह आ जाती हैं। [पुरोहित हरिनारायणजी के नाम ओझाजी का पत्र।]

क्रम के इस अभाव के कारण ग्रंथ की उपयोगिता बहुत कुछ नष्ट हो जाती है। किसी व्यक्ति के विषय में जानकारी प्राप्त करनी हो, उसे खोज निकालना सहज नहीं होता, इसके लिये सारा ग्रंथ टटोलना पड़ता है। ओझाजी ने बातों को क्रमबद्ध करना चाहा पर यह कार्य हो नहीं पाया। वे लिखते हैं—

> "उसको क्रमबद्ध करना बड़े परिश्रम का काम है और अनेक पुस्तकें पास रखने से क्रमबद्ध हो सकता है। [उक्त पत्र]"

बातों को क्रमबद्ध करने के लिए वस्तुतः राजपूताने के समस्त राज्यों और ठिकानों के इतिहास की जानकारी अनिवार्य है। राजपूताना ही नहीं, मराठा, सिख, मुसलमान, जैन आचार्य, जैन श्रावक आदि के इतिहास का ज्ञान भी वैसा ही आवश्यक है।

ग्रंथ वास्तव में उपयोगी हो सके इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर संपादक ने ख्यात का संपादन करने के पूर्व बातों को क्रम से लगा देना अत्यन्त आवश्यक समझा। इतिहास का विद्वान न होने के कारण उसे पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, पर उन पर विजय पाने का भरसक प्रयत्न किया गया। फिर भी कई स्थानों में गलतियां हुई हों, यह सम्भव है। अन्त में कुछ बातें ऐसी भी रह गईं जिनके ठीक स्थान का निर्णय नहीं हो पाया। उनको अन्त में फुटकर बातों में अस्पष्ट बातों का शीर्षक देकर रख दिया गया है।

ख्यात में अधिकांश बातें राजपूतों के इतिहास से सम्बन्ध रखती हैं। उनमें भी राठोड़ों से संबद्ध बातों की संख्या बहुत बड़ी है। क्रम लगाते समय सबसे पहले राजपूतों से संबद्ध सामान्य बातों को देकर फिर उनकी विविध शाखाओं के राज्यों को एक एक करके लिया गया है। सबसे पहले राठोड़ों के जोधपुर राज्य को लिया गया है, फिर जोधपुर के ठिकानों को और फिर राठोड़ों के अन्यान्य राज्यों तथा ठिकानों को। राठोड़ों के पश्चात गहलोतों, यादवों, कछवाहों, चौहाणों आदि राजपूतों की अन्यान्य शाखाओं को लिया गया है। राजपूतों के पश्चात् मराठों, सिखों, मुसलमानों और अंग्रेजों की बातों को स्थान दिया गया है। इसके पश्चात ब्राह्मण तथा ओसवाळ आदि जातियों और जैनों के गच्छों की बातें दी गई हैं। आगे धार्मिक, भौगोलिक, तथा प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तुओं की बातें देकर अन्त में फुटकर बातें इस शीर्षक के नीचे नीति सम्बन्धी बातें, दूहा-गीत आदि कवितायें तथा अस्पष्ट और अधूरी बातों को रखा गया है।

ख्यात के साथ हिन्दी अनुवाद और अनुक्रमणिका Index देने का भी विचार था। अनुक्रमणिका वास्तव में बहुत आवश्यक थी। पर यह अनुक्रमणिका बहुत बड़ी होती, स्वयं ग्रंथ से भी बड़ी क्योंकि ग्रंथ में आदि से अन्त तक व्यक्तियों और स्थानों की भरमार है। यह काम समय सापेक्ष था। पुस्तक बहुत दिनों से प्रेस में थी। ग्रंथावली के संचालक मुनिजी महाराज ग्रंथ को शीघ्र ही प्रकाशित कर देना चाहते थे अतः वे अनुक्रमणिका के तय्यार होने तक ठहरने को राजी नहीं हुए।

इस संस्करण को तय्यार करने में मुझे अनेक दिशाओं से सहायता मिली। मेरे भूतपूर्व शिष्य, और अब डूंगर कालेज (बीकानेर) के इतिहास विभाग के अध्यक्ष, श्री नाथूराम खड़गावत तथा मेरे दूसरे भूतपूर्व शिष्य, और अब फोर्ट हाईस्कूल (बीकानेर) में हिंदी और इतिहास के शिक्षक, श्री दीनानाथ खत्री ने ख्यात की सब बातों को अलग अलग चिटों पर लिखा जिससे क्रम लगाने में सुविधा हुई। श्री अगरचंद नाहटा ने आरम्भ से ही इस संस्करण की तय्यारी में अभिरुचि ली। पुरातत्व मन्दिर के उत्साही सहायक श्री पुरुषोत्तम मेनारिया ने इसके प्रूफों को देखा है। सभी बन्धुओं का हृदय से आभार मानता हूँ।

यहां पर गुरुवर स्वर्गीय श्री ओझाजी तथा मुनि श्री जिनविजयजी के पुण्य नामों का स्मरण भी मैं आवश्यक समझता हूँ, जिनसे अपने साहित्यिक कार्य में, मैं निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करता रहा हूँ, और जिनकी कृपा के फलस्वरूप ही यह संस्करण प्रस्तुत और प्रकाशित हो सका है।

राजस्थान भारती पीठ,
बीकानेर,
बसन्तपंचमी, सं० २००९

नरोत्तमदास स्वामी

वांकीदासरी ख्यात

[१] राजपूतांरी वातां

१ धारा, उजीण, आबू परमारारा उतन।
जायल खीचियारो उतन।
नाडूल, सांभर चहुवाणारा उतन।
परवतसर दहियारो उतन।
टूंक-टोडो सोळखियारो उतन।
मंडोवर-पडिहारारो उतन।
पाटण चावडारो उतन।
ढाको गौडारो उतन।
करणाटक, कुकण, बगलाणो, कल्याणी
अणकी - टणकी राठोडारा उतन।
आसेरगढ टाकारो उतन।
खेड गोयलारो उतन।
नरवर कछवाहारो उतन।
दिल्ली तुवरारो उतन।
भटनेर-तणोट वीजणोट, लोद्रवो, भाटियारो उतन।
वासगढ खखारो उतन।
वाभणवाहो वारडारो उतन।
दुरमाफ बूंदी हाडारो उतन।
जाळोर सोनिगरारो उतन।
चित्तौड मोरियारो उतन।
थोहरगढ नै खागीर कावारो उतन।
मंडाहड वेरारो उतन।
हळवद - पाटडी झालारा उतन।
साफन पाटवो हुलारो उतन।
करणेचो गढ कालमारो उतन।
तारागढ गुडारो उतन।
जागळू रूण साखलारो उतन।
वाघूगढ वाघेलारो उतन।

२ मागळिया मेहाजीनू पूजै। ईंदा चामुंडनू पूजै।
देवरा नागणेचिया पूजै। गोगादे गुसाईजीनू पूजै।

३ 'मलीनाथजीरा तेज-प्रतापसू' महेचा लिखै। 'महादेवजीरा प्रतापसू' सोढा लिखै 'लिखमीनाथजीरा प्रतापसू' भाटी लिखै।

[२] राठौड़ांरी वातां

राठौडारी खापा

४ राठौडारी खापा लिख्यते—

अथलाण १	अहण २	करनोत ३	करमसोत ४	कलावत ५
कूंपावत	कोटेचा	काधल	खापसा	खोगर १०

गूजड़	गूगक	गुडियाणा	गोगादे	चाचगदे	१५
चाहड़दे	चांपावत	चालू	चैड़ी	छपनिया	२०
जांगी	जैतारणिया	जैतावत	डागी	डंगी	२५
ढोसींग	दरकड़	देवराज	धवेचा	धांधक	३०
धूहड़	धूहड़िया	नालू	पाता	पूनावत	३५
पीथड़	फीटक	वीड़ा	वूला	भावावत	४०
मंडळा	मांडणोत	मुकट	मुहड़ा	मूंडाळा	४५
मूळू	मेड़तिया	मैया	मोडासिया	राजग	५०
राजपाल	रांदा	रूपा	लोला	वाघेल	५५
वाजा	वानर	वीकानेरिया	वीजा	वेगड़	६०
सतावत	समरद	सीमाळिया	सीध	सुपेहा	६५
सैहटा	सोनवारिया	हथूड़िया	सूडर ६९*		

५. वाटड़ा १, दोटा २, कसूवलिया ३, खीया ४, फळसूडिया ५, धारविया ६, गांवाणेचा ७ अै खांपां राठौड़ारै मांहे छै।

६. राठौड़ांरी तेरह साखारा नांव– धनसूरा १, जळखरिया २, अभैपुरा ३, कपाळिया ४, वेरवदा ५, कुरहा ६, वरियोवस ७, जेवंत ८, वगळाणा ९, देण १०, वीर ११, अहर १२, पारक अथवा पारकर १३।*

७. सीहाजीरै फड़ैरा राठौड़ ज्यांरी विगत– धूहड़िया १, मोट २, धांधल ३, महण ४, रांदा ५, आसल ६, वोला ७, पेथड़ ८, फीटक ९, कोटवो १०, मूंया ११, जमानाळू १२ जाजड़ा १३, सीधल १४, जोगल १५, वादर १६, हाथूंड़िया १७, उखोवा १८, जोरा १९, सोहड़ २०, चाचक २१, ऊहड़ २२, वेगड़ २३, डांगी २४, महड़ीसिया २५, मोहण २६, खीवसा २७, गुडाळ २८, खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३२, सीमाळिया ३३, कीतपाळ ३४, छटाणिया ३५, वालाड़ा ३६, वरसूवळिया ३७।*

८. राठौड़ांरै जगमोहण पितर थेटू. पछै सायर पितर हुवो।

९. आली १, मोहण २, उदैपुर ३, अै तीन ठिकाणा गुजरातमें राठौड़ांरा वावागढ कनै है।

राठौड़ांरी पीढियां

१०. विजेचंदरो राजा जैचंद १, दंळ-पांगळो कहाणो। वरदायीसेन २, सेन ३,

* इनमें कई अेक नाम अशुद्ध है।

सेतराम ४, सीहो ५, आसथान ६, धूहड ७, रायपाळ ८, कान्हर ९, जालणसी १०, छाडो ११, तीडो १२, सलखो १३, वीरमदे१४, चूडो१५, रिडमल१६, जोधो १७, सूजो १८, वाघो १९, गागो २०, मालदे २१, उदैसिंघ २२, सूरसिंघ २३, गजसिंघ २४, जसवतसिंघ २५, अजीतसिंघ २६, वखतसिंह २७, विजैसिंह २८, गुमानसिंह २९, मानसिंघ ३० ।

सीहोजी

११ पालीसू सीहैजी कनवज जाय अ हनू टीको दियो, आप गोयददाणी गढ वसायो । चाळीस सामण दिया, वरस १७ राज कियो ।
पुरोहित साथ वेटा तीनू पालीमें मिलिया ।

आसथान

१२ सीहाजीरै टीकै आसथानजी, खेड गोहिलारै परणिया पछै साला प्रतापसीनू कह्यो — डाभी थांहरै वडा ग्रामिया है, इणनू काढ देवो पछै काढ दिया किनाक दिना डाभी आसथानजीसू आय मिलिया डाभी डावा, गोहिल जीमणा तळाई माथै मार खेड लिवी डाभी - गोहिल जिण तळाई माथै मराणा उणरो नाव पापेळाई दियो, हमैं उणमे गेहू हुवै छै ।

१३ आसथान सीहावत पाळी काम आयो ।

१४ आसथानजी सीहावतरै गोयलाणी राज लोक है साथ वेटी ईंदी उछरगदे, राणा वूढारी वेटी, दहिया जैमलनू परणायी हुती, उणसू अणवणत हुई, आसथानजीरा घरमे पैठी जैमलरा वेटा - वेटी साथ लिया आयी ही ऊ दहियो खेडहीज मोटो हुयो उण राठोडरो वैर लियो जिणसू दहियो तेरै साखरो तिलक कहावै ।

१५ वहू ईंदी उछरगदे, गोहिल जैमलनू परणायी हुती, राणा वूढारी वेटी, जैमलसू वणियो नही, जद आसथानजीरा घरमे पैठी ।

धूहड

१६ धूहड ईंदारो भाणेज आसथानजीरै टीकै वे घडी पडियारसू कियो धूहडनू चहुवाणा मारियो ।

१७ आसथानजीरा धूहडजी धूहडजीरा वेटारी विगत — रायपाळ महिरेळण १ जोगाइत उडणो २ वेगड कटारमल ३ जाळू गजउछाळ ४ कीतपाळ अतैउरसिणगार ५ पेथड हाकवाळ ६ कहाणो ।

१८ सरगधरीरी कोळू पावूजीरो उतन फलोधीरी कोळू काम आया ।

१९. राठौड़ जोपसारै बेटांरी विगत – सींधल १. ऊहड़ २. जोवू ३. जोगो ४. राजग ५. मूळू ६।

रायपाळ

२०. रायपाळ धूहड़रै टीकै. चहुवाणांरो भाणेज।

२१. रायपाळ धूहड़ोतनूं चहुवाणां मारियो।

२२. रायपाळ महिरेळणरा बेटांरी विगत – कान्हराव पाटवी १. केल्हण २. रांदो ३. सूंडो ४. मूंपो ५. वेहड़ ६. महणसी ७ थांथी ८।

२३. थांथीरै फिटक. केल्हणरो कोटेचो।

कन्ह

२४. कन्ह रायपाळरै टीकै. भाटियांरो भाणेज।

२५. कन्हरै वहू देवड़ी सलखारी वेटी. वेटा तीन – भीमकरण १. जालणसी २. विजपाल ३।

दूहो– आधी धरती भीम आधी लोदरवै धणी।
काकनदी छै सीम राठौड़ां नै भाटियां॥

जालणसी

२६. जालणसी देवड़ांरो भाणेज कन्हरायरै टीकै।

२७. जालणसी घाटो मारियो, मुलतानरी चौथ लिवी।

छाडो

२८. छाडो जालणसीरै टीकै. गोहिलांरो भाणेजो।
सोढा कनांसूं डंडमे घोड़ा लिया. भाटियांनूं पजाया।

तीडो

२९. तीडो छाडावत सातलरी मदत अलाउद्दीनसू जंग कर काम आयो सिवांणै।

३०. तीडा छाडावतरै तीन वेटा हुवा – कान्हड़दे १. त्रिभुअणसी २. सलखो ३।

३१. महेवा वगैरै देसांरो मालक. कान्हड़देनै मार मलीनाथजी खेड़रो राज लियो. कंवरपदै।

सलखो

३२ तीडा छाडावतरै टीकै हुलारो भाणेज सलखो।

३३ तीडारै टीकै चहुवाणारो भाणेज वहू पडिहार रूपडिया राणारी बेटी।

३४ मलीनाथजीरै तीन भाई, चौथा आप, वहन अेक विमलाबाई, लोक वीवळीबाई कहै, घडसी रावळनू दीवी।

३५ मालो, जैतमाल, पडिहारारा भाणेज वीरम, सोभत, उमरकोटरो धणी सोढो जिणरा भाणेज।

मलीनाथ

३६ रावळ मलीनाथ जसडारो भाणेज हो नाम मालो हो जोगी रतन रावळ

मलीनाथ कहै वतळायो जदसू मलीनाथ कहाणो।

३७ मालो नै महेवारो पीर, रूपादेरी मा सोढी चंद्रावळ, जगमालरी मावसी, इण री गोमती।

३८ करडियो, कावळी, हासली, घोडो जोडो – अै वसता वालै वदरै मलीनाथजीनू डायजै दीवी रूपादे परणाय।

३९ हरखू साखलो बगडी हुवो मलीनाथजीरै परणियो पोकरण गुढो डायजै दियो।

४० भाद्रेस माला रावळरी दियोडी है।

मलीनाथोत राठौड

४१ मलीनाथरो जगमाल, जिणरा पोहकरणा।

४२ जगमाल मालावतरै बेटो लाको, जिणरा वाडमेरा राठौड।

४३ महेवामें भाखर गायणो जठै कूपा मलीनाथोतरो रहणो हुवो कूपारै मोलो हुवो।

४४ कूपारै वमरा गायणेचा राठौड है।

४५ गायणेचा राठौड कूपा मलीनाथोतरा है।

जैतमाल सलखावत

४६ जैतमाल सलखावतरै बारा वेटा, ज्यामें १ सीमकरण प्रतापीक हुवो, जिण सोढानू मार अडताळीस गाव रा रा दबाया।

४७ जैतमाल बाराही बेटानू कह्यो – जगमाल मोनू मारियो थो वैर विसार दीज्यो नै हाफानै सिवाणैरी घाटी सूपी इग्यारै जणा जुदा जुदा परदेसा जावज्यो जिणसू थारा जुदा जुदा ठिकाणा वधसी।

४८ जैतमाल सलखावतरी बेटी ईंदो राणो उगमसी परणियो मलीनाथजी तेरै

तुंगा भांजिया जद उगमसी मलीनाथजीरी भीड़ आयो हुतो।

सोवत सलखावत

४९. सोवत सलखावत, जिणारै वंसरा सोहड़।

वीरम सलखावत

५०. वीरमजी जोइयांसूं झगड़ो कर काम आया जोइयावाटीमे।
घोड़ी आण समाध धर असमाध उपायी।

५१. वीरम सोढांरो भाणेज. जोइयारै वीठड़ै गयो उठै मराणो।

५२. गोगादे १, देवराज २, जैसिघ ३, वीजो ४, चुडाव ५, पाची ६, – वीरमरा।

चूंडो वीरमओत

५३. चूडो वीरमरै पाट, मांगालियांरो भाणेज, मंडोवर ले नागोर लियो, नागोरमे चूंडापोळ करायी. लखीजंगळरो धणी जलाल खोखरनै भाटी केलण केहररै ....आय नागोर राड़ कीवी. चूडोजी काम आया।

५४. चूडोजी नागोर काम आया, भाटी केलण खोखरसू वेढ कर।

५५. चूंडोजीरी वेटी हांसीवाई, रिड़मलजीरी सगी वहन, राणा लाखानै परणायी. भाणेज मोकल।

५६. चूंडाजीनूं मार तुरकां नागोर लियो. पछे तुरकांनूं मार राणै लाखै नागोर रिड़मलजीनू दीधो. जोधपुर सता चूंडावतरी ठाकुराई. नागोररै गांव मूंडवै राणै लाखै लाखासर तळाव नागोर करायो हो।

वीरमदेओत

५७. करमसी १, सहसमल २, केल्हो ३, – अै तीन गोगादे वीरमदेवोतरा वेटा।

सतो चूंडावत

५८. चूंडारै पाट सतो. दारू घणो पियै. राजरो काज भाई रणधीर चलावै। जठा पाछे टीको रिड़ामलजीनू दियो छरावासू तेड़नै।

५९. गांव वारी महव दूदावतनूं सतराव चूंडावत दीधी।

रिड़मल चूंडावत

६०. राव रिड़मल चूंडारै टीकै, गहलोतांरो भाणेज. पीरोजखानसू युद्ध कर राव रिड़मल मारिया।

६१. लोला सोनगरारो वेटो सतो जिणनूं जोधाजीरी वेटी सुंदरवाई परणाय राव

रिडमल सतानू पाली दीवी नाडूलरा सोनगरा धणलासू चढ जाय मारिया, ओ वैर रिडमलजी पोती परणाय वाढियो ।

६२ राव रिडमल ४१ वार जैसळमेर मारियो जद भाटिया बेटी दिवी, रिडमलजीनू राजा कहिया ।

६३ रावजी रिडमल धणलासू जाय नाडोळरा धणी सोनगरा साग मार नाखिया रावजी या सोनगरारै परणिया हुता सोनगरो लालो रणधीररो जैसळमेर परणीजण पधारिया जद लालानू जोधपुर आण जोधाजीरी बाई परणायी वैर भागियो पाली पटै दीवी ।

६४ सवत १५०० चैत वद ६ गढ चित्तौड ऊपर चूक कर राणै कूभै मारियो राव रिडमळनू ।

६५ रिडमलजीनू चित्तौड मार्थं चूककर मारिया सीसोदियै चूडै लाखावत ।

६६ चूडा लाखावत सामल होय नरवद सरावत चित्तौड माथै रिडमलजीनू चूक करायो ।

६७ भाटी सतो लूणकरणोत राव रिडमलजीनू चित्तौड चूक हुवो जद काम आयो ।

६८ भीवराज चूडारो जिणरै वमरा भीमोत कहीजै ।

जोधो रिडमलोत

६९ राव रिडमलनूं चूक हुवै चित्तौड माथै कवर जोधोजी तळैटीसू निसरिया, चूडै लाखावत लारै लोक मेलियो, गजणरईरै घाटै वेढ हुई जठै प्रथीराज ईदा वगेरै जोधाजीरा रजपूत काम आया ।

७० राव जोधो रिडमलरै पाट, देवडारो भाणेज सवत १४७२ रा वैसाख वद ४ बुधवाररो जनम, सवत १५१० जोधैजी राणारा थाणा उठाय धरती लिवी ।

७१ सोमेसर रावत लूणा कनैसू घोडा लिया, गुसाईजीरा कहणासू हरभू साखलै जोधानू जीमण दियो वहो म्हारी गोठरा मूंग थारा पेट में इतै जित्ती जमी पै घोडो फेरसी उवा जमी थारी रैसी गूदोच ताई घोडा फेरिया ।

७२ सोजन्नी विलाडासू राणारा थाणा फटाया सोजत लिवी ।

७३ रावजी जोधोजी कवर नरवद सतावतरी लडाईमें घेठ नाव उभा हुवा ।

७४ जोधपुर वसाया पछै जोधोजी गयारी जात्रानू चढिया मारग में जहानापुररो मारग आय मिळियो रावजी उणरी मदत किवी वहलोलखारो भाई मारखा मारियो पछै गयारो कर दूर कियो ।

७५. संवत १५४५ जोधोजी देवलोक हुवा।

७६. रावजी जोधाजीरै तेरै बेटांरी विगत - सातलजी १, सूजोजी २, नींबो ३, करमसी ४, वीदो ५, वीको ६, भारमल ७, जोगो ८, दूदो ९, जगमाल १०, सिवराज ११, गोपालदास १२, वरसिंघ १३।

७७. वैरसलपुरा भटियाणी राव जोधाजीरी राणी जिणरै पुत्र तीन हुवा– करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३।

७८. रावजी जोधाजीरै राजलोक वैरसलपूरा भटियाणी जिणरै बेटा तीन करमसी १, रामपाळ २, वणवीर ३।

७९. सातल १, सूजो २, नींवो ३, हाडांरा भाणेज।

८०. वीदो १, वीको २, दोनूं सांखलांरा भाणेज।

८१. राव जोधाजीरै राणी हाडी कोडमदे जिण राणीसर तळाव करायो. संवत १५१५ जेठ सुद ११ जोधपुर वसायो।

राव सातल जोधावत

८२. सातल जोधावत सातलमेर करायो।

८३. जोधाजीरै पाट सातल······

सीसोदियाँसूं सुख कियो. आवळै वावळै सीम किवी. रावजीरा वैरमें सोजत लिवी।

८४. सिरियाखानसूं कुसाणै सातल दूदे वेढ किवी. ओ तीजणियां छुडाय लिवी. दूदैजी सिरियाखानरा हाथी घणा लूटिया।

८५. सातलजी तीन वरस राज कियो. संवत १५४९ सातल काम आयो।

नींबो जोधावत

८६. सोजत नींवै जोधावत वसायी. राणारा देसरी से उचळी सात वीसी जान आयी हुती जिके सोजतमे राख्यां।

राव सूजो

८७. राव सूजो जोधारै पाट. संवत १४९६ रा भादवा वद ८ रो जनम।

८८. संवत १५४८ मे सोजतसूं आय जोधपुर पाट वैठा।

८९. सूजाजीरो सवत १४९६ रा भादवा वद ८ जनम. संवत १५४८ पाट वैठा. संवत १५७२ रा काती वद ९ राम कह्यो।

९०. मांगळिया राणावतांनूं हमीरोतरी बेटी सूजो जोधावत परणियो. सासरा-

रो नाम मरवगदेजी ज्यारा बेटारी विगत– ऊदोजी १, पिरागजी २, सागोजी ३ ।

९१ राव सूजारा बेटारी विगत– वाघो १, पाटवी कवर थका देवलोक हुवो, ऊदो २, सेखो ३, देईदास ४, पिरागदास ५, सागो ६, नरसो ७, तिलोकसी ८।

९२ सेखारै सहसमल।

९३ देईदासरै अचळो १, हरराज २।

९४ नरारै गोइद १, हमीर २।

९५ कवर वाघो नरो भाटियारा भाणेज।

९६ सेखो देईदास चहुवाणारा भाणेज।

९७ सागळियाणी सरवदे राणा पातूरी बेटी जिणरा बेटा– ऊदो १, पिराग २, सागो ३ ।

कंवर वाघो

९८ सवत १५१४ रा वैसाख वद ७ वाघाजीरो जनम, सवत १५७१ सुरगवास कियो वाघैजी ।

९९ सवत १५१४ पोस वद ६ जनम वाघाजीरो, सवत १५७१ रा भादवा सुद १४ राम कह्यो।

१०० कवर वाघो सूजावत चितोड राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०१ कवर वाघो सूजावत राणा रायमलरै परणियो हो ।

१०२ कवर वाघारा बेटारी विगत– गागो १, वीरमदे २, जेतसी ३, प्रतापसी ४, भीम ५ ।

राव गागो

१०३ राव गागो वाघावत चहुवाणारो भाणेज, वीरमदे वाघावतनू सोजत दिवी गागैजी, सवत १५४० वैसाख सुद ११ जनम गागाजीरो, सवत १५८८ रा जेठ सुद ५ रामसरण जोधपुर हुवा ।

१०४ सवत १५८८ रा चैत सुद ११ राव गागोजी कवर मालदेजी फौज ले सोजत आया, वैद मुहता रायमल खेतावतनू मार वीरमदे कनासू सोजत ली, वैसाख सुद ४ राव गागै ईडरगी मदत किवी ।

दूहो—गागा त गवाळ, ऊगा हाई उर तणा ।
सोहै तो सुखपाळ, वडा प्रवाडा. वाघउत ॥

१०५ सोजत वैद मुहतो रायमल वीरमदेजीरै चाकर, रावजी गांगैजी कंवर मालदेजी सोजत माथै गया जद रायमल कवध हुवो, नेत्र भावसू तरवार चली, वेटारा वटका किया, लाखी लोवडी ओडाडी जद घोडासू जमी लोथ पडी, उण दिनरो ओखाणो—

मुहता माटी मारका, घररा गिणै न पारका ।

१०६. गुजरातरो पातसाह उदेपुर ईडर ले लियो जद राव गांगो, राणो सांगो, वीरमदे दूदावत तीनूं ही मिल अहमदनगर जंग कर पातस्याहनू भाज ईडर ईडरिया राठोडानू दियो ।

१०७. रावजी गागोजी, वीरमदे दूदावत, राणो सागो ईडररा राजारी मदत ईडरनू जावै. जद साढचांरा राईका रावजीसू अरज किवी—आप ईडरनू पधारै है, कोटड़िया दौडै है, सो रावळी साढचांरा रँगारा जावतां साह सिरदारांरी आसामिया अठै राख, पधारजै जद रावजी फुरमाया— थे कहो जिके ही अठै राखां. आं कह्यो— तेनारा गोगादे नेतसी खेतसी महावतियानूं सांढांरा जावतानू राखजै. जद आ गोगादेओतानू देसमे राख रावजी ईडररी मदत पधारिया. किताईक दिनां कोटड़िया साढियां लिवी. राईका तेनै गया, जद तेनै ढोल वाजियो सारा गोगादे घोड़ा चढनै आया घोड़ो जीण कराय नेतसी अमल ले सूतो जद अेक राईको बोलियो—

पीपारा पीधो मेहारै घूटलवाळी ।

अरथ— पीपा राईकारा वेटां-पोतरा साढारो दूध पीधो, मेहरो वेटो घूटलवाळै पग समेट सूतो पछै नेतसी भाया-भड़ां सहित साढांरी वार चढियो. कोटड़िया रामाजी मारनै साढा पाछी आणी तेनारै तळै पाणी पाय दोड़ कराय राईकानू दूध पायो. उण समैरा हीडोळा—

साढा लोप सोइंनरो, जांघी साईरी साध ।
चढि महीरा नेतसी, रातो तरगस वाध ॥
नळी कटाड़ू नीली लप, घी अमापियो खाय ।
हाथ वैतरै आंतरै, अै कोटडिया जाय ॥
खेतो पूछै नेतसी, नीळो घोडो काय ?
गया ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ॥

उरली चारो गइया, म्हारा भाग्यारी छाह ।
जो जागी नो आणम्, उन्ना मेड्तारी बाह ॥

१०८ सेगोजी गागोजी एक दिन झरणामे भीर वाट जळछाटारो मेल कियो भाजणरी दोयानू पग बोले-थोरे भारी हुवो जद सेगोजी पूमल करणो विचाग्यो आ खवर पाय रावजी गागोजी सेगाजीनू कह्यो–वगडउगी जिण जमीमें उवा थाहगे, भुरट जिणम ऊगे उवा म्हारी सेगाजीरे परधान ऊहड हरदास आ वात मानी नही ।

दूहो–अेक बचा हरदास, ऊहड मन जाणै नही ।
गांगो रगळो गाम, पै सेगै सो मामडो ॥

१०९ सेगैजी गागोरी सान दोरगियो जिणनूं मारगाड मार्य आणियो गागोजी फौज ले सामा गया सेकी वेढ हुई दरिया जोग हाथी फोजारे आगे हो रावजीरा हाथरो तार लागो ऊ भागो दोरगियो ही भागो सेगो काम आयो देईदास सिगग्यो संवत १५८६ रा मिगसर सुद १ आ वेढ हुई पचास पठाण काम आया हाथी दोलतियारा धणा लूटाणा रावजीरो उमराव जिनो चापावत पूरे लोहे पडियो रजपूत पाच आपरा काम आया इणनू रावजी थूनाडो दिया पाछे उपडियो दिना पनरा रामसरण हुवो ।

११० सेगा सूजावतरे वसरा राठोड मुसल्मान हुवा झाडोलीमें नाहरखारो धणी नवाब बाजे है ।

१११ रोदवाबरणीनू राव गागोजी तीर वगाया सो म गोळम जाग पडियो है ।

११२ सीरगी राणा सागारी हा हुई अर गागरी बनी– राव गांगो [illegible] [illegible] सो [illegible] [illegible] [illegible] ।

११३ संवत १५८८ रा जेठ सुद ५ गुरुवार टिको रावजी श्री गांगजी ।

११४ संवत १५८८ रा जेठ सुद ५ राव गांगोजी [illegible] हुवा ।

११५ राव गांगाजीरी गनगोर [illegible] उतार गया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आगपुर ।

११६ राव गांगोजी [illegible] हुवा [illegible] [illegible] हुवा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुवो अर [illegible] [illegible] ।

११७. देवडी माणकदेजी पीहररो नाव पदमाबाई जिणरै बेटा तीन—मालदे १, वैरसल २, मानसिंघ ३ ।

११८. गांगोजीरी बेटी राय कवरबाई चित्तोड विक्रमाईतनू परणायी ।

११९ गांगाजीरी बेटी सोनबाई जेसळमेर रावळ लूणकरणनू परणायी ।

राव मालदे

१२०. राव मालदेजी सवत १५६८ रा पोस वद १ रो जनम. सवत १५८८ रा सावण सुद १५ पाट बेठा राव मालदेजी. सवत १५९२ रा माह वद २ नागोर खांनू मारियो, नागोर लियो संवत १५९४ रा असाढ वद ८ सिवाणो लियो, डूगरसी जैतमाल कनासू. संवत १५९६ रावजी वीरा सीवलनू मार भाद्राजण लिवी ।

१२१ सवत १५९८ वीकानेर लियो कूँपोजी फौज ले गया हुता. चैत वद ५ जैतसी मारियो संवत १५९८ चैत वद १२ रावजी पधारिया वीकानेर. जूझणू फतैपुर कूँपाजीनूँ वधाराम दिया ।

१२२. पचोळी अभो जाजावत मालदेजीरै कामेती ।

१२३. संवत १६०२ रावजी डूँगररी हमीरोत कनांसूँ लिवी फळोधी ।

१२४ संवत १६०८ रावजी पोहकरण लिवी ।

१२५. जैतैजी कूँपैजी वीरमदे दूदावतनू मेड़तै रियासू अजमैरसू डीडवाणा मांहसू वाली माहसू काढियो ।

१२६. वोला वीरमदेजी कह्यो— कूपाजी ! अठासू तो थाहरो काढियो नही जासूँ, मरसू कूपैजी कह्यो— तो मारसा जद जैतैजी कूपाजीनू कह्यो— वीरमदेनूं मारणो नही, वीरमदे वडो रजपूत है, जीवतो ग्यो तो कयाहिकनू आण आपणो मरण सुधारसी ।

१२७ उठासू वीरमदे माडवरा पातसाह कनै गयो. उण खरची दिवी पछै पूरवमे जाय सूर पातसाहनू आणियो ।

१२८ सूर पातसाह आयो जद वसी सिरोही मेली. असी हजार घोडासूं रावजी वावरै जाय डेरा किया ।

दूहो—साह आलम मावाहियो, मालो अमळीमाण ।
वै पतसाह क ईखिया, पिड़ दाखवसी पाण ।।

कूपै कह्यो–

दूहो–तू ठाकर दीवाण तू तो ऊभै सह कज्ज ।
राज सिगारो मालदे, करण मरण छळ लज्ज ॥

१२९ चापो जैसो भैरदामोत जगाल जलूकारो घोडो पातसाहरा मूडा आगै लायो पछै राव मालदजी साथ पीपळोद गयो ।

१३० भाटी साकर सूरावत अजमेररो किलादार हुतो अजमेररो गढ छूटो जद मरण माडियो हो पिण चाकरा मरण दियो नही असुर पातसाह जोधपुररो गढ लियो जद गढ मायै काम आयो, गढमे छतरी ।

१३१ राठोड रामसिंघ ऊहड, राठोड सीकर जैतसिंघोत ऊदावत इत्यादिक गढ ऊपर काम आया ।

१३२ सूर पातसाह वरस १ जोधपुररै गढ रह्यो सवत १६०१ पोस वद ५ देहरो पाड मसीत करायी ।

१३३ पछै गोकुळदास पाज बधावी, तळावरी राग भरायी ।

१३४ सूर पातसाह गयो मारवाडसू जद भीगैसर पाच हजार घोडा थाणो राख गयो, रावजी जोधपुर आया थागानू वेढ करि उगमो इतरा रावजीरै काम आया–राठोड ऊभो वरसिंघोत माणस ८०० सू खेत रहियो, रावळ हाफो वरसिंघोत लोहे पर उपडियो, राठोड अभो हाफो माणस ८०० घोडारा असवार ओठी पाळा महेवासू माथ लाया हुता ।

१३५ जैसिंघ भैरदास चापावतरो लोहे पड उपडियो ।

१३६ सवत १६०० पातसाह सेरसाहसू हार गव मालदेजी सिवाणारी भाखरा गया ।

१३७ सवत १६०३ सलेमसाह मुवो जद तुरक जोधपुररो गढ छोड सवाम्पुरै नसेदलीम्रा खवासरा कनै गया मडोवररा माळी गढमे आया, रावजीनू खबर दिवी रावजी जोधपुर पधारिया पछै नरम सात रावजी मेडतानू लागा ।

१३८ सवत १६१० रा वैसाख वद २ मेडता ऊपर रावजी आया मेडतै कुडळ तळाव मायै जैमल रावजीसू राड किवी जैमल वीरमदेवोत दैवजोगसू जीतो रावजीरा इत्ता ठाकर सिरै काम आया–धनो भारमलोत वालो १, राठोड नगो भारमलोत वालो २, प्रथीराज जैतावत ३, राठोड जगमाल उदैकरण ४, राठोड सूजो जैतसिंघोत ५, सीहड पीथो जसवत ६ ।

१३९. संवत १६१० रा असाढ वद १३ राठोड देईदास जैतावतनै कंवर चदरसेणजीनू मालदेजी मेडना माथै विदा किया. जैमल्लजीनू काढि मेड़तामे अमल्ल कियो।

१४०. सवत १६१३ हाजीखानसू राजाजीरै अदावदी हुई जद राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीखांरी मदत मेलिया ज्यांरी विगत–राठोड देवीदास जैतावत १, रावळ मेहराज हाफावत महेवारो धणी २, राठोड़ जगमाल्ल वीरमदेवोत ३, राठोड़ जैतमाल्ल जैसावत चांपो ४, लखमण भादावत ५–इत्यादिक डोढ़ हजार घोडांसू मेलिया।

१४१ सवत १६१३ फागण वद १२ हाजीखानसू राणा उदेसिंघजीरै अदावदी हुई. हाजीखान पठाण हो. हाजीखान राव माल्लदेजीसू साधी राव मालदेजी इतरा ठावा मिनख हाजीखानरी मदत मेलिया–राठोड देवीदास जैतावत १, राठोड़ रावळ मेघराज हाफावत २, राठोड़ जगमाल वीरमदेवोत ३, राठौड़ जैतमाल्ल जैसावत ४, लखमण भादावत ५।

१४२. राणा उदैसिंघरा साथरी विगत–राठोड़ जैमल वीरमदेवोत, राव कल्याणमल वीकानेरियो, रावळ प्रताप वांसवाळारो, रावळ आसकरण डूगरपुररो, रावळ तेजो देवळियारो, खैराडो राम जाजपुररो धणी, राव रामचंद्र तोडरीरो धणी, सोलंकी राव सुरजण हाडो वूंदीरो धणी, राव दुरगो रामपुरारो धणी, राव नारायणदास।

१४३. राणाजीरा साथरी विगत–राठोड जैमल वीरमदेवोत १, राव कल्याणमल वीकानेरियो, २ रावळ प्रताप वासवाळारो ३, रावळ आसकरण डूगरपुररो ४, रावळ तेजो देवळियारो ५, खैराड़ो रामो जाजपुररो धणी ६, राव रामचद्र तोडरीरो धणी ७, राव सुरजण वूंदीरो धणी ८, राव दुरगो रामपुरारो धणी ९, राव नारायणदास–इत्यादिक राणा कनै सिरदार अजमेरसू कोस १२ हरमाड़ो गांव जठै राड़ मंडी संवत १६१३ फागण वद १२. राणाजीरो उमराव वालीसो सूजो जसवतोत राठोड देवीदास जैतावतरै हाथ रह्यो. जैतारणियो तेजसी डूसरसी ऊदावतरो राणाजीरो उमराव आछी तरह काम आयो खेत हाजीखानरै हाथ रह्यो।

१४४ हाजीखान पठाणसू संवत १६१३ रा फागण वद ९ राणै उदैसिंघ वेढ किवी जद ५०० सवारांसू रावजीरा उमराव इता हाजीखा सामल हुवा– राठोड देईदास जैतावत १, राठोड जगमाल वीरमदेवोत २, राठोड जैतमाल जैतावत ३,

ऊहड जैमल जैतसिंघोत४, राठोड प्रथीराज कूपावत५, रावळ मेघराज हाफावत६, राठोड महेसदास घडसिंघोत७, राठोड लेखमण भादावत ८ ।

१४५ हरमाड़ै राणा उदैसिंघजीरो उमराव सूजो वाली हो जिणरै देईदास जैतावतरै हाथरी बरछी लागी सूजो खेत पडियो जैतारणियो तेजसी डूगरसिंघोत राणाजीरै काम आयो राणाजीरी फौज भागी रावजीरो सीधल देदो रणधीर काम आयो ।

१४६ सवत १६१३ रा फागण वद १२ अजमेरसू कोस १२ हरमाडो जठै राड हुई । राणा उदैसिंघजीरो उमराव ताडूळाईरो धणी वालीसो सूजो जसवतोत मारणो राठोड देईदास जैतावतरै हाथ रह्यो राठोड जैतारणियो तेजसी डूगरसिंघोत राणाजीरो उमराव काम आयो राणोजी जीता नही, खान जीतो ।

१४७ रावजी माथै पहुचावण जैपुर आया हुता उठै जासूसा खबर दिवी खान जीतो रावजी मेडता माथै आवणरी त्यारी किवी जद जासूसाँ खबर दिवी–मेडतो खाली है, जैमलरो कोई नही है मेडतामे सवत १६१३रा फागण सुद १२ रावजी मेडतै पधारिया जैमलरा माणस वावरै गिररी समाळ केई दिन रहिया रावजी हळ जोताय मेडतियारी जायगाँ पडाय नखायी ।

१४८ रावजी जैतारण हुता जैतारणसू डोढ हजार घोडो हाजीखारी मदत मेलियो हो हाजीखान जीतो औ समाचार रावजीसू मालम कराया रावजी मेडतै पधारणरी त्यारी किवी जद जासूसाँ खबर दिवी–जैमलजीरो कोई आदमी मेडतामे नही है सवत १६१३ फागण सुद १३ मेडतै पधारिया ।

१४९ जैमलजीरा माणस गिररी वावरै ससेळ केइक दिन रह्या ।

१५० हळ जोताय रावजी मेडतियारी जायगाँ पडायी ।

१५१ सवत १६१४ मेडतै मालकोटरी नीव दिरायी सवत १६१६ मालकोट सपूरण वणियो जद राठोड देईदास जैतावतनू साथ घणासू मालकोट थाणै राखियो ।

१५२ सवत १६१८ रा आसोज वदमें राठोड देईदास जैतवात, राठोड पतो नगावत जाळोरगढ लियो मलिक बूढनखानू काढियो आसोज सुद ५ खबर नदरमेण जाळोरगढ चढियो ।

१५३ पछै जैमलजी मधनोरसू जाय अकबर पातसाहरा उमराव मिरजा सरफुद्दीननू पातसाही लसकर समेत मेडतै माऊदेजीरा माथ मासै आणियो सवत

१६१८ रा चैत सुद ५ रावजीरा साथसूं लड़ाई किवी. फतै मिरजारी हुई, रावजीरा उमराव काम आया ज्यांरी विगत-राठोड़ देईदास जैतावत१, राठोड़ महेस पचाइणोत करमसिंघोत २, मांगळियो वीरमदेव ३, राठोड़ भाखरसी डूगरसिंघोत ४. . . . ५, राठोड गोइंद राणावत ६, राठोड अमरो रायावत ७ राठोड़ जैमल तेजसिंघोत ८, राठोड़ भाग भोजराजोत रो ९ राठोड महेस घड़सीहोत १०, राठोड पूरणमल प्रथीराजोत ११, राठोड भाखरसी जैतावत १२, राठोड़ ईसरदास राणा अखैराजोतरो १३, राठोड़ तेजसी सीहावत १४. राठोड़ पतो कूंपो महराजोतरो १५, राठोड़ महेसो रतनावत १६. राठोड अमरो आसावत १७. राठोड़ अमरो रामावत १८, राठोड़ अचळो भाणोत १९, राठोड़ सांगो रणधीरोत २०, राठोड़ ईसरदास घड़सीहोत २१, राठोड़ रायसिंघ घड़सीहोत २२, भाटी तिलोकसी परवत आणंदोतरो २३. राठोड़ हमीर ऊदावतवालो २४, राठोड़ भीम डूगावत वालो २५. राठोड़ अखो जगमालोत २६, काक चांदावतरो २७. राठोड़ जैतमाल पचायणोत मेड़तियो २८, भाटी पीथो अणंदोत २९, राठोड़ राणो जगनाथोत ३०. सांखलो तेजसी भोजावत ३१, राठोड़ प्रिथीराज ३२, सिंघण अखैराजरो ३३, चहुवाण जैतसी ३४, वीरम डूगावतरो ३५, मांगळियो देदो ३६, राठोड रणधीर रायमलोत ३७, जगमालजीरो चाकर आसामी ३८. आरा रजपूत छत्र काम आया मिरजारो साथ घणो काम आयो. खेत मिरजारै हाथ रयो मेड़तो लियो।

१५४. रावजी कंवर चंद्रसेणजीनूं मेड़ते देवीदासजी कनै मेलियो. राठोड़ प्रथीराज कूंपावत १, सोनगरो मानसिंघ अखैराजोत २, राठोड़ सांवळदास ३ और ही उमराव कुंवरजीरै साथै मेलिया, दोय हजार घोड़ा साथै मेलिया।

१५५. रावजी कह्यो—वेढ करणरो छव हुवै तो वेढ कीज्यो, नही तो देवीदासजीनूं लेनै उरा आवज्यो. अै मेड़ते गया. पातसाही फौज सबळी देखी. आं डेरा पाछा किया,. देवीदासजी मुरड़ मालकोटमे पैठा।

१५६. मुगला मालकोट घेरियो .राठोड़ सांवळदास उदैसिंघोत मुगलां साथै पड़ियो. चाकर खाटमे घाल ले निसरिया. मुगल लारै चढिया च्यार कोस साथै आय पड़िया. सांवळदास भली भांत काम आयो।

१५७. मालकोट घेरो मुगल नित होवा करै. रावजी नित देईदासजीनूं लिखै—थे तो थांरो नांव करो हो पिण म्हारी ठाकुराई खोवो हो।

१५८ संवत १६१८ रा फागण वद घेरो लागो मालकोटरो बुरज अेक सुरंगसूं उडियो. मुगल हल्ला ऊपर हल्ला करै. जद जैमलजीसूं सरफुद्दीन बात

वरी मालकोट यारै देवीदासजी निसरिया जैमलजी सरफुद्दीन मालकोटरी पोल आगै ऊभा देख रावजी देवीदासजीनूं दिवी हुती वारा गिजमनदाररै कनै हुती येक मुगल बदूक लेण झटियो जद कटियाळी गेडी मुगलरै माथै जडी गेडीरा लगणासू नाकमें भेजी निसरी मुगल मर गयो ।

१५९ जो काम देख जैमल सरफुद्दीननू कह्यो– देवीदास जीवतो जोधपुर गयो तो रावजीनू आपां ऊपर जरूर ले आवसी, इणनू मार लेणो, आसल वारो सरफुद्दीन जैमल फौज ले चढिया गाव सातळिया वासै जाय पोहता आरी फौजरो नगारो आ गोइददासजी सुण, घोडा ठागिया सवत १६१८ रा चैत सुद १५ वेढ हुई रावजीरी फौजरा इतरा काम आया–

राठोड देईदास जैतावत १	राठोड भाखरसी जैतावत २
राठोड पूरणमल प्रथीराजोत ३	राठोड जैतसी उरजणपचायणोत ४
राठोड महेसो उरजणोत ५	राठोड ईसरदास राणावत ६
राठोड पतो कूपा महराजोतरो ७	राठोड भाण भोजराजोत ८
राठोड नेतसी सोढावत ९	राठोड रामो भैरूदासोत १०
राठोड अचळो भाणोत ११	राठोड गोइददास राणावत १२
राठोड अमरो रामावत १३	राठोड महेसो रामावत १४
जैमल तेजसिंघोत १५	राठोड भाखरसी डूगरोत १६
राठोड महेस पचायणोत १७	राठोड रणधीर रायसिंघोत १८
राठोड महेस घड़सिंघोत १९	राठोड ईसरदास घड़सिंघोत २०
मागळियो वीरम २१	मागळो तेजसी २२
भाटी तिलोकसी २३	भाटी पीथो २४
चारण भानीदास २५	बारठ जालप २६
राठोड सागो रणधीरोत २७	राठोड राजसी घड़सिंघोत २८
राठोड राणो जगमालोत २९	भाटी पिरागदास भाखरसोत ३०
बारठ जीवो ३१	तुरक हमजो ३२ ।

१६० आ वेढ हूवा पछै रावजी मेड़ता माथै चढर [illegible] नहीं ।

१६१ सवत १६१८ रा चैत सुद १५ राठोड़ जैमल मिरजै सरफुदीन साथ सातळि- यावास रावजी राठोड़ देवीदासजीनै चोरासू जा लियो राठोड़ देईदास जैतावत [illegible] रावजीरा [illegible] उमराव [illegible] ।

१६२ देवीदास जैतावत री [illegible] हुआ नै जैमल नै मिरजा सरफुदीन [illegible] देवीदास [illegible] आयो ।

१६३. आ वेढ हुवां पछै मेड़ता माथै रावजी कटक कियो नही ।

१६४. संवत १६१९ रा काती सुद १५ राव मालदेजी देवलोक हुवा. इण राड़ हुवां पछै आठवें महीनै राव मालदेजी देवलोक हुवा।

१६५. राव चंदरसेणजीरै भाइयांसू अणवणत रही जिणसू मेड़तारो नांव न लियो ।

१६६. सरफुद्दीन दिली गयो. जैमलरो वेटो वीठळदास मेड़तारी जागीरी मुजाव घोड़ा रजपूत ले पातसाह अकवररी चाकरीमें गयो ।

१६७. सांभर १ सोजत २ मेड़ता ३ खाटू ४ वधनोर ५
लाडणू ६ रायपुर ७ भाद्राजूण ८ नागोर ९ सिवाणो १०
लोहगढ ११ जेखळ १२ वीकानेर १३ भीनमाल १४ पोहकरण १५
वाढमेर १६ रैवासो १७ कासली १८ जोजावर १९ जोळी २०
लारणो २१ नाडोळ २२ फळोधी २३ सांचोर २४ डीडवाणो २५
चाटसू २६ फतैपुर २७ अमरसर २८ समेईगाम २९ खावड़ ३०
वणवीरपुर ३१ टूंकटोडो ३२ अजमेर ३३ जाजपुर ३४ उदैपुर ३५
भारांदो ३६ — इत्ता ठिकाणा राव मालदेजी लिया ।

१६८. संवत १६१९ रा काती सुदी १२ जोधपुर राव मालदेजी देवलोक हुवा । जोधपुर, सोजत, पोहकरण राव चंद्रसेनरै, फळोधी उदैसिंघरै, सिवाणा रायमलरै रह्या ।

राणियां और संतान

१६९ उमादे भटियाणी रावळ लूणकरणरी वेटी जिणनै सवत १५९३ रा वैसाख वद ४ राव मालदेजी जेसळमेर जाय परणिया। सवत १५९५ अजमेर मांहे रूसणो हुवो। संवत १६०४ रामकंवरनै देसोटो हुवो जद साथे गया । संवत १६१५ रा काती सुद १५ रावजी लारै वळी। केळवै रायजीरी वसी माहे ।

१७०. कछवाही लाछळदे, भटियाणी उमादे—आं दोनां रावजी मालदेजी लारै सत कियो, मेवाड़रै गांव केळवै। उमादेजी लाछळदेरो वेटो राम जिणनूं स्राप दियो ।

१७१. सरूपदे झाली मोटा राजारी मा जिण तळाव करायो. सवत १६१५ माह वद ५ प्रतिस्टा किवी नांव सरूपसागर. लोक वहूजीरो तळाव कहै ।

१७२. सरूपदे झाली चंद्रसेणजीरी मा चद्रसेणजीनै स्राप दियो— "तै मोनू राजरा वंदोवस्त वासतै रावजीसूं वळग न दिवी सो थारो राज मत रहे जो रावजी लारै सतमे न वळी ।"

१७३ पातररा पेटरा दोय–महेम १, डुगरसी २ ।

१७४ ओळगणैरा वेटा आठ–तिलोकसी १, जैमल २, लखमीदास ३, रूपसिंघ ४, तेजसिंघ ५, ठाकरसी ६, ईसरदास ७, नेतसी ८।

१७५ राठोड रायमल राव मालदेरो, सो बूंदीरा धणी हाडा राव सुरजनरी वेटी परणियो ।

१७६ देहरो राव सुरजण जिणरी वेटी रतनकवर रायमल मालदेओत परणियो।

१७७ रायमल राव मालदेओतरा वेटारी विगत–कल्याणदास १, प्रतापसी २, कान्ह ३, वळभद्र ४, सावळदास ५ ।

१७८ सवत १६६४ सिवाणै कलो रायमलोत राणियारी जमर कर सात जणासू काम आयो माथो पातसारी डोढी पूगो ।

१७९ कल्याणदास रायमलोत लाहोरमे अेकसदी पातसाही चाकरनू भार सिवाणै चढियो पातसाह मोटा राजानू आग्या दिवी–'इणनू मारो' जद सिवाणा माथै गया कवर भोपत १, कवर जैतसिंघ २, ३, रावळ मेघराज ४, राठोड वैरसल प्रथीराजोत ५, महमदखा जावारी ६– इत्यादिक घणा साथै हा ।

१८० परबतसिंघ देवडो मेहाजळोत राव कलारो भाई कल्याणदासजी रातीवासो दियो जद माराणो ।

१८१ खीची गणेसदास कला रायमलोतरो माथो काटियो ।

उरळी चारो राइका, म्हारा भालारी छाहि ।
जो जासी तो आणसू, वावा मेहारी वाहि ॥

१८२ कलाजीरा हिंडोळा–

काणाणै काढै नीपजै, सिवाणै भरीजै भोग ।
काकै भतीजै मारियो, काठा गढ्वारै लोभ ॥
रातो वागो पहरिया, कवळो मूछारो माण ।
ज्या दीठो त्या सालमी, रायमलरो कल्याण ॥

१८३ रतनसी राव मालदेरो सवत १५८९ रा आसोज सुद ८ जनम रतनसीरा वेटारी विगत–सादूल १, सुरताण २, सुदरदास ३, जैतसी ४, दळपत ५, नाथो ६, पचायण ७ ।

१८४ महेस राव मालदेरो, टीपू पातररो वेटो मानो गूगो रोहिलै रहतो जिणरी वेटी टीपू महेसदासरै वेटा तीन–रामदास १, दूदो २, कल्याणदास ३ ।

पुत्रियां

१८५. राजकंवरी वाई बूंदी हाडा सुरताणनू परणायी हुती. रावजी आपरी हाडीनूं मारी. हाडै वाईनू मारी. जदसू परणीजण परणावणरी अटक हुई ।

१८६. वाई पोहपावती डूंगरपुर रावळ आसकरणनै परणायी हुती. उवा रावळजी साथै वळी ।

१८७. हांसवाई कछवाहा लूणकरणनै परणायी, वेटो जायो मनोहर राव. सजनीवाई रावळ हरराजनूं जेसळमेर परणायी. वेटो भीम रावळ. इंद्रावतीवाई गवाळेर राजा कछवाहा आसकरणनूं परणायी ।

१८८. वाई वाल्हवाई ऊमरकोटरा सोढा रायसलनूं परणायी. पछै जोधपुर आयी, सांवत कुवो पटै ।

१८९. वाई कनकां गुजरातरा पातसाह सुरताण महमदनू परणायी. पातसाह मुवो जद जेसळमेर सजनां वाई कनै आय रही ।

१९०. रतनावती वाई हाजीखाँनू परणायी. हाजीखां मुवो जद चंद्रसेणजीरा विखा मांहे आयी थी. पछै मोटा राजाजीरै जोधपुर ओज आयी. संवत १६४९ मुयी पछै नागोर मेली. उठै गुमटी है ।

१९१. लालवाई सूर पातसाहनूं परणायी ।

१९२. अमरसररा सेखावतांरी भाणेजी, राव रामारी वहन जसोदावाई नागोरी खाननू परणायी ।

१९३. मानसिंह गांगावतसू हमती दीठी जिणसू हाडी द्रोपदी महल वारै कढाय मारी ।

१९४. पातरंरी वेटी रुखमावती पातसाह अकवरनू परणायी. लखमी वाहरली ओळगण नगा भारमलोतरै घरमें पैठी. नगा लारै वळी ।

राव चंद्रसेण

१९५. संवत १५८९ रा सावण सुद ८ चन्द्रसेणरो जनम संवत १६१८ रा पोस सुद ६ मालदेरै टीकै वैठा. संवत १६३७ रा माह सुद ७ सरियायरी गाळमें राज देवलोक हुवो ।

१९६. संवत १६१८ लोहावट चन्द्रसेणजीरै नै उदैसिहजीरै वेढ हुई. रावळ मेघराज हा··वतरा हाथरी वरछी उदैसिहजीरै लागी जद कलोजीसूं उदैसिघजी अकवर कनै गया. गवाळेर कनै समखळी ठिकाणै पटो पायो ।

१९७. मोटा राजारै हाथरी वरछी चन्द्रसेणजीरै लागी. रावळ मेघराजरै हाथरी वरछी मोटा राजारै लागी लोहावटरै खेत ।

१९८ मोटा राजारै सामै खवै वरछी लागी घोड़ो पड़ियो जद सीची घोड़ै साहणी नादै उपाडि चढाय काढिया ।

'जोगा ऊपन जूवटो ऊदो वेलै आल'

१९९ जोगो सादाउत माडणोत राजाजीरै काम आयो ।

२०० नागोर पातसाह् अकवर जद मोटाराजा नै राव चद्रसेणजी अेक हुवा, रसाभास मेटियो मोटो राजा नै कवर रामसिघ अकवर कनै रह्या चन्द्रसेणजी भादराजूण गया कवर उगरसेण वूदी गयो ।

२०१ सवत १६१८ रा पोस सुद ९ रात्र चन्दरसेणजी अकवररो उमराव खानजहाँ जिणनू जाळोर सूपियो ।

२०२ सवत १६२० रा जेठ सुद १२ राव राम पातसाह् अकवर उमराव हुसनकुलीखानू जोधपुर राव चदरसेणजी मार्थ लायो, रावजी कनासू सोजत इण राव रामनू दिरायी ।

२०३ सवत सौळासै वीस १६२० रा चैत वद ४ राव राम हुसेनकलीनू आण पाली मारी सोनगरो मानसिघ अखैराजोत निकळियो सो उदैपुर गयो।

२०४ सवत १६२२ रा मिगसर वद ४ राव चदरसेण हुसनकुलीखानू गढ जोधपुर सूपियो ।

सवत १६३० राव चदरसेणरा रजभूता सहुवाजखानै सिवाणारो गढ सूपियो।

२०५ राव चद्रसेणरी वहू सीसोदणी सुरजनदे राणा उदैसिघजीरी वेटी सोजतरै गाव सिवराड हुती पचोळी नेतो भडारी मनो थनै हुता मोटाराजारी वहू कछवाही मनरगदे कुवरजी सूरजसिघजीरी मा सिवराड सीसोदणीजीनै लेण आया सीसोदणीजी जोधपुर आया पछै मथुराजी पधारिया ।

२०६ राव चदरसेणरा वेटा दोय– आसकरण १, रामसिघ २ निरवस गया उगरसेण चदरसेणोतरो वस रह्यो ।

२०७ उगरसेणरा वेटारी विगत–करमसेन १, कल्याणदास २, कान्ह ३, करमसेणरै पटो अेक वार सोजत हो दिनणमें पठाण खानजहासू मामलो हुवो जठै करमसेण काम आयो ।

२०८ करमसेण ऊगरसेणोतरा बेटारी विगत–स्यामसिघ १, स्यामसिघ २, राजसिघ ३, सुरताणसिघ ४, वळभद्र ५, मुकनदास ६, हरराम ७, रामसिघ ८, मोहणदास ९, गिरधर १०, धरमसेन ११, जगनाथ १२ ।

२०९. सीसोदणी सुरजणदेरो वेटो आसकरण संवत १६३७ रा माह सुदमें राव चंदरसेणरै टीकै वैठो।

२१०. सवत १६३९ रा चैत सुद २ सारण गांवमें भाई उगरसेण कटारी चलायी. आसकरण माराणो.····सत कियो, उणहीज दिन आसकरण रावरै रजपूत सेखै सांकरोत उगरसेणरा हाथसू कटारी जड़की उगरसेणरै चलायी. आसकरण पहलां उगरसेण मुवो ।

२११. कंवर रामसिंघ नरूको·····राजारो भाणेज।

२१२. पातसाह अकवर कावलमे जद रायसिंघ चंदरसेणोतनूं सोजत दीवी।

२१३. रामसिंघ चंदरसेणोत काम आयो, तीन राणिया सती हुई सोजतरा तळाव वेपैलाव ऊपर संवत १६३७ रा मगसर वद ३–कछवाही राजा आसकरणरी वेटी १, सोनगिरी भाण अखैराजोतरी वेटी २।

२१४. संवत १६३६ भादराजण आय राव चंदरसेणजी विखा मांहे देवडा विजा हरराजोतनू परणायी जोमैतीवाई।

२१५. चंदरसेणजीरी वेटी आसकंवरीवाई कछवाहा माननूं परणायी।

२१६. वेटी रुखमावती वाई पातसाह अकवरनू डोलो मेलियो।

२१७. संवत १६२६ रा पोस सुद ६ चंदरसेणजी आपरी वेटी करमैतीवाई राणा उदैसिघनै परणायी।

२१८. करमैतीवाई राणा उदैसिंघजीनूं परणायी।

२१९. ···· ···· खां नागोरीनूं परणाई धनवाई।

राजा उदैसिंघ

२२०. संवत १५९४ रा माह सुद १३ रवि राजा उदैसिघरो जनम।

२२१. सवत १६२७ रा सावण सुद १५ उदैसिघजी अकवररै चाकर रह्या।

२२२. मोटै राजाजी १६ आदमियां समेत मैणा हरराजियानु जोधपुर गढ माथै मारियो. संवत १६४२ रा जेठ मांहे जद सुरजमल खीमाउतरै गोडै ठरड़ो लागो. सोजत मोटाराजाजीनू हुई जद वगड़ी वाघ प्रथीराजोतनूं पातसाहजीरी दियोड़ी हुती नै कंटाळियो भोपत देईदासोतरै हुतो।

२२३. संवत १६४१ मोटै राजा राव सुरताण सिरोहीरो धणी जिण माथै पेसकसी पीरोजी लाख दोय नै घोड़ा १३ ठहराया।

२२४ नवा पेटै अँलमे वाई राठोड किसना देवडा सामतसी नोगारिया नै देवडो मामदास सूजावत देवडा प्रिथीराजरो भाई ओळिया राठोड भोपत पातावत ऊहड गोपालदास सायँ जोधपुर मेलिया।

२२५ सवत १६४० नवाव खान्खा मोटाराजा उदैसिघ राजपीपळा वेढ हुई गुजरातरो पातसाह मुदफरनू भाज गुजरात दिली कारे घाली सवत १६४१ राजपीपळा मुदफर पातसाह भागो खानखा आगै जद मोटा राजाजीरा चाकर भाटी सादूळ मानावत गोइददासजीना भाई सोरासू वळियो।

२२६ समाडली पटै भाई अमल किया जद गूजरासू वेढ हुई राजाजीरा दोय मनख माराणा समाडली सोभानू सीकदार कियो।

२२७ पलासळो १, गूजरावास २, घुणलो ३, जोगावास ४, भिटोरो खुरद ५, बुटैला ६, हाफत ७, कोटडो ८, जाइजो ९, रीसाणियो १० – अँ गाव दस सोजतरा कला करणराजोतरा दियोडा चारणानू मोटै राजा उथापिया जद वारट अखै साकर आढे दुरसै धरणो कियो अखै दुरसै गळै घाली।

२२८ चाहडवा १, म्हतडी २, वोरतडी ३, सुगालियो ४, गोधावस ५, भेवली ६, सारिया ७, गिरवरियो ८, आमडावस ९, वासणी १०, गोडाग ११, भिणाचणो १२ – अँ गाव वामणरा उथापिया।

२२९ सवत १६५१रा असाढ सुद १५ राजा उदैसिघजी लाहोर देवलोक हुवा। पातसाह अकवर नाव वैठ सतियांनू देखवा आयो जिण पहला लापो दियो पातसाह कवर सूरजसिघजीनू वीजाहीनू दिलासा दिवी कयो, सरव काज कर पछै म्हा कनै आवो।

सोळैमै इक्काणव, सुद पूनम आसाढ।
देवलोक ऊदो गयो, गगह्रो अवगाढ॥

राणिया

२३० वडी वहू सोळंकणीजी सावतसीजोरी वेटी, सोळकियानू वैर भागो जद परणियो मोटोराजाजी।

२३१ कछवाहा राजा आसकरणरी वेटी रजरगदेजी मोटोराजा परणियो ज्यारा पुत्र सुरजसिंघजी हुवा।

पुत्र

२३२ मोटाराजा उदैसिघरै वेटा सूरसिघ १, अखैराज २, भगवानदास ३, नरहरदास ४, सगतसिघ ५, भोपत ६, दळपत ७, जैतसिघ ८, किसनसिघ ९, जसवतसिघ १०,

केसोदास ११, रामसिंघ १२, पूरणमल १३. सोळै सिरदार।

२३३. भगवानदास भोपत सीसोदियांरा भाणेज।

२३४. राजा उदैसिंघजीरो कंवर भोपत जिणनूं मसूदै परमार सादूळरै वेटै मारियो. राजा मानरै ओ मामारो वेटो भाई जिणसूं मान महाराज सूरजसिंघजीसूं कही वैर भंजायो. सादूळरी वेटी महाराज सूरजसिंघजी परणिया. पंवारजी महाराज साथै वळिया।

२३५. मोटाराजारो नरहरदास जिणरा वेटांरी विगत – कल्याणदास १, जगनाथ २।

२३६. संवत १६१४ आसोज वदी ४ जनम भगवानदासरो. संवत १६१५ रा कातो सुद १२ मुवो।

२३७. मोटाराजारो भगवानदास जिणरा वेटारी विगत – गोइददास १, गोपाळदास २, वळराम ३, अचळदास ४।

२३८. मोटाराजारो मोहणदास जिणरा वेटांरी विगत – प्रतापसिंघ १, सवळसिंघ २, सादूलसिंघ ३: संवत १६२८ जनम. संवत १६६७ कटारी खाय मुवो।

२३९. सेखावतांरो भाणेज अखैराज समावळी थकी खीचीवाड़ामे काम आयो।

२४०. सगतसिंघ भाटियांरो भाणेज।

२४१. जैतसिंघ, माधोसिंघ, मोवंणदास, कीरतसिंघ – च्यारूं अमरसररा सेखावतांरा भाणेज।

२४२. माधोसिंघ मोटाराजारो जिणरा वेटारी विगत – केसरीसिंघ १, महासिंघ २, विहारीदास ३, संवत १६३२ काती वद ५ जनम।

२४३. मोटाराजारो जैतसिंघ जिणरा वेटांरी विगत – हरिसिंघ १, अमरो २, कनीराम ३. पेमसिंघ ४, भावसिंघ ५, राजसिंघ ६, गोवरधन ७, विजैसिंघ ८।

२४४. दळपत मोटाराजारो जिणरा वेटांरी विगत – महेसदास १, कनीराम २, राजसिंघ ३, जसवंत ४, प्रतापसिंघ ५, जुझारसिंघ ६।

२४५. सवत १६५४ राठोड दळपत मोटाराजारो लाहोर थो: कुरखेत सूधो दोड़ियो वुंदेला रण धवंळ वांसै. भाटी गोइंददासजी भुलायो वुदेलो हाथ न आयो।

२४६. इत्ता राठोड़ साथ हुता राठोड़ भगवानदासजीरै राठोड दळपत राजावत १, किसनसिंघ राजावत २, राव सगतसिंघरो साथ भाटी गोइंददास मानावत।

२४७. संवत १६६७रा पोस सुद ११ राठोड़ भगवानदास मोटाराजारो वेटो जिणरा वैरमे वुदेलो दळसाह राजा हरधवळरो वेटो इतरां मिल मारियो।

२४८ राठोड गोइददास भगवानदासोत, राठोड राघोदास नरहरदासोत, राठोड भोजराज नराणदासोत, राठोड जगनाथ कल्याणदासोत, राठोड भगवानदास वाघोत, हुल मेघराज भाडावत, राठोड केसवदास दिखणी ।

२४९ मोटाराजारी बेटी कमळावतीबाई मऊरा खीची राव गोपाळदासनू परणायी ।

२५० प्राणमतीबाई डूगरपुररो रावळ सहसमल जिणरो बेटो करमसी जिणनू परणायी ।

२५१ दळपतजीरी बहन किसनावतीबाइ कछवाहा रुपसी वैरागररो बेटो तिलो-कसी जिणनू परणायी ।

२५२ चावडारी भाणेजी रुखमावतीबाई कछवाहा राजा महासिंघनू परणायी ।

२५३ भाटी सूरजमल लूणकरणोतरी बेटी राणी सजनांबाई जिणरी बेटी राजकवर भाण सगतावतनू परणायी ।

२५४ सतोखदेजीरी दूजी बेटी सतभामाबाइ हळवद झाला चदरसेणनू परणायी ।

२५५ कछवाहा राजा रामसिंघनू परणायी सोळकणीजीरी बेटी तीन ।

२५६ रभावतीबाई भाटी खेतसी मालदेओतनू परणायी । धनबाई नू ।

२५७ रूपकवर बाई ग्वालेर परणायी बेटो नरहरदास ।

२५८ कछवाही राजावत ग्वाळेररा राजा आसकरणरी बेटी मनरगदेजी ज्यांरा बेटा सूरजसिंघजी, किसनसिंघजी, बेटी बाई माना पातसाह साहजहारी मा ।

२५९ सवत १६४४ मानीबाइ साहजादा जहांगीरनू परणायी ।

राजा सूरसिंघजी

२६० सवत १६२७ रा वैसाख वद ७ रो जनम सूरजसिंघजीरो, सवत १६५७ रा असाढ वद ११ लाहोर पाट बैठा, सवत १६७६ रा भादवा सुद ८ राम कह्यो दिखणमे महकररे थाणै ।

२६१ सवत १६२७ रा वैसाख वद ६ फळोधी सूरजसिंघजीरो जनम सवत १६२६ सावण वद ७ राजा सूरजसिंघजीरो जनम सवत १६५१ असाढ सुद १५ सूरजसिंघजीनू लाहोर डेरा टीको दियो ।

२६२ सवत १६६८ पातसाहरी फौज दिखण माथै जावै, सारा राजा, नवाब भेळा जद महाराज सूरजसिंघजीरो उमराव भाटी जोगणीदास गोइददासोत जिणनू कछ-वाहा राजा मानसिंघजीरा उमरावरै हाथी सूडसू पकड घोडासू उतार मोरो कर दातामें पोयोडी कटारी वाही हाथीरै कुभायळ लागी, जोगणीदास मुवो ।

२६३. ओ हाथी राजा मान महाराज सूरजसिघजीरै मेलियो. ओ हाथी पछै महाराज सूरजसिघजी उदैपुरमें साहजादा खुरमनै दियो ।

२६४. ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिघजीरी निजर कियो. किताईक वरसां पछै ओ हाथी उदैपुरमे साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिघजी कियो ।

२६५. चतुरभुज सेज्ञा राणा प्रताप प्रतापीतरो जिणनूं संवत १६६९ सिवाणारो गाव फरमावस गांवा छवसूँ वरस अेक रह्यो जोधाणनाथ दियो।

२६६. संवत १६७१ उदैपुर राणाजीरी मुहिम महाराज सूरजसिघजी साथै हुता राठोड़ प्रथीराज वलूओत वैर दहियो मोवंणदास राव रतन हाडारो चाकर घरे जांवतो मारियो इतरा सिरदारां मिल ज्यांरी विगत-राठोड़ पिरागदास मानसिघोत काम आयो प्रथीराजजीरी भीरा, नरहरदास भाणोत, चांपो वीठळदास गोपाळदासोत ।

२६७. धांधल पचायण सूरसिघजीनू जहर न दियो, आप पियो ।

२६८. पचायणरै ईसरदास, ईसरदासरै मनोहरदास, मनोहरदासरै बेटा तीन-अेक गोवंददास जिणरा फैरूं, दूजो उदैकरण जिणरा साल, तीजो केसवदास जिणरा मोकळावस ।

२६९. संवत १६७६ रा सुकल पक्खमे दिखणमे महिकररा डेरा सूरजसिघजी देवलोक हुवा ।

२७०. संवत १६७६ रा भादवा सुद दिखणमे महकररै थाणै सूरजसिघजी देवलोक हुवा ।

राणियां और संतान

२७१. महाराज सूरजसिघजी लाहोररा डेरा कछवाहा दुरजणसाळरी बेटी सोभागदेजी परणिया. पीहररो नाम किसनावतीवाई ।

२७२. संवत १६८० रा फागण सुद ९ गोधूळीक सावै पग्वेजनू परणायी ।

२७३. सेखावत दुरजणसाळरी बेटी किसनावतीबाई सासरारो नाम सोभागदेजी ज्यांरा वेटा महाराज गजसिघजी सवत १६५३ रा काती सुद ८ जनम लाहोरमे हुवो ।

२७४ बेटी वाई मनभावती साहजादा परवेजनू परणायी, कछवाहा दुरजणसाळरा दोहिता महाराज गजसिघजी ।

२७५. महाराज सूरजसिघजीरो राजलोक डूगरपुररा रावळ सहसमलरी बेटी पीहररो नांव जसोदा, सासरारो नाव सुग्ताणदे ज्यारो बेटो सवळसिघजी । सवत १६६४ रो जनम. सवत १७०३ रा फागण वद ३ राम कह्यो ।

२७६ वहूजी अहाडी सुरताणदेजी रावळ सह्समलरी वेटी ज्यारा वेटा सवळसिंघजी ।

२७७ राजा सवळसिंघजी सूरसिंघोत महाराज गजसिंघजीरा छोटा भाई है, अेक हजारी मनसव, वरस ३९ री ऊमर हुइ ।

२७८ सागा परमाररी दोहिती वाई आसीकवरी चतरगदेजीरी वेटी कछवाहा राजा भावसिंघ मानसिंघोतनू परणायी ।

२७९ भाटी महसमल माऊदेवोतरी वेटी पारवतीवाइ अमोलखदेजी ज्यारी वेटी म्रगावतीवाई कछवाहा राजा वडा जैसिंघजीनू परणायी ।

२८० भाटी केलण गोयददासरी वेटी जोगणीदासरी वहन सुजाणदेजी महाराज सूरजसिंघजी परणिया साळगळी ।

राजा गजसिंघजी

२८१ महाराज गजसिंघजी सवत १६५२ रा काती सुद ८ व्रहसपति जनम सवत १६७६ आसोज सुद १० पाट वैठा बुरहानपुरमें सवत १६९४ जेठ सुद ३ रवि राम कह्यो आगरै हवेली जमनारै उपकठ ।

२८२ सवत १६५२ रा काती सुद ८ राजा गजसिंघजीरो जनम ।

२८३ सवत १६७६ विरहानपुर नवाव खानखा महाराज गजसिंघजीनू टीको दियो आगरासू पातसाह जहागीर सपद माला साथै विरहानपुर मेलियो हो ।

२८४ सवत १६७६ पातसाह जहागीर आगराथी टीको बुरहानपुर मेलियो महाराज गजसिंघजीनै ।

२८५ सवत १६७७ अवर चपू महकर घेरा दियो महाराजा गजसिंघजी आछा हुवा ।

२८६ सवत १६७८ खुरम आयो जद अवर चपसू वात ठहरी वरस दोय विग्रह रह्यो ।

२८७ सवत १६८१ रा काती सुद १५ महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीम अमरसिंघोतनू जगमे मारियो ।

२८८ सवत १६८१ काती सुद १५ हाजीपुर पटणै गगा ऊपर साहजादा खुरमथी वेढ हुई महाराज गजसिंघजी सीसोदिया भीमनू मारियो भीमरा इता काम आया--सीसोदियो मानसिंघ भाणावत, कूपावत कछरो, जसवत सादूळोतरो २ जैतारणियो हरिदासरीयोत ३ -- राठोड राघोदास घावै पडियो वळूओत जैतारणियो भीम करयाणदासोत सीसोदियो गोकळदास भाणावत अै घावै पडिया ज्यानू महाराज गजसिंघजी उपडाया जतन कर जिवाया ।

२८९ सवत १६८४ रा असाढ वद ८ फतैपुर कनै सीसरावीरी गढी भेळी गजसिंघजीरै साथ जद इतरा राठोड काम आया नवाब सिरदारखान पातसाही फौजरो

मालक हुतो. राठोड़ भगवानदास वाघोत १, राठोड़ गोकळदास विसनदासोत २, जैतारणियो दयालदास कल्याणदासोत ३ वगेरै ।

२९०. हाडा इण ठोड़ घणा काम आया नै संवत १६८४ रा असाढ वद ८ फतैपुर कनै सीसराळी गढी हुती ।

२९१. श्री महाराजाधिराजजी श्रीगजसिंघजी महाराज कंवर श्रीजसवंतसिंघजी वचनातु आसोप कोटा पत राठोड़ गजसिंघजी दीसे सुप्रसाद वांचजो. अठारा समाचार भला छै. थारा ·····।

२९२. महाराजरी गुणपचास वरसरी ऊमर हुई, चौईस वरस राज कियो ।

राणियां

२९३. संवत १६६३ कछवाहा राजा जगरूपरी बेटी कलियाणदेजी टोडै जाय परणिया महाराजकंवार गजसिंघजी पैलो व्याव ।

२९४. टौडै पधार परणिया. कलियाणदेजी नाम ।

२९५. संवत १६६३ असोपालवैरो बिहु महाराज सूरसिंघजी भाटी गोइंददास मानावतनू दिया. इणहीज बरस तोडै कछवाहा राजा जगनाथरै राजा गजसिंघजी परणिया. सीतळारी पीड़ा घणी हुई. गोइंददास मानावतरो बेटो मोहणदास कंवरजी माथै उंवाराणो. कंवरजी वचिया, मोहणदास मुवो ।

२९६. महाराजकवर गजसिंघजी तोडै कछवाहांरै परणियो उठै सीतळा निसरी सू सीळ सावण आपड़िया जद गोइंददास मानावतरो बेटो मोवणदास कुंवरजी माथै तोडै उंवाराणो. कंवरजीरै सीतळा आछी तरैसू तूठी. मोवणदास मुवो ।

२९७. कछवाहा राजा मानसिंघ भावसिंघ मानसिंघोत बेटी सूरजदे महाराज गजसिंघजी आंवेर जाय परणिया जिका आगरै महाराज साथै वळी ।

२९८. संवत १६६९ माह वद ५ कंवर गजसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया. भाटी गोइंददास साथै हुवो ।

२९९. चहुवाण अमरतदे सिखरा महकरणोतरी बेटी संवत १६६४ गांव खेजड़ली पधार परणिया महाराजा गजसिंघजी ।

३००. चहुवाण सिखरा महकरणोतरी बेटी अमरतदे संवत १६६४ गांव खेजड़ली पधार परणिया महाराज गजसिंघजी ।

३०१. चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

३०२ वहू सीसोदणी परतापदेजी रुकमावतीवाई भाण सगतावतरी वेटी सवत १६६४ मथुराजी व्याव हुवो नानै भावुआरै राजा केसौदास माम्ह परणायी गजसिंघजीनू स० १६७९ जोधपुर राणीपदो पायो मगसर ५ महाराज जसवतसिंघजी ।

३०३ सवत १६७९ रा भादवामें सीसोदणी परतापदेजी कवर जसवतसिंघजीरी मा जिणनू राणीपदो दियो जोधपुर पधारनै महाराज गजसिंघजी ।

३०४ वाघेलो वाधूगढरो घणी राजा अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी चद्रकवर परणियो ।

३०५ रीवा मुकदपुररा राजा वाघेला जिण राजा वीरासिंघदेव वाघेलो जिणरो राजा वीरभद्ररो राजा विक्रमादित्यरो अमरसिंघ महाराज गजसिंघजीरी बेटी परणियो जोधपुर ।

३०६ अनारो१, देसो २ – अै दोनू वहना महाराज गजसिंघजीरी मरजीरी लिवी ।

जसवंतसिंघजी

३०७ महाराज जसवतसिंघजीरो जनम बुरहानपुर हवेली सवत् १६८३ रा माह वद ४ वुरहानपुररो जनम महाराज जसवतसिंघजीरो ।

३०८ महाराजकवार जसवतसिंघजी वूदी राव चत्रसाळजीरी बेटी परणिया दूजै दिन महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा कवरजी वूदीसू परवारा आगरै गया ।

३०९ पातसाहनू खबर हुई– जसू आया जद साहजादा मुरादवख्सनू डेरै मेलनै मातमपुरसी करायो फुरमायो साहजहा– आछी सायत जोय हजूर आवो सवत् १६९४ रा असाढ सुद ४ सोमवार पातसाह उमराव दोय डोढी ताई मेलिया उणा ले जाय पावा लगाया श्री पातसाहजी महाराजनू छातीसू लगाय दिलासा दिवी सिरपाव मोतियारी माळा दे मदामदरो मनसव दे देसरी सीख दिवी ।

३१० सवत् १६९५ रा असाढ वद ७ जोधपुररो टीको पायो जसवतसिंघजी ।

३११ सवत् १६९४ रा असाढ वद ७ टीको पायो महाराज श्री जसवतसिंघजी ।

३१२ आगरै साहजहा आपरै हाथसू महाराज जसवतसिंघजीनू टीको दियो ।

३१३ आगरै साहजहा पातसाह महाराज जसवतसिंघजीनू टीको दियो जद उमरावानू सिरपाव दियो ज्यारी विगत–

३१४ राठोड राजसिंघ खीमावतनै १, राठोड रतन राजसिंघोतनै २, राठोड भावसिंघ कान्होतनै ३, राठोड वीठळ गोपाळदासोतनै ४, राठोड सुन्दरदास रायसिंघोतनै ५, रावळ भारमल जगमालोतनै ६, राठोड जगतसिंघ रामदासोतनै ७, राठोड

वनमाळीदासनै ८, आढा किसना दुरसावतनै ९, राठोड़ गोवरधन चांदावत कूपा १०—आं दस आदमियांनै ।

३१५. संवत् १६९७ रा फागणमें चापो महेशदास सूरजमलोत प्रधान हुतो महाराज श्रीजसवंतसिघजीरै ।

३१६. महाराज जसवतसिंघजी लोहाईरा डेरां संवत् १६९८ रा आसोज सुद १० बाईस घोड़ा चारणांनू नै सिरदारांनू दिया, दोय लाख-पसाव दिया, अेक लालस खेतसीनूं, दूजेरो आढा किसनानू ।

३१७. श्री महाराजाजीरो साथ ले मुहणोत सुंदरदास, चांपावत लखधीर विठळदासोत गावं सीधलारै . . . . सीधल वाघ आदमी ४०० सू गांव . . . . ।

३१८. संवत् १७०१ रा पोस सुद ७ महाराजा श्रीजसवंतसिघजीरै ज्वर निपट जोर कियो . पातसाह साहजहां कूपावत राजसिघ खीमावतनू हाथी जै जीतवा दियो हो सो हाथी महाराजा दान दियो. व्रिग रामदास दिखणी हमै चाटसू रहै जिणनू रुपिया १०००) ऊपर दिया. पछै रातरै समै सीतळा देखायी दिवी ।

३१९. रावळ मनोहरदास मुवो संवत् १७०६ रा काती सुद १५ जद पातसाहजी ।

३२०. संवत १७०६ रा फागण सुद २ जसवंतसिघजी पहोकरणवासी महारावळ सवळसिघ महाराजाजीरी फौज मांहे हुतो . रोजीना पचास रुपिया पावतो . सारा सवार डोढ हजार अढाई हजार फौजमे पाळा हुता ।

३२१. सवत् १७०६ रा असाढ वद ३ जोधपुरसू फौज पोहकरण माथै विदा किवी . राठोड़ गोपाळदास सुदरदासोत मेड़तियो १, राठोड़ वीठळदास सुदरदासोत मेड़तियो २, वीठळदास गोपाळदासोत चापो ३, नारखान राजसिघोत कूपो ४, भँडारी जगनाथ ५, मुणोयत नैणसी ६, सिगवी प्रताप ।

३२२. रावळ सबळसिघ जेसळमेररा उमराव भाटी पोहकरण किला मांहे हुता ज्यानू वात कर काढ दिया . दरबाररो अमल करायो . भाटियांरा जणा अढाईसै गढ मांहे हुता ज्यां मांहसू तेरै जणा काम आया पडाव रहिया हुता जिके दूजा निसरिया ।

३२३. राठोड़ सुजाणसिघ केहरसिघोतरो रजपूत भाटी रुघ . . . . . . चापा अमरा सुरजनोतरा रजपूत काम आया. सवत १७०६ रा आसोज सुद १५ पोहकरणमे अमल हुवो जसवंतसिघ महाराजरो ।

३२४. सहर उजेण संवत् १७१४ रा वैसाख वद ९ सुक्र ओरंगजेव मुरादवखससू महाराज जसवंतसिघजी जंग कियो ।

३२५ तोपखानारो मालक कासमखान ओ महाराजा जसवतसिघजी माथै विदा किया उजैण थाणै ।

३२६ हिंदुआरी विगत– हाडो मुकनदास,गोड अरजुण, भीम राठोड, रतन महेसदासोत, सूरजमलोत, मीसोदियो राजा अमरसिघ, भीम अमरसिघोतरो मीसोदियो, सुजाणसिघ अमरसिघोत–इत्यादिक वाईस आमामिया महाराजरै तारै किवी पातमाह साहजहा ।

३२७ १२८२ आसामीदार काम आया ज्यारा राजपूत ७०१ काम आया ३०० घोडा वढिया अेक हाथी माराणो राठोड सुजाणसिघ केहरसिघोत घावै पड उपडियो रजपूत १२ मुहता सुधा काम आया ।

३२८ ठाकुर च्यार तथा सात पैंला उपाडिया भाटी रुघनाथ १, राठोड महासिघ जगनाथोत २, राठोड रायमल केसरीसिघोत ३ इत्यादिक ।

३२९ राठोड द्वारकादास वळूओत मीसोदिया रायसिघरो चाकर काम आयो ।

३३० जैतारणियो वळराम दयालदासोत, आसकरण वळरामोत, कुंभकरण वळरामोत, वीरमदे मुकनदासोत, सुदरदास वेणीदासोत, करमसोत प्रथीराज, दळपतोत प्रमुख, घायल किसनो नारणोत, भाटी रतन भीम प्रयागदासोतरो, सोनगरो जगतसिघ रायसिघोत पडि उपडियो उजीण पिरोयत दळपत मनोहरदासोत, ऊहड मेघराज उरजणोत, मेडतियो गोपीनाथ गोकळदासोत, गरीबदास सुजाणसिघोत मुरारीदास गोयददासोत प्रमुख खीची जोगीदास वलावत, पडियार सादो भीमावत, चारण जगमाल, जूजाणियो नारण वाघावत, भायल रामसिघ रुघनावत नै देदो सावळात इत्यादिक उजैण काम आया १३० घायल हुवा तीर नै गोळीसू ।

३३१ चाारन वीठळदास गोपाळदासोत, भीम वीठळदासोत, वीजो हरीदासोत, दयाळदास सूरजमलोत, विसनसिघोत, गेतसिघोत अे उजण काम आया ।

३३२ राठोड रतन महेसदासोत माथै इतरा उजैण काम आया- राठोड माहवसा कुंभकरण वाघोतरो जैतो, चहुवाण वीठळ किसनदासोत, चहुवाण सूजो ईसरदासोत, चहुवाण अमरदास नै भगवानदास माहूळ रावतसीहोतरा, भाटी कुंभकरण सुरताण रामोतरो वेटो, भाटी अजो केसण, राठोड गिरधरदास किसनदासोत मागो, राठोड पचायण हरदासोत, राठोड नरहरदास वीकानेर, राठोड गोपीनाथ राव सगतसिघरो पोतो, राठोड वेणीदास राजसिघ सूरज-मलोतरो नापो, राठोड दुवारकादास वळू गोपाळदासोतरो चापो, राठोड भारसिघ मेडतियो जैमलोत, माहव राघारा बेटा तीन- सांगो १, रतनसी २,

रूपसी ३, बारट गमो वेणीदासोत, सोनगरो वीरमदे, कछवाहो स्यामसिंघ राजावत, राठोड़ हरीराम लखमावत, मुंहतो सांवळदास रूपसीरो, पड़िहार धनराज, थोरी भूरियो, दमामी गुणो।

३३३. औरंगजेब साहसुजा सामो गयो. महाराज जसवंतसिंघजी साथ हुता. छानै साहसुजासूं मिळिया. साहसुजा कह्यो म्हे भाई भाई काले साथै जोधपुर पधारो. औरंगजेबरै नै साहसुजारै जंग हुवो. पातसाही लसकररा डेरा लूटनै महाराज मारवाड़नूं पधारिया. मारगमें पातसाही सहर मालू लूटिया।

३३४. साहसुजानूं जीत पातसाह दिली आय रायसिंघनूं जोधपुर लिख दियो. महाराजा सामी फौज मेली. रायसिंघनूं मारवाड़मे आवण न दियो. आ वात सुण औरंगजेब मनमें कोप कियो।

३३५. हुरमखानो लूट इकवीस पालत वीज वाहणरा भरि महाराज डेरै आणी।

३३६. राठोड़ रणछोड़दास गोइंददासोत महाराजा श्रीजसवंतसिंघजीरी तरफसूं नेवोजी अवम और गोइंदराय साहजादा मुहम्मद मुअज्जिमरी तरफसूं राजगढ सिवा कनै गया. सिवै सिवारी मा रणछोडदासजीरै हाथ सिवारो वेटो संभाजी वरस ११ मे महाराजरो बोल ले सूंपियो।

३३७. काती सुद ३ रा राजगढसूं सिवै विदा किया. तीनसै असवार संभाजी साथै. राठोड़ रणछोडदासजीनूं घोड़ो सिरपाव दियो. दुगदुगियां न लिवी. अेक घोड़ो, अेक सिरपाव, अेक दुगदुगी खोजा अवमनूं दियो, इनरो ही समाधान गोइंदरायरो कियो. मिगसर वद ५ रवि ओरंगावाद आया. संभानूं महाराजरा पावां लगायो. मिगसर वद ६ सोम महाराज साहजादासूं मुलाजमत करायी तरै पांच हजारियांमे संभानूं ऊभो राखियो, सिरपाव दियो पांचहजारीरो मनसब दियो. महाराजरी कचहड़ी नजदीक संभारो डेरो हुवो।

३३८. मिगसर वद १२ रवि साहजादै संभानूं विदा कियो. घोड़ा २, कपड़ो, दुगदुगी १, पुणचियांरो जोड़ो १ संभाजीनूं इत्ता दिया. कटारी जड़ावरी १, दुगदुगी अेक ७२००) री, थान नव कपड़ो सेवानूं भेजियो. राठोड़ रणछोडदास गोइंददासोत संभाजी साथै भेजियो. दिन आठ संभाजी औरंगांवादमे रह्यो.

३३९. महाराज श्रीजसवंतसिंघजी लाहोररा डेरा संवत् १७२३ रा पोस वद ८ राठोड़ श्रीआसकरणजीनूं मया कर देस सूवो दियो. इत्ती चीजां हजुर इनायत किवी—सोनारी साकत घोडो १, सिरपाव वासो १, वधारारो हुकम कियो. पंचोळी केसरीसिंघजी आसकरणजी मिल मारवाड़रो काम करै।

३४० संवत् १७३० महाराजनूं काबुलनूं विदा किया पठाण मारै सुजातखां नवाब महाराजरी ताबीनमें ।

३४१ संवत् १७३० रा फागण सुद ५ सोमवार पठाणसूं राड हुई सुजातखां काम आयो महाराजरो ही लोक काम आयो फतै महाराजरी हुई ।

३४२ औरंगजेब खिताब दियो राज जसवंतसिंघ महाराजा दुवार मेडतिया गोपालदास सुन्दरदासोतनूं जगतरा नामा हाथी, चापा हाथी, रूपा गोवर्धन चांदावतनूं रणजीत हाथी—जुमलै तीन हाथी सिरदारा तीननै जसवंतसिंघजी अेक दिन दिया ।

३४३ मुलतानरा डेरा बनारसीदास जैनीनै महाराज जसवंतसिंघजी आग्या किवी—अध्यातम ग्रंथ बणाव ।

३४४ महाराज जसवंतसिंघजी लिखता सही थी परग्रमजोरी छै ।

३४५ महाराज जसवंतसिंघजी राजा सबळसिंघजी सूरजसिंघोत ज्यांरी बेटी संवत १७०७ रा काती वद ५ देवळियै परणायो जद हयगी चबेली डायजै दिवी ।

३४६ संवत् १७३५ रा पोस वद १० महाराज जसवंतसिंघजी देवलोक हुवा वीस गायणिया नै राणी चन्द्रावतजी रामपुरारा राव अमरसिंघरी बेटी मंडोवर जाय सत कियो जोधपुरसूं ।

३४७ संवत १७३५ रा चैत वद ५ अजीतसिंघजीरो जनम दुरगादास आसकरणोत १, चांपावत महासिंघ २, मेडतियो मोहकमसिंघ जगावत ३, रूपो ऊदावत ४, गिरधरदास भीमराज बीदावत ५—अै दिलीसूं मारवाडमें लाया ।

३४८ संवत् १७३५ रणछोडदास दिली काम आया संवत् १७३६रा भादवा वद ११ राजसिंघ मेडतियो नेग गादूळनू मारियो मेडतो लियो ।

राणियाँ और संतान

३४९ महाराज जसवंतसिंघजीरै राणियांरी विगत—पहली श्री भटियाणीजी राव जसवंतदेजी राउळ मनोहरदासरी बेटी, पीहरसो राव [illegible] संवत् १६९३ रा वैसाख सुद १० घडी आठ रात गया जेसळमेर ब्याह परणिया महाराजदे ।

३५० महाराज जसवंतसिंघजीरै राणी भटियाणी जसवंतदेनी राउळ मनोहर-दासरी बेटी ।

३५१ संवत् १६९८ [illegible] परणिया राव [illegible] बेटी [illegible] [illegible] ।

३५२ वहूजी भटियाणीजी वाछळदेजी रावळ कल्लारी वेटी रामकंवरबाई संवत् १६९८ जेसळमेर जाय परणिया. रावळ भीम व्याव कियो गोइंददासजी साथै व्यावमे हुता ।

३५३. सोनगरा जसवंतरी वेटी मनसुखदेजी भागवतीबाई संवत् १६९८ मणियारी पधार परणिया. वेटी अमरसिंघजी ।

३५४. संवत् १६९१ रा चैत वद ७ गढसूं उतर अमरसिंघजी पटो पायो वडेद जठै पधारिया ।

३५५. वाघेला सागारी वेटी वाघेली कसूंवदेजी सोभा सीकदारै घरै परणिया. जोधपुर डोळो आयो थो. ज्याका गढी तळाव नवो बंधायो ।

३५६. नरूकी केसरदेजी चंदरभाणजीरी वेटी संवत् १६७९ रै असाढ गांव पनवाड़ परणिया, परवेज साथ जातां. संवत् १७३५ पोस वद १० जोधपुर सती हुवा ।

३५७. कछवाहा राजा भावसिंघजीरी वेटी सूरजदेजी राजा जैसिंघजी व्याव कियो. आंवेर जाय परणिया. आगरै सहगवन कियो राजाजी साथ संवत १६९४ रा जेठ सुद ३ ।

३५८. सेखावतजी खंडेलारा अतरंगदे सासरारो नांव, जानकंवर बाई पीहररो नांव, राजा वरसिंघ दुवारकादासोतरी वेटी महाराज जसवंतसिंघजीरी राजलोक, कंवर प्रथीसिंघजीरी मा. ज्यां तळाव खणायो, वंधाय नांव जानसागर. कोई लोग सेखावतजीरो तळाव कहै ।

३५९. वहूजी श्री हाडीजी नाम जसवंतदेजी राव चत्रसाळरी वेटी संवत् १६९४ रा जेठ सुद २ सनी वूंदी पधार परणिया. जेठ सुद ३ महाराज गजसिंघजी देवलोक हुवा. पीहररो नांव कोमकंवरी ।

३६०. वहूजी हाडी जसवंतदे चत्रसाळ वूंदीरा रावरी वेटी संवत् १७२६ रा वैसाख सुद १३ राणीपदो पायो औरंगावाद में ।

३६१. चहुवाण जगरूपदेजी दयालदास सिखरावतरी वेटी संवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर जातां डोळो आयो, विलाड़ै परणिया ।

३६२. वहूजी चहुवाणजी चहुवाण दयालदास सिखरावतरी वेटी पातांरी भाणेज नाम जगरूपदेजी पीहररो नांव रायकंवरी संवत् १६९७ रा फागण सुद ३ लाहोर पधारतां गांव विलाड़ै डोळो आयो परणिया ।

३६३. वहूजी गोड जसरदे मनोहरदासरी वेटी संवत् १७०६ रा फागण वद २ राजा वीठळदास व्याव कियो गढ रणथंभोर ।

३६४ कछवाही अतिरगदे वीरसिहरी बेटी सवत् १७०६ रा जेठ सुद ८ परणिया खडेलै जाय मेडताथी।

३६५ कवर प्रथीसिघ राजा जसवतसिघ राजा गजसिघोतरो दिली देवलोक हुवो राठोड जुझारसिघ दलपतोतरो जिणरी हवेली कनै दाग पडियो।

३६६ कवरजी प्रथीसिघजी जसवतसिघोत दिली देवलोक हुवा राठोड जुझारसिघ दळपतोत जिणरी हवेली कनै दाग दिराणो गोडजी सत कियो सत करता फुरमाया–महाराजसू मालम कीजो आगरै महाराज गजसिघजी माथै जायगा करायी म्हारै ही जायगा करावै।

३६७ कवरजीरै थडै सेवा करणनै व्यास सोभो रहियो।

३६८ गोडजी सत करता फुरमाया–महाराजसू मालम कीजो माहरै अठै जायगा करावै महाराज गजसिघजी माथै आगरै जायगा करायी जिसी।

३६९ कवरजीरै थडै व्यास सोभो सेवा करणनू रह्यो।

३७० दळथभणजी नरूकारा भाणेज महाराज जसवतसिघजीरा बेटा।

३७१ हिंगळाजजीसू रिखसिवपुरी सन्यासी हररामपुरीरो चेलो काबुल आयो मालम करायी, पाच बरस मे हिंगळाजरा चरणा तप कियो, माईरी अग्या हुई समाध लेनै जसवतसिघरै कवर होय, नवकोटीरो राज कर, जंमू मानै समाध दिराडो महाराज ठाकर आदमी भेज समाध दिराडी, भडारो करायो इण कह्यो–राणी जादवणीरे पेट आऊगा, महाराज हमारा मुख न देखै, म्हे महाराजका मुख न देखू सवत १७३५ रा भादवा वद ९ सन्यासी दुपहररी समाध कावलमें लिवी रभूतरो गोळो, माळ १, पोथी १ मूपी रह्यो–इ माग लेसू।

अजीतसिंघ

३७२ दिली सरदार दुरगादासजी वगेरा पेसोरसू आया ज्या कनै तीन सौ स्यार सौ जोर हुतो ज्या माथै तीस हजार घोडो ले मीरी आयो।

३७३ दुरगादासजी दिलीसू आपरी वसी साथ ले सिधारो त्यारी करी सिरोही सीमरूं गया।

दूहो – दुरगो ऊदषा दिली दळा, जद आयो जोधार।
वारै के भाणर वरी, दिगो दियो निण वार॥

३७४ अपूरा अजमेर सिरा मोरा वीठळदासोत सिसोदियो भीमसिघ राणा राजसिघरो बेटो सिधारो मारफत बातचीत करी – म्हारो गोर पीजै जद गाजाराम वेगारै ने सोनगजीरै मुजरारो बात कसमी हो सवत १७३८

आसोज सुद ७ गांव खुदळोते सोनगजी राम कह्यो गोड़ सती हुई. वात यूंहीज रही ।

३७५. सवत १७३८ में डीडवाणारी पेसकसी ले चापावत अजवसिंघ वीठळदासोत मकराणो लूटियो काती वद १४ सहर मेड़तो लूटियो. दिन दोय ईंदावड़ रिया ।

३७६. असदखारो वेटो इकतारखां नै सिरदारखां पातसाही फौज ले आया. लड़ाई किताईक सिरदारा सहित अजवसिंघ वीठळदासोत काम आयो. काती सुद १ वार सोम ।

३७७. इण झगडामे तीन चारण काम आया. मेड़तिया सिरदार तीन काम आया. अजवसिंघजी सूधां पांच चांपावत काम आया. जुमलै राठोड़ इग्यारै काम आया ।

३७८. चापावत उदैसिंघ लखधीर वीठळदातोत नै करणोत खीवकरण आसकरणोत नै मेड़तियो मोकमसिंघ कल्याणमलोत – आ संवत १७३८ रा कातीमे मांडल मारिनै कासमखा दिखण जातो हो जिणसूं रोळो कियो ।

३७९. संवत १७४३ रा वैसाख वद ५ सिरोहीरै गांव पालड़ी महाराज अजीतसिंघ-जीनू पधराया. सारा दरसण कियो. चांपो उदैसिंघ लखधीरोत पांवां लागो. बीजो ही साथ पांवां लागो ।

३८०. संवत १७४३ रा आसोजमे राठोड़ दुरगदास आसकरणोत दिखणसूं मारवाड़में आयो नै भोमिया जमीदार थावां मिजमानी मेली नै घोड़ा नजर किया नै पातसाही मुलक लूटिया. आगरासू वीस कोस आंतरै हंसाररो मुलक लूटियो ।

३८१. जेठ सुद ५ मालपुरै सइयद कुतव थो. सामो आय लड़ियो. सइयदरा आदमी सारा काम आया. पछै पगां लागो ।

३८२. संवत १७४३ रा आसोज सुद १ गांव रतनथळ सइयदांसूं लड़ाई हुई सो सइयद मारिया राठोडां ।

३८३. संवत १७४४ रा सावण सुद १० भीवरळाई आय वाडमेर अकवररा वेटा सुलतान साहजादारै पगा लागा घर बैठा रया ।

३८४. पछै महाराज श्रीअजीतसिंघजी तलवड़ै मलीनाथजीरा दरसण पधारिया. पछै भीवरळाई काती वद १० पधारिया जद दुरगदास आसकरणोत सारा साथसू सामो आय पगा लागो. सिरपाव दियो. पछै सला ठहरायी श्रीमहाराज पीपळोदरा पहाड पधार विराजो नैं म्हां कनै साथ सांवठो छै, धरतीमे घोड़ो फेर आवां छां ।

३८५ सवत १७४४ रा काती वद १३ हाडो दुरजणसिंघजी, राठोड अखैराज, रतनो जोगो, राठोड दुरगदास आसकरणोत, चांपो मुकनदास – अै सोजत जोधा सुजाणसिंघ केहरीसिंघोत मार्य गया उण सहर गढ सवायो मामलो कियो केईक राजपूत काम आया।

३८६ सवत १७४५ रा मिगसर वद ५ गूघरोटरा डेरा महाराजरा पगा दुरगदासजी लागा दुरगदासनू नै उदेसिंघनू सिरपाव देनै काम सूपियो या दोनारा कामदार मेलिया काम करता।

३८७ सवत १७४५ रा फागण वद ८ जाळोररी पेसकसी लैणनू राठोड तेजकरण दुरगदासोतनू नै राठोड राजसिंघ अखैराजोतनू मेल्लिया गाव सारणासू कूच करता दीवान कमालखारी फौजसू मामलो हुवो।

३८८ चद्रावतासू राठोड अखैराज रतन महेसोतरो जिणरै वैर हुतो सू महियारिया पूरणदासनू मेलनै चद्रावता कनासू दोय सगाई दिरायी नै केईक रुपिया दिराया अखैराजजी महाराज साहब सवत् १७४४ चैत सुद ५।

३८९ रानाडीरा सिरदाररो बेटो केहरसिंघ तुरकाणीमें जोधपुर कनासू चौथ लिवी सायद –

केहर चौथ जोधपुर कीवी।

३९० जोधपुर व्यास हरकिसन हरवसरो तुरकाणी तुरकासू मिळियोडो हो साचोरा गिरधर रुघनाथरो चाकर दोय सपी मनमवरो।

३९१ सवत् १७६५ सावण वदि ११ महरावणा जोधपुरनू अजमेरनू कूच करै।

३९२ श्रीजी गढ पधार सवत् १७६५ रा सावण वद १२ सिंघासण विराजिया राजा सवाई जैसिंघजी टीको कर मोतियारा आखा चेंठिया, हाथी - घोडा नजर किया बीजा ही नजर किवी

३९३ सूरसागररा महल सवाई जैसिंघजीरा डेरा ब्रमकुड दुरगदासजी आसकरणोतरो डेरो।

३९४ सवत् १७६५ रा काती सुद १ आठ हजार कटाजूझ सिपाही घोडा सवार हो सइयद गैरतखा हसनखा हुसैनखा सहे आया पहोर ताई राड हुई तोपखानो घणोई सइयदरी सार्य हुतो पिण फतै श्रीजीरी हुई ठाकुर दुरगदासजी नरूको सगरामसिंघजी।

३९५ मेडतियै किल्याणसिंघ राजसिंघोत अरज किवी, राठोड हिंदूसिंघ अरज किवी ठाकुर दुरगदासजी ही सामल रह्या, जद महाराज अजीतसिंघजी महरावखानू जीवतो जावा दियो।

३९६. भेळा हुआ. मता घणी हाथ आयी च्यार कोम तांई तुरकारी कतल किवी. कूपो भींव सवळसीहोत काम आयो ।

३९७. महाराज अजीतसिघजी जाळोर थकां तेजसिध आईदानोतनूं हरजी दिवी. जगनाथ आईदानोतनू आहोर दिवी ।

३९८. दिली खीवसी भंडारीनूं महाराज अजीतसिघजी लिखियो—गुजरातरा सोवारी खिलत पहलां तोनूं हवै नै उजीणरा सोवारी खिलत दोय घड़ी पछै भगतणके तो माहारो आछो लागे. भगतण जैसिघजीरो नांव दियो हो ।

३९९. धायभाई वखतराय १, नानगराय २, खेरड़ो दलेलसिघ ३, कहाहनीराय ४, अै च्यार ही अजीतसिघरा चाकर अडसीजीरा धावनिया ढेरिया हा ।

४००. वगड़ीरो धणी अरजुणसिघ प्रतापसिघोत अजीतसिघजीसूं वदळियो. उदैसिघ लखधीरोत वदळियो पालीरो धणी ।

४०१. आ खवर सूराचंदरा डेरां महाराज अजीतसिघजी पाय चैत वद २ महाराज सूराचंदसूं चढिया – चैत वद ५ सवा पहर दिन चढिया, जोधपुर पधारिया. सूराचंदसूं जोधपुर कोस १२० ।

४०२. फर्रुखसियर महाराज अजीतसिघजीनूं गुजरातरो सूवो दियो जद भंडारी विजैराज सूवै रहियो. पछै महमदसाह अजीतसिघजीनूं गुजरातरो सूवो दियो जद रुघनाथ आडो वैठो, अनोपसिंघ सूवै रहियो. अभैसिंघजीनूं गुजरात महमदसाह दिवी जद रतनसिघ सूवै रहियो ।

४०३. महाराज श्रीअजीतसिघजी नागोर मवि पधारिया जद राव इंदरसिघजी, कंवर गोपाळसिंघजी हैदरावादको नवावनू जंग मुलमुलक जिणरै सामल हुता। कूपावत प्रतापसिघजी ककड़ावरा धणी भावसिघजी रो पोतो तिण नागोर संभाळियो. हजूर राजी हुवा. नजराणो ले वाला पधारिया ।

४०४. महामाया हिंगळाज प्रसादात छत्रपति महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिघ देव विजयते भानु तेज स्वरूपेण मही-मध्येपु राजते—अै आखर अजीतसिघजीरी महोरमें ।

४०५. देवळियारा धणीरी वेटी कल्याणकंवर महाराज अजीतसिघजीनूं परणायी. आ मुई जद इणरी छोटी वहन अनोपकंवर महाराज अजीतसिघजी देवळियै पधार परणिया ।

४०६ देवळियै सीसोदिया रावल हरीसिघरा वेटा कुंवर प्रिथीसिघरी वेटी कल्याणकंवर महाराज अजीतसिघजी देवलियै पधार परणिया ।

४०७ अभैसिघजी १, वखतसिघजी २, रामसिघजी ३, अणदसिघजी ४, सोभाग-मिघजी ५, प्रतापसिघजी ६, रतनमिघजी ७, रूपसिघजी ८, सुरताणमिघजी ९, उदोतसिघजी १०, छत्रसिघजी ११, किसोरसिघजी १२, गागोजी १३–इता महाराज अजीतसिघजीरा कवर हुवा ।

४०८ किसोरमिघजीरी अेक माई वहन उदेपुर परणायी रामसिघजी वखतसिघ-जीरै जग हुवो जद रामसिघजीरै सामल रह्या महाराज किसोरसिघजी ।

४०९ महाराज वखतसिघजी राजाधिराज कहावै, किसोरसिघजी तेगवहादुर कहावै ।

४१० महाराज अजीतसिघरी वेटी सूरजकवरवाई सवाइ जैसिघजीनू परणायी, सोभागकवरवाई गणा जगतसिघजीरा कवर प्रतापसिघजीनू परणायी इद्रकवर परणायी कुळकवरवाई जैसळमेर रावल अखैराजजीनू परणायी ।

अभैसिघ

४११ नवाब सेर वुलदखा काळीरा कोट कनै डेरा किया ।

४१२ आठ हजार सवार, दस हजार सवार प्यादल नवाब कनै हुता छोटी-मोटी नवसै तोप नवाव कनै हुती ।

४१३ आसोज सुद ७ कोचर पालडी महाराज अभैसिघजी वखतसिघजी डेरा कर मोरचा पाच सहरनू नै भदरनू लगाया च्यार मोरचा अभैसिघजीरी फौजरा, अेक मोरचो महाराजा वखतसिघजीरी फौजरो ।

४१४ महाराज अभैसिघजीरी फौजरै अेक मोरचै ठाकुर अभैकरणजी महासिघजी नै जीवणी मिसल भागीरथदासजी ।

४१५ दूजै मोरचै सेरसिघ सिरदारसिघोत, प्रतापसिघ भीमोत डावी मिसलनै पुरोहित केसरीसिघजी ।

४१६ तीजै मोरचै मारोठरो नै चोगामीरो साथ नै भडारी विजैराजजी ।

४१७ मोरचै चौथै गुजराती सिपाही नै भडारी रतनसिघ ।

४१८ राजाधिराजरी फौजरै मोरचै नागोररा सिरदार नै पचोळी लालो ।

४१९ भदरम नवावरो ववीलो हुतो मो अेक चीवीरै गोळो लागो आसोज सुदी १० सनीवार वडो फजर हो नवाव सेरसिघ सिरदारसिघोतरा मोरचा माथै आयो जद अभैकरणजी नै चापावत करण राजसिघोत दौडनै सेरसिघ-जीरै मोरचै आया उठै वेढ हुई तीनसै आदमी मियारा काम आया ।

४२०. चांपावत करण राजसिघोत १, मेड़तियो भोमसिंघ कुमळसिघोत २, पुरोहित केसरीसिंघ ३, जोधो हरीसिंघ जोगीदासोत ४, धांधल भगवानदास ५।

४२१. ठाकर अभैकरणजी पूरा लोहां पाड़िया. महाराज डेरा मोरचांसूं अळगा हुता. सो आ खबर आयी. तिण सायत श्रीमहाराज अभैसिंघजी वखतसिंघजी असवार होय कटकरी अगाड़ी तांई पधारिया. इतै अरज मालम हुई, राड़ हो चूकी. जद घोड़ा चलायासूं मियां मियां पूर उठै राखी आगै तो पांचल ऊभो रह्यो चौड़ै आयो नही. जद दोनूं माहिब ईसवररो नाम ले नै लूटता तोपखाना सामा घोड़ा उठाया सो तोपखाना लोप तरवारां भीळिया. अेक पहोर भीक वागो. मियांरै साथ मनसवदार हाथियांरा सवार हुता जिके इता काम आया—आबद अलीखां १, जमलुदीखां २, सइयद कायम ३, पठाण तरीनखां ४, सेख अलैयार ५, थानसिंघ ६, दुरजणसिंध ७, अेकहजारी ८. तीनसै सिपाही नवावरा और काम आया. नवावरा इतरा घायल हुवा—सेख मुजायद १, सेख जमादी अलीखां २, आगा महमदरो वेटो ३. और सिपाही पनरै सै घायल हुवा. नवावरो तोपखानो खोस लियो. नवाव भाज अेक मसीतरै ओलै ऊभो रह्यो. महाराजरी असमानी फतै हुई।

४२२. महाराज वखतसिंघरै वीस तीर लागा ज्यामे तीन तीर तो च्यार आंगळ वैठा दीजा सिल्हमें रह्या गोळी अेक, गोळो अेक लागो. श्रीरामजीरा प्रतापसूं खैर हुई. असवारीरा घोड़ारै दस तीर लागा. अेक भाटकै लागो।

४२३. नवाव नास सैर मांय गयो. दूजै दिन सेख मुजायदनूं वात गरै महाराजा अभैसिघजी कनै मेलियो. कह्यो—महाराजा फुरमावै सूं करूं. दरवार फुरमाया—तोपखानो सारो छोड जा. यूंहीज हुवो. संवत् १७८७ आसोज सुद १२ महाराजरो झंडो रुपियो अहमदावादमें।

४२४. राजाधिराज जंग कियो पछै महाराज अभैसिंघ जैसिघरै सुलह हुई. हरमाड़ासूं कूच कियां पछै जिता रुपिया जैसिघजीरै खरच पड़िया उता देणा किया महाराज अभैसिंघजी उवां रुपयांमें भंडारी रतनसिंघनूं नै भंडारी मनरूपनूं ओळमें सूंपियां।

४२५. हरमाड़ासूं कूच हुवो पछै जिता रुपया जैसिघरै खरच पड़िया उवै देणा कर भंडारी रतनचंदनूं अभैसिंघजी ओळमे दियो।

४२६ अभैसिंघजी वखतसिंघजी गुजरात पधारिया जद कुहोहणरै धणी उगरै अजवेस भाड़ीमे वोळावो कियो तमक वाणा कोळी।

४२७ मोकळमररै धणी वाळै उदैराज अभेमरी आग्यासू कोटनादरा धणी भाटी फतैसिघ समरावतनू मारियो अभेसरी आग्यासू जद गुडारो राणो सूरजमल भाखरसिघोत उदैराजरी मदत आयो हो।

४२८ उदैराज खीवराज अखैराजोतरो सूरजमल भाखरसी साहिबखान ठाकुरसी ईसरदास उदैराज राणो सूरजमल मासियाळ भाई हुतो।

४२९ सेरसिघ मेडतिया अहमदावाद जावता मारगमें कोळियानू घोडा दिया उवै दारू पीवण आया हा दारू साथ नही जिणसू वात उवारणनूं सेरसिघजी घोडा कोळियानू दिया कुसळसिघजी महाराज अभैसिघजीसू मालम किवी-सेरसिघ सिघोतरा घोडा मारगमे खोस लिया कूपै कनीराम वात हुई ज्यू मालम किवी दरवारसू घोडा सेरसिघ सामा मेलिया ७५०।

४३० अहमदावाद भदर मायँ अभैसिघजीरी फोज हल्लो कियो जद सेरसिघ निराट आछो हुवो जीवरखो भदर वाजै गुजरातमे।

४३१ मेडतिया सूरजमल सिरदारसिघोत वखतसिघजी कनासू महाराज अभैसिघजी माग लिया गुजरातमें।

४३२ अजमेररै गाव नामसू महाराज अभैसिघ ईसरीसिघजीरै मिळाप हुवो जद भडारी जैपुरसू उठ जोधपुर आयो।

४३३ नागोरसू धाय पुसकरजी स्नान करणनू आयी जद महाराज अभैसिघजी फुरमाया—तू अजमेर आव, हू तो आगै छानीरो ढीव भराणो हैं सू हू फोडू राजाधिराजरा भयसू आ अजमेर न गयी।

४३४ बीकानेरसू पधार अभेस पुरोहित जगूनू मदनरूपजीनू फरमाया कै माहो-माहरी डग्गा छोड अेकमत होय राजकाज करो, हमै म्हारा सरीररी सगती घटी हैं।

४३५ महाराज अभैसिघजी मिनरा मारणरी सोगन पुसकरजीमें छानै लिवी थी।

४३६ अभैसिघजीनू राजाधिराज कपटी कहता।

४३७ जिण सरावसू मामरी वुध भिजोय माधा सरावरो वडो ही पियाक छर जावै उण सरावसू सीसो भर दिलीरै पातसाह महाराजा अभैसिघजीरी हजूरम भेजी महाराज अेक घडी मारी मीमी पी लिवी।

४३८ अभैसनू गरीब विजय हू जवरनू नागोरी राम न्रप वहता।

४३९ अभैसनू गरीब फते हु ज धरनू नागोरी राघव मदूळ वहता।

४४० अभैसरी आण वादना।

४४१. महाराज अभैसिघजीरै अजीत गज हाथी हो मो होदा मांहेसू तकियो सूडसू उठाय लेतो।

४४२. संवत् १७८० रा भादवा वदी ८ महाराज अभैसिघजी कछवाहा राजा जैसिघरी वेटी विचित्रकंवर परणिया।

४४३. कछवाईजीनूं पटो सत्ताईस हजाररो दियो महाराज अभैसिघजी।

४४४. गुजरात पधारतां सिरोहीरै गांव पोमाळियै सिरोहीरा राचरी वेटीरो डोळो आयो, महाराज अभैसिघजी परणियो।

४४५. लाठीरा धणीरी वेटी वड़ी भाटियाणीजी महाराज अभैसिघजी परणिया गुजरात पधारतां।

रामसिंघ

४४६. संवत १८०५ महाराज रामसिघजी पाट वैठा.संवत १८२५ रामसिघजी देवलोक हुवा।

४४७. लदाणीरो धणी नरूको केसरीसिघ ज्यांरा दोहिता कंवर रामसिघजी. संवत १७८७ रा भादवा वद १० जनम पहर जोधपुरमें।

४४८. वखतसिघजी रामसिघजीरै छोटी-मोटी वाईस राड़ हुई।

४४९. मेड़तै सेरसिघजी काम आया. पछै नवमै महीनै लोढांवस जालमसिघजी काम आया. पछै छठै महीनै जोधपुर रामसिंघजी कनांसूं वखतसिघजी लियो.

४५०. जीवण घसियारो १, वखतो माणी मेड़तिया सेरसिघजीरो चाकर २, वीजियो ३, अमीरुव ४—औ रामसिघजीरै मनीजता।

४५१ जीवो घसियारो १, अमिओ डूंव २, वखतो साहणी रियांरो चाकर ३, वीजियो ४—औ महाराज राममिघजीरै मानीजता।

४५२. उदैपुरसूं टीको आयो जद जोधपुररा कामेतियांनूं कह्यो - जीवण घसियारा कह्यासूं राणोजी अमको लड़ाईरो हाथी अठै मेलै तो टीको लियां. कामेतियां नरूकीजीसूं मालम करि आपसूं मालम करी. माजी फुरमावे है टीको ले लेणो, हाथी पछै ही राणोजी मेल देसी. आ वात मान टीको ले लियो, किनाईक महीनां माजीनूं कह्यो हाथी मंगाय दियो. यां कह्यो—उवैही देसपती है, यूं हाथी क्यूंकर मेलै ? जद.......।

४५३. गम निरप फुरमाया जीवण घसियारारी अरजसूं—राणो लड़ाईमे सेर अमको हाथी अठै मेलसी तो टीको म्हे राखसां राणाजीरो।

४५४ जद नन्कीजी कहायो — हमें तो टीकारी मामगरी लिराय लेणी पछै ऊ हाथी उदेपुरसू नाठो जद नन्कीजीनू कहायो — अमको हाथी उदेपुरसू मगाय दो जद नन्कीजी ।

४५५ उन्हें हो राणा है, हाथी लडाइरो मेल्सी नही जद राम फुरमाया — माटी मुवो तो पण राइरो मळ मिटियो नही ।

४५६ जोधमल भडारीनै गळै दोवडगे टेपो देनै गुजवर कटी ले लिवी उवा विजियानू दिवी राम नृप ।

४५७ महाराज ईसरीसिंघजीरो बेटी कछवाहीजी १, झाळायग राजावतजी २, चावडजी ३, जाडेचीजी ४ — महाराज रामसिंघजीरै अै च्यार राणी ।

४५८ चावडीजी, राजावतजी, जाडेचीजी, कछवाहीजी — अै च्यार राणिया महाराज रामसिंघजीरै ।

४५९ झिळायरा राजावत ज्यार मनीजना महाराज ईसरीसिंघजीरी बेटी कछवाही—वजीरो आघ कम हुतो ।

४६० झिळायरा राजावतजीगे मान हुवो कछवाहीजीरो मान नही हुतो रामरै ।

४६१ माधवेसरा राजावतानू रहिनै राजावतजीनू जहर दिरायो ।

४६२ माधवेस झिळायवाळानू कह्यो — थारी बेटीनू जहर दे मारो तो म्हारी भतीजीरो मान करै महाराजा रामसिंघजी ।

वखतसिंघजी

४६३ राजाधिराज नागोर लियो जद चवदे हजार घरारी वसती हुती ।

४६४ राजाधिराज नागोर पधार पहला पचोळी लालानू दिवाण कियो पछै थायरा वल्लभनू सिंघवी मायमल्लनू दिवाण कियो पछै इण मुवा इणरो बेटो अमरचद दिवाण कियो अमरचदनू मार सिंघवी फतैचदनू दिवाण कियो ।

४६५ महाराज अभैसिंघजीनू जळाजळी देण राजाधिराज नागोर समस तळाव पधारिया टेगण चढिया किनाईक कह्यो — राजाधिराज पाळा है, किनाईक कह्यो — राजाधिराज टेगण चढ्या है ।

४६६ महाराज अभैसिंघजीनू जळाजळी देण राजाधिराज नागोरमें समस तळाव है जठै पधारिया टेगण चढ्या हुया किनार कह्यो - आप पाळा मत पधारो किना लोगा कह्यो-टेगण चढ महाराजाधिराज पधारिया ।

४६७ महाराज वखतसिंघजी जेसळमेर परणीजण पधारिया जद रावळ अखैसिंघनू कह्यो - किणरै किया थारै मामरो कियो है ? र दियो है ? रावळजी

कही - मियां म्हां कनै मामलो लै जिसा है. महाराज फुरमाया अठै म्हारी फौज छव मास रहण दो तो मियांनूं अवजी मसकां बांध आणां ।

४६८. सेरसिघ मेड़तियो काम आयो जद राजाधिराजरै साळो तुंवर सिरदार भाज गयो. उणनूं चाकरीसूं राजाधिराज दूर कियो ।

४६९. संवत १८०८ महाराजा वखतसिघजी जोधपुर लियो मोकमसिघ १, दोलतसिघ २, लालसिघ ३, दोनूं चांपावत सूरजमल दुरजणसिघोत जोधो ४, महेचो सिरदारसिघ कानसिघोत ५, भाटी महेसदास ६, करनोत जैतकरण महकरणोत ७, धायभाई देवकरण ८, भाटी सुजाणसिघ ९, इत्यादिक गढ जोधपुररो राजाधिराजरी निजर कियो ।

४७०. जोधपुर पधार राजाधिराज फुरमायो - अभैकरणजी संसार नहीं जद सिणगारचोकी म्हारो आवणो हुवो ।

४७१. सत्तावन गाव झाडोदरा फतैपुररा नवाबरा महाराज वखतसिघजी दबाया ।

४७२. जासनु जास याची - राजाधिराज जोधपुर ले फुरमायो - महि राजवी है ज्यांनूं वाहर काढ आवो, रजपूतांरै परणाय देसा मांरै वंसरा अजीतसिघोत जोधा वाजसी ।

४७३. राजाधिराज गुजरातसूं पधारियां पछै धावड़ वडिदास तुरत हीज चलियो ।

४७४. प्रथम संवत १७९२ दिली पधारिया राजाधिराज. दूसरै फेरै संवत १८०४ दिली पधारिया ।

गगवाणारा गोरमे, सेल धमाधम खाय,
भोळी नणदळ है हाथ्यांरै हौदै वखतो मारू जंग करै ।

४७५. नाथजी महाराजसूं राजाधिराज आपरै नै माधोसिघजीरै विचै मसजत माथै बैसाया ।

४७६. राजाधिराज दिखण माथै जावणरी कमर बांधी किवी जद उजीणरै मुकाम सिरदार उठ गया हा. मु······राजाधिराज देवलोक हुवा ।

४७७. सिधरो मियां नूर महमद वोलियो—हिया माहलो नादरसा आज मुवो ।

४७८. राजाधिराजरी मृत्यु सुण लखनऊरो धणी नवाव मंसूरअलीखां कह्यो - दिलीरो जोर घटियो, दिखणरो जोर वधियो हमै ।

४७९. राजाधिराज दिखण माथै चढिया जद उजैण इंदौररै मुकाम सिरदार उठ गया आतंकसूं ।

४८० जैसिंघजीरी राजाधिराज पाच घोडासू निसरिया ।

४८१ सिवसिंघ गाँव मेवाडरो भोमियो जिणनै पनरै हजाररा पटासू लोटोती दिवी राजाधिराज ।

४८२ जैसिंघजीसू राय हुई जद सिवसिंघ आछो हुवो इण चाकरीसू ।

४८३ लोटोतीरो सिरदार जोधो सेरसिंघ जिणरी न कविया करणीदानरी अरज बादरसिंघजी राजाधिराज पगे लियो जद अरज किवी ऊ सेरसिंघजीरी मानै करणीदानरी न मानी ।

४८४ मूडवै लाटा और ठौड कराया लाटारी ठौड खेत बागवानानू राजाधिराज इनायत किया ।

४८५ गाव हेनाणे च्यार हजार वीघा जोड हुतो, राजाधिराज उनाम करायो ।

४८६ जोधपुर पाचमै ताईंका गरभणो – आ मरजाद राजाधिराज राखी ।

४८७ कागसू मुडा खामा हाथीगे सवारी होकसू राजाधिराजरी मरजी थी ।

४८८ - खास रुपियारो सिक्को पातसाह राजाधिराजनू इनायत कियो ।

४८९ बीकानेररो राजा गजसिंघजी जोधपुर रातानाडारा डेरासू जेसळमेर परणीजण गया जद महाराजकवार विजैसिंघजीनू राजाधिराज माथै मेलिया ।

४९० सवत १८१६ फागण सुद १ चापावत देवीसिंघ महासिंघोत १, ऊदावत केसरीसिंघ वखतसिंघोत २, कूपावत छत्रसिंघ रामसिंघोत ३ – अै तीनू सरदार धायभाइ जगनाथ जोधपुर गढ ऊपर पकडिया ।

४९१ सोळोतरै फागण सुद १ देवीसिंघ दिवानू पकडिया ।

४९२ दूजा सिरदारा आतमारामजीनू काथ दियो जद ससतर खोल दिया हुता देवीसिंघजी ससतर समेत काथ दियो ।

४९३ जनानो पधारै है यू कहनै सिरदारा वेली लोहापोळ आडी दिवी सिरदारानू पकडिया जद ।

४९४ सिरदारानू गढ मायै पकडिया जद उमर भर गोवरधन पचेस्वर बोलियो ।

४९५ सिरदारानू हाथ पडियो जद वै उचाकख थको डोढी पर गोइददास बोलियो– सिर्गै राखो, रोळ काई करो हो दरबाररा आदमी होयनै ।

४९६ सिरदारानू पकडण हाथ पडिया जद डोढी दावै उवाच थको बोलियो – रोळ काई करो हो ?

४९७. देवीसिंघजी वगरै पकड़िया ज्यानूं रस्सासूं बांध भोजनसाळा हेटली ओरिया ज्यामें घालिया. हाथां-पगामें बेडी तोखीर कड़ियां आयी नही जद कड़ियां मोटी घडाय आंरा हाथ-पगा मांहे घाली।

४९८ देवीसिंघरा हाथ धायभाई जगजी पकड़िया. कटार-तरवार खींची फनै खोस लिवी।

४९९. देवीसिंघ प्रभुखारा हाथ-पग लोहरा बंधणरी कड़ियां घड़ाणी. पहलां आनूं भोजनसाळा हेटली ओरियां मांहे राखिया हुता।

५०० देवीसिंघ महासिंघोत नै पकड़ाणो जद बोलियो — मैं गढमे किवी जिसी गढ मोमें किवी।

५०१ ऊदावत केहरसिंघरै गळामे भमरकडी रहती नित्य सेर पक्की खीचडी खातो. हमै पालकीखानो है जठै कैदमे हुतो अढारोतरै देवलोक हुवो।

५०२. ऊदावत केसरीसिंघजीरा गळामें भवरकड़ी रहती. पालखीखानामे कैद रहता. सेर पक्कारी नित खीचडी खाता सवत १८१८रै रामसरण हुवा।

५०३. ऊदावत केहरसिंघरा गळारा तोखरी कडीरी साकळ भुरसमे दिवी हुती।

५०४. केहरसिंघ ऊदावतरै गळारी तोखरी कडी भुरसमे दिवी हुती।

५०५. प्रथम तेईसै, पछै अठाईसै, तीजक फेर छतीसै, चौथा फेर तयाळीसै—जुमलैं च्यार नाथजीदुवारै वडा महाराज पधारिया।

५०६. अेक बार कोटारा महाराज गुमानसिंघजीसूं श्रीजी दुवारै मिलवो हुवो।

५०७. संवत् १८३७ रा मिगसरमे चौवारी राड़ हुई नै संवत् १८३८ रा मिगसरमें अमरकोट रसद पहुची सिंधियांसूं राड़ हुई।

५०८ संवत् १८३० महाराज विजैसिंघजी गयारी गास मारी छोड़ी।

५०९. लखणेऊरै धणी मनसूरअलीखां विजैसिंघजीनूं लिखियो—गुलाबरो अतर लिखतो मेलो तिणरै लगावजै नही अखरैरा अतर लगावजै. यूंहीज कियो।

५१०. वडा महाराज सूरजमल सोभागसिंघोतनै फुरमाया—भीवसिंघजी सहर अपणायो जद थारा वडेरा तो महाराज रामसिंघजी तो गेला रता ज्यारो ही परी लाग न कियो म्हे तो सयाणा हां. इण अरज किवी - खानजादरा धड़ माथै माधोसिंघजी तो अै चरण खानाजाद छोड़नी नही।

५११. राजाधिराजरै सात पलांरो वागो माहे रहतो, अठयारै पलांरो ऊपर रहतो।

५१२. महाराज विजैसिंघजीरै अठयारै पलांरो माहे रहतो, इकवीस पलांरो ऊपर रहतो।

५१३ अटळराज वगतसिंघजीनू, अरजुण विजैसिंघजीनू आतमाराम कहतो श्री हजूर फरमावै–

अर्ध-दग्ध-भटास्याज्या राज्ये राज्ञा मनीषिणा।
यथा त्यजति विश्वेसो वैष्णवान् वहिरुज्ज्वलान्॥

५१४ सेखावत किसनसिंघजीरी बेटी जैतकवरबाई बडा महाराज परणिया।

५१५ सवत् १८४९रा असाढ वद महाराज विजैसिंहजी देवलोक हुवा।

५१६ सवत् १८४९ रा असाढ सुद ८ महाराज भीमसिंघजी गढ दाखल हुआ।

५१७ *विजैसिंघजी महाराजरी प्रथम गायण, पछै सवास, पछै पासवान हुई* गलाबराय गायणपणमे नाम सुणिया गोस्वामीजी दामोदरजी कनै गुलाब-राय बाचन ग्रथ महाप्रभु आचारज कृत सो ग्रथ गोस्वामीजी कृत, सवत् १७२७ माह वद १३ श्रीजी चोखा कदमखडी पधारिया सकटस्थ कदमखडी अनकोट हुओ काती सुद १५ पाटोदीनू पधारिया श्रीजी च्यार महीना पाटोदी पाट माथै विराजिया, पाटोदीसू सिरोहीनू पधारिया श्रीजी गाव सरणासू पाछा पधारिया सो पुसकरजी होय मेवाड पधारिया, राणा राजसिघरा भावसू साठ वरस मुथरानाथजी बूदी पधारिया श्रीजी पधारिया पहला सोळा वरसा द्वारका-नाथजी मेवाडमें पधारिया इण कारणम् काकरोळीरा गोस्वामीजी राणाजीरा गुर है गोकुळनाथजी आवेर पधारिया।

५१८ महाराजा जालमसिंघ विजैसिंहोतरै वैजनाथजीरो इसट हुतो।

५१९ नवानगररा महाजामनू, हळवदरा राणानू, ईडर रावनू, डूगरपुर बासवाहळारा रावळनू जोधपुरसू अेक सरीखी लिखावट।

५२० गाव जोधपुररा ७७ पोहकरणरा, २४६, सोजतरा ४४८, जाळोररा १८८, जेतारणरा ३८४, मेडतारा ६२, फळोदिरा १४९, सिवाणारा ८८, साचोररा महाराज सामवरै।

५२१ मोटाराजा उदैसिंघजी, सवाई राजा सूरजसिंघजी, दळथभण गजसिंघजी, धूसलसिंघजी अभैसिंघजी, राजाधिराज बखतसिंघ –आ पदवी थी।

५२२ चूडोजी सासळियारा भाणेज, रिडमलजी सासलारा भाणेज, जोधोजी भाटियारा भाणेज, सूजोजी हाडारा भाणेज, बाघोजी भाटियारा भाणेज, गागोजी साचारा चहुवाणारा भाणेज, राव मालदेजी देवडारा भाणेज, उदैसिंघजी भालारा भाणेज, सूरजसिंघजी कछवाहारा भाणेज, गजसिंघजी कछवाहारा भाणेज, जसवतसिंघजी सगतावतारा भाणेज, अजीतसिंघजी

जादवांरा भाणेज, वखतसिंघजी सांचोरा चहुवाणांरा भाणेज, विजैसिंघजी रावळोतांरा भांणेज, गुमानसिंघजी देवड़ांरा भाणेज, मानसिंघजी सांचोरा चहुवाणांरा भाणेज ।

राठोड़ांरी खांपांरो इतिहास

सींधल राठोड़

५२३. भाद्राजूणरो धणी भारमल सिंघल जिण सरवडी दीवी. भारमलरो रामो, रामारो सतो, सतारो वीरो. संवत १५८६ वीरा सतावतनूं मार राव मालदेजी भाद्राजूण लियो ।

५२४. वीरारै वीसळदे, वीसळदेरै तजो जिण जाळोरीमें गांव मेहेड़ो वसायो ।

५२५. लांविया भाद्राजण सीधलारै हुती ।

५२६. जैतारणरो धणी सीधल नरसिंघ वीदावत सुपियारदे साखळीरो धणी जिणरै वंसरा मेवाड़में है, सोळै गांवामें है ।

५२७. गाव वालाणो डोडियाळ पारवती है जठै सीधाल वाघ गोपाळदासोत रहै छै. धरतीरो विगाड घणो करायो ।

५२८. सीधल रांपावत कंवळां वगेरै सोळा गाव जठै रहै जागीरदार थको. सीधल भाणावत वळाणा वगेरै वारह गांव ज्यामें रैवै, सीधल लांकावत कीडोमाल वगेरै गाव वधनोरा मदारिया विचै आडावळारी तळहटी ज्यामें रहै ।

५२९. संवत १७१२ वैसाख मांहे वाळो केसोदास जैतसिंघोत नै महेचो रावळ भारमल साथ करिनै सीधालां ऊपर आया. रावळ भारमल जगमालोत साथै सोढो अमरो भोजराजोत १, अमरो सुरताणोत २, सिसोदियो कभो ३, मनोहरदास भाखरसीहोत ४, किसनो ऊदावत ५, दळपत ६, वीजो ही साथ घणो हुतो ।

५३०. सीधल वाघो वीदावत, वीदो सूजावत, सूजो सीहावत कंवळां धणी ।

५३१. सीधल वाघो वीदारो, वीदो सूजारो, सजो सीहारो, सीहो भांडारो गाव कंवळां १,५००) रेख।

५३२. सीधल सावळदास मानसीहावतरो गांव पावो, १०,०००) रेख।

५३३. सीधल जसवंतसिंघ रायसिंघ मालावतरो. गांव कुहेळाव. ४,०००) रेख।

५३४. सीधल केसरीसिंघ दूदा अमरावतरो गाव जाखोड़ो. रेख ४,०००) ।

५३५ सायद– वाघरा घरा सिर आग वूठी १ ।
हुवो चिनोडसू वियो हेलो २ ।
काटकी आभमू वीज कवळे ३ ।

५३६ वडना मोरावास ऊहड अरजुन आसिया नेतानू दियो ।

५३७ सलखो १, जैतमाल २, खीमकरण ३, रावत राणो ४, वैरसाल ५, राघोदास ६, भाखरसी ७, सूरजमल ८, पातो ९, रतनसिंघ १०, आसकरण ११, मनोहर १२, केसरसिंघ १३, वळू १४, खीमो १५, सवाई १६, देवसिंघ १७ – नगररा रावतारी पीढिया ।

५३८ तेजमाल सलखावतरो वेटो हाफो जिणरै वसरा सिवणाचा कहावै सिवणे राणो देवीदास वीजावत हाफारा वसमें हुवो ।

५३९ राठोड वरियैचा मलीनाथरा पोतरा है।

महेचा

५४० राव मडळक जगमालोतरै तीन वेटा हुवा–रावळ भोजराज १ जिणरा महेचा, खेतसी २ जिणरा कोटडै, वादियो ३ जिणरा जघोळिया ।

५४१ मेहवारो गाव भोजराज मडळकोत रणखेत पडियो सन्यासिया उठायो सो सन्यासी हुवो ।

५४२ वेगडो नरो खेतसी मडळकोतरो जिण महेवो ले लियो नगर राज करै. रावळ भोजराजरी वेर सूरावदरी चहुवाण वेटानू ले सूराचद गयी ।

५४३ किताईक वरसा पछै रावळ भोजराज सन्यासी थको गुजरात सासासू जमात ले आयो नगरमें वेगडा नरानू मारियो महेवारो मालक वीदानै कियो ।

५४४ रावळ भोजराज मडळकोत वठैईक सन्यासिया घावा उपाडियो साजो हुवो जद सन्यासी हुवो इणरी राणी सूराचद गयी राठोड वेगडै नरै खेतसी मडळकोतरै महेवो नोम लियो इणरो छोटो भाई रणधीर सिववाडी राज करै रावळ भोजराज सन्यासी थकै जमात आण नगरमें वेगडा नरानू मारियो वैदा वीदानू टीको दे महेवारो धणी कियो ।

५४५ सवत १६९१ माह माहे पहला जाळोररो गाव मोर सीम मारी पछै सिवाई गाव सिवाणरो महेचा मारियो, माह वद ४ गाया १४०, भैसा ३०, वैल ६३०, घोडी ८ ले गया असवार ३०, पाळा ३० हुता ।

५४६ सवत १६९१ माहमें राठोड महेचै महेसदास जाळोररो गाव मोरसीम आयो हजार माणस लेनै गाव मोरसीम वाळियो लूटियो धान धणो ले गया पारदियै वेढ कीवी जणा दस पारदियै काम आया घोरी १५ महेचांरा मुवा नै पायल हुआ टेगे कर मोरसीम लूटियो ।

५४७. महेवो सूनो कियो जद राठोड़ देईदास पतारो सांवळदास सोढो अमरो भोजराजोत मनोहर सादूळ भाखरसी, रावळ महेसदास भारमल इत्यादिक राजाजीरा देसरो विगाड़ करता ।

५४८. संवत १६९१ रा जेठ मांहे राठोड़ देईदास, महेसदासरो भाई सांवळदास, सोढो अमरो सांडियां १२० वाळीसरथी ले गया ।

५४९. महेचो चंद्रसेण वाघ कलावतरो राणा जगतसिंघरी चाकरीमें पटो हजार वारहरो पावै. वसी गांव काकर ।

५५०. महेचो ईसरदास खेतसी जसवंतोतरो सात हजाररो पटो पावै. वसी गोडवाररै गांव मांडळ ।

५५१. साठ गांव महेचांरै तीवडी लारै है हमैं सिरदार जैतसिंघ उमेदसिंघोत है ।

५५२. ईंदांरो गांव भालू महेचै रायमल उदैसिंघोत मारियो फागण सुदमें ईंदो भानो गोपावत जणा च्यारसूं काम आयो. रायमलरै साथ पांचसौ आदमी हुता, भाटियांरो पिण लोक साथ हुतो. रावळै गया ऊंट ४, छाळियां १००० महेचा ले गया ।

कोटड़िया

५५३. वेगड़ो नरो १, रणवीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४—अै च्यारूं खेतसी मंडळकोतरा वेटा ।

५५४. वेगड़ो नरो १, रणधीर २, दूदो ३, वरसिंघ ४—अै च्यारूं राठोड़ खेतसी रावळ मंडळक जगमालोतरो जिणरा वेटा ।

५५५. कोटड़ारा राणारी पीढी—रावळ मळीनाथ १, जगमाल २, राव मंडळक ३, राव तखतजी ४, रावत दूदो ५, रावत चांनो ६, राणो जैतसी ७, राणो वाघो ८, राणो रतनसिंघ ९, राणो भैरुंदास १०, राणो जोधो ११, राणो सूरो १२, राणो मळचंद १३, राणो उदैभाण १४. सिरदारसिंघ १५, मालदेव १६, धीरतसिंघ १७ ।

५५६. राठोड़ चांपै दूदावत सिववाड़ीसूं कोटड़ै राजसथान वांधियो. राठोड़ चांपो दूदो खेतसीहोतरो वेटो. सू वेगड़ो नरो माराणो जद नगरसू भागो. इणरो काको रणधीर खेतसीहोत सिववाड़ी राज करतो हो उठै आयो. रणधीर दूदारो पेटियो कर दियो. ओ चांपो सिववाड़ी रहै ।

५५७. कितायक वरसां चांपै दूदावत रावळ वीदानूं कह्यो—म्हारै साथ सातवीस घोड़ारा सवार रजपूत मेल जद इहुं कही—जे चांपा साथै जावो, ओ कस है

कीजो उठासू गाव खरीग जेसळमेररा रावळरी घोडिया ही उठै पावै सू रावळजी चापै नही जूहीज न्यो इण वाडी जाय रणधीरनू मार सिववाडी ले लिवी वींदे रजपूतांनू कही—म्हारै कह्या विना रणधीरनू मारियो, मोनू मू दिखावजो मती वै सातवीसी घोडा ही चापारै वास वसिया ।

५५८ आगै पहाड माथै परमारारो करायोडो पक्को कोट हो अेक कोट माहे वाधियोडो कुवो हो अेक कोट नीचे पहाडरी जडा वाधियोडो कुवो हो पछै परमारा माथै भाटी सीध देवराज कटक मेलियो जद औ कोट पडाय नाखियो वेरा बुराय दिया चापै ऊदावत सिववाडीमू जाय आगला कोटरी नीम ऊपर तीन पडकोटा कराया, तीन दरवाजा तीनू कुवा उघडिया नाव कोटडो दियो राज ठोड कोटडो कियो ।

५५९ 'नवलखा-दुरग-नरेस' वाघा कोटडियानू कह्यो—जिणसू जाणीजै है नवलखो दुरग कोटडानू कहै है ।

५६० 'वाघ कुअरा-वींद' वाघा कोटडियारै कुअर सोढी ठकुराणी हती ।

५६१ पीपा राइकारा बेटा पोतरा साढारो दूध पीओ मेहरो बेटो घूटलवाळै पग समेट सूतो पछै नेतसी भाया भडा सहित साढारी वार चढियो कोटडिया रामाजी मारनै साढा पाछी आणी ते नोर तळ पाणी पाय दोड कराय राईकानू दूध पायो उण समैरा हीडोळा—

साढो लोप सो इतरो, गाधी साइरी माथ ।
चड्ढि महीरा नेतसी, रातो तरगस वाध ।।
नळी कटाड नीळी, लप घी अमापियो खाय ।
हाथ-वेंतरै आतरै, अै कोटडिया जाय ।।
खेतो पूछै नेतसी, नीलो घोडो काय ।
ग्या ईडररी चाकरी, दियो ईडररै राव ।।

५६२ कितीक पीढिया कोटडै राणो दुरजणसाळ हुवो जिणकनैसू रावळ अखैसिघ कोटडो ले लियो दुरजणसाळ सीवाणैरी नाळ जाय रहियो कोट नरेडो रावळ जेसलमेररै पडाव नाखियो ।

५६३ सवत् १८२१ रावळ मूलराजजी दुरजणसाळनू कोटडो दियो पेसकसीरा रुपिया ठैरायनै ।

५६४ फौज जोधपुररी कोटडा माथै आयी उठासू हाकम याण दुरजणसाळ कोटडा मायसू जेसलमेररो हाकम काढ दियो उण दिनसू सीव जोधपुररा मुसद्दी हाकम रहियो ।

५६५. जैसलमेररै रावळ भीव रतनू धरमदास उवण गांव दियो. नरो जिणनूं कोटड़ियारा राणा भैरवदास कनै मेलियो वचन दे. भैरवदास भीव कनै आणियो. भीव भैरवदासनूं मारियो वडियाड़ारो ऊ नाम जेसलमेर हेटै घाळियो।

५६६. कोटड़ियो जैसो १, राजसी २, नरहर ३, मेघराज ४, भाखरसी ५. भाखरसीरी वेटी गोमांबाई खीची गोवर्धनजीनूं परणायी।

५६७. खीमा १, वासाड़ा २, दोट ३, फ़ळसूंडिया ४, कसूवली ५, धारविया ६ – अै खापां राठोड़ी महेवामे है. धारवियो गाव कोटड़ारो है।

५६८. वापड़ाऊरै ठिकाणे राठोड़ भीमै रतनावत वाढमेर वसायो।

जैतावत

५६९. राठोड़ अखैराज रणमलोत सीधल चरड़ानूं मार वगड़ी लीवी. चरड़ालीरो थान कोटड़ी मांहे है. पहलां सांझ समै चिराक चरड़ाजीरै थान ले जावै पछै वगड़ीरा सिरदार आगै चिराक आणै. अजै आ रीत है।

अकवररा दळ उळटिया, है घट आया हाल।
छोटी छोटी लातणी, मोटी कीवी माल॥

५७०. पचायण अखैराजोतरै जैतावत वगेरै नव वेटा हुवा।

५७१. वगड़ीरा सिरदार उरजणसिंघजीनूं महाराज अजीतसिंघजी मरायो. मेवाड़में सगतावतांरा गांवांमें उरजणसिंघजी मुवा. पछै पहाडसिंघ जनमियो. वीकम-कोहर मामालमें दरवाररा डरसूं भटियाणीजी पहाड़सिंघजी वैठा वेटानूं लेने देवगढ गया. पहाड़सिंघजी देवगढ मोटा हुवा. ठाकर राघोदास आगै मनाणा।

५७२. उरजणसिंघजीरो वडो वेटो सामसिंघ जगावतांरै गांव वहमाली परणियो हुतो सो ऊ वहमाली जाय वसियो. वहमालीसूं वेगम गयो. उठै महाराज अजीतसिंघजी जहर देय मरायो।

५७३. रामसिंघ उरजणसिंघरो भाई जिणनूं चूक कराय घाटामें मरायो. अजीतसिंघजी जैतारण कनै फूलमाल जठारो दाहिमो सलेमावाद फरसरामदेवजीरो शिष्य नाम टीकमदास जिण आपरी वणायी साखां अेक दिन फरसरामदेवजीनूं सुणायी. जद आं कही–तूं तो तत्तवेत्ता हुवो जदसूं तत्तवेत्ता कहायो. टीकमदास

जैतारण आय भूतारै थानकमें वसिया लोका कह्यो अठै भूत रहै है, आप अठै मत रहो या साखी सुणायी –

गूदी गोयंदरायकी, आगण रही वणाय ।
आये सत अनतके, भूत गये सव भाज ॥

उण दिनसू जैतारण द्वारो बावो ।

५७४ वगडीमू विगडी सैं वाता ।

५७५ वगडी जैताजी जैतापोळ करायी ।

कूपावत

५७६ महाराज अखैराजोतरै पुत्र कूपो हुओ सिवराव चडूसू महाराजजीरै रेणरो नाव कढा लियो कूँजो वाईरो व्याव आछो कियो जद माडै ही नाव प्रसिद्ध हुवो ।

५७७ कूपा महराजोतरै वेटारी विगत–प्रथीराज १, राम २, प्रतापसिंघ ३, माडण ४, तिलोकसी ५, महेस ६, उदैसिंघ ७, ईसरदास ८, तेजसी ९ ।

५७८ प्रथीराजोतारी भोम चापडामें माडणजीरा आसोप तिलोकजीरा धणलै महेसजीरा कटालियै सिरोपारी उदैसिघोत वसी, सीवा, चेळावस, ईसरदासोत माहडू चाडावळ तेजसीहोत ईडररी धरतीमें है रामाठा चादेळाव रामावत ।

५७९ सवत् १५५९ रा मगसर सुद १० कूपा महराजोतरो जनम सवत् १६०० काम आयो ।

५८० तेजसी कूपावत अमृतिया सीधला मारियो तेजसी कूपावतरा वैरमें माडण कूपावत सीधल सीहो मारियो सवत् १६२७ माडण कूपावत सीधल सीहो भाडावत मारियो ।

५८१ कनीराम गम्भसिंघोत माथै सूरज आवतो जद गामतरै जावतो ।

५८२ आसोप दळात कनीरामोत तळावरी पाळ ऊपर वगलो करायो जिराणा भूमनू नेडो ओ वगलो करायो पछै अेक वरस दलपत जीवियो ।

५८३ आसोप रगसाळमें नाहरसिंघ राजसिंघोत गळियोडा अमलसू वकडिया भराया दासियानू कहीनै ठकुराणियानू तेडी वेटा वेटिया सहित ।

५८४ पत्तो कूपावत देईदास जैतावत भेळो मेडतै काम आयो ।

५८५ पातारो हमीर रतन रतनरै वेटा तीन हुआ–मालो १, वलो २, जैमल ३ पातानू वारह गांवसू चोटाळो हुतो चोटाळासू जाय करणू वसायो ।

५८६. राठोड़ उदैसिघ कूंपावत जैमलजी पत्ताजी भेळो चित्तोड़ काम आयो।

५८७. कंटाळियारै धणी किसनसिंघ कूंपावत आगानूर नवावनू मारियो।

५८८. अमरसिंघ कूपावत वणवीर सोळंकीनूं मार सिरियारी लीवी।

५८९. कूंपावत महेसदास दलपतोत कांडां विना जीमतो नहीं।

५९०. राठोड़ कूंपो किसनसिंघ जसवंत सादूळोतरो देवळ वणवीर माथै कटक कियो हुतो. सिरोहीरो राव अखैराज आयो हुतो. पछै राठोड़ किसनसिंघ, जैसो देवड़ो भैरूंरो सिकार गया हुता पूरणथा कोस च्यार आगै. पछै वणवीररै साथ आय आदमी तीस मारिया नै जणा वीस घायला किया. किसनसिंघ सादूळोत माराणो।

बासणी

५९१. रामसिंघ १, सिरदारसिंघ २, जोधसिंघ ३, अगंदसिंघ ४, कूंपो हरीसिंघ।

चांपावत

५९२. पोहकरणरा सिरदारांरी पीढियां लिखँते–रिड़मल १, चांपो २, भैरूंदास ३, जैसो ४, मांडण ५, गोपाळदास ६, वीठळदास ७, जोगीदास ८, भगवानदास ९, महासिंघ १०, देवीसिंघ ११, सबळसिंघ १२, सवाईसिंघ १३, सालमसिंघ १४।

५९३. चांपाजीरै बेटा दोय–भैरवदासजी १, सनतोजी २. करण रिड़मलोतरै बेटा दोय–लूणो १, नै माणकराव २. मेडतारो गांव बीदावत खेतसिंघोत चांपावतांरो जठासूं उठ गोकुळदास चांपावत ताळ भोपाळरा राव कनांसूं भागली पई पाग्री।

५९४. चांपो गोपाळदास मांडणोत १, चापो सूरजमळ जैतमाळोत २, राठोड़ ईसरदास ३ नीवावत–अै भाडवै काम आया।

५९५. संवत् १६५८ चहुवाण वागड़िया मानवाद वालारो रावळ उग्रसेणजी ज्यांरो उमराव वागड़सूं छाड गया. पातसाह अकवररो चाकर रह्यो. पछै चांपावत सूरजमल जैतमालोत जिण बुरहानपुर अकबररा डेरा उठे ही मान हुतो आ माननूं मारियो, रावळ उग्रसेण राजी हुवो वागड़मे ब्राह्मणनूं कर लागतो सो सूरजमल छुडायो।

५९६. हरनायसिंघ १, अनोपसिंघ २, रूपसिंघ ३–अै तीन बेटा तेजसिंघ साईंदानोत चांपावतरा।

५९७. चांपावत ठाकुर भगवानदासजी भीनमाल जमी माथै ऊभा थका श्रीवाराहजीरै माथै छत्र बांधता, इता प्रचंड हुता. हमै सेवग वाराहजीरो तिलक करै है नीसरणीरै तीजै पगोतियै चढनै।

५९८ चांपावत तेजसिंघजीरै तीन बेटा हुवा–वडो बेटो हरनाथसिंघजी ज्यांरा आउवै बीजो बेटो अनोपसिंघ ज्यांरा भीमाळियै तीजो बेटो रूपसिंघ ज्यांरा जाणियाणै वासणीण ।

५९९ हरनाथसिंघरा आउवै, अनोपसिंघरा वासै भीमाळियै, रूपसिंघरा जाणियाणै वासणीण ।

६०० आउवै बखतावरसिंघजी खीची गोरधनजी जगनाथोतरो दोहितो, माधोसिंघजी खेजडलै किसनसिंघजी हठीसिंघोत जिणरो दोहितो, सिवसिंघ बहेडै राणावत उदैसिंघ सिरदारसिंघोत जिणरो दोहितो, जैतसिंघ मलारी चहुवाण प्रतापसिंघ चतुरभुजोत तिणरो दोहितो, कुसळसिंघ लवेरै भाटियारो भाणजो, हरनायसिंघ दातै वारडारो भाणेज ।

६०१ राणावत उदैसिंघरी बेटी अवाराई जोधारी भाणेजी जैतसिंघ परणियो ।

६०२ बागलीरो धणी चांपावत जिणरी पीढिया– गोपाळदास १, खेमसिंघ २, नारसा ३, हरीसिंघ ४, कुसळदास ५, जालमसिंघ ६ ।

६०३ चांपावत जैतमाल जैतावतरै बेटा च्यार–रूपसिंघ १, भाण २, सूरजमल ३, सुरजण ४ मालगढ जेठतरी भाणजीरा ।

६०४ चार–परिया वगेरै ठिकाणा सूरजमलोत बीजासणी नीवरै खारियै रूपसिंघोत नीवली वातै सुरजणोत ।

६०५ हरसोळावरा सूरतसिंघ राम-उपासीक है उणरी लुगाया वणाया ज्यारा नाव सीतासर नै इण तळाव सिणाया जिणरो नाव रामसर ।

६०६ चांपावत मानसिंघ देवीसिंघोत बाईरो ब्याव जैपुरमें कियो बाई उणियारारा राव राजा भीमसिंघजीनूं परणायी चारणानूं त्याग दियो ।

करनोत (ममदडी)

६०७ ममदडोंरा सिरदारारी पीढिया लिखते–रणमल १, करन २, लूणकरण ३, योदो ४, नींबो ५, आसकरण ६, दुरगदास ७, तेजकरण ८, मानकरण ९, इंदरकरण १०, सालमसिंघ ११ ।

६०८ राठोड़ करनो रिणमलोत नवा देहरो करायो संवत् १५८५ माह वद ५–ईंडो चढ़ायो, ब्रह्मभोज कियो, हजार गाया दीवी, धन घणो खरचियो ।

६०९ संवत् १७२१ महा दुनिकाळ पड़ियो आसकरण नींबावत धान घणो बांटियो राठोड़ा घणूं देसमें राखियो ।

६१० संवत् १७२० माव मास्ये आसकरण नींबावत वेगो तळाव करायो ।

६११ दुरगदासजीरी मा नै तोगारामजीरी मा सगी बुवा–भतीजी मेड़तणी भटियाणी ।

६१२. दुरगदास आसकरणोत केलियारै घरै सरणै रह्यो।

६१३. दुरगदास आसकरणोतरी वेटी विनैकंवरवाई सलूंवररा धणी रावत केसरीसिंघनूं परणायी. दूजी वेटी दुरगदासजीरो कुसळवाई।

६१४. दुरगदास १, तेजकरण २, अगंदकरण ३, रतनकरण ४।

६१५. दुरगदास आसकरणोतरी वेटी विनैकंवर सलूंवर रावत केहरसिंघजीनूं ....दोहितो रावतलालजी।

६१६. दूजी वेटी राजवाई साटोलै उमेदसिंघजीनूं परणायी।

६१७. करनोत रतनकरणरी वेटी धनवाई कुरावड़ कुंवर जालमसिंघ उरजणसिंघोतनूं परणायी. दोहितो रावत जवानसिंघ।

६१८. वहामीरो धणी करनोत रतनसिंघ जिणरी वेटी धनवाई कुरावड़ जालमसिंघ उरजणसिंघोतनूं परणायी. उण वाईरो वेटो रावत जवानसिंघ।

६१९. रतनसिंघजीरी वेटी दूजी राजवाई साटोलै उमेदसिंघनूं परणायी।

६२०. तुरकाणीमे दुरगदासजी जूनै वाहड़मेड़ रहै जद झामररा जाट सारा वाहड़मेररै गांव कवास धान नीपज्यो जद जितो हासलरो धान वाहड़मेररा धणीनै देता इतो ही ठाकरां दुरगदासजीनूं देता हा।

६२१. उदैपुर राणा जैसिंघजीरै नै कंवर अमरसिंघजीरो अमेळ हुवो. कंवर उदैपुर वैठो. राणाजीनूं उदैपुरसूं काढ दिया. दस हजार रुपिया खरचीरा मेलिया सगा विवरा समचार लिख मेलिया. महाराज दुरगदासजी वगेरा उमरावांनूं मेलिया. इकलिंगजीरै देवरै कंवरनूं राणारा पगां लगायो. कंवर सागररी पैलां गयो नै राणाजीनूं उदैपुर वैसाणिया।

६२२. वूंदीरा राव अनिरुधसिंघजीरै नै हाडा दुरजणसिंघजीरै आपसमें अमेळ हुवो दुरजणसिंघजी वाहर नीसर वूंदीरो विगाड करता हुता. दिखणसूं इण हीज काम पातसाहसूं सीख किवी।

६२३. राव अनिरुधसिंघजी वूंदी आया नै दुरगदास आसकरणोत अनिरुधसिंघजीरै पगां दुरजणसिंघजीनूं मेलिया. मेळ कराय दियो।

६२४. राणाजी सादड़ी दुरगदास आसकरनोतनूं पटै दिवी ही. दुरगदासजी नव वहिन-वेटियांरा व्याह सादड़ी किया. चारणांनूं त्याग दे जस लियो।

६२५. उदैपुर अमरसिंघरा घोड़ा लारै दुरगदास आसकरणोतरो घोड़ो चित्र वीचमे।

६२६. अस्सी वरस तीन महीना अट्ठाईस दिन, इत्ती ऊमर दुरगदास आसायतरी हुई।

६२७ वालर वारीरी ठिकाणै खीवकरण आसकरणोत गाव वसायो ।

६२८ तेजकरण मेहकरणजी दोनू कानोडरा मारगदेओनरा भाणेज, अभैकरणजी राव चतुर्भुज चोहाणरा दोहिना चैनकरणजी वीकमपुररै केलणारा भाणेज ।

६२९ तेजकरणजी महेमकरणजी दोय कुवर दुरगदासजी साथै मेवाडमें गया अभै-करणजी महाराज जैसिघजी कनै गया चैनकरणजी समदडी हीज रह्या ।

६३० भाखरजी १, करनजी २, काधलजी ३, पातोजी ४—च्यारू अेक माया भाई रोडमलजीरा बेटा ।

बालावत (मोकळसर)

६३१ रणमल १, भाखरजी २, बालोजी ३, भारमलजी ४, नगराजजी ५, जैतसी ६, केसोदासजी ७, माधोदासजी ८, अखैराजजी ९, खीमराजजी १०, उदैराजजी ११, नाथजी १२, लालजी १३, जवानसिहजी १४ हमै मोकळसर धणी है ।

६३२ भाखरजी १, करनजी २, काधल्जी ३, पातोजी ४—च्यारू अेक माया रिड-मलजीरा बेटा ।

६३३ मोकळसररै धणी वालै उदैराज खीमकरण अखैराजोतरै महाराज अभैसिघजीरी आग्यासू कीटनोदरो धणी भाटी फतैसिघ अमरावत मारियो गुडारो राणो सूरजमल भाखरसी साहिबखानोतरी मदत लेनै ।

वरसिंघोत

६३४ सोनगिरा खीवा सतावतरी बेटी चपा जोधाजीरी राजलोक जिणरै बेटा दोय हुवा-दूदो १, वरसिंघ २ ।

६३५ रावजी जोधाजी आनू भेळो मेडतारो परगनो दियो आगै सहर मेडतो नही हुतो आ मेडतो वसायो ।

६३६ वरसिंघ कितायक वरसा दूदानू काढ दियो दूदो वीकानेरमें गयो पछै वरसिंघ दुकाळमें पातसाही सहरमें समर लूटियो अजमेर सूबै माडवरा पातसाहरो चाकर मलूखा हुतो उण बोल-कोल दे अजमेरमें वरसिंघनै पकड लियो हुल जैतो सह लोल अजो वाम आया वीकानेरसू दूदै वीकै आय वरसिंघनू छुडायो ।

(झायुओ)

६३७ जोधो १, वरसिंघ २, सीहो ३, जैसो ४, रामसिंघ ५, मीव ६, केसोदास ७, वडो रजपूत हुवो, केसोदास मारू कहायो ।

६३८. राठोड़ केसोदास भींवरो, भींव रामसिंघरो, रामसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो, जोधो रिड़मलरो।

६३९. केसोदास मारू कहाणो. जाबुवो नवो ठिकाणो खाटियो।

६४०. जाबुवारा राजारी पीढियां लिखंते—केसोदास झब्वा नायकनूं मार झाबुवो लियो. झब्वा नायकरो वसायोड़ो जिणसूं झाबुवो कहायो।

६४१. झाबुवो नवो राज खाटियो. केसोदासरो मोहणदास, मोहणदासरो राजसिंघ।

६४२. सीकरी राड़ हुई जिण पहलै दिनरै राठोड़ जैसो सीहा वरसिंघोतरो रांणा साँगारी चाकरीमे हुतो सू पचसूं मुवो।

६४३. सांवळदास उदैसिंघरो, उदैसिंघ जैसारो, जैसो सीहारो, सीहो वरसिंघरो, सांवळदास देईदासजी सामल सरफुद्दीनसूं जंग कर राव मालदेजीरै काम आयो।

६४४. कुसळगढरा धणी वरसिंघोत जोधा ज्यांरी पीढियां—जोधो १, वरसिंघ २, तेजसी ३, आसकरण ४, माल ५, राम ६, जसवंतसिंघ ७, अवरेला ८, अजवसिंघ ९, कीरतसिंघ १०, अचळसिंघ ११, भागोतसिंघ १२, जालमसिंघ १३, हमीरसिंघ १४ हमै कुसलगढ राज करै है।

६४५. राठोड तेजसी वरसिंघोतरै भाई बेटै वड़ी रिया आयी. चाडसूं सरवण कछवाहांसूं वेढ हुई जद तेजसी काम आयो।

६४६. राव जोधारो वरसिंघ, वरसिंघरो तेजसी, तेजसीरो सहसो. सहसानूं राव माळदेजी वडी रियां दिवी, वीरमदे दूदावत कनांसूं मेड़तो लियो जद।

६४७. केसोदास १, करण २, महासिंघ ३, कुसळसिंघ ४, इंदरसिंघ ५, वहादुरसिंघ ६, भींवसिंघ ७, कुंवर प्रतापसिंघ ८—लखैसिंघोत जोधा है।

६४८. राठोड़ खेतसी वरसिंघ जोधावतरो वडो रजपूत हुतो. सीकरी सांगा राणारै बावरसूं वेढ हुई जद काम आयो. वीरमदे दूदावत नीसरियो।

६४९. खेतसी वीरमदेरै साथ हुतो. राठोड़ ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ जोधारो. ठाकुरसी कलावत वडो रजपूत हुवो. सातळियावास सरफुद्दीनसूं जंग कर राठोड़ सांवळदास उदैसिंघोत राव माळदेजीरै काम आयो जद ठाकुरसी पूरै लोह पडियो. जैमल वीरमदेओत इणनूं उठायो. पछै वांसवाळै चाकर रह्यो. वांसवाळारै रावळ उग्रसेण चांपावत सूरजमल जैतमलोत साथै ठाकुरसीनूं मेलियो माना चहुवाणनूं मारणनूं सूरजमलजी मानानूं मारियो जद चहुवाण मानारी लात लागी. ठाकुरसी कलावत काम आयो।

६५० राठोड ठाकुरसी कलारो, कलो खेतसीरो, खेतसी वरसिंघरो, वरसिंघ राव जोधारो ठाकुरसी वडो राजपूत हुवो वासवाळारै रावळ उग्रसेणजी चापावत सूरजमल जैतमलोत साथ ठाकुरसीनू मेलियो चहुवाण मानानू मारण वुरहानपुर सूरजमल माना चहुवाणनू मारियो जद मानारी लात लागी ठाकुरसी कलावत मुवो ।

मेड़तिया (दूदावत)

दूदो जोधावत

६५१ वरसिंघ मुवो मेडता सायर माथै आदमी जोधपुरसू सातल जोधावतरा आय वैठा वरसिंघरै वेटो सीहो महाकपूत वरसिंघरी ठकुराणी साखली सयाणी जिण वीकानेरसू दूदानै तेडायो इण आय अजमेररा सूवैदार सिरियाखारा आदमी मेलिया जिके मेडता मायसू काढ दिया मेडतो आधो दूदै अपणायो नै आधो सीहा वरसिंघोतरो मेडतो ।

६५२ अजमेरसू सिरियाखा दोडियो देस उजाडियो विगाडियो दूदै अजमेर कनै जग कर सिरियाखानै मारियो पहला जग कर सिरियाखारा हाथी खोसिया हा ।

वीभ नह भेटिया, नह मोल वणजिया ।
लाछ दूदै लिया ॥

६५३ दूदा जोधावतरै वेटा पाच हुवा– वीरमदे १, रतनसी २, रायमल ३, रायसल ४, पचायण ५ रतनसी रायसल दोनारै वस रह्यो नही पचायणोत पचास जणा है ।

वीरमदे दूदावत

६५४ वीरमदेव दूदावत कनासू राव मालदेजी मेडतो लियो उण सलेमसाहनू अरज लिखी पातसाह आग्या किवी–वीरमदेनू अठै भेज दे जद वीरमदेव सलेमसारी हजूर गयो वीकानेरियो किलाणमल ही उठै गयो रावजीरी जवरीरी वाता सुणायी पातसाह वानू साथै ले आगरै आयो रावजी अजमेर आया पातसाह अजमेर नजदीक रामसर आयो रावजी अजमेरसू दोय कूच पाछा किया पछै सलेमसाह डेरा किया रावजी गररी डेरा किया जद पातसाहजी वीरमदेनू क्यो–तू कहतो राव भाज जासी, सो तो राव जोरमें है इण अरज किवी–राव भाज जासी, आप परतीत राखजे पछै वारैट पतानू रावजीरी हजूर वीरमदे मेलियो उण अरज किवी–

पातसाहरी फोज घणी, फतै होण ज्यूं नहीं, कूंपो जैतो झूठी अरज करै है. आ वात सुण कूंपाजी-जैताजीनूं विना पूछियां रावजी गुंगरोटरा पहाड़ांनूं रवाना हुवा।

६५५. पछै कूंपाजी, जैताजी, पचायणजी, अखैराजजी, वीदाजी वगेरै राव्रजीरा उमरावां वीस हजार घोड़ांरी वाग उपाड़ संवत १६०० पातसाहसूं जंग कियो प्रभातरै समै. लरी नदीरै पार वेढ हुई. पांच हजार आदमी काम आया।

६५६. वीरमदे पातसाहनूं ले जोधपुर गयो पछै हासम कासम खवास सइयद और ही उमराव मारवाड़में राख कूच कियो. वीकानेर किलाणमलनूं दियो, मेड़तो वीरमनूं दियो. संवत १५३४ रा मिगसर सुद १४ रो जनम. संवत १६००रा काती वीरमदे मुवो।

६५७. मांगळियो भादो वावड़ीरो वासी जिण राव मालदेजीरी निजर किया सिकारी कुत्ता जद भादारा वेटा देव्रो जिणनूं चाकरीमें राखियो देवानूं वधारियो संवत १५९४ रावजी जैतमलोत कर्नांसूं सिवाणो लियो जद मांगळिया देवारै हवालै कियो।

६५८. देवो सिवाणै राम कह्यो – वीरमदे देव्रावत वडो सपूत हुवो. रावजी मेड़तो ले वीरम देव्रावतरै हवालै कियो. रावजीरी चाकरी नही करै जिणसूं वळूदा मायसूं वीदा वीरमोतनूं कढियो।

६५९. वीरमदे रियां सहसा माथै आयो जद रड़ोदर थाणासूं कूंपो मेहराजोत १, राणो अखैराजोत चांपो, जैसो भैरूदासोत इत्यादीक रावजीरा उमराव सहसारी मदत आया. रियां परै कोस माथै जंग हुवो. रावजीरा चाकरांरी वारै वरछी वीरमदे खोस लीवी. दस व्रार छुरी कार घोड़ो रावजीरी फोजमें नाखियो वडो पोरख परगट कियो पिण वीरमदेरी फतै हुई नही।

६६०. संवत १६२४ मे उतियो अरजुन रायमलोत जैमल ईसरदासजी सामल चितोड़ काम आयो।

६६१. वीरमदे दूदावत जिणांरै वेटांरी विगत – जैमल १, सारंगदे २, ईसर ३, कान ४, चांदो ५, मांडण ६, प्रथीराज ७, खेमकरण ८, जगमाल ९, प्रतापसिंघ १०, सेखो ११।

जैमल वीरमदेओत

६६२. जैमल पातसाह अकवररै पगां लागो जद संवत १६१८ जैमलनूं मेड़तो दियो. साठ हजार घोड़ांसूं मिरजा सरफुद्दीननुं मददकार जैमल साथै मेलियो।

६६३ हुळ रायसळ रामावत जैमल्जीरो उमराव वारै गावासू गात्र फाल्को पटै पावै, प्रथीराज जैतावत मेडतै रणभोम पडियो जैमलजीरै हाथ रहियो ।

६६४ हुळ रायसळरो भाणेज प्रिथीराजजी जिणसु आ भाणेज माथै छाया किवी जैमलजी रिसाणा, हुल रावजीरै आय वळियो ।

६६५ अक्वररी मा मक्का वगेरै मका-सरीफ ज्यारी ज्यारत करण गयी पातसाह मिरजा सरफुद्दीननु साथै मेलियो अेक पीर विलायतमें जिणरी ज्यारत सुहागवती करै, विधवा न करै ज्यारत करण वासतै विधवा अन्य पुरखसू अवध करि निका पढ लैं उण पीररी ज्यारत करणनू अकवररी मा मिरजा सरफुद्दीन साथ निका पढी दिली अकवररी मा पाछी आयी जद आ वात सुणी अकवर फुरमायो – अगै तो सरफुद्दीन हमारा चाकर रहा, अब हमारा वावा है ।

६६६ आ वात सरफुद्दीन किणीकै पास सुण लिवी जठै हुतो जठासू वीठळदास जैमलोनन् साथ ले भागो सो मेडतै आयो जैमळजीनू कह्यो– म्हारा कवीला नागोरमें हैं सो मगाय लेणा जद जैमळ आपरै बेटै सादूळनै नागोर मेलियो सादूळ नागोर गयो, उठासू मिरजारा कवीला ले मेडतानू रवानै हुवो दोय सौ घोडासू नागोररो आमल आ पडियो सादूळ झगडो कर काम आयो मिरजारा कवीला मेडतै आया सादूळ चाळीस आदमियासू खेत रहियो ।

६६७ जैमल विचारियो–पातसाहसू करो, हमै अठै रहणो नही जद भाई बेटानू कह्यो–माणस लेनै थे वगनोरमें जावज्यो, हू सरफुद्दीननू पोछावणनै जाऊ छू जैमल सिरोही ताई मिरजारै साथै गयो पछै नागाणै आय मातारो दरसण कर मेवाडमें गयो ।

६६८ राणाजीसू मिलियो वधतोर, करैडो, कोठारियो अे ठिकाणा राणाजी जैमलनू दिया सवत १६२४रा चैत वद ११ अकवर चितोड लियो जद दोय सौ आदमियासू जैमल राणारै काम आयो ।

वीरतणै घर वीर, दोय णोपी हुई वाण ।
राव अहिरपुर राखियो, इक उदियापुर राण ।।

६६९ मेडतियो मारगदे वीरमदेओन वोगलो दिया गयो हो तैसू मामलो हुवो जठै सोळखिया मारियो छोटा भाई माडण समेन उण वैरमें जैमल्जी सोळखियारै परणिया . चादै वीरमदेओन चितोड मायै नारायणदास सोळखीनू मारियो ।

६७०. जैमल वीरमदेओतरा बेटांरी विगत—सादूळ १, वीठळदास २, माधोदास ३, सामदास ४, सुरताण ५, नरायणदास ६, केसोदास ७, रामदास ८, हरदास ९, कल्याणदास १०, द्वारकादास ११, गोइंददास १२, नरसिंघदास १३, मुकंददास १४ ।

६७१. वडी सोळंखणीजीरो बेटो सुळताणजी. जैमळजी छोटी सोळंखणीजीरा बेटा तीन—केसोदास १, माधोदास २, गोयंददास ३ जैमलजी. मांडवरै पातसाह राजा पदवी वीरमदे दूदावतनूं दीवी ।

६७२. जगनाथ १, सांवळदास २, सूरदास ३, नाथो ४, वलराम ५ पांच बेटा गोयंददास जैमलोतरा ।

६७३. जगनाथ १, सुंदरदास २, सांवळदास ३—तीनूं राठोड़ गोइंददास जैमलोतरा बेटा ।

जगनाथोत मेड़तिया

६७४. मेड़तिया जगनाथ गोइंददासोतरै नव बेटा हुवा ।

६७५. गोपीनाथ जगनाथोत राव इंदरसिंघजीनूं नागोर मांयसूं कंवर मोहकमसिंघ काढ दियो हुतो इण पाछो रावनूं नागोर बैसाणियो. रावजी नागोररा गांव दिया ।

६७६. मेड़तियो भावसिंघ प्रयागदास जगनाथोत जिण वळाघणारा पातावत वारटनूं मातंगयण हाथी दियो ।

६७७. नागोररा, मेड़तारा परबतसररा गांव जगनाथोतांरा है ।

६७८. मेड़तियो गोपाळदास सुरताण जैमलोतरो, पातसाही चाकर, दिखणमें वीड़मी वेढमें काम आयो ।

६७९. राठोड़ दुवारकादास जैमलोतमे राघा वडो मामलो कियो. आज पहलां किण-ही राठोड़ इसो न कियो संवत १६५५ पातसाहरै काम आयो ।

६८०. राठोड़ केसोदास जैमलोत गोपाळदास साथै वीड़री लड़ाईमे काम आयो. आवो मेड़तो पटै हुतो ।

६८१. राठोड़ गिरधरदास केसोदासोत जैमलोतरानूं पातसाह पदमावती पटै दिवी ही, परवतसर पटै हुवो. संवत १६८६ खानजहांरी वेढमें काम आयो ।

६८२. किसनपुर मेड़तिया सुरताणोत वैरागिया सुबे वैरागियांरै भेळा वहै जठै जावै पुण्यरो लेवै, पागमें मोरपंख राखै. राजावत सिआंनै परणावै, उणरै परणीजै. महंत सेवादासजी है गांव तांबापत्र है ।

६८३ प्रथीसिंघ अर्खैसिंघ दोनूं सामसिंघरा प्रथीसिंघरा खालड बोरावड नैं अर्खैसिंघरा बूढसू मानाणै ।

मेंडतिया (घाणेराव)

६८४ वीरमदे १, प्रतापसिंघ २, गोपाळदास ३, किसनदास ४, दुरजणसिंघ ५, गोपीनाथ ६, सूरतसिंघ ७, प्रतापसिंघ ८, पदमसिंघ ९, किसनसिंघ १०, वीरमदे ११, दुरजणसिंघ १२, अजीतसिंघ १३, घाणेरावरा धणी ।

६८५ प्रतापसिंघ वीरमदेवोत मेडतियानूं राणोजी पचास हजाररा पटासूं गाव जनोद मेवाडरो दियो ।

६८६ वीरमदे दूदावतरो बेटो प्रतापसिंघ जिणनूं राणोजी पचास हजाररा पटासू जनोद दीवी ।

६८७ प्रतापसिंघरै गोपाळदास, गोपाळदासरै किसनदास, किसनदासरै घाणेराव महल कराया ।

६८८ गाव घाणैरो बामणारो सासण हुतो अेक वास गजरगोडारो, अेक राजकुरारो अेक वास गुंदचारो-जुमलै घाणेरै तीन वास हुता ।

६८९ गूजरगोड, राजगुर, गूदेचा-आ तीन जातरा ब्रामणारो गाव घाणीरो जठै किसनदास गोपाळदासोत महल कराया घाणेराव गावरो नाव परगट हुवो ।

६९० किसनदास मेडतियो आय रहियो जदसूं घाणेराव कहाणो ।

६९१ किसनदासरै दुरजनसिंघ, दुरजनसिंघरै गोपीनाथ, गोपीनाथरै सूरतसिंघ, सूरतसिंघरै प्रतापसिंघ, प्रतापसिंघरै पदमसिंघ, पदमसिंघरै किसनसिंघ, किसनसिंघरै वीरमदे, वीरमदेरै दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरै अजीतसिंघ ।

६९२ गोपीनाथजी रामपुरै चालिया राणा अमरसिंघरी वारमें ।

६९३ राणै अमरसिंघ फोज देन गोपीनाथ मेडतियानू सिरोही माथै विदा कियो, इण वहार गाव सिरोहीरा गोडवाड हेटै घालिया, सिरोहीरो माडीरो दाण राणाजीरो ठैरायो गोपीनाथरी पोत्रीरो सगध रावरा कुवरसू हुवो ।

६९४ राणै अमरसिंघ घोडै चढिया मेडतिया गोपीनाथ अरज किवी ।

६९५ राणो राजी हुवो ।

६९६ राठोड गोपीनाथरा बेटारी विगत–सुरताणसिंघ १, अनोपसिंघ २, अभैराम ३, हुवतसिंघ ४ ।

६९७ सूरतसिंघ १, मोहणसिंघ २, अभैराम ३, अनोपसिंघ ४–अै च्यार बेटा गोपीनाथरा ।

६९८. राणो अमरसिंघ तळाव फोड़ावतो हो. सुरताणसिंघ गोपीनाथोत अरज कर रखायो।

६९९. महाराज अजीतसिंघजी कनै दिली अभैराम गोपीनाथोतनूं राणो अमरसिंघजी उकील भेजियो. ओ राणारो काम सुधार पाछो आयो. नो····· ।

७००. राणो अभैरामसूं उदास हुवो मननें जद सिसोदियो पूरावत कह्यो-अभैरामजी तो आपरी चाकरी पूगा है सू वांसूं राजी रह्यो जोग है. जद राणोजी अभैरामजीसूं राजी हुवा।

७०१ नारळाई सादड़रारा धणी कोठारियो गाम अभैराम गोपीनाथनूं राणै जैसिंघ दियो. राम राव माऊदेरो जिणरा वंसरा जोधा ज्यांरै चाणोद हुई, तिका वां अनोपसिंघ गोपीनाथोतनूं दिवी।

७०२. किसनसिंघ १, बिसनसिंघ २, नाथूजी ३, खुमाणसिंघ ४, पहाड़सिंघ ५—अै पांच बेटा पदमसिंघजीरै ।

मेड़तिया (रियां)

७०३. रियांरा सिरदारांरी पीढियां लिखते—जैमल १, माधोदास २, सुंदरदास ३, गोपाळदास ४, प्रतापसिंघ ५, अचळसिंघ ६, कुसळसिंघ ७, सिरदारसिंघ ८, सेरसिंघ ९, जालमसिंघ १०, अमानसिंघ ११, सादूळसिंघ १२, हमैं है, पहलां रियां इणरा पड़दादारै हुतो।

७०४. सिरदारसिंघ १, सूरजमल २, जवानसिंघ ३, बखतावरसिंघ ४, बिरदसिंघ ५, सिवनाथसिंघ ६, हमैं रियांरा धणी है।

७०५. कुसळसिंघ १, सरदारसिंघ २, सूरजमल ३, जवानसिंघ ४, बखतावरसिंघ ५, बिरदसिंघ ६, सिवनाथसिंघ ७—रियांरा सरदारांरी पीढी।

मेड़तिया (आलणियावास)

७०६. सुंदरदास १, गोपाळदास २, प्रतापसिंघ ३, राजसिंघ ४, कल्याणसिंघ ५, रामसिंघ ६, पदमसिंघ ७, लखधीर ८, फकीरदास ९, भारतसिंघ १०, हणवंतसिंघ ११, अजीतसिंघ १२—आलणियावास।

७०७. आलणियावासरा सिरदारांरी पीढियां—प्रतापसिंघ १, राजसिंघ २, कल्याणसिंघ ३, रामसिंघ ४, पदमसिंघ ५, लखधीर ६, फकीरदास ७, भारतसिंघ ८, हणवंतसिंघ ९, अजीतसिंघ १०—हमैं आलणियावास भोगवै।

७०८. आलणियावाससूं वारसरै दिन राजसिंघजी वगैरे माधोदासोत नै उदावत दोनूं खांपांरा सिरदार पुसकरजी तहव्वरखांसूं जंग करण चालिया. राजसिंघजी प्रतापसिंघोत रथ सवार हुवा. रजपूतां कही—घोड़ै असवार होयजे. आं कही—

म्हारो पेट दूखै है पछै ऊदावत टळ परानू चालिया लोका आनू कह्यो हू आईज वात वाछतो थो, ओ अवसाण तुरकानू मारि धर चाड धणीरी चाड गऊरी चाड पुसकरराज माथै मरणरो पुसकरराज मोनूं हीज दियो सो पुसकरराज म्हारी अरज मानी, घोडो लायो रार्जासघजी घोडै सवार होय कह्यो—पुसकर! अेक म्हारी हमैं आ अरज, आपरा पाणीरो दरसण करि म्हारी लोथ पडै पछै सरस्वतीरा नाळसू वेढ सरु हुई, ब्रह्मघाट माथै जाता लोथा माधोदासोतारी पडी।

७०९ माधोदासोत राजसिंघजी वगेरै नव सिरदार पुसकरजीरा ब्रह्मघाट माथै काम आया तहवरखासू जग करीनै।

७१० आलणियावासरो धणी ईसरोत विजैसिंघ छोटो भाई राजसिंघ विजैसिंघजी मुवा पछै विजैसिंघजीरी ठकुराणी वजरगदेजी मरदानी पोसाक कर सस्त्र बाध घोडै चढती तुरकाणीमे वडो डको रह्यो।

७११ चमाळीस गाव आलणियावासरा नै चारसू ढढाडरी अजारै दोनू ठिकाणा लिया सारो राज-काज वजरगदेजी हाथा करता।

७१२ आलणियावासरो चमाळीसो वानै हो वजरगदेजीरै सात वरस छोड रह्यो, पछै वेटो हुवो।

७१३ दुरगदासजीरै पटै मेडतो जद आलणियावासरा चमाळीसारा रुपिया भरो अै नटिया पछै मेडतासू वजरगदेजी चढिया रियारी नदीमे वेढ हुई दुरगदासजी भागा वजरगदेजी जीता—

दोय कोस दोरी दुरगेस।

७१४ देवराजसिंघ आनू पळक दे मारिया नै वजरगदेजीरो बेटो ही मारियो वजरगदेजी कह्यो—मोनू थे झूठो पळक दे मारी है तो राजसिंघ! थारो नाम हाय, जो तै साचो पळक दे मोनू मारी है तो थारो तार ही बिगडजो मती।

७१५ गाव माजी नागोररो तारकीनजीरा मुजावरारै पातसाहरो दियो हुतो उठै बिगारमें माधोदासोत मेडतिया मरणै हुवा।

मेड़तिया (कुडकी)

७१६ वीरमदे १, जैमल २, माधोदास ३, सुंदरदास ४, गोपाळदास ५, प्रतापसिंघ ६, अखळसिंघ ७, कुसळसिंघ ८, गिरधारसिंघ ९, सेरसिंघ १०, अमानसिंघ ११, बादूळसिंघ १२, मेडतिया कुडकीरा धणियारी पीढिया।

मेड़तिया (कुचामण)

७१७. कुचामणरा सिरदारारी पीढियां लिखंते–रिड़मल्ल १, जोधो २, दूदो ३, वीरमदे ४, जैमल्ल ५, गोईददास ६, सावळदास ७, रुघनार्थसिघ ८, किसोरसिघ ९, जालमसिघ १०, सोभागसिघ ११, सूरजमल १२, सिवनाथसिघ १३।

७१८. गीत कुचामणरा सिरदारानू वाकीदास कहै–

किसू गणावे पीढियां ख्यात सारी कहै, दुनी प्रव प्रव प्रगट सुजस दीधो।
कदीही कियो नह रूमणो कुचामण, कुचामण साम–ध्रम सदा कीधो ॥ १॥
सूजड़ै काळ न्रप दिजपती सेवियो, मुख भण गयो वियां कमधजां साथ।
लोह वळ मुरव्रा-तणा केवळिया, सूह ढूढाड़ धर हूत सिवनाथ ॥ २॥
काकिया जनमिया जिकां चाळां किया, टूट रज-वट तिका हूंत दाखी।
अवरकै रचे रणजीत फोजा अणी, रज करी सरी गत धणी राखी ॥ ३॥
दुआ रुघनाथ दूदाणरा दिवाकर, वार थारी भली थाळ वागो।
पहलही मान यह तणा लागो पगां, लगा धम चक अभंग आभ लागो ॥ ४॥

७१९. संवत १७१५ रा मेड़तिया रुघनार्थसिघ सांवळदासोत . . . . . कनांसू मारोठ लिवी।

७२०. संवत १७१५ रुघनार्थसिघ सांवळदासोत गोडां कनांसू मारोठ लिवी।

७२१. सवळसिघ रुघनार्थसिघजीरो, सवळसिघरो इंदरसिंघ, इंदरसिघोत विजैसिघोत मारोठमे है।

७२२. वीरमदेवोत भाटिया कनैसू सराणो रुघनार्थसिघजी लियो. जाणियाणो रूपसिघजी लियो।

७२३. मेड़तिया रुघनार्थसिघोत हजूररी . . . . न चढै, ऊंटांरै जावतै न चढै. घोडो चढ नै फरावै हाथी चढ खवासी न करै . ... ।

७२४. रूपसी रुघावत रिमां-राह, आसाम कीध मारत अथाह।

७२५. रूपसिघ १, केहरसिघ २, अगदसिघ ३, अमरसिघ ४–अै रुघनार्थसिंघ सांवळदासोतरा वेटा च्यार नरूकांरा भाणेज सवळसिघ १, विजैसिघ २–अै दोय सेखावतांरा भाणेज।

७२६. मेड़तिया वनैसिघोत महासिघोत सगतसिघोत मीठड़ीमे है।

७२७. मेड़तिया विसनदासोत ज्यारै पहला जाजपुर पटै रहियो पछै खेरवो पटै रहियो. पछै खोड़ पटै पायी. राणो जैसिघ भाणेज।

७२८ पुमकरजी कनै चापावतारो ठिकाणो वसी कडैल जठारो भाणेज सीकररो धणी देवसिंघ।

७२९ मेडतियारै नागणेची ब्रह्माणी है, मीठी कोळी भोग लागै।

करमसोत

७३० करमसी आपरी वहन भागावाई नागोरग खाननू परणायी माळा कटारीमें आसोप खीवसर दियो।

७३१ राठोड करमसी आपरी वहन भागाँवाई नागोरी खानू परणायी जद खान माळ कटारीमें आसोप खीवमर दिया।

७३२ करमसी जोधावत लूणकरण वीकावतरी चाकरीमे रहतो नारनोळरै गाव ढुमियै वेढ हुई सू करमसी लूणकरण माथै काम आयो।

७३३ करमसी भलो राजपूत हुवो लूणकरण वीकानेरियारो चाकर हो लूणकरण वीकावत नारनोळ ऊपर गयो जद भोमियासू वेढ हुई लूणकरण, कवर प्रतापसिंघ, राठोड करमसी जोधावत गाव ढुमियै काम आया।

७३४ मागळियो भोज हमीरोत जिणरी बेटी दूल्दे करमसी जोधावत परणियो पचायण १, धनराज २, नारायण ३, पीथूराव ४—अे च्यार बेटा करमसीरै हुवा मागळियारा भाणेज।

७३५ उदैकरण १, नारायण २, पचायण ३, पीथूराज ४, धनराज ५—अै पाच बेटा। करमसी जोधावतरा।

७३६ करमसीरै टीको उदैकरणनू हुवो वरस ४० आसोप यारै रही सेवकी राव गागाजीरै नागोरी खानसू वेढ हुई उदैकरण रावजीरै सामल नै हुवो जद रावजी आसोप जब्त कीवी।

७३७ उदैकरण करमसीरो जिणरै आसोप च्यार वरस रही पछै रावजी गागाजीरै नै नागोरी खानरै सेवकी वेढ हुई उदैकरण रावरी चाकरीमें न गयो रावजी आसोप जै लिवी।

७३८ उदैकरण करमसोतरो बेटो भानीदास मागळिया वीरमरी चाकरीमें हो वीरमदे साथै काम आयो।

७३९ उदैकरणरो भवानीदास मागळिया वीरमरो चाकर हुतो सो वीरम माथै काम आयो।

७४० भवानीदासरै राम, रामरै केसोदास केसोदासरै प्रागदास।

७४१. रामरै दयालदास, दयाल्दासरै बेटा तीन हुवा—लखमीदास १, कुंभो २, हरदास ३ ।

७४२. करमसोत कान्ह खींमावत गोयळा वाळांरै वडेरै पीपाड पटै पायी ही ।

७४३. हमीर नरा सूजावतरो फळोधीरो धणी. गोपाळ नरा सूजावतरो पोकरणरो धणी ।

७४४. पोहकरणां दोड़नै विगाड़ करनै गांव बयाळीस नरावता कनांसू लिया ।

७४५. गोइंद नरावत भाखर माथै पोहकरण कनै गढ करायो. नांव सातलमेर दियो हो. राव मालदेजी नरावता कनांसू पोहकरण लिवी जद सातलमेर पाड़ सातलमेररा कवाड़ासू पोहकरणरो कोट करायो ।

७४६ नरांवतांरी वहन-वेटी सासरामे सातलमेरी कहीजै ।

ऊदावत

७४७. राव ऊदो सूजावत गांव लोटोती तळाव करायो नाव सूजैळाव दियो ।

७४८ संवत १६१४ रा चैत वद ९ अजमेरसू कासमखा फोज ले जैतारण माथै चढियो. रतनसी खींवा ऊदावतरो जणा ३५ पैंतीससू काम आयो ।

७४९. कल्याणदास रतनसिंघ खींमावतरो जिणरा बेटांरी विगत—दयाल्दास १, भीव २, मुकनदास ३, वेणीदास ४।

७५०. दयाल्दासरा राव सुर भीव राड़ वगेरै भीवदासरा माराही धोळीमे. मुकनदासरा रास नीवाज ।

७५१. मुकनदासरै वेटा दोय—मनीराम १, छोटो विजैराम २ जिण रास पटै पायी. पहला रास जो धोळी ।

७५२. पींपाड़ लाव माथै जगराम विजैरामोत पीपाड़ पटै पायी ।

७५३. ऊदावत जगरामसिंघ पीपाड, कुंअर कुसळ जगमालोत कोकलै, अमरसिंघ कुसळसिंघोत दहिया वडी, माधोसिंघ अमरसिंघोत देवगांव वघेरे, कल्याणसिंघ अमरसिंघोत ताल, दौलतसिंघ संभूसिंघ नीवाज मुवा, सुरताणसिंघ जोधपुर काम आयो ।

७५४. सुभराम जगरामोत्त सीरो लियो, पीपाडनै लिवी नही ।

७५५. अमरसिंघ कुसळसिंघ जगरामोतरै सीरो छोड पीपाड लिवी . जगरामजी देवलोक हुवां पछै ।

७५६. ऊदावत अमरसिंघजीरा वडो बेटो माधोसिंघजी वडो अडपदार हो . ऊ चलियां पछै कल्याणसिंघजी अमरसिंघोत नीवाजरो धणी हुवो ।

७५७ अमरसिंघनू हुडोर तकियो जिणसू माधोसिंघ अमरसिंघोत तकियो ले लियो विना दियाँ ही ।

७५८ ऊदावत अमरसिंघरी बेटी देऊबाई राजा उमेदसिंघजीनू परणायी उमेदसिंघजी जीवता राम कह्यो ।

७५९ अमरसिंघरी छोटी बेटी गुमानाबाई सायपुरै उदोतसिंघ उमेदसिंघोतनू परणायी उण नीवाज सत कियो ।

७६० नीवाज मदन परमार विसनू-अरथ मंदिर करायो जद खेजडलासू भेसादरी मूरत आय बिराजी ।

७६१ ऊदावत सुखसिंघ बखतसिंघोत केहरसिंघरै छोटै भाई राजा किशोरजीनू मारिया ।

७६२ रास ऊदावत बखतसिंघोत महाराज किसोरसिंघजीनू मारिया अजमेर में ।

रतनोत जोधा (भाद्राजण)

७६३ राव मालदे १, रतनसी २, सादूळ ३, मुकनदास ४, उदैभाण ५, विहारीदास ६, बाघ ७, उदैराज ८, उमेदसिंघ ९, जालमसिंघ १०, बख्तावरसिंघ ११–अै भाद्राजणरा सिरदारारी पीढिया ।

७६४ जोधा रतनसिंहोत गाव गोत्रणसू उठ मडला कनासु भाद्राजण, सोनिगरा कनांसू वालो, डूगरोता कनासू गाव भीवरी लीवी ।

महेसदासोत जोधा (पाटोदी)

७६५ जोधा पाटोदीरा ज्यारी पीढिया–राव मालदे १, महेसदास २, रामदास ३, गोइददास ४, सबळसिंघ ५, दुरजणसिंघ ६, सूरजमल ७, जालमसिंघ ८, जवानसिंघ ९, भारतसिंघ १० ।

७६६ महेस मालदेवोतरो बेटो रामदास, रामदासरो गोइददास, गोइन्ददासरो सबळसिंघ, सबळसिंघरो दुरजणसिंघ, दुरजणसिंघरो सूरजमल, सूरजमलरो जालमसिंघ, जालमसिंघरो जवानसिंघ, जवानसिंघरो भारतसिंघ–पाटोदीरा ।

७६७ राठोड जोगीदास रामदासोत महाराज गजसिंघजीरी आग्यासू बूदेलानू दिल्लीमें मारियो, रामसिंघ जोधारो वैर लियो पाटोदीरा जोधारो वडेरो जोगीदास ।

७६८ पाटोदी नथूसिंघ सूरजमलोत वागडिया देवडारो भाणेज जालिमसिंघ सूरजमलोत चावडारो भाणेज ।

७६९ नथूसिंघरी बेटी लाडूबाई जेसळमेर परणायी मूळराजजीनू बेटो मानसिंघ पाटोदी घोडासू पड मुवो रुवग्गदै पाटोदी इणरी छत्री है।

७७०. रावळ जैतमाल आगे दुरजणसिघ जोधो भाज भाद्राजण गयो पाटोदी छोड़नै ।

७७१. जोधा सवळसिघरै सात वेटा हुवा. पांच पाटोदी रहिया. दोय फळसूंड वसिया ।

७७२. महेसरो दूदो. दूदारा पोता घडसीरै वाड़ै रहै. महेसरो कल्याणदासरा पोतरा गाव सरवड़ी रहै ।

रतनोत जोधा (दुगोली)

७७३. मोटो राजा उदैसिघ १, जैतसिघ २, हरिसिघ ३, रतनसिघ ४, किसनसिघ ५, सावंतसिघ ६, सिरदारसिघ ७, राघोदास ८, ग्यानसिघ ९. सिवनाथसिघ १०, कंवर वखतावरसिघ ११–जोधा दुगोली ज्यांरी पीढ़ियां ।

गोयंददासोत जोधा (खैरवा)

७७४. खैरवारा धणियांरी पीढिया लिखते–राव माल्दे १, राजा उदैसिघ २, भगवानदास ३, गोइंददास ४, रणछोडदास ५, भीम ६, प्रतापसिघ ७, इंदरसिघ ८, सवाईसिघ ९, मानसिघ १० ।

७७५. खैरवै प्रतापसिघ भीमोतरी वेटी, इंदरसिघरी वहन, देलवाडारो धणी राजा राघोदेव परणियो ।

७७६. जोधा केहरसिघ नरसिघदासोतरा वेटारी विगत–इन्दरभाण १, चंदरभाण २, गोपीनाथ ३, किसनदास ४, उरजण ५ ।

७७७. खाटू किसनदासोत. सामै उरजणोत उमरकोटमें रसत घाली जद जोधा केहरसिघोत छव सिरदार काम आया इकतीस रजपूत काम आया. वयासी घांवा उपड़िया ।

पातावत

७७८. पातो जोगीदास चाखू पड़ियाळरो धणी मुकुनदास रामचंदोतरो वेटो महाराज वखतसिघजीरी फोज फळोधी लागी जद महीना कोटमे लडियो पछै प्रोळा खोल महाराज रामसिघजीरै काम आयो ।

७७९. जोगीदास छोटो भाई तिलोकसी काम आयो. रूपावत पाळीरो धणी जोधसिघ महाराज रामसिघजीरै काम आयो जोगीदासरै साथ ।

७८० जोगीदास काम आयो. जोगीदास पातारा भाई-वेटा पूगळ गया अमरकोट टाळपुर घेरो दियो जद रसद पहुचावणनै जोगीदासरांनू विदा किया. केहरसिघोत रूपावतां पातां रसद उमरकोटमे घाली. जग कर महाराजरी फतै किवी जद जोगीदासरानै सामै आया ।

७८१ जोधसिंघरो करनसिंघ, करनसिंघरो सिरदारसिंघ, पाळीरो धणी, झामट भीमसिंघजी महाराजरै काम आयो ।

७८२ कळावत जैतमळोत दोय वडा घडा पातावतामे नै आ पछै तीन वडा—गागावत, पाताउत, पीथावत ।

७८३ गागावतारो गाव नागोररी पट्टीमे ही है ।

पाळी

७८४ जगतसिंघ १, पेमसिंघ २, राजसिंघ ३ अखैराज ४, लखबीर ५, बीठळदास ६, गोपाळदास ७—पाळीरा सिरदारारी पीढी ।

रोयट

७८५ रोयटरो धणी भगोतसिंघजी जिणरी बेटी अेक धुलै मेघसिंघ रुघनाथसिंघोतनू परणायी दूजी माहर परणायी तीजी सामोद नाथावत अजीतसिंघ सुरताणसिंघोतनू परणायी दोहितो रावळ वैरीसाल ।

७८६ महाराज विजैसिंघजी बूदी परणिया जद रोयटरै धणी भगोतसिंघजी अस्सी घोडा भाटा—चारणानू दिया ।

७८७ राठोड रोयट दळपत गोपाळदासोतनू महाराज गजसिंघजी[1] दिवी पछै कल्याणदास दळपतोतरै रोयट रही सगतसिंघ आइदानोत थोभ छोडी, रोयट लिवी ।

नागोर

राठोड़ अमरसिंघ गजसिंघोत

७८८ संवत १६९१ रा पोस वद ९ साहजहा पातसाहरै पाय लागो—कुवर अमरसिंघ गजसिंघोत ।

७८९ अढाई हजार मनसब अमरसिंघजीनू दीनो पाच परगना पातसाहजी दीना वडोदर रूणनू १, आतरोदी २, सागोद ३, झोलाव ४, वाळपो ५ ।

१,५०,०००)	में वडोद
७०,०००)	सागोद
३,७५,०००)	में झोलाव
१,६०,०००)	में आतरोदी
२०,०००)	वाळपो
जुमलै ७,७५,०००)	

जुमलै ७,७५,०००) रुपियारी जागीर अमरसिंघजीनै इनायत हुई ।

७९० राव अमरसिंघ गजसिंघोत पातसाहरो बखमी सालावतखा सादिक वारो वेटो मारियो ।

७९१. खलीलखां रावजीरै झटको कियो. हाथ ऊपर रावजीरै लागी. पछै गौड वीठळदासरै बेटै गौड अरजुण झटको कियो. राव पड़ियो ।

७९२ संवत १७०१ रा सावण सुद ३ सैद खांनजहां पातसाहरो मेलियो आगरै अरमसिंघरी हवेली माथै आयो. राठोड वळू भावसिंघ वगेरा काम आया ।

७९३. चापो वळू गोपाळदासोत रजपूता पाचांसू काम आयो. आगरै ठाकुराणी टाकणी सती हुई ।

७९४. कूपो भावसिंघ कान्होत काम आयो राजपूता नवसू ।

७९५. चापो भीनोकरण भोपतोतरो च्यार रजपूतासू काम आयो ।

७९६. वळूजी सामल राठोड़ मामसिंघ कान्होत कूपो पातसाही दरबारमे अमरसिंघजीरै साथै काम आयो भावसिंघरो भाई ।

७९७. सोनगरो भोजराज जगनाथोत राव चत्रसालरो चाकर हुतो सो रावजी अमरसिंघजीरै काम आयो ।

७९८. सोगनरो नाथो मानावत काम आयो ।

७९९. भाटी गोइददासजी नजदीक था पिण भेळा न होय सकिया. चहुवाण तिळोकसी मेहकरणोत अमरसिंघजीरै काम आयो ।

८००. मुंहतो जोधो वछावत अमरसिंघजीरै काम आयो ।

८०१. सोनगरो जगनाथ जसवंत भागसिंघोतरो काम आयो ।

८०२. जोधो केसरीसिंघ नरसिंघदास कलावतरो, वारट चावो- कूपो गोयन्ददास खीवो माडणोतरो काम आयो ।

रायसिंघ

८०३. संवत १६८० असाढ सुद १० जनम. सं० १७०१ साहजहां पातसाह रायसिंघ अमरसिंघोतनू टीको दियो ।

८०४. इंद्रसिंघजी ईसरीसिंघजी रायसिंघजीरै कुंवर दोय ।

इन्द्रसिंघ

८०५. महाराज जसवन्तसिंघजी देवलोक हुवां पछै पातसाह औरंगजेब नागोररा राव इंद्रसिंघ रायसिंघोतनू जोधपुर इनायत कियो. इणरी अवाई सुण सिरदारां

जोधपुर गढ मजियो–चापावत सोनगजी, उदैसिघजी जैतावत परताप-सिघजी, सूरजमल ऊदावत, जोधो मुकददास, कूपावत हरिसिंघ, रालो प्रयाग-दास, ऊहड भगवानदास, किळेदार ईदो रुघनाथ, पुरोहित अखैराज–इत्यादीक घणी आसामिया मिल्नै गढ मजियो।

८०६ इद्रसिघजी जोधपुर आया विसटाळा फेर ललपत करी साच झूठ करी पट्टारो लालच दिखाय पातसाहरो जोर दिखाय गढसू सोनगजी वगेरा सिरदारानू उतार आप गढ चढिया पछै सोनगजीरै डेरै कुंवरनै मेलियो।

८०७ इदरसिघ रामसिघोत पातसाह ओरगजेबसू कोल कियो हो–मोनू जोधपुर दीजै, जोधपुर जाय राठोड सतरै कुबधी है ज्यारा माथा काट अठै मेलस्यू।

दूहो– इद्रसिघ सोनग रनै, दीनो कगर पठाय।
पख भाद्रव सुद पचमी, वरस छत्तीसै ताय॥

८०८ इदरसिघजी गढ ऊपर गया जद डोढो ताई इदरसिघजी सामा आया।

८०९ सवत १७३६ रा भाद्रवा सुद ७ मगळवार राव इदरसिघजी जोधपुररै गढ टीको लियो पछै राम भाटीनू चूर कर मरायो।

८१० रावजी अजमेर पातसाहरा पासा गया राठोडारी जोरावरीरा समाचार मालम किया।

ओरगसा अजमेर गढ, आयो दूजी वार।
जसमुणिया जगराजरा, जुडिया सो जोधार॥

८११ नापावत स्याम देवदत्त भोजनरै सार हुतो जठै रावजी आदमी मेलिया उवां जाय देवदत्तनू कह्यो–रावजीरो हुकम है, थेडी पहर रै, स्याम बेठो पहरी रही सावनै राम आयो जावमें रावजीरो अपजस हुवो।

८१२ नागोररा राव रामसिघजी इदरसिघजीरै सार परवाना ऊपर लखमी दामो-दररो नाम लिखीजो।

८१३ इदरसिघ नागोररो कोटवाल रूपो मोहिल कियो बिणजारो छनी रूपारी मराग झिणग पायगाग राखा मोहर बाणी रही।

८१४ पातसाह उदपुर माथ गयो उदगरो भेळो कूपावत उदैसिघ राम आया रातो सरजसिघ साथ चालिया गया।

८१५ राव इदरसिघजीनू नागोर पाछा पातसाह मेलिया।

८१६ रूपावत मनोहरीन दूजण रा नागोररी विळीदार पुरारो इदरसिघजीरो मरजद ज्वाब किवो पोकरणै रा कूपावत प्रतापसिघ नाहरसिघजीरा पोता मदद नाहरसिघजी रै दिली गया नागोरी मालिवी रखा गयो।

८१७. आगै हुती जिका सिणगार चोकी ढवायनै नवी करायी. डोढीरो वारणो दिखण दिसामे करायो. जोधपुररी रय्यतनू घणो दुख दियो. रावजी अनीत वरतायी. सोनगजी वगेरैरो वयूही वटै नही. सिरदार छाड दुरगादासजी कनै गया आं कह्यो—नागोरी तरहदार है, हूं तो पहलांसू ही जाण गयो, हमै सारा थोक भला करसां ।

वीकानेर

वीको जोधावत

८१८. वीको जोधावत जांगळूरा साखळांरो भाणेज ।

८१९. राठोड़ वीका जोधावतरा वेटारी विगत—लूणकरण १, घड़सी २, वीसो ३, नरो ४ ।

लूणकरण वीकावत

८२०. ढुसियो गांव नारनोळ कनै है जठै लूणकरण वीकावत काम आयो ।

८२१. उरजण सतावत बीका जोधावतरै काम आयो. मोहिळ मारियो ।

८२२. सावंत उरजणरो वीकानेररा लूणकरणरै काम आयो ।

जैतसी

८२३. वीकानेरसू सात कोस ऊपर सोहुवो गांव है जठै वीकानेररो धणी राव जैतसी लूणकरणोत कूपा महराजोतरै हाथ रह्यो ।

८२४. ठाकुरसी जैतसिघोत गयी भोमरो वाळणहार हुवो वीकानेर ।

८२५. राठोड़ ठाकुरसी जैतसीहोत लूणकरणोत जैतपुरसू जाय तेलीसू मिल निसरणियां लगाय राठा कनैसू भटनेर लियो ।

८२६. ठाकुरसी भटनेररा तेलीरो दिल हाथ लेनै सूतरा रस्सांरी नीसरणीसू तेरह सौ जणांसू भटनेररै किळै चढियो. भाटियानू मार काढिया. भटनेर अपणाय लियो ।

८२७ ठाकुरसीजी जैसलळमेर परणिया हुता ।

८२८. वीकानेरियै कल्याणमल जैतसिघोत आपरा छोटा भाई ठाकुरसी जैतसिघोतनू जैतपुर ठिकाणो दियो ।

८२९. ठाकुरसीरो वाघ अकवर आगै कुत्ता ज्यू वाघनू पकड़ आणियो ।

८३०. ठाकुरसीजीरै वेटो वाघजी हुवो. अकवररी आग्यासू वाघसू वाथियां पडण कमर वांधी वाघ कुत्ता ज्यू हुय गयो. पातसाह घणो राजी हुवो ।

८३१ मेडतियो केसोदास सुरताणोत नवाजनै मार आगरै रायसिंघ कल्याणमलोतरै डेरै आयो इण वाघ ठाकुरसिंघोतरै डेरै मेल दियो वाघ केसोदास भेळा काम आय यवनासू जग करियो ।

८३२ आ दोनारा माथा कटाय आगरारै दरवाजै बधाय पातसाह जावतानू चौकीदार राखिया पछै नारणोत वळभद्र राजा रायसिंघजीरा कह्यासू दोनारा माथानू जमनारै तट दाग दियो ।

८३३ पछै मेडतियो केसोदास सुरताणोत आगरामें नवाबनू मार बाघरै सरणै आयो वाघ केसोदास पातसाहरा मीरासु जग कर काम आया आरा माथा आगरारै दरवाजै टाकिया पातसाहरा हुकमसू माथा ऊपर चौकी वैठी पछै नारणोत वळभद्र माथानू दाग दियो जमनारै तट प्रिथीराजजी कह्यो–

भाई जिके वहीजै वलभद्र जो ।

राव कल्याणमल जैतसीहोत

८३४ राव कल्याणमल जैतसिंघोतरा बेटारी विगत – रायसिंघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिंघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८ ।

८३५ बीकानेर राव कल्याणमलरै बेटारी विगत – रायसिंघ १, प्रथीराज २, सुरताण ३, रामसिंघ ४, गोपाळदास ५, भाण ६, राघवदास ७, अमरो ८ ।

८३६ राठोड प्रथीराज कल्याणमलोतरै हमाररी बावनी पटै हुती हमै प्रथीराजोत उठै हीज रैवै है ।

८३७ स० १६३८ रा वैसाख सुद ३ सोमवार प्रथीराज कल्याणमलोत रूपक वेल नामे बणायो ।

राजा रायसिंघ कल्याणमलोत

८३८ विक्रमाख्यनृपस्य पुत्र श्री लूणकर्णोऽपि न लूणकर्ण ।
श्रीजैत्रसिंहोऽहित नागसिंह कल्याणमल्लोऽमित्र [illegible] ।
श्रीरायसिंहस्तनुजोऽस्य राजा, विराजते धर्म-पथस्य गोप्ता ॥

८३९ राजा रायसिंघजी बारट संकरनू सवा कोड दीनी जद पाडमर गाजनगर दोय गाम ताम्रापत्र दिया बीकानेरा ।

८४० दूजो राजा रायसिंघ कहै–

[illegible] करमो [illegible], आ मन जोस अपार ।
यही जग [illegible], [illegible] ॥

८४१. वीकानेर गढ कोट राजा रायसिघ करायो. अधकोस सहर छै. जूनो वीकानेर. वीकानेर सूरजपोळ वंधा ऊपरै हाथी वे है जैमल पत्तो है. वड अेक. मोटो वारणो छै. वावन वुरज छै. उगवणनू पोळसू पड़कोटासू तीन पोळ है. पोळ अेक पश्चिम दिसा छै वारी अेक उत्तरनू छै. छत्तीस गज कोट ऊंचो धरतीथी. हाथ पैंताळीस कोट नै गज १४ आडो छै. गज नव कोट दोळी खाई ऊंडी. भीत आंगणो सगळा छव गज छै. कुवा तीन पुरस साठ. पाणी मीठो. पहलां वारै हुता त्या दोळो कोट कराय मांय लिया. तळाव घड़सीसर सहरथी कोस दोय पाणी सात मास रहै. आठ कुवा सहरकी गिरद. साठ पुरस. पाणी मीठो. वीस नाडियां पाणी मास दोय तथा तीन रहै. सूरसागर पाणी मास छव रहै ।

८४२. ळाहोर सम्मन वुरज राजा रायसिघजी भुरटियारी करायोड़ी आछी है ।

८४३. वीजा हरराजोतनूं रायसिघ वीकानेरियै सिरोही मांयसू काढियो जद आठ हजार पीरोजिया दीवी राव सुरताण पेसकसीरी राजा रायसिंघनू ।

८४४. रायसिघ कल्याणमलोतरा वेटांरी विगत– दळपत १, सूरसिघ २, भोपत ३, किसनसिंघ ४ ।

८४५. रायसिघ किलाणमलोतरै वेटांरी विगत – दळपत १, सूरसिघ २, भोपत ३, किसनसिघ ४ ।

दळपतसिंघ रायसिंघोत

८४६. संवत १६५९ रा सावण वद १ कुंवर दळपत रायसिंघोत रायसिंघरा रजपूतां कनांसू नागोर लियो ।

८४७. दळपत रायसिघोत पकड़ाणो जद वीदासररो धणी दळपतरी चाड जंग कर मुवो ।

८४८. काजी गड़गड़ी चढा'र अजमेररा डेरां दळपत रायसिंघोतनू मारियो जहांगीररी आग्यासू ।

८४९. राठ वैराड़ी साथ ले दळपतरी मदत आया हुता ज्यांनूं वीकानेररा उमरावा धमक दे काढ दिया ।

सूरसिंघ रायसिंघोत

८५०. सूरसिघ भुरटियारी चाकरीमे गाडण चोलो, मीसण चाचो, अेक सीवड़ जुमलै अै तीन जण चाकरीमे रह्या ।

करणसिंघ सूरसिंगोत

८५१ संवत १६९९ रा काती वद ११ रवीवार बीकानेररो राजा करण नागोररो राजा अमरसिंघजी आगै फौजां जंग हुवो गाव सीळवै जद भोपत गोपाळदासोतरा बेटा तीन काम आया अमैराज १, करण २, माहवसान ३ ।

८५२ करण सूरसिंघोतरा बेटारी विगत – अनोपसिंघ चन्द्रावतारो भाणेज १, पदमसिंघ हाडारो भाणेज २, केसरीसिंघ सेखावतारो भाणेज ३, अजबसिंघ अहाडारो भाणेज ४ ।

८५३ करण सूरसिंघोतरा बेटा – अनोपसिंघ चन्द्रावतारो भाणेज १, पदमसिंघ २, मोहणसिंघ हाडारा भाणेज ३, केसरीसिंघ सेखावतारो भाणेज ४, अजबसिंघ अहाडारो भाणेज ५ ।

अनोपसिंघ करणसिंघोत

८५४ राजा अनोपसिंघ करणसिंघोतरा बेटारी विगत – सरूपसिंघ टीकायत देवलोक हुवो १, सुजाणसिंघ २, अणदसिंघ ३, सुदरसिंघ ४ ।

सरूपसिंघ अनोपसिंगोत

८५५ बीकानेर अनोपसिंघजीरी गादी देवळियारो भाणेज सरूपसिंघजी बैठा छव महीना राज कियो सीतळासूं मुवा ।

सुजाणसिंघ अनोपसिंघोत

८५६ पछै अनोपसिंघजीरी गादी सुजाणसिंघजी बैठा सुजाणसिंघजी अणदसिंघजी दोनूं कछवाहा नरूकरा भाणेज राजा गजसिंघजीरा दोहिता ।

८५७ अणदसिंघजी रिणी गया [illegible]सिंघजीरै खोळै गया ।

जोरावरसिंघ सुजाणसिंगोत

८५८ जैसलमेररा राजा सीवो भाटी, नाथारा बेटारा [illegible] प्रोहित गोयद नागोर महाराज वखतसिंघजीनूं मिलिया जाय नै बीकानेर आया आ खबर बीकानेररा सिरदार महाराजसिंघजीरा असल [illegible] देख, जोरावरसिंघजी बीकानेररा राजा [illegible] महाराज श्री [illegible] जोरावरसिंघजी [illegible] प्रोहित [illegible] बीकानेर [illegible] सिरदारां [illegible] महाराजा [illegible] बीकानेररो [illegible] भायो [illegible] ।

८५९. राजा जंसिघजी जैपुरमे राजा जोरावरसिघ वीकानेररो धणी जिणनूं फुरमायो-थारै देसमे सुख है या कही लालसिघ दोड़ै है. सेखावतांरो लोकनै वीकानेररो लोक भादरा माथै गयो. लालसिघनूं पकड़ जैपुर आणियो. चीलरै टोळै चढायो. ईसरीसिघजी पाट वैठा जद महाराज अभैसिघजीरा फुरमावणसूं लालसिघ छूटो।

८६०. राजा जैसिघजीसूं वीकानेर-पति जोरावरसिघ सुजाणसिघोत मिळियो जद भूकरकांरो सिरदार कुसळसिघ जिणसूं मिळ जैसिघजी फुरमायो–इणांरी जिती वहादुरी सुणी ही उती ...... जद हरनाथसिघ नरूकै दीपसिघ कुंभाणी अरज किवी–रजपूतरै मूंडै थोड़ी मूछ हुवै जिकोही काम पड़ियां माठी जणावै. आंरै मुंहड़ै तो वाथ भरी मूंछां है। अै जणावै जिणरो कांइ इचरज है ?

८६१. वीकानेररो राजा जोरावरसिघजी वणाड़रा डेरा महाराज जैसिघजीसूं मिळिया जद कुसळसिघजी भूकरकारा धणी, सांडवारो धणी इंद्रसिघ, महाजनरा धणीरो भाई छोटो भीमसिघ – अै सिरदार साथै हुता।

गजसिंघ अणंदसिंघोत

८६२. वीकानेर राजा गजसिघ अणदसिघोत खंडेळारा भाणेज. कंवर राजसिघ गजसिघोतरी बेटी सिरदारकंवर जैपुर राजा प्रथीसिघजीनूं परणायी. महाराज गजसिघजी ओ व्यांव आछो कियो।

८६३. गजसिघजीरी वेटी पनैकंवर वूंदीरा रावराजा विसनसिघजीनूं परणायी।

८६४. राजा गजसिघजीरी वहन इंदरकुंवर रावराजा उमेदसिघजीरा वेटा सिरदारसिघजीनूं परणायी।

८६५. वीकानेर प्रिथीसिघजी परणिया जद वरवाड़ारै राव माचेड़ीरै धणी प्रतापसिघजी सेखावत डेरा लुटाया।

८६६. चित्रकवर, विचित्रकंवर, सुखकंवर–अै तीन वेटी वीकानेररा राजारी राणा राजसिघजीरा कुंवर सिरदारसिघजी, सुरताणसिघजी, जैसिघजीनूं परणायां।

८६७. महाराज गजसिघजीरै भाई तारासिघजी अणंदसिघजीरी जायगा रिणी दाव वैठा. जद मुहतो वखतावरसिघ फोज ले रिणी गयो कांधळोत ळाळसिघरै हाथ तारासिंघजी रह्या।

८६८. तारासिघजी महाराज गजसिघजीरा छोटा भाई रिणी दाव वैठा. मुहतो वखतावरसिघ महाराजरी विना मरजी रिणी माथै गयो तारासिघजी फोज

सामा आया कह्यो—मोनू कुण मारसी ? जद काधळोत लालसिंघ तारसिंघनू मारिया ।

८६९ तारासिंघजीरी बेटी गजसिंघजी परणायी उमेदसिंघ रावराजारा बेटा सरदारसिंघजीनू परणायी ।

सूरतसिंघोत गजसिंघोत

८७० नव दुर्गारा नव मंदिर महाराज सूरतसिंघजी कराया वीकानेर ।

८७१ संवत १८८५रा चैत सुद ८ वीकानेर सूरतसिंघजी देवलोक हुवा संवत १८८५ रा चैत सुद १४ उदैपुरमें राणो भीमसिंघजी देवलोक हुवा ।

८७२ वीकानेररी हदमे गाव परमारसररो धणी परमार माधोसिंघ तिणरा भाणेज तीन महाराज सूरतसिंघजीरा कुवर तीन — रतनसिंघ १, मोतीसिंघ २, लिखमीसिंघ ३ ।

वीकानेररा राजा काम आया

८७३ लूणकरण वीकावत ढुसिये गाम काम आयो जैतसी लूणकरणोत काम आयो रायसिंघ कल्याणमलोत बुरहानपुर देवलोक हुवो छतरी तापी उपर है वर्ष तिहत्तररी ऊमर हुई सूरसिंघ रायसिंघोत दिखणमे सहर आभीरी जठै देवलोक हुवो राजा करण सूरसिंघोत औरंगावाद देवलोक हुवो राजा अनोपसिंघ करनसिंघोत आदूणी देवलोक हुवो दिखणमें आदूणी अनोपगावमें छतरी है पदमसिंघ करणसिंघोत कोकणमे काम आयो ।

फुटकर

८७४ वीकानेररो राजा मूनरो नाम ले सोझवळीरा नाम कहावै ।

८७५ वीकानेर लक्ष्मीनारायणजी धूडजी अै सेव्र सालिग्राम है ।

८७६ वीकानेर राजाजीरै सेवामें करडमें करनीजीरी मूरती रहै करनमहलम सेवा हुवै पाछो करड निजसेवामें थापित हुवै ।

८७७ वीकानेर पुस्तकसाळामें अेक देवी विराजै है ।

काधलोत राठोड

८७८ माटी काधळजीके वाघी वीका ।

८७९ वीका वीकानेर दमोडी काधळा राठानू मार काधळजी जमी दावी वीकानेरसू अस्सी कोस उनगधनू धमोरो गाव जठै काधळजी ठाकुराई वाधी ।

८८० काधळ रणमलोत हमार काम आयो ।

८८१ चूरुरा काधळ वणवीरोत है ।

वीदावत

८८२. जोधायणमे साख वहै –

अजीतजी स वरदायी, वसुधा जोधै भली वसायी।

८८३. अजीत मोहलनूं मार रावजी जोधैजी जमी लिवी जिका वीदाजीनूं दिवी. गाँव १७० वीदाहदरा छै, वीदावत द्रोणपुरा कहावै. द्रोणपुरो हमै सूनो छै।

८८४. राठोड़ वीदा जोधावतरा वेटांरी विगत – उदैकरण १, हरीचंद २, सहंसारचंद ३, भीमराज ४, भोजराज ५, वैरसल ६, डूंगरसी ७।

८४५. वीदा जोधावतरै वेटांरी विगत–उदैकरण १, हरचंद २, भोजराज ३, भीव-राज ४, संसारचंद ५, वैरसल ६, डूगरसी ७।

८८६. वीदावत द्रोणपुरा कहावै।

जींजणियाळी

८८७. जीजणियाळीरो सिरदार भाटी उदैसिह रामसिघोत जिण वोगनी आईरा मिसणारो भाणेज रतनू राजो मारियो. राजै सगा मायानूं वोगनी आईमे मारियो इण खूनसूं।

(जाट)

८८८. जाखाणपट्टीरा गांव वीदावतांरै पटै. जाखड़ जातरा जाट रय्यत।

८८९. सीहाकोटीरा गांव १४० महाजनका सिरदारकै सीहाक जाट रय्यत।

७९०. गोदारा जाटांरा गांव १४४ भंडाणरा वीकानेररा राजारै खाळसारा।

किसनगढ

किसनसिंघ उदैसिंघोत

८९१. किसनसिघ राजा उदैसिघोत जोधपुर हुता जद आंरै पटै गाव दुधण्ड़ हुतो।

८९२ राठोड़ घड़सी वौत मेवासी हुता ज्यांनू मार किसनसिघ उदैसिघोत धरती ले किसनगढ वसायो।

८९३ किसनसिघजी किसनगढ वसायो जद गुदैळाव कनै गांव वसी १, जिर २, मीरांरा मालक मेर. किसनसिघजी इण जमीरा मालक हुवा जद उवां मेरांसूं संबंध मेट मारवाड़मे मुसळमानॉसूं संबंध करणा सरू किया. जात माजवी उवांरी है।

८९४. अजमेर राजा किसनसिघ-उदैसिघोत काम आयो जद करनसिघ उदैसिघोतरो यो राठोड़ करमसेन उग्रसेनोत नागैपीठ सौ घाव लागा।

रातै पूछ कमो वड रावत,
कल्लै मुख धोळै केवाण ।।

८९५ सवत १६७१ जेठ सुद ८ राजा किसनसिंघजी काम आया ।

८९६ किसननू छोड नह जाय किरतो ।

८९७ किसनसिंघजी उदैसिंघोत ज्यानू सोनगिरै उदै रतनसिंघोत राजसिंघ कूपावतरै प्रधान मारिया वळूदरि धणी जगनसिंघजी वै सूरसिंघजीसू मालम किवी ।

८९८ राजा किसनसिंघोत उदैसिंघोतरै बेटा च्यार हुवा–सहसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगमाल ४ भारमलजीरो वस रह्यो तीन निरवस गया ।

८९९ महसमल १, भारमल २, हरिसिंघ ३, जगनाथ ४–अै च्यार बेटा राजा किसनसिंघरै, महसमल सात वरस राज कियो ।

९०० हरिसिंघ, सहसमल, जगमाल–आरो वस रह्यो नही ।

रूपसिंघ भारमलोत

९०१ राठोड रूपसिंघ भारमल किसनसिंघोतरो सवत १७१४ धोळपुर राड हुई दारा-सिकोहरै नै ओरगजेब मुरादवगसरै जठै काम आयो साहजहारी तरफ वडो डील हो ।

९०२ रूपसिंघ भारमलोत पातसाहजी सू जागीर पावै जिणरी विगत–

५०,०००)	परगनो किसनगढ
८२,५००)	परगनै अराई
३५,०००)	मलेमावाद
२५,०००)	बाघल मीदरी
१८,८४६॥)	परगनै अजमेररा गाव
६८,७५०)	परगनै हसनपुर मोहरी
५७,५००)	पटी इदाणारी परगनै नागोररी
१,८७,५००)	परगनो नैणवाय
५४,४०३॥)	परगनो जीडोरो परळाम
७०,१४७=)	परगनै पीपळाज
२,००,०००)	परगनै माडळगढ
२,००,०००)	परगनै आचगाबाद
९,९०,६४७=)	री गुरु जागीर ।

९०३. सूरसिंघजी हाथा चीरो लियो- बँदोवस्तमे हीज रह्या. वीरसिंघजी ज्यांरै वेटा अमरसिंघजी कीरकेडो. छोटा वेटा सूरतसिंघजी .... वहादुरसिंघजी किसनगढ राज वांधियो. भाटियॉरी साखलांरी, जोइयांरी, मोहेलांरी, राठांरी जमी वीकानेर हेठे दीवी ।

वहादुरसिंघ

९०४. किसनगढरा राजा वहादुरसिंघजी लवाणरा वीकावतारा भाणेज हुता ।

९०५ हिन्दुस्थानी मुसळमान और मरहठा मुजरो सलाम करता जद वहादुरसिंघजी माथै हाथ लगावता ।

९०६. वहादुरसिंघजीरै नागोरी धमाको खवामे रहतो लोहरी मूठ लोह रातै नाळरी तरवार गलडवै रहती. अधोडीरो गलडवो रहतो. नव पलारो मीथो रहतो दस पलारो लवायचो रहतो जाडी पीडिया ताई क़ाछ रहती ।

९०७. महाराज वखतसिंघजी जोधपुर ले सिणगारचौकी विराजिया जद धांधळ कनैसू चवर ले वहादुरसिंघजी चंवर करण लागा. देवीसिंहजी चांपै अरज कीवी-वहादुरसिंघजीरी निगाह कीजै जद राजाधिराज वहादुरसिंघजीरो हाथ पकड वहादुरसिंघजीनै वैठाया ।

९०८. गाजूदीनखां नवावरै सामा कोस महाराज वहादुरसिंघजी पधारिया. किसनगढ दीवाणखानामे गादी माथै गाजूदीनखां वैठो, विछायत माथै वहादुरसिंघजी वैठा महाराज चंवरी हाथमे लीवी जद गाजूदीनखा पाल दिया ।

९०९. महाराज वहादुरसिंघजी फुरमावता — गाजूदीनखां सरीखो सहूरदार जावनी भासामें प्रवीण दीठो नही ।

९१०. संवत १८३८ वहादुरसिंघजी देवलोक हुवा जद विरदसिंघजी चाळीस वरसमें हुता, प्रतापसिंघजी २१ वरसरी वयमे हुता ।

९११. किसनगढ राजा वहादुरसिंघजीरै पांच वेटी-गुलाबकंवर नरवररा राजानू परणायी १, अखैकुंवर वूदी अजीतसिंघजीनू परणायी २, रूपकंवरवाई जेसळमेर रावळ मूळराजजीनू परणायी ३, वाई अेक उदैपुर राणा अड़सीजीनू परणायी ४, वाई अेक देवळियै दिवाण सावंतसिंघजीनू परणायी ५ ।

विड़दसिंघ

९१२. किसनगढ विरदसिंघजीरै च्यार वेटी हुई — अेक उदैपुर राणा अडसीजीरै कुंवर हमीरसिंघनू परणायी १, अेक जेसळमेर रावळ मूळराजजीरा कुंवर रायसिंघजीनू परणायी २, अेक वणहडै राजा हमीरसिंघजीनू परणायी ३ ।

९१३ किसनगढ़ सिरदारसिंघ मद पीतो पण मांस खातो नहीं ।

९१४ चमालीसै सिरदारसिंघजी विंदावनामें देवलोक हुवो किसनगढ़रो राजा ।

सामंतसिंघ (नागरीदास)

९१५ महाराज राजसिंघजी ज्यांरा वडा वेटा सामन्तसिंघजी नागरीदासजी कहाणा ।

९१६ फतैसिंघजी उण ठिकाणै फतैगढ़ बांधियो डूंगरपुरसूं परणीज महीरै तट आय डेरो कियो उठै देवलोक हुआ हाडीजी सत कियो ।

किसनगढ़रा राजारा मोसाळ

९१७ किसनगढ़ मानसिंघजी चूडावतारा भाणेज राजसिंघजी देहुवियारा सीसो-दियारा भाणेज बहादुरसिंघजी राणावतारा भाणेज सिरदारसिंघजी गोडारा भाणेज प्रतापसिंघजी मायबुगरा राणावतारा भाणेज कल्याणसिंघजी नरवररा धणीरा भाणेज ।

ईडर

९१८ सवत १७८६ रायसिंघजीरो आणदसिंघजीरो अमल ईडरमें हुयो ।

९१९ सरकोटैरो धणी परमार उदैसिंघ वेर. जिणरा हाथरी बरछी महाराज अणद-सिंघजीरै लागी खेत रहिया ।

९२० महाराज अणदसिंघजीरी वेटी उदैपुररवाई रावराजा उमेदसिंघजीनै परणायी रायसिंघजीरी बेटी भानपुररवाई रावराजारा छोटा भाई दीपसिंघ जिणनू परणायी ।

आवझरा

९२१ आवझरा राठोडांरी पीढ़िया लिखी—राव गांगो १, राव मालदे २ राव ३ [illegible] ४, राव जसवन्तसिंघ ५, राव [illegible] ६, राव केसरीसिंघ ७ ।

९२२ जुझारसिंघ ११, राव [illegible]सिंघ १२ राव अजीतसिंघ १३, इण आवझरै राज [illegible] ।

९२३ केसरीसिंघ [illegible] आवझरारो धणी [illegible] ।

रतलाम

९२४ [illegible] राजारी पीढ़िया लिखीत—[illegible] १, [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४, [illegible] ५, [illegible] ६, मानसिंघ ७, पदमसिंघ ८, परवतसिंघ ९ ।

९२५. राजा दळपतसाहरो भोपतसाह भोजपुर जिणरो नाम पातसाह जहांगीर मुकटमणि दियो पंच सही हुवो. मुकटमणिरो दुरजणसिघ साहजादा सूजारै चाकर।

९२६. मेड़तै राड़ हुई जद महेसदास दळपतोत आपरी छाती आगै जगरामजीनू राख दिखणियां माथै चलाया. आ कही–आज काकाजी जगरामजीनूं सारां सिरे करसूं. महेसदासरा घोड़ा वाग उपडी जद ओ निसर गजसिंघपुरै आयो।

९२७. महेसदास दळपतोतरै गढ गाढो करणरी, गढमें लड़ मरणरी सदा मनमें रहती।

दूहो–मधकरका जूझारमल, राजड़ जिसा निगेम।
अै पांचूं दळ साहरा, पांचू पांडव जेम॥

९२८. दळपत उदैसिघोतरै अै पांच बेटा–महेसदास १, कनीराम २, जुझारसिघ ३, गजसिघ ४, जसवंतसिघ ५।

९२९. चहुवाण वळू सामतसी मेहकरणोतरो महेसदास दळपतोतरो चाकर. संवत १६८५ महेसदास मोहनखारै वसियो जद वळू अदो मोहवतखांरो चाकर रहियो. दिखण मेल्यो. हाथ ...... पछै महोवतखां मुवो तद वळू महेसदास दोनूं पातसाहरै चाकर रहिया. महेसदासनूं जाळोर, वळूनू सांचोर दिराणी।

९३०. रतन महेसदासोतरा बेटा दस – रामसिघ१, रायसिघ२, नाहरसिघ३, करणसिघ ४, सत्रसाळ५, उखैसिघ६, प्रिथीसिघ७, केहरसिघ८, सगतसिंघ९, जैतसिघ १०।

९३१. रतलामरो राजा प्रिथीसिघजी ज्यांरी बेटी सुखकंवर राणा राजसिघनूं परणायी।

९३२. भणायरा धणियांरी पीढी – राव मालदे १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण ४, स्यामसिघ ५, उदैभाण ६, केसरीसिंघ ७, तखतसिंघ ८, कंवर वखतसिघ ९, सालमसिघ १०, दलेल्सिघ ११, उदैभाण १२, सूरजभाण १३।

भिणाय, देवळिया, वघेरा

९३३. देवळियारी जोधांरी पीढी लिखंते – राव माल १, चंद्रसेण २, उग्रसेण ३, कर्मसेण ४, स्यामसिंघ ५, उदैभाण ६, नाहरसिघ ७, रघुनाथसिघ ८, मोहवतसिघ ९, दुरजणसिघ १०, सिवदानसिंघ ११, अजीतसिघ १२, अखैराज १३, कंवर सादूळसिघ १४।

९३४. वघेरारां सिरदारांरी पीढी–उदैभाण १, नाहरसिघ २, देवकरण ३, कंवर मालमसिघ ४, उदैसिघ ५, कंवर जोरावरसिघ ६, कुमेरसिघ ७, रणजीतसिंघ ८।

९३५ मोहवतखान कर्मसेण उग्रसेणोतनू सोजत दीवी ठव महीना अमल कमसेणरो सोजतमें रह्यो ।

९३६ विना वैर राठोड़ धमसेण कमसेण उग्रसेणोतरो, बूदीगत्र सतसालरो चाकर, जिणनू ह्राडै विहारीदास मारियो ।

९३७ रामसिघ कर्मसेणोत वडो दातार, वडो भुजाइयो हुतो राणा जगतसिघरै वास घणा वरस रह्यो गाव जोजावर घणा गावासू पटै हुवो देवळियैरो धणी रावत जसवतसिघनू मारियो राणाजीरा कहणासू ।

९३८ राठोड़ रामसिघ कर्मसेण उग्रसेणोतरो वडो दातार वडो भूजाइगा हुतो राणा जगतसिघरो चाकर गाव जोजावर पटै हुतो ।

९३९ इण जगतसिघ राणारा हुकमसू देवळियारो धणी रावत जसवत मारियो पछै पातसाहजीरै चाकर रह्यो पछै वरजाडो पायो पछै सवत १७१३ काती माहे जगनाथ ईडरियो मूवो जद पटै ईडर पायो सवत १७१४ रा जेठमे धोळपुर काम आयो ।

९४० रामसिह कमसेणोत दोय हजारी जात दोय हजार सवार ।

९४१ राठोड सेरसिघ रामसिघ कर्मसेणोतरो जिण सवत १७१६ ईडर पायो सवत १७१९ ईडरियो गोपीनाथ आयो भीलानू ले नै ईडर घेरो दियो बुरै हवाल सेरसिह धर्मद्वार नीसरियो ।

९४२ मासिघ कर्मसेणोतरै पटै रेण भिणाय पातसाह अेक वर सालेर मालेर पटै दियो थो ।

९४३ किसनसिघरै विसनदास, इद्रसिघ अे दोनू वेटा हुया इद्रसिघ दारासाहरै काम आयो ।

पीसागण

९४४ उदैकरणरो सगतो, सगतारो मनोहरदास स० १६७२ महाराज सूरजसिघजी मनोहरदासनू पटै पीसागण दीवी ।

९४५ पछै वीकानेरिया राजा सूरसिघ मनोहरदासनू मरायो इण ठाय जोधपुर वीकानेर धण वध वधियो हो ।

९४६ पीसागण सुजाणसिघ केहरसिघोतरो कुवर किसनसिघ वीजैपुररै धणी गौड गरीवदास मारियो वधेरै पछै सुजाणसिघ गरीवदासनू मार वैर लियो किसनसिघरो सुसरो गरीवदास गौड ।

९४७. तीनूं गांवांसू पीसांगण सुजाणसिघरै पिता केसरीसिघ अपणायी. केकड़ीरी चमाळीसी सुजाणसिघ अपणायी ।

९४८. सुजाणसिघरो पोतो राजसिघ जिण सपोनरांरा ठिकाणा जूनिया महरुं वगैरा केकड़ीरी चमाळीसीमे सुजाणसिघोत जोधा ज्यांरा मुहड़ा आगै आद खांपरा राठोड़ है—पुनावत, वाळावत, पातावत मतावत ।

९४९. जोधो राजसिघ किसनसिघ सुजाणसिघोत जिणनूं पातसाह पुर मांडळरो परगणो दियो. जगावतांरो ठिकाणो पीथावसपुर मांडळरो है. जगावतां जमने दिवी. राजसिघ पीथावस आय झगड़ो करना लल्लुहाणी कोसीथळरा धणियां सहित पीथावसरा धणीनूं मारियो ।

९५०. किसनसिघ सुजाणसिघोतरा जूनिया. जुझारसिघ सुजाणसिघोतरा पीसांगण आरै. करणसिघ सुजाणसिघोतरा वडी खिहरु ।

९५१. राजा उदैसिंघ १, माधोसिघ २, केहरसिघ ३, सुजाणसिघ ४, किसनसिंघ ५, राजसिंघ ६, सिवसिंघ ७, वखतसिंघ ८, रूपसिंघ ९, हरनाथसिंघ १०, वैरीसाल ११– अै जूनियारा सिरदारांरी पीढियां ।

मसूदो

९५२. मसूदै परमाल सादूळरै बेटै कुंवर भोपत मोटा राजा उदैसिघजीरो जिणरो ठावो आदमो हुल मांडो वीकाउन जिणनूं बोली-चाली में वाद वध मारियो ।

प्रकीर्ण

९५३. आली १, मोहण २, उदैपुर ३– अै तीन ठिकाणा गुजरातमें राठोड़ांरा पावागढ कनै है ।



[३] गहलोतांरी वातां

९५४ गुजरातमे तिलगापुर पाटण अठै राजा ग्रहादित्य हुवौ तिणसू गहलोत कहाणा ।

९५५ गहलोतारै वायण चुडाय दीप देवी तिलगापुर पाटणसू उठिया ।

९५६ चौईस साख गहलोतारी लिखते– गहलोत १, मागळिया २, डाहलिया ३, टीबाणा ४, चद्रावत ५, सीसोदिया ६, आमावत ७, मोटसीरा ८, मोहल ९, वला १०, आहडा ११, केलवा १२, गोदारा १३, तिवडकिया १४, वुटिग १५, पीपाडा १६, मगरोपा १७, भापला १८, धीरणिया १९, गोतम २०, हुरु २१, मेर २२, वूटा २३, गुहिल २४ ।

९५७ मोरी वस इद्रसू प्रगट हुवौ चित्राग मोरी चित्तोड किलो करायो सीसोदियै रावळ वापै मोरिया कनैसू चित्तोड लियो जद मोरी भाज मोरठ देसनू गया ।

९५८ राणारी वसावळी– राणो महप १, राणो महिपाळ २, राणो गुरवी ३ राणो रूपदेव ४, राणो हम्सूर ५, राणो नरसूर ६, राणो नगपाळ ७, राणो तेजपाळ ८, राणो भुवनसिंघ ९, राणो भीमसिघ १०, राणो अजैसी ११, राणो लखमसी १२, राणो अरसी १३, राणो हमीर १४, राणो खेतो १५, राणो लाखो १६, राणो मोकल १७, राणो कुभो १८, राणो रायमल १९, राणो सागो २०, राणो उदैसिघ २१, राणो प्रताप २२, राणो अमरसिघ २३, राणो करण २४, राणो जगतसिघ २५, राणो राजसिंघ २६, राणो जैसिंघ २७, राणो अमरसिघ २८, राणो सग्रामसिंह २९, राणो जगतसिघ ३०, राणो अरसी ३१, राणो भीमसिंघ ३२ ।

९५९ गुहादित्य १, विजयादित्य २, केशवादित्य ३, भोगादित्य ४, आमासरादित्य ५, श्रीदेवादित्य ६, महादेवादित्य ७, गुरुदेवादित्य ८, रावळ वापो ९, रावळ काळभोज १०, रावळ खुमाण ११, रावळ श्रीगोविंद १२, रावळ आळू १३, रावळ सिघ १४, रावळ सगतकुमार १५, रावळ शालिवाहण १६, रावळ नरवाहण १७, रावळ अवप्रसाद १८, रावळ श्रीकीरत १९, रावळ करणादित्य २०, रावळ भादो २१, रावळ गोतम २२, रावळ प्रियहस २३, रावळ जोगराज २४, रावळ भैराडू २५, रावळ वरसिंघ २६, रावळ तेजसी २७, रावळ समरसी २८, रावळ रतनसी २९, पछै राणो हुवो थो ।

९६० चापो चाहडदेरो करण रावळरो देव राणो १, नरू राणो २, राहप राणो ३, हरसूर राणो ४, जसकरण राणो ५, नागपाळ राणो ६, पुण्यपाळ राणो ७,

पीथड़ राणो ८, भुवणसी राणो ९, भीमसी राणो १०, अजैसी राणो ११, लखमसी राणो १२।

९६१. स० ४२० रावळ बापो हुवो. सं० ७३१ राजा भोज हुवो. सं० १२१२ रा सावण वद १२ अदीतवार रावळ जैसै जैसळमेर वसायो. सं० १४८६ राणा-पुर प्रसाद मंडायो. कोट बावड़ी कराया. सं० १४११ रा आसोज वद १३ राव चूंडै गांव चामंड वा चामंडरो देहरो करायो।

९६२. हारीत रिख बापा रावळनै वर दियो. इकलंगजीरो लिग प्रगट हुवो. पैंतीस गज बापारो सरीर वधियो।

९६३ भोगादित्यरो बापो रावळ. बापारो खुमाण रावळ।

९६४. आणंददे बापा रावळरो बेटो. जिणरा मांगळिया।

९६५. चित्तोड़रो धणी रतनसेन प्रथम पश्चिमरा समुद्रमे जहाजा बैस दक्षिणरा समुद्रमे सिघळदीप जठै कष्टसूं पुंहतो. महाकष्टसू पदमावती लायो।

९६६. संवत १३५५ राणा रतनसेनरा उमराव गोरो बादळ अलाउद्दीनसूं जंग कर चित्तोड़ काम आया।

राणा साखा

९६७. चित्तोड़ भुवणसी राणो कहाणो. पैला चित्तोड़ रावळ कहीजता. भुवणसीरो राणो भीमसी।

९६८. चित्तोड़ सीसोदियो कहायो जठैसू चित्तोड़-पति राणा कहीजै. भुवणसीरो भीवसी, भीवसीरो तेजसी, तेजसीरो भड लखमणसी।

हमीर अड़सीहोत

९६९. चित्तोड़ राणो हमीर चवाणा भोज वणवीरोतरो दोहितो. चंदरावरा चंद्रावत कहावै।

९७० सवा पहोर दिन चढतो जिनै राणा हमीररा माथारा जूड़ा मांहसूं गंगाजळ नीसरतो।

९७१. हमीररो भाई चंद्रराव. सिरोहीरा रावत वीजड़ पातावतरो दोहितो. चंदरावरा चंद्रावत कहावै।

९७२. राणा अड़सीरो दोहितो चाद राव अड़सी हेम सिरोही रावत वीजड़ पातावत जिणरो दोहितो चंद्रराव. राव चद्रावत।

खेतो हमीरोत

९७३ राणो खेतो हमीरोत जाळोर मालदे मूछाळा सावंतसीहोतरो दोहितो।

९७४ राणो खेतो जाळोररा धणी चहुवाण मालदे मूछाळो सावतसीहोत जिणरो दोहितो ।

९७५ राणा खेतारै करमा खातण खवास जिणरै बेटा तीन हुता – चाचो १, मेरो २, अखैराज ३ ।

९७६ राणा खेतारै मेदनीमल खातीरी बेटी करमा खातण खवास हुती जिणरा बेटा चाचो मेरो ।

लाखो खेतावत

९७७ राणो लाखो खेतावत खीची जायळरा धणी धारु आनलोतरो दोहितो राणो लाखो जायळरा धणी खीची धारु आदलोतरो दोहितो ।

मोकळ लाखावत

९७८ राणो मोकळ लाखावत मडोवर चूडा बीरमदेवोतरो दोहितो राणो मोकळ राठोड मडोवररो धणी चूडो बीरमदेओत जिणरो दोहितो ।

९७९ नागोरी खानरी सिरकारमे देसमें जिता ही वछेरा हुता उवै राणा मोकळरी नजर हुता, चित्तोडरै तवेलै वधीजता नागोरी खान राणा मोकळरी तावैदारी करतो ।

९८० मोकळरो भाई चूडो सिरोही सलखा लूभावतरो दोहितो ।

९८१ चूडो लाखावत सिरोही रावत सलखो लूभावत जिणरो दोहितो ।

कुभो मोकळोत

९८२ राणो कुभो मोकळोत रुण साखला राणा राजा घडसीहोतरो दोहितो राणो कुभो रूणरो धणी साखलो राणो राजो घडसीहोत जिणरो दोहितो ।

९८३ पेडूरा डूगर माथै राव रिडमलजी चाचा मेरानू मार कुभानू चित्तोड माथै राणारो टीको दियो ।

९८४ राणै कुभै समसखा ददानी नागोररो धणी जिणरी मदत किवी पनरै लाख रुपया लेनै नागोरसू हणुमानजीरी मूरत उठाय कुभळमेर पधरायी ।

९८५ जोगी नरहर रावळ जिणरी दवासू राणो कुभो मुवो ।

९८६ खीमो मोकळोत वागडियो चहुवाण पाता वीसलोतरो दोहितो ।

९८७ महाराज खीमो मोकळोत वागडियो चहवाण पातो वीसलोत जिणरो दोहितो ।

रायमल कुंभावत

९८८. राणो रायमल कुंभावत अजमेर गौड मोटमराव नरसिहोतरो दोहितो ।

९८९. राणो रायमल अजमेररो धणी गौड मोटमराव नरसीहोत जिणरो दोहितो ।

९९०. ऊदो कुंभारो वूदीरो हाडो राव वैरो वरसिहोत जिणरो दोहितो ।

९९१. ऊदो कुंभारो वूदीरा राव वैरा नरसिहोतरो दोहितो ।

९९२. राणा रायमलरै वेटा—प्रथीराज १, सांगो २, जैमळ ३, किसनो ४ ।

९९३. राणो सांगो, प्रथीराज, जैमल तीनू हळवदरा झाळा जोधा वाघौतरा दोहिता ।

९९४. राणा रायमलरो वेटो प्रथीराज उडणो कहाणो. इणरी खवासरै वेटै वणवीर चित्तोड़ राज कियो. उण कनैसू चित्तोड़ उदैसिंघजी लियो ।

९९५. जैमल रायमलोतनू मार सांगा रायमलोतनूं उवार वीदो जैतमालोत सेवंत्री काम आयो ।

९९६. प्रथीराज, जैमळ, सांगो अै तीनू राणा रायमलरा कंवर नै साळो काम आया. पछै काठलैरो प्रगनो दवायो काकै सूरजमल खेमावत उगमसी भाटी राणी रूपादेरो गुर ।

सांगो रायमलोत

९९७. राणो सांगो हळवदरो धणी झालो राणो जोधो वाघौत जिणरो दोहितो ।

९९८. सं० १५६६ रा जेठ सुद ५ वुध राणो सांगो पाट वैठो ।

९९९. सलूवररो धणी रतनसी, सादडीरो राणो अजोजी, डूगरपुररो रावळ उदैकरणजी, मेड़तिया रतनसीजी, रायमलजी दूदावत इत्यादिक सीकरी काम आया ।

१०००. राणो सांगो दस करोड़ी वाजतो. लाख घोड़ो चाकरीमे रहतो ।

१००१. सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम राणा सांगारो. सं० १५८८ भाद्रवा सुद ११ जनम राणा उदैसिंघरो. सं० १६२८ राम कह्यो ।

१००२. राणा सांगानू कुंवर वाघा सूजावतरी वेटी तीन परणायी. धनवाईरो वेटो रतनसिंघ सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ रो जनम सांगारो सांगारी गादी वैठो ।

१००३. वाघ सूजावतरी वेटी धनवाई चित्तोड़ राणा सांगानू परणायी. वाईरै वेटो हुवो रतनसी सं० १५३८ रा वैसाख वद ८ जनम सांगारो ।

१००४ हाडो राव सुरजण नरवदोत वूदीरो घणी जिणरी वेटी सागो राणो परणियो हाडारा भाणेज सागारै वेटा तीन— विक्रमादित्य १, उदैसिंघ २, भोज ३ ।

१००५ राणो उदैसिंघ, विक्रमादित्य, राणो भोज तीनू भाई वूदीरा नरवद भाडावतरा दोहिता ।

विक्रमाजीत सांगावत

१००६ स० १५७७ जेठ सुद १२ माडवगढरै पातसाह चित्तोड वादरसाहजी विक्रमपाळ राणा कनासू लीवी जद राठोड उदैदास मूजावत सीसोदियो वाघो सूरजमलोत काम आया ।

१००७ स० १५८९ राणा विक्रमादित्य कनासू चित्तोड लियो पातसाह वहादुरसाह माडवरै घणी ।

उदैसिंघ सागावत

१००८ राणो उदैसिंघ वूदीरो घणी राव नरवद भाडावत जिणरो दोहितो ।

१००९ स० १६२४ पातसाह अकवर चित्तोड लियो जद राठोड जैमल वीरमदेवोत नै पत्तो सामल काम आया ।

१०१० चित्तोड माथै पदमणीरो तळाव, जैमल पत्तैरो तळाव है ।

१०११ चित्तोड माथै कूकडेसररो कुड अति ऊडो है जैमल्ल पत्तै साको कियो जद तोपा सिलहखाना खजाना वगैरै इणम नाखी ।

१०१२ अकवर चित्तोड लागो जद चित्तोडरा किलानू सुरग लगाडी सुरग पाछी फूटी अकवररो घणो लोक उणसू जान हुवो ।

१०१३ चित्तोड ऊपर अकवररै भिलमरै गोळारी फेट लागी ।

१०१४ हजार मैखी दसतो हाथमें पहरिया जैमळजी रातरा तीनू पहरारी चोकीमें चित्तोडमें आप फिरता सग्राम नामा वदूक अकवररा हाथरी छूटी गोळी जैमलरै लागी ।

१०१५ अकवर चित्तोड भेळियो जद पहला वावन हाथी मधकर दळसिंगार वगैरै गढरा दरवाजानू चलाया पहाडखा वगैरै महावत हाथिया चढिया हाथिया माथै जगी हौदा जगी होदामें तमचा, कडावीणा, तीर, कवाण, जाळिया सिपाह वैठा हाथियासू झगडचा राठोड ईसरदास वीरमलोत कीनो निराट आछो भगडो कियो ।

१०१६ चित्तोड भिळियो जद साढे तीन मै लगायारो जवर हुवो ।

१०१७. चित्तोड़ भिळियो जद चाळीस हजार सिपाह अकबर पातसाहरो काम आयो. अठारै हजार लोक राणाजीरो काम आयो. जिणमें आठ हजार सिरकारर तावेदार नै दस हजार रअय्यत।

१०१८. दोय हजार लोक गढमांहलो गढ भिळतां चोजकर निसर गयो. अेक मेवाड़नूं मुसळमांनरै भेख दूजै मेवाड़ै पकड़ लियो. इण तरह दूजासूं निसरिया।

१०१९. राणे उदैसिघरै कंवरांरा मामलांरी विगत – प्रताप पाली सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो।

१०२०. उदैसिंघरा वेटांरी विगत– परताप सोनगरीरो. पांच वेटा भटियाणीरा– जगमाळ १, साह २, सगर ३, अगर ४, पंचायण ५. वीजा कंवर– सगर्तसिह १, रामजी २, कान्ह ३, सादूळ ४, रायसिह ५, कल्याण ६, रुद्रसिंह ७, नगो ८, जैतसिघ ९।

१०२१. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पंचायण ५, राणा उदैसिंघरा वेटा जैसळमेररा रावळ लूणकरण जिणरा दोहिता।

१०२२. जगमाल १, सगर २, अगर ३, साहजी ४, पचायण ५, अै पांचू जैसळमेर रावळ लूणकरण जैतसिहोतरा दोहिता।

१०२३. राणो प्रताप १, सगतो २, सगर ३, अगर ४, जगमाल ५, साहजी ६, पचायण ७, रुद्रसेण ८, नगो ९, कानो १०, जैतसिंह ११, सुरताण १२, नेतसी १३, वीरमदे १४ इत्यादीक राणा उदैसिघरै वेटा।

प्रताप उदैसिंघोत

१०२४. राणो प्रताप सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो दोहितो।

१०२५. राणो प्रताप सं० १५९६ रा जेठ सुद ३ जनम. राणा प्रतापरै वेटा– अमरसिंह १, सेखो २, सहसो ३, पूरो ४, मानसिघ ५, कल्याण ६।

१०२६. संवत १६६२ सावण वद ७ कछवाहो मान भगवंतदासोत अकवररी फौज ले आयो. हळदीघाटै राणै प्रताप वेढ कीवी. पातसाहरा उमराव तीन काम आया. राजा रामसाह ग्वालेररो धणी १, रामसाहरो वेटो साळवाहण २, राजा वीठळदास ३।

१०२७. हळदीघाटी राणा प्रतापरा चाकर काम आया ज्यांरी विगत– कान्ह १, कलो २, दोय भाई प्रतापरा काम आया।

१०२८. मेड़तियो रामदास जैमलोत जणा ९ सूं काम आयो।

१०२९ सोनगरो मानसिंह अखैराजोत जणा ११ सू काम आयो।

१०३० राठोड साईंदास पचायणोत जैतमल जणा १३ सू काम आयो सीधल वागो १, नै जैमल २, चहुवाण दुरगो ३, वागडियो ४, मेघो खावडियो ५।

१०३१ स० १६३२ पातसाह अकबररै उमराव सहवाजखा गढ कुभळमेर लियो जद सीधल सूजो सीहावत, सीधल कूपो भाडावत, सोनगरो भाण अखैराजोत, मुहतो नरबद गढरो सिलैदार, मागळियो जैतो जैमळ काको नै भतीजो इत्यादीक काम आया।

१०३२ स० १६१३ पातसाह अकबररी फौज कुभळमेर लियो सीधल कूपो भाडावत, सीधल सूजो सीहावत, सोनगिरो भाण अखैराजोत काम आया।

उदैसिघरा दूजा बेटा

१०३३ सगतो तोडो सोळकी प्रथीराज सुन्द्रसेनोतरो दोहितो।

१०३४ भाण सगतावत मोटा राजारी बेटी राजकवरबाई परणियो भाणजीरी बेटी महाराज गजसिंघजी परणिया जसवतसिंघजीरै सगो मामो सामसिंह भाणावत।

१०३५ गोकुळदासरा बेटारी विगत— सुंदरदास १, जुझारसिंघ २, दूदो ३, अजबसिंघ ४, फतैसिंघ ५, रुघनाथ ६, जगनाथ ७, वीरमदे ८, कल्याणसिंघ ९, हाथीसिंघ १०, हिम्मतसिंघ ११।

१०३६ सूदरदास जुझारसिंघ दोनू पातसाहरा चाकर।

१०३७ रुघनाथसिंघ काम आयो रामसिंघ भीम अमरसिंघोतरै आगै।

१०३८ केसोदास भाणावत मोटा राजारो दोहितो भाटियाणी सजना नानी हुती अै केसोदासजी घणा वरस नानी कनै रह्या गाव सेरेचो मोटा राजारो दियो पटै हुतो।

१०३९ अचळदास सकतावत रावत कहावै, वेगमगे धणी हुतो इणनू राणै अमरसिंघ कह्यो—तू ही मोनू दुखदायक सगर ज्यू ही है।

१०४० अचळदासरा बेटारी विगत—नरहरदास १, नारायण २, राणो सगर नारायणदासनू रावताई दीवी।

१०४१ वळू सगतावत ऊटाळै काम आयो, राणा अमरसिघजीरो उमराव।

१०४२ भगवानदास सगतावत राणाजी वूढ पटै दीवी।

१०४३ जोधो सगतावत।

१०४४. माडण सगतावत मऊ खीचियांरो चाकर ।

१०४५. संवत १६१६ रा भाद्रवा वद ३ सीसोदिया सगर उदैसिघोतरो जनम. पातसाह जहांगीर मया कर अजमेर नागोर चित्तोड़ दे राणाई दीवी. वाराहजीरो मंदिर पुष्कर इण करायो ।

१०४६. सगर उदैसिघोतनू पातसाह रावताई दे पूरवमें जागीर दीवी, राणै अमरसिघजी चाकरी कवूल कीवी जद ।

१०४७. सगररा बेटांरी विगत– इंद्रसिघ १, मानसिघ २, आसकरण ३, मोहणसिंघ ४, हरीराम ५. इंद्रसिघ सेखावतांरो भाणेज कुंवरपदै मुवो. मानसिंघ सेखावतांरो भाणेज ।

१०४८. सं० १६३८ माह सुद १४ रो जनम. सगरजीरै पाट रावताई पायी, पूरवमें जागीर पायी ।

१०४९. महोकम मानसिंघोत मानसिघरै पाट काबुल उरै पेसोर जठै धारयो छै।

१०५०. मोहणसिह कंवरपदै देवलोक हुवो. इणरो बेटो मदनसिंह जिणनूं महोवतखां कह्यो –मै तोकू जागीर दू पिण तेरा काका मानसिघ वरजै है. आ वात सुण मानसिघ पेट कटारी खाय मुवो ।

१०५१. खीचीवाड़ै परै उमरी भोदारो अै ठिकाणा सीसोदिया सगर उदैसिघोतरा छोरुआंरा है ।

१०५२. अगर राणो उदैसिघजीरो, जिणरो जसवंत पहलां राणा सगररै चाकर हुतो पछै रावळै चाकर रह्यो सं० १६७२ सोजतरो सिणलो गांव पटै हुतो. सं० १६७३ वुरहानपुर छाडियो महोवतखांरै वसियो. सं० १६७२ रावळ वेसियो सोजतरो धवळहरो गांव ११ सू दियो. पछै महोबतखां कहायो. इण कुमत राखी जद सं १६८० सीख दीवी ।

१०५३. साहजी राणा उदैसिघरो, जिणरै दुरजणसिघ कछवाहा राजा वडा जैसिघजीरो मामो ।

१०५४. साहजीरा वेटांरी विगत–दुरजणसिघ १, माधोसिघ २, मथुरादास ३ ।

१०५५. नगो वीकानेरिया कल्याणमल जैतसिहोतरो दोहितो ।

१०५६ कानो राणा उदैसिघरो परमार करमचंदरो भाणेज ।

१०५७. कान्ह मेदड़ेचा चहुवाण नैधण अमरावतरो दोहितो ।

१०५८. रुद्रसिंघ १, जैतसिंघ २, हळवद झाला सजा राजधरोतरो दोहितो ।

१०५९ कानो राणा उदैसिंघरो परमार करमचदरो भाणेज।

१०६० रुद्रसिंघ राणा उदैसिंघरो जिणनू सुरजण वालीसै मारियो जद नाणवे डावा ले सास छूटो।

१०६१ सुरताण १, सादूळ २, चद मेहराजोत खीचीरा दोहिता।

राणा प्रताप

१०६२ राणा प्रतापरा कवरारा मामला विगत – अमरसिंघ १ पूरविया परमार मयारखखा असोकमलोतरो दोहितो।

अमरसिघ प्रतापसिघोत

१०६३ राणो अमरसिंघ पूरवरो परमार मयारखखा असोकमलोत तिणरो दोहितो।

१०६४ राणो अमरसिंघ पवारारो भाणेज पातसाह जहागीर अजमेर आयो जद साहजादा खुरमनू अजमेर मेलियो साहजादै गोगूदै तसल करायो राणो अमरसिंघ गोगूदै खुरमसू मिलियो।

१०६५ राणो अमरसिंघ स० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम स० १६६६ उदैपुर पाट बैठो।

१०६६ स० १६६६ रा फागण सुद ११ वेढ हुई नवाव अवदुल्लाखारै नै राणा अमरसिंघरै जद इणारा इता उमराव काम आया – मेडतियो मुकददास जैमलोत १, जैतारणियो हरिदास वळू तेजसिंघोतरो २, सीमोदियो दूदो सागावत ३, झालो भोपत ४।

१०६७ स० १६७१ राणा अमरसिघजी गोगूदे राजा सूरसिंघजी नवाब अफजलखारी वाहसू खुरमसू मिलिया चाकरी कवूल कीवी जद सगरनू रावताई दे पूरबमे जागीर पातसाहजी दीवी।

१०६८ स० १६७४ रा फागुण सुद २ राणो अमरसिंघ साहजादासू मिलियो जद साहजादारा दरवारमे मिलिया नै तीन वैठा–राणाजी, राजा सूरजसिंघजी, नवाब अफजलखाजी।

१०६९ राणारा कवर करणनू ले खुरम अजमेर आयो सवत १६७१ रा फागणमे करण जहागीररै पगा लागो।

१०७० स० १६१६ रा चैत सुद ७ अमरसिंघरो जनम सवत १६७६ राम कह्यो।

राणा प्रतापरा दूजा कवरारो

१०७१ सीहो राणा प्रतापरो भोपतसीहोत राणा जगतसिंघरो मेलियो पातसाहजीरी

हजूर रहतो. वडो दातार वडो ठाळवरो सिरदार हुवो. उणरै बेटा केसरीसिंघ।

१०७२. कचरो वेदळै पुरबिया चहुवाण परवतसिघ रूपसिंघोतरो दोहितो।

१०७३. सहसो गोपाळदास तोडै सोळंकी रामचंद प्रथीराजोतरा दोहिता।

१०७४. पूरो होथी जोधपुर भोजराज राव माल मालदेवोतरा दोहिता।

१०७५. पूरणमल राणा प्रतापरो जिणनू हजूरसू संवत १६६४ मेड़तारो गांव डोभड़े पांचांसू दीवी सं० १६६६ गांव ढाही मेड़तारो गांवां पांचांसूं हजूर वगसियो।

१०७६. कल्याणदास मालपुरै परमार पचायण करमचंदोतरो दोहितो।

राणा अमरसिंघरा कंवर

१०७७. राणो अमरसिघ सं० १६१६ रा चैत सुद ७ जनम. कंवरांरी विगत– करण १, भीम २, सूरजमल ३, वाघ ४, उरजण अपतियो ५।

१०७८. राणा अमरसिघरा कंवरांरा माळरी विगत– करण तुंवर साळवाहण रामसिहोतरो दोहितो।

राणो करण तूवर साळवाहण रामसिघोत जिणरो दोहितो।

भीम वीरपुरा अखैराज कान्हावतरो दोहितो. वाघ १, सूरजमल २, हळवदरा झाला मानसिंघ जैतावतरा दोहिता।

सीसोदियो वाघ राणा अमरसिघरो संवत १६६५ आगरै रावळासू सर गांव दूधोड़ गांव २०सूं पटै देता हा पिण इण वात न मानी. वाघरो सबळसिंघ।

सूरजमल सुजाणसिघ राणा अमरसिंघरो बेटो डीलायती पटै फूलियो।

राणा अमरसिघरो सूरजमल. सूरजमलरो सुजाणसिघ वडो डील, पटै फूलियो।

उरजण देवड़ा भानीदास हरराजोतरो दोहितो. सीसोदियो अरजणजी राणा करणरी तरफसू पातसाहरी चाकरी रहतो राणाजीरो साथ लियां।

करण अमरसिंघोत

१०७९. संवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम राणा करणरो. संवत १६७६ उदैपुर पाट वैठो. संवत १६८४ फागुणमे देवलोक हुवो।

राणा करणरा कंवर

१०८०. राणो करण संवत १६४० रा सावण सुद १२ जनम. बेटांरी विगत– जगतसिघ १, गरीबदास २, छत्रसिघ ३।

१०८१ राणा करणरा कवरारी विगत—जगतसिंघ महेचा जसवत कलावतरो दोहितो।

१०८२ महेची जमना कला मेघराजोतरी राणो करण परणियो जिणरो बेटो राणो जगतसिंघ।

१०८३ राणो जगतसिंघ महेचा जसवत कलावतरो दोहितो।

जगतसिंघ करणसिंघोत

१०८४ स० १६९० मे राणो जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवतसिंघ जिणनू चूक कराय मरायो राठोड रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता रावत जसवतसिंघ राठोड सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

१०८५ राणो जगतसिंघ करणसिंघोत स० १६६४ रा भाद्रवा सुद १२ रो जनम सवत १७०९ काती वदी ४ वार रवि घडी ५ पाछलै दिन थका राम कह्यो।

१०८६ राणिया सत कियो ज्यारी विगत—छपनीजी राठोडी १, राणी बालोतणीजी चहुवाण २, छोटी मेडतणीजी ३, राणी परमारजी ४, राणी ईडरेची ईडर सत कियो ५, राणी झाली हरदासरी बेटी झालावाडमें सत कियो ६।

१०८७ लालजी बागडिया चहुवाण जसवतरो दोहितो।

१०८८ गरीबदास हलवद झाला भोपत जसवतरे भाणेज।

१०८९ राणो जगतसिंघ सवत १६६४ रा भाद्रवा सुद २ जनम कवर — राजसिंघ १, अरसी २।

१०९० राणा जगतसिंघरा कवरारी विगत — राजसिंघ अमरसिंघोत मेडतिया राजसिंह विसनदासोतरो दोहितो।

राजसिंघ जगतसिंघोत

१०९१ राणो राजसिंघ स० १६८६ रा काती वदी २ जनम।

१०९२ सवत १६८६ रा काती वद २ राणा राजसिंघ जगतसिंघोतरो जनम सवत १७०९ रा माहमें टीकै बैठा।

१०९३ मासजी जठै राजविलास नाव रूपरा राजसिंघरो वणायो।

१०९४ सवत १७३२ रा माह सुद १५ राणै राजसिंघ राजसागररी प्रतिष्ठा कीवी।

१०९५ अेक हजार गाय, छियासी हजार रुपया, च्यार गाव सासण ब्राह्मणानू दगासण दिया प्रतिष्ठारै दिन।

१०९६. तुळा रूपारी पाच हुई जिणरी विगत – रूपारी तुळा १, राणाजीरी राणी परमारजी किवी. रूपारी तुला १ ऊदावतजी टूक ताडारो राजा रामसिघ भीमरो जिणरी मा नूतै आया उवा कीवी. रूपारी तुळा १ सौदै वारट केहरीसिघ खीमराजोत कीवी. रूपारी तुळा १ पुरोहित गरीवदासरै वेटै किवी।

१०९७. सोनारी तुळा दोय – अेक पुरोहित गरीवदास किवी. अेक राणै राजसिघजी कीवी, आवधां सूधा तुळा बैठा ।

१०९८. बूदीरो रावराजा भावसिघजी ज्यारो प्रधान सावंतसी सौनू तो लै आयो च्यार घोड़ा, २०००) रुपया हाथीरा, ३५००) रुपया रोकड़ टीकारा।

१०९९. राजा रायसिघ भीम अमरसिघोतरो जिणरी मा नूतै आयी. छै घोड़ा निजर किया, २०००) हाथीरा निजर किया ।

११००. रामपुरसू नूतो आयो घोड़ा च्यार, हाथी अेक सैदरूप, रुपया १५०००) रोकड़ नूतो ।

११०१. हीरै टोकड़ियै राणा राजसिघजीनू वहकाय राजसिघजीरा कुंवर सुरताण-सिघजी सिरदारसिघजी राणाजीरा हाथसू मराया।

११०२. पछै कुंवर भीमसिघजीनू राज देणो तेवडयो नै राणाजीनू कुंवर जैसिंघजी-नू चूक तेवडायो. साह दयाल नूरपुरीमे हीरारो चाकर राणाजीसू मालम कीवी. राजसिघजी कुपित कर व हीरानू मरायो. हीरो सामधीहो कहीजै है।

११०३. उदैपुरसू आय राणा राजसिघरो कंवर औरगजेवरा पगां लागो. दरगाह आया. जद पातसाह भारी सरपाव मोती दिया, राणानू सिरपेच जड़ाऊ भेज्यो ।

जैसिंघ राजासिंघोत

११०४. राणा जैसिघजी घाणेराव पधारिया जद आडावळामे कोठारिया वड़ जठै डेरा किया. रावत केहरसिघजी केळवाड़ारी स्याहजी साथ हुतो ।

संग्रामसिंघ अमरसिंघोत

११०५. राणो सग्रामसिघ अमरसिघोत कोठारियारो राव वखतसिघजी ज्यांरो भाणेज।

११०६. राघो हरी पागियो दिखणी अड़सीजी फौज सामल हुतो पटैलसू राड़ हुई जद ।

११०७ राणै अड़सीजी कोठारियै डेरा किया अमरचंद बड़वानू फुरमाया – विना हांसल चुकाया श्रीजीरै द्वारै रसत मोल गयी उदैपुरसू सो श्रीजीद्वारासू

खेचल करणी, जद पीरोजखा, चदर, मलग वगेरै सिधी विदा किया – उवै श्रीजीद्वारै रोडिया सिंघवी भीवराजजी दरबारसू श्रीद्वारै हुता अै चढिया झगडो हुवो सिंघी मलग देवडा सवाई नोसरा वाळारी गोळी लागी मुवो फनै जोधाणनाथरी हुई।

११०८ राणारी सवारीरो घोडो वेराड दलेलसिंघ लियो नै छत्र चवर ही इण लियो।

११०९ राणारा घोडा कनै वहण वाळा चोपदार दोनू हाथानू जोर करी अजीतसिंघजीरै माथै सोनारी छडीरा टुकडा किया. अजीतसिंघजीरै माथो ऊपरसू जोजरो हुवो।

१११० रूपोजी १, जीघोजी २, कीकोजी ३ अै तीन सगा भाई गूजर राणा अडसीजीरा धायभाई।

११११ रूपै धायभाई रूपनारायणरो मदिर करायो उदैपुर उरै नदी वहै जिणरी पुळ बधायी।

१११२ राणा भीवसिंघरी बेटी देवकुवर कल्याणसिंघजी परणियो सिवदानसिंघ महाराजारी बेटी सिणगारकुवर मोतीसिंघजी परणियो।

१११३ कूभारी मोती राणा भीमसिंघरै मरजीरी खवास है।

१११४ मखदूम गुलाम मुहम्मद भीमसिंघजीरै वखत आयो हो उवलारी हो।

१११५ स० १८८५ चैत सुद १४ उदैपुरमे राणो भीमसिंघजी देवलोक हुवा।

१११६ पूनारो उकील राणाजीरी तरफसू पीपलियारो धणी मगतावत राणोजी दूसरा वारो सिरपाव देता सो पेसुआन् कनै जाय देता, पेसवो सामो आय लेतो।

१११७ राणाजीरै मेवाडरा परगनारा गावारी विगत –

चित्तोड गाव ३०१, गोढवाड ३६०, जसावरा गाव ५२, गरवारा गाव १४०, मदारीरा गाव २००, कुभळमेररा गाव ७००, देवळियारा गाव १२०, भैंसरोडगढरा गाव ५००, छपनरा पाच परगनारा गाव १६०, पटारा गाव ३६०।

मेछल भीलवाडारा गाव परगना दोय उदैसिंघ राणै गमिया अकबर पातसाह चित्तोड लियो जद – बूदी १, रामपुरो २, गाव १५०० रामपुरारा, गाव १००१ बूदीरा, गाव १३५१ डूगरपुररा, गाव १३५० वासवाळारा, गाव ३६० वधनोररा, गाव ८४ वेगमरा, गाव २४० माडळरा, गाव ३६० भीमसरा, गाव परगना रै पाच पातसाह जहागीर राणा अमरसिंघनू

दिया, कुंवर करण अजमेर पातसाहरा पगां लागो, राणो अमरसिंघ गोगूंदै साहजादा खुरमसूं मिलियो जद चाकरी वदळ.....।

१११८. दसरावारा दिनामे कोठारियारो राव, सादड़ीरो राजा, वेदळैरो राव, सलूंवररो रावत अै च्यार सिरदार ज्यांरै डेरै श्रीदीवाण पधारै।

१११९. उदैपुर चाकरांरी लुगायां रांणियांरै पगां लागै नही, ओढणारो पल्लो हाथमे लेनै तीन वार हाथ जमी लगाय सलाम करै।

११२०. उदैपुर राणाजी ही चाकरांनूं विदा करै जद वीडा दै. राणियां रणवासां चाकरांरी त्रियांनूं वीडा दै।

११२१. राणाजी देवलोक हुवै जद पाटवी कुंवर पछेवडा ओढ लै. राणाजीनूं दाग दे पाछा आवै तरै उमराव दरवारमे जद कोठारियैरो राव कुंवर माथासूं पछेवड़ो दूर करै।

११२२. उदैपुर नगर सोमवार चहुवाणांरी चोकी वेदळारो राव नांवै नै पारसोली कोठारियारो राव चौकी आवै मंगल राणावत चोकी आवै. वुधरै दिन प्रधान कानोड़रो रावत वीजोळियांरो राव और अरग जो चोकी आवै. गुरुवाररै झाला चोकी आवै सादड़ीरो राजा जीम डेरै जावै देलवाड़ो गोगूंदो चौकी रहै. शुक्रै दिन राठोड़ चोकी आवै. शनीचररै दिन सगता चौकी आवै।

११२३. उदैपुर उमराव राणैजीरै चोकी आवै जिणरी विगत – रवी चूडावतांरी चोकी, सलूंवररो धणी पांतियै जीम डेरै जावै. वेगम, आंवेट, देवगढ चोकी रहै।

११२४. उदैपुर सोळै उमरावांनूं सात सीकरो वीडो दिरीजै. देसनिकाळो दै जिणनूं तीन सीकरो वीड़ो दै।

११२५. उदैपुर आवदारखानो पाणैडो कहावै. कपड़ारो कोठार निकांरी ओंड़ी कहावै. दवाखाना ओखधरी ओरी कहावै. तंवोळ खानारी ओरी वीड़ा वणै. सिघळखानारी ओरी ससतर रहै।

मेवाड़रा सरदार

वनेड़ो

११२६. वणहड़ारी राजांरी पीढी लिखते – राणो राजसिंह १, भीमसिंघ २, सूरजमल ३, सुरताणसिंघ ४, सिरदारसिंघ ५, रामसिंघ ६, हमीरसिंघ ७, भीमसिंघ ८।

११२७ वीकानेररा राजारी वेटी रायसिघजी वणहडारो राजा परणियो ।

११२८ रायसिघजी वणहडा कनै राजपुर वसायो वणहडारो राजा रायसिंघ उजैण धावा पडियो, मारगमे मुवो ।

११२९ जगमालोत राणावत रतनसोत जोधा अै आठ उमराव वणहडासू अढाई कोस गाव वामणियो जठारा जोधारी भोम पैला वणहडामे हुती ।

११३० ओसवाळ डागळिया खीवसरा वणहडै कामेती है ।

११३१ ओसवाळ वरढिया वणहडै कामेती है, भडारी कहावै ।

झाला

११३२ सादडीरो राजा झाला जिणनू राणोजी राणो लिखै दूजारा नगारा देवारीमे न वजै छै इणरो नगारो ईकरको दहवारीसू जगन्नाथरायजीरा मदिर ताई वजतो जाय, छत्र चमर ही उडता जावै ।

वेदळो

११३३ वेदळा धणी राव रामचदजी जिणनू राणैजी वीडो छै सीकरो दियो इण वेदळारो पट्टो निजर कियो राणैजी फुरमायो तबोळीनू लावो, मजा कम करो छव सीकारो वीडो क्यो वणायो आ खवर पाय तबोळीरा राव रामचदजीरा घोडारै सरणै गयो रावजी तबोळीरो गुनो माफ करायो ।

११३४ वेदळै आवा औ पहाड सजळ है सिकार राजनू उढै घणा है आरासरी अवाय कहावै ।

कोठारियो

११३५ चूडावत जगो सीधावत चहुवाण ठाकुरनू वहिन परणाय कोठारियो आपरै पटै हो सो परो दियो, मदारियो आपरै रासियो ।

११३६ चूडावत जगो सीधावत वागडमें चहुवाण मारियो ।

११३७ सहर सूरतम राणो प्रताप गोमरे ह्यियो विसामें उमरावा कुवरा समेत सूरतरा सूवेदारनू मार घोडा चलाया राणारा हाथरी वरछीमू सूवेदाररा अग रही कोठारियारै राव जायनै आणी ऊ दिन दसरावारो गाहणा समेत सिरपाव राणोजी कोठारियारा धणीनू दियो । जिणसू हर दसरावै राणोजी दसरावारो सिरपाव गहणा समेत कोठारियारा रावनू वगसै ।

११३८ कोठारियारो धणी कुम्व वेदळारा धणीनो दिराणो है राणाजीरा दरवारसू ।

सलूंबर

११३९ सलूबररा रावतांरी पीढ़ी लिखते–राणो लाखो १, चूंडो २, कांधळ ३, रतनसी ४, सांईदास ५, खगार ६, किसनो ७, जैतो ८, मानसिघ ९, रघुनाथसिघ १०, रतनसी ११, कांधळ १२, केहरसिघ १३, कुबेरसिंघ १४, भानसिघ १५, भवानीसिघ १६, पदमसिंघ १७।

११४०. सिसोदिया सिघ कांधळ चूडावतरा बेटा तीन हुवा– जगो १, सुरताण २. महाराजकुंवार गजसिघजी तोडै कछवाहा जगन्नाथरी बेटी परणिया. तोडा थकां सीतळा नीसरी. वण स्या पड़िया. कंवरजीरै वडो खेद जद भाटी गोइंददास मानावतरो बेटो मोहणदास मर गयो।

११४१. चूडावत मानसिघ जैतावतरा रजपूत मानसिघ मूजावत तेजो बोलियो. राणाजी कनैसू पटौ लिखाय बंभौरी सारंगदेओतां कनासू ले लियो. रावत मानसिघरो अमल वंभोरीमे कियो. ईडरा धणीरा उमराव छपनियो राठोड़ मार छपनडी प्रगनो राणाजीरै घरै आणियो।

११४२. गुदोच सेरसिघरी बहन अभैकवरबाई सलूबर रावत भीमसिघजीनूं परणायी।

वींजोळियो

११४३. हमै वीझोळियां राय केसोदास सुभकरणोत है. इणरी बेटी राणा भीमसिघजीरा कंवर अमरसिघनू परणायी उणनै सत कियो।

देवगढ

११४४. देवगढरा रावतांरी पीढियां लिखते – राणो लाखो १, चूडो २, कांधळ ३, सिघ ४, सागो ५, दूदो ६, ईसर ७, गोकळदास ८, द्वारकादास ९, सग्रामसिघ १०, जसवतसिघ ११, राघोदास १२, अनोपसिंघ १३, गोकळदास १४।

११४५ देवगढरा रावतांरो वडेरो ईसरदास जिणनू मेर मोटै कीट मारियो हो–

कीट कटारी चालवी, खटकी खूमाणाह।
मोटै ईसर मारियो, डाकी भरडाणाह॥

११४६ सांगो रीघोत तळाधूवासरा पीर कनै गयो जद पीर लखमीनाथ बाबाजी घोडी दीवी, कटारी दीवी, कह्यो–थांरो नांव वधसी देवगढ लखमीनाथरी सासती रहै घोड़ी पायगामे।

११४७ राणोजी घटावळीजीरै मगरै वाघ मारण गया जद सांगै वाघनूं मारियो. अेक हाथ सांगारो जखमी हुवो. राणाजी केळवो दियो।

११४८ पुर माडळरै पीर जानै सागानू नगारो दियो कही — थारा वमरो माझी काम आसी तरै फतै हुसी ।

११४९ सिरै दुहू सग्रामरा जसवत नै जैसिंघ जसवत देवगढ, जैसिंघ सग्रामगढ ।

वेगूं

११५० वेगमरा रावतारी पीढी लिखते—राणो लाखो १, चूडो २, काधल ३, रतनसी ४, साईदास ५, खगार ६, गोइद ७, मेघ ८, राजसिंघ ९, महासिंघ १०, अनोपसिंघ ११, हरिसिंघ १२, देवसिंघ १३, मेघसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५ ।

११५१ वेगम वाळो चूडावत वल्लभकुळ-सेवक है द्वारकानाथजीरा मदिररो ।

देलवाडो

११५२ गुदोच सेरसिंघरी बेटी उदैकवरबाई देलवाडै राजा कल्याणसिंघजीनू परणायी ।

आमेट

११५३ आमेटरा रावतारी पीढिया लिखते — लाखो १, चूडो २, कांधल ३, सिंघ ४, जगो ५, ६, करण ७, मानसिंघ ८, माधोसिंघ ९, गोवरधनसिंघ १०, दूलैसिंघ ११, प्रथीसिंघ १२, मानसिंघ १३, फतैसिंघ १४, प्रतापसिंघ १५ ।

कानोड

११५४ कानोडरा रावतारी पीढी लिखते — राणो लाखो १, अजो २, सारगदे ३, जगो ४, नरवद ५, नेतो ६, भाण ७, जगनाथ ८, मानसिंघ ९, महासिंघ १०, सारगदे ११, प्रथीसिंघ १२, जगतसिंघ १३, जालमसिंघ १४, अजीतसिंघ १५ ।

भींडर

११५५ भींडररा महाराजारी पीढिया लिखते — राणो उदैसिंघ १, सगतो २, भाण ३, पूरो ४, सवळसिंघ ५, मुहकमसिंघ ६, अमरसिंघ ७, जैतसिंघ ८, उमेदसिंघ ९, कुसाळसिंघ १०, मुहकमसिंघ ११, जोरावरसिंघ १२ ।

११५६ भींडररा महाराजरी मा वाई राजबाई जे मोटा पत्री तीनै लोकी पातसाहरी दीधी है दमगवारो डूगलो, गणगोरीरो सिणगाव, नलाणो घोडो मळारसू भींडर-महाराज पावै ।

११५७. पानसलरो सगतावत भींडर खोळै आयो है ।

११५८. सावररो धणी सगतावत इंद्रसिंघ जिणरो दोहितो वधनोर अखैसिंघ ।

५११५९. मेड़तिया पदमसिंघ प्रतापसिंघोतनूं उदैपुर हवेली ऊपर राणाजी साथे मेल मरायो. नबेगडीरो सिरदार राणाजीरो उमराव जिण उदैपुरसूं आय काहणारा तळाव माथै डेरा किया. गोठरै मिस कंवर क्रिसनसिंघनूं घाणेरावसूं तेड़ अेकंत ले डेरामें मारियो. चीणो चाकर किसनसिंघरो कूजा वरदार काम आयो. जातरो डागळियो जिणरी सोराणजीरी मुतसदी कुंभळमेरसूं घाणेराव आयो. राणाजीरो अमल कियो ।

११६०. पदमसिंघजीरा कबीला वसी धण ले कूंपावतांरै गया. उणा आछी तरहसूं राखिया ।

११६१. मेड़तियो उरजण रायमलोत चित्तोड़ काम आयो जैमलजी ईसरदासजी साथ ।

११६२. जैमलरै टीकै सुरताण जिणनूं संवत १६४२ पातसाह अकबर मेड़तो दियो ।

११६३. सुरताणरै कईक दिन परगणो मलहारणो पिण रह्यो ।

११६४. सीळ भाखरी स्वेत पाखाणरो स्वरूप मेड़तियै दाणीदास गोपाळदास सुरताणरै काबिलरी हदसूं आणी पधरायो ।

११६५. जगन्नाथ गोइंददासरो १, सांवळदास गोइंददासरो २, सुंदरदास गोइंददासरो ३, गोइंददास जैमलोत ।

११६६. वानसीरा सगतावता माहला सगतावत दोय कलावत दोय वला ।

११६७. पारसोली मांहेला चहुवाण ।

११६८. वीदा जैतमालरो बेटो नैतसी राड़धारासूं मेवाड़ आयो. राणोजी पटो दियो. उणरा हमै केळवै है ।

११६९. किसनदास जैतमालोतरै पटै वणेल थी, पछै देसूरी पटै पायी. पछै केळवो पटै पायो ।

११७०. सवळसिंघ रामसिंघोत वेदळै राव. केहरीसिंघ रामसिंघोत पारसोली राव ।

११७१. अदळ लियो वदळो नकूं राखिज्यो बुधारी ।
ओ गीत आसिया हरराम उदैभाणोतरो कह्यो है ।

११७२. कोटा सुरसा भास्कर सोळंखी प्रतापसिंघ बेटी वीरमदे समेत उदैपुर आयो जद टीकड़ियो तुळछीदास जात सोळंखी राणाजीरै मनीजै. इणरी हवेली जाय प्रतापसिंघ उणांरो होको पियो. इण देसूरी दिरायी ।

गहलोतांरा दूजा राज

देवलियो–प्रतापगढ

११७३ नव लाख रुपयारी पैदास देवळियारा धणीरै हुती ही डूगरपुररा धणीरै इती ही वासवाळारा धणीरै ।

११७४ साहपुरो देवळियो दोय पाख उदैपुररी अै ।

साहपुरो

११७५ साहपुरारा राजारी पीढिया लिखतै– राणो अमरसिंघ १, सूरजमळ २, सुजाणसिंघ ३, दोलतसिंघ ४, भारतसिंघ ५, उमेदसिंघ ६, हमीरसिंघ ७, भीमसिंघ ८ ।

११७६ सायपुरै राजाई भारतसिंघजी पायी ।

११७७ गेरसिंघजी १, सिरदारसिंघजी २, कुसळसिंघजी ३, उमेदसिंघजी ४, जसकरणसिंघजी ५ अै पाच बेटा सहापुरारा राजा भारतसिंघजीरै ।

११७८ साहपुरै उमेदसिंघजी पिता भारतसिंघजीनू कैद किया हा साहपुरा राजा उमेदसिंघ पिता भारतसिंघनू कैद कियो हो सो छोडियो नही ।

११७९ पाटवी कवर उदोतसिंघनू जहर दे मारियो उदोतसिंघरा बेटा रणसिंघनू मारण सिपाही मेलियो उणरा हाथरो घाव रणसिंघरा मूडा माथै लागो जद चवदै वरसरो भीमसिंघ रणसिंघरो कवर जिणरी तरवार चली ऊ सिपाही मार राखियो बेटा जालमसिंघनू साहपुरै मालक करणरी उमेदसिंघ विचारी ही ।

११८० जगमाल उदैसिंघोतरै वसरा राणावत १, कानावत २, कछवाहा सुरताणोत राजावत ३, राठोड चादावत ४, अै च्यार उमराव साहपुरै ।

११८१ कोठिया धनोप अ चादावतारा ठिकाणा साहपुरा हेठै पडिया ।

११८२ देवळियारा रावतारी पीढी लिखते राणो मोकळ १, खेमो महाराज २, सूरजमल ३, वाघ ४, रायसिंघ ५, बीको ६, तीजो ७, सालो ८, जसवतसिंघ ९, हरीसिंघ १०, प्रतापसिंघ ११, प्रथीसिंह १२, गोपाळसिंघ १३, मालमसिंघ १४, सावतसिंघ १५ ।

११८३ देवळियारो धणी रावत कहीजै गाव सात सौ है हजार घोडारी साहबी ।

११८४ देवळियारा धणी सीसोदिया ज्यारै नानाणारी विगत लिखते–सूरजमल खेमावत मोनगरा रणधीर वणवीरोतरो दोहितो ।

११८५. सूरजमलरा कंवरारी मामलरी विगत. वाघ १, संसारचंद २, सहसमल ३, रणमल ४, कलो ५, पांचू ६, बीकानेर लूणकरण बीकावतरा दोहिता।

११८६. रावत सूरजमल खेमावतरै बेटा – वाघ १, किसन २, बीको ३, रावत वाघरै तेजो. तेजारै मानो रावत. वरस दोय राज कियो पछै सैंद उमरावसूं लड़ाई हुई. मानो रावत काम आयो. इणरै बेटी अेक ही जिका सिरोही राव अखै-राजनूं परणायी. मानारो टीको भाई सीयानै आयो. रावत सीयारो जसवंत।

११८७. रावत वाघरा कंवरारा मामलरी विगत – रायसिंघ वागड़ियो चहुवाण वीरसलदे वरसिंघोतरो दोहितो।

११८८. रावत रायसिंघरा कंवरांरा मामलरी विगत–बीको वेगम हाडा जीतमल देवावतरो दोहितो।

११८९ रावत बीकारा कंवरांरी मामालरी विगत–तेजमाल छपनिया राठोड़ जैमल जैचंदोतरो दोहितो।

११९०. किसनसिंघ मेड़तै रायमल दूदावतरो दोहितो।

११९१. रावत जसवंतसिंघनू सं०१६९० राणै जगतसिंघ चूक कराय मरायो।

११९२. राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत बीजो ही साथ विदा कियो हो रावत जसवंतसिंघरै साथ वडो बेटो महासिंघ काम आयो।

११९३. रावत जसवतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

११९४. संवत १६९० मे राणै जगतसिंघ देवळियारा रावत जसवंतसिंघनू चूक कराय मरायो जद मुदै चूकमें राठोड़ रामसिंघ करमसेणोत और ही उमराव राणाजीरा साथै हुता. रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

११९५. संवत १६९० मे राणै जगतसिंघजी देवळियारो धणी रावत जसवंतसिंघ जिणनूं चूक कराय मरायो राठोड रामसिंघ करमसिंघोत मुडासै राणारो भाणेज उमराव दूजा ही राणाजीरै साथै हुता. रावत जसवंतसिंघ राठोड़ सुजाणसिंघ भगवानदासोतरै हाथ रह्यो।

११९६. रावत जसवतसिंघरो पाटवी कुंवर महासिंघ रावत साथै काम आयो।

११९७. जसवंतसिंघरो बेटो हरसिंघ जसवंतसिंघरै पाट बैठो।

११९८. जसवंतसिंघरी गादी रावत केसरसिंघ।

११९९. देवळियारा दीवाण सावंतसिंघजीरो कुंवर दीपसिंघजी पहलां भिणाय परणियो हुतो. पछै फतैगढ परणियो।

१२०० देवळियै दीपसिंघ सावतसिंघोतरो वडो वेटो केसरीसिंघ भिणायरो भाणेज ।

१२०१ दीपसिंघरो दूजो वेटो दळपतसिंघ फतैगढरो भाणेज डूगरपुर-रावळ जसवतसिंघरै खोळै ।

१२०२ देवळियै च्यार सिरायत—रायपुर १, साकधजी २, झातळा ३, धमोतर ४।

डूगरपुर

१२०३ डूगरपुररा रावळारी पीढी लिखते—समरसी १, कालीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमदास ५, गगेव ६, उदैकरण ७, प्रथीराज ८, आसकरण ९, सहसमल १०, करमसी ११, पूजो १२, गिरधर १३, जसवतसिंघ १४, खुमाणसिंघ १५, रामसिंघ १६, सिवसिंघ १७, वैरीसाळ १८, फतैसिंघ १९ ।

१२०४ डूगरपुररा रावळारी वसावळी—करमसीरो रावळ कानडदे श्रीमन्नारायणसू १२९ पीढिया छै ।

१२०५ कानडदेरो परतापसी, परतापसीरो गेपो जिण डूगरपुर गैबसागर तळाव करायो, गेपारो स्यामदास, स्यामदासरो गागो, गागारो उदैसिंघ, उदैसिंघरो प्रथीराज, प्रथीराजरो आसकरण, आसकरणरो सहसमल ।

१२०६ रावळ आसकरण प्रथीराजोत राव मालदेजीरी वेटी पुहपावती बाई परणियो हुतो विखामें चद्रसेण मालदेवोत डूगरपुर गयो रावळ आसकरण वडा हीडा किया ।

१२०७ डूगरपुररो धणी रावळ उदैकरणजी सागा राणारी मदत सीकरी काम आयो कुवर जगमाल घावा उपडियो उणरै वसरा वांसवाळारा रावळ ।

१२०८ चावडा गोपाळदासनू मारियो पछै प्रतापसी गयमलोत डूगरपुररा रावळरी सभामें वैठा चावडानू मारियो पछै राव चद्रसेणजी विखामें डूगरपुर गया जद कुवर आसकरणजीनू चावडा परणाया।

१२०९ रावळ सहसकरण आसकरणोत डूगरपुररो धणी जिणरी वेटी महाराज सूरसिंघजी परणिया कुवर सवळसिंघजी सहसमलरा दोहिता ।

१२१० साढी सतरैंसौ गाव सैवाय मगवाडी महरवटमें आयो डूगरपुररा रावळरै मगवाडा वदळै आडाईरो तळाव वासवाळारै रावळरै आयो।

वासवाड़ो

१२११ वासवाळारा रावळारी पीढी लिखते—समरसी १, काळीकान्ह २, पातो ३, गोपीनाथ ४, सोमनाथ ५, गगेव ६, उदैकरण ७, जगमाल ८, जैसिंघ ९,

कल्याणमल १०, अग्रसेण ११, उदैभाण १२, समरसी १३, कुसळसिंघ १४, अजबसिंघ १५, भीमसिंघ १६, विगनसिंघ १७, प्रथीराज १८, विजयसिंघ १९।

१२१२. बांसवाळै रावत प्रथीसिंघरो रावळ विजैसिंघ. विजैसिंघरो उमेदसिंघ, उमेदसिंघरो भवानीसिंघ हमैं है।

१२१३ बांसवाळै रावळ कुसळसिंघजीरा मोना चाकर गखिया पूणा दो सौ गांव पटै दिया. बागडिया चहुवाण छाड गया था जद रामोतांरो मुदै ठिकाणो कुसळगढरो धणी महीपडरो राज कहावै है।

१२१४. बांसवाळारो रावळ सिंघ वाहण देवी जिणरी आण काढै।

गोहिल

१२१५. साळवाहण गोहिलरो वेटो मुद बुद मारवाड़िगारै मासरै पागनगर जोगीरो भेख आयो हुतो।

१२१६. राजपीपळीरो धणी गोहिल भीम जिणरा वेटा अरजुण-हमीर सोमहिया महादेवरी वाहर खूनी अलाउद्दीनसू जंग करि जाळोर काम आया।

१२१७. यांरो छोटो भाई कलो जिणरै वंसरा रामोत वरसिहोत मेडतिया है। ओळी १४ रा राजपीपळा है।

१२१८. हमीर-अर्जुणरै साथ दातीवाळरो धणी कोळी वेगरो रात काम आयो. आंटियो वाणियो, रुद्रवो वामण, धूडियो भील।

रामपुरारा चंद्रावत

१२१९. श्रीराम-उपासक चद्रावत राव महोहकसिंघ अमरसिंघ सुत- अै आखर रामपुरारा रावरी महोरमे।

१२२०. आवड़सू उठ चद्रावत रामपुरो जीवदानोजी भदाणो १, भाट २, खेड़ी ३, मुळेरी ४, पाहेडी ५, करडावावण ६, अजैपुरो वगेरा रामपुरारा राव उमराव जांरा ठिकाणा।

फुटकर

१२२१. गांव दोय सौ गहलोतारा दिली-मंडळ मे है. राणो नरपतसिंघ उठै हुवो, हमैं अेक राणो वाजै. दूजा गहलोत चौधरी वाजै।

[४] यादवांरी वातां

भाटी

१२२२ भाटियारी खाप लिखते–जेचद १, जेतुग २, वुध ३, केलण ४, सरूपमी ५, सीहड ६, लेना ७, छीकण ८, पोहडे ९, पाहू १०, नहु ११, वारुसी १२, जेतसी १३, हमीर १४, ऊनड १५, घुवड १६, रायघर १७, राय १८, सामतसी १९, अणगा, २०, अडकमल २१, वरमिघ २२, खीया २३, जेहर २४, अरसुरमोत २५, वारणरासोत २६, तेजमालोत २७, विहारीदासोत २८, उदैसिघोत २९ मालदेओत ३०, सगतसिघोत ३१, पचायणोत ३२, देरावरिया ३३, पूगळिया ३४, गुगजी ३५, सोम ३६, मूल ३७, सिघराव ३८, वानर ३९, जेड ४०, गोपाळदेओत ४१, हडवा ४२, लूणराव ४३, सभा ४४, सागेजा ४५, कदल ४६ ।

१२२३ मेहामल, देवत, सीवत, अै भाटियारी खापा है ।

१२२४ करनोत, धनराजोत अै दोय घडा आय वसियो ।

१२२५ नानग छावहडो वरदायी हुवो पोकरण आय वसियो ।

१२२६ जैसळमेर पाट वैठा ज्यारी विगत अनुक्रमसू-नछू १, म २, दुमाफ ३, वीजो ४, जैसळ ५, साळवाहन ६, केल्हण ७, चाचग ८, करण ९, लखणसेन १०, पुनपाळ ११, जैतसी १२, मूलराज १३, दूदो १४, घडसी १५, केहर १६, लखमण १७, वेरमी १८, चाचगसी १९, देवीदास २०, जेतसी २१, लूणकरण २२, मालदे २३, हरराज २४, भीम २५, कल्याणदास २६, मनोहरदास २७, सवळसिह २८, अमरसिघ २९, जसवतसिघ ३०, जेतसी ३१, अवैसी ३२, मूळराज ३३, गजसिघ ३४ ।

१२२७ रावळ जैसल १, वेल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, रावळ जैतसी ६, मूळराज ७, देवराज ८, रावळ केहर ९, लखमण १०, वैरसी ११, चाचो १२, देईदास १३, जैतमी १४, लूणकरण १५, माल्दे १६, हरराज १७, कल्याणमल १८, मनोहरदास १९, रावळ मनोहरदास निरवस गयो ।

१२२८ धरणीधर वराहरी वेटी नाम होरड सिघ देवराजनू परणायी धरणीधर वराहरी राणी नाम रजाव टावरी १, वोडाणा २, सिधराव ३, सोळकी अै च्यारू खापा वीकमपुर राजपूता माहे मुख्य है ।

१२२९ पहलां भाटियांरी राजधानी लुद्रवै हुती. भाटी साळवाहणरै टीकै भोजदेव वैठो. भारी जैसळ दिल्ली फोजां आणी. भोजदेवनूं मार लुद्रवै धणी हुवो. जैसळ लुद्रवै कोट करावण लागो जद ब्राह्मण नांव इसो अेक सौ वीस वरसरी ऊमरमें तिण जैसळनूं कह्यो-म्हारा खेत कनै रड़ो है, जठै श्रीकृष्ण गदासूं पाणी प्रगट कर पांडवांनूं पायो नै कह्यो कलूमें म्हारो वंस इण ठोड़ रहसी, सो तू उठै कोट कराय. जेसळ वात मानी. गदासूं कूप कृष्ण कीनो जिण कूप ऊपर सिला हुती सो दूर कीवी और वंधायो. नांव दियो जैसळो कूवो. गढ अठै करायो. गढरो नांव दियो जैसळमेर।

१२३०. जैसळ १, काल्हण २, लूणकरण ३, चाचिग ४, तेजराव ५, वडो रावल जैतसी ६।

१२३१. भाटी जैसळरो कालण. भाटी काल्हणरै वेटा दोय हुवा – लूणकरण १ सीहड़ २. लूणकरणरो चाचिग, चाचिगरो तेजराव, तेजरावरो वडो रावल जैतसी।

१२३२ जैतसी ऊपर दिल्लीरी फौज आयी. वारह वरस विग्रह रह्यो. जैतसी रावळ विग्रहमे मुवो. पछै मूळराज जैतसिघोत रावळ हुवो।

१२३३. मूळराज रावळरै आगै राणो रतनसी हुवो. आगै जैसळमेर आ मरजाद हुती रावळरा मूंडा आगै अेक राणो रहै।

१२३४. रावळ मूळराज ऊपर तुरकांरी फोज आयी. घेरो गढरै लागो. घेरासूं जैसळमेररा गढरो सामान खूटो जद रावळ मूळराजरो कंवर देवराज और राणा रतनसीरो कंवर घड़सी दोय जणा तो अै नै जणा तीन दूजा जुमलै पांच तुरकांनूं अमान सूपी. जैसळमेररा गढरा दरवाजा खोल मूळराज रतनसी काम आया।

१२३५. मूळराज रतनसीनूं मार तुरक परा गया. जैसळमेररो गढ सूनो पड़ियो जद रावळ मालो जैसळमेर आपणावण आपरी फोज मैली. फोज उठै गयी. सामान भार जिनसां खजानो प्रभातरो गढ माथै चढाय दियो नै राव मालारा भड़ां कह्यो – कपड़ा धोय आपै साझरा गढ माथे जासां. मोमत्तो मन धोवणरै वंधै लागा।

१२३६. वडा रावळ जैतसीरै वारह वरस घेरो रयो जद भाटी जसहड़रा वेटा पांच दूदो १, तिलोक २, आसकरण ३, सीधण ४, वांगण ५, ज्यानूं जुगतसूं घेरा मांयसूं काढिया हुता. अेक जणो दम खीच मड़ो वणियो हो नै चार जणा

साचिया के उणरा माचासू उपाड गढसू बाहर नीसर वचिया हुता उठै पाचू ही साठा जणासू गढ माथै चढिया अै तोला पाहू कनै हुता तोला पाहू ही आ साथै आयो गढ रावळ मालारा साथरै हाथ न आयो ।

१२३७ गढ या पाचा अपणाय लियो तोला पाहूनू अै वदै नही, तोलो हियासू खराई करै अेक दिन तोलारै तिलोकसी झटकारी दीवी तोलारो माथो कटीज दर पड़ियो कादियै माथै तोलै पाछो झटको वाह्यो सो थाभो कटाणो, थाभो अजैस है ।

१२३८ जसहड़रा बेटा वरस २१ राज कियो पछै पातसाही फोज आ माथै जैसळमेर आयी आसकरण तुरकानू भेद दियो गढ भिळियो दूदै तिलोकसी साको कियो पाचू भाई काम आया गढमे तुरकारो थाणो वैठो ।

१२३९ देवराज रावळ मूळराजरो बेटो नै घडसी राणा रतनसीरो बेटो अै दोनू मूळराज रतनसी काम आवणरै तुरकानू सूपिया सू अै मोटा होय पातसाहरा सू नाठा घडसी महेवै रावळ माला कनै गयो रावळ मालारी वहन विवली घडसी घरमे घाली, रावळ मालै आपरो साथ मेल वीकमपुरमे घडसीरो अमल करायो ।

१२४० घडसी आपरी वसी वीकमपुर राखी, सिंधरा पातसाहरी चाकरी लागो सिंधरा पातसाहसू जग हुवो जद घडसी पहला पातसाहरी असवारीरो सफेद हाथी जिणरी सूड काटी, सिंधरै पातसाह राजी हुय घडसीनू जैसळमेर दियो ।

१२४१ देवराज पातसाहरा सू भाज धाट थर पारकरमें गयो, उठै परणियो, इणारै बेटा दोय हुवा केहर नै हमीर ।

१२४२ देवराजनू धाटरै दहइयै मारियो, पछै जैसळमेरसू रावळ घडसी केहर-हमीरनू तेडणनू थाट मिनख मेलिया, आप तळैरी हुतो, जसहड भाटिया आसकरणरा बेटा घोडै सवार घडसीनू झटको कियो, घडसीरो माथो दूर पडियो, घोडो धडनू ले गढ माथै गयो, घडसीरै बेटो नहो हुवो, रावळ मालारी वहन विवली केहरनै टीको दे घडसीनू चूक हुवा पछै नवमै दिन सत कियो ।

१२४३ केहररो रावळ लखमण, लखमणरो वैरसी, वैरसीरो चाचो, चाचारो रावळ देईदास, देईदासरो भीम पछै भीमरो छोटो भाई कल्याणमल रावळ हुवो, कल्याणमलरो रावळ मनहरदास निरवस गयो ।

१२४४. रावळ चाचानूं परणाय सोढां मारियो हुतो सो देईदास चाचारो चाचारै पाट वैठो सोढानूं मार वापरो वैर लियो ।

१२४५. रावळ जैतसी देवीदासोतरै राणी भावकदे राठोड़ हाफा वरसिघोतरी वेटी मेहवै १ ।

१२४६. जैसळमेर रावल जैतसीरै वेटांरी विगत–लूणकरण १, भीवराज २, जगमल ३, प्रथीराज ४ ।

१२४७. भाटी रावळ लूणकरण भाटी रावळ जैतसी देवीदासोतरो वेटो वाड़मेरांरो भाणेज ।

१२४८. रावळ लूणकरणरै वेटांरी विगत–मालदे १, सिवदास २ ।

१२४९. रावळ मालदे लूणकरणोत सीसोदिया अखैराज कुंभकरणोतरो दोहितो ।

१२५०. रावळ मालदे लूणकरणोत राणी महेची महमादे मेघराज हाफावतरी ।

१२५१. रावळ मालदेरै वेटांरी विगत–हरराज १, खेतसी २, नेतसी ३, सहसमल ४ ।

१२५२. रावळ हरराज जोधपुर राठोड़ नायो राव सूजारो वेटो जिणरो ओ दोहितो ।

१२५३. खेतसी रावळ मालदेरो वेटो कोटड़ियांरो भाणेज ।

१२५४. खेतसी मालदेवोत राव जैतसी वीकानेरियारो दोहितो. मोटा राजाजीरी वेटी रंभावती परणियो हुतो ।

१२५५. मालदेरो खेतसी वीकानेरिया राव जैतसीरो दोहितो. खेतसीरो दयालदास, दयालदासरो सवळसिघ, सवळसिघरो अमरसिघ, अमरसिघरो जसवंतसिंघ, जसवंतसिघरो जगतसिघ, जगतसिघरो अखैसिघ, अखैसिघरो मूळराज, मूळराजरो गजसिघ ।

१२५६. रावळ हरराजरै वेटांरी विगत–भीव १, कलो २, सुरताण ३ ।

१२५७. रावळ भीम हरराजरो वेटो जोध्रपुरर‍ा राव मालदेजीरो दोहितो ।

१२५८. संवत १६१८ रा मिगसर वद ११ भाटी भीम हरराजोतरो जनम. संवत १६७० जैसळमेर देवलोक हुवो ।

१२५९. संवत १६५४ पोस वद ६ जहड़ गोपाळदास जैमलोत नै जैसळमररै भाटियां वेढ हुई. भाटियांरो घोड़ो डोढ हजार हुतो. गोपाळदास रजपूतां पैतीससूं खेत कर पड़ियो कोटणसूं अधकोस ।

१२६०. रावळ मेघराजरी वेटी महेची वाला रावळ भीमरै राजलोक ।

१२६१. वालां महेची वना मेघराजोतरी रावळ भीमरै राणी ।

१२६२ भीम ऊत गयो भीम पछै कल्याणमल हरराजोत जैसळमेर रावळ हुवो।

१२६३ रावळ कल्याणदास हरराजरो बेटो कोटडियारो भाणेज।

१२६४ संवत १६७२ रावळ कल्याणमल अजमेर पातसाह जहांगीररी हजूर आयो हो।

१२६५ रावळ भीमरै भाई कल्याणमलरी बेटी महाराजकुंवर गजसिंघजीनूं परणायी संवत १६६८ जैसळमेर।

१२६६ रावळ भीवरै बेटो हुवो नहीं रावळ कलो हरराजरो जिणरो बेटो मनोहर-दास पाट बैठो।

१२६७ भाखरसी हरराजोत आछो राजपूत हुवो।

१२६८ रावळ मनोहरदास कल्याणदासरो कोटडियारो भाणेज।

१२६९ जैसळमेर रावळ मनोहरदास महेचै रावळ दूदा मेघराजोतरो दोहितो।

१२७० इणरै मामा महेचो तेजसी दूदावत जैसळमेर भेळी गोठ कीनी तेजसी तेजसीरै पुत्र हुवो नहीं।

१२७१ रावळ मनोहरदास जैसळमेररो धणी जसोल माथै आयो जसोळ भिळी जद जसोलियो वीरम काम आयो।

१२७२ संवत १६९३ रावळ मनोहरदासरी बेटी महाराजकुंवर जसवंतसिंघजी परणिया।

१२७३ रावळ मनोहरदासरै बेटो महाराज जसवंतसिंघजी गजसिंघोत परणिया पुत्र मनोहरदासरै हुवो नहीं।

१२७४ संवत १७०७ रावळ मनोहरदास जैसलमेर देवलोक हुवो भाटी रामचंद टीकै बैठो।

१२७५ जैसळमेर रावळ मनोहरदास कल्याणदासोत मुवो अपुत्र जयसिंघरो बेटो रामचन्द गादी बैठो जैसळमेर पछै महाराज श्री जसवंतसिंघजी जैसळमेर सबळसिंघनूं ले दिया जद सबळसिंघ रामचंदनूं डेरो दियो। इणिया भाटी रामचंदोत है।

१२७६ रावळ सबळसिंघ दयालदासोत राठोड बला रायमलोतरो दोहितो।

१२७७ रावळ मालदे १, सेनसी २, दयालदास ३, सबळसिंघ ४, अमरसिंघ ५, जसवंतसिंघ ६, जगतसिंह ७, अखैसिंह ८, मूळराज ९, गजसिंघ १०।

१२७८. रावळ मालदेरो खेतमी जिणरै बेटा च्यार ईसरदास १, दयालदास २, सगतो ३, सामदास ४ ।

१२७९. भाटी दयालदास खेतसीरो वेटो राठोड़ां वीदावतांरो भाणेज ।

१२८०. रावळ दयालदासरो वेटो सबळसिघ ।

१२८१. संवत १७१० रा भाद्रवामे रावळ सबळसिघ जैसळमेररै धणी सोढा ईसरदास राणानू उमरकोट मांहेसू काढियो. सोढा जोनिगदेनू राणो कर उमरकोट वैसाणियो ।

१२८२. जैसळमेर रावळ अखैसिघ खावड़ियांरो भाणेज इकमायो इणरै भाई जोरावरसिघ ।

१२८३. रावळ जसवंतसिघ जैसलमेररो धणी जिणनू परणायी नगर रावळ भारमल जिणरी वेटी रूपांवाई जिणरै वेटा च्यार हुवा - जगतसिघ १, सरदारसिघ २, तेजसिघ ३, ईसरीसिघ ४ ।

१२८४. रावळ जसवतसिघरो तेजसिघ, जिण जगतसिघरी गादी जगतसिघरो वेटो वुधसिघ रावळ सगो भतीजो उणनूं गर लातु मारी । आय रावळ होय गादी बैठो निर्जळा इग्यारसरै दिन घड़सीसररी लासमे तेजसिघरो काको हरीसिघ अमरसिघोत जिण पिला लाला नामो परधान जिणनूं मारी तेजसिघनूं मारियो - अखैराज जगतसिहोत जैसळमेरर किलानूं न गयो, ठाणनू भागो ।

१२८५. जैसळमेर रावळ जगतसिघरो वेटो अखैसिघरो वडो भाई बुधसिघ रावळ हुतो उणनू मार तेजसी जसवंतसिघोत मारियो घड़सीसररी पाळ माथै ।

१२८६. संवत १७५१ रा मिगसर वद १४ अखैसिघजीरो जनम, संवत १७८१ रा सा० सुद ८ दिल्ली राजतिलक हुवो ।

१२८७. मम्हे जाणतै मेलियो, विसहे ऊपर पाव ।
होवो माया कारमी, भवै मांची थाव ॥

इण दूहारी पैली झड़ जैसळमेररै रावळ कही. तीन झडा तेमड़ा रावरी कपासू साठियारै वीठू वोहाड़ कही. रावळजी सावेरै गया ठकुराणियां मांह तेडिया. महलरी देहली अर्तन नाग सोभित कियो. लंवायमान रावळ इणरै माथै पग दियो. उण वेळां झड़ वणायी — मै जाणतै मेलियो ।

१२८८. सीसोदियो जगमाल राणा उदैसिघरो दत्ताणी काम आयो जणा १६ सू लुगायां छव सती हुई ।

१२८९ जैसळमेर अनड़णारो तोड़ण रावळ भीम करायो जनाना महल, गोरा हरराज करायो मुजपोळ, बारीगा महल रावळ जूणकरण करायो ।

१२९० महाराणारा पाहणरी मूरत नवी देवी चडम्बरी घळाव मूळराजजी जैसळमेर मंदिर नव पधराया ।

१२९१ पर्ची थाय नाथीरी जिण जैसळमेर चटा कमठाणा कराया लखमीनाथजीरी दोनू आगमे माणक जडाया ।

१२९२ रतनाथजीरा बानारा दरसण जैसळमेर है रावळजी नित दरसण करै ।

१२९३ नौरासी गाम जैसळमेररा रावळरै पातीसाहारा है ज्यारो हासल आवै ।

१२९४ मालमसिंघ मुहतो जैसळमेर जिणरी मा बीकानेररी हुती उणा बीरीजी पहोजनी ।

१२९५ जैसळमेररा कामदारारा बापरी महेसरणी त्रिया सारेचो रहार, पालरणरी त्रिया पोरणजी वहावै घाटमें परणीज जैसळमेररा मुहता त्रिया घरा आणै उणा घाटणजी वहावै ।

जैसळमेररा सिरदार

बरमलपुर

१२९६ बरमळपुररो भाटी गाव मान जिणरी आणेजी महाराज पूर्जासघजीरी बेटी गुलाबावरबाई ।

१२९७ भाटी केसरणरा राजमें तुरा जैसळमेररी गढ घेरियो जद भाटी नाठो रीट दूर माट आयो जद केसर राखो - पाघार ! सगरा थान, भगा आयो जरम् जगो बानर रहागो ।

१२९८ मारग बाळसारणरी बेटी ।

१२९९ भाटी केसरणरै तेर बेटा जारी सिरा - लखर १, बारा २, रता ३ सीगो ४, हमीर ५, भोज ६, बीगर ७ रीटट ८ जूणो ९ रणा १० बारो ११ गुराण १२, भीमा १३ ।

१३०० भाटी केसर केहररो केसर दरगी पर गळावण मूळराज बैरागा ।

१३०१ केसर भाटीरा बेटा भाव बारा १, सुमान २, मनरूपार हुवा जगारा रामण गढ ।

१३०२. गांव बारह माडमे केलणाग है. आधा गावांमे रणमल केलणोतरा पोतरा है नै आधा गांवांमे अक्का केलणोतरा पोता है ।

१३०३. सोमसी भाटी गायांरी वाहर काम आयो. गाय खोसी जद लोक कहै – सोम भाई सोम ।

१३०४. सोम भाटी राठोड़ जैंसिघ जारा गाव फळोदीरी पट्टीमे आगै घणा हुवा ।

१३०५. भाटी मुलवाणी वीकानेररो गाव खानूसर जठारी सरारो भाटी रावत भदो परणियो. इणमे देवतपणो हुतो ।

१३०६. गांव लाठी जसोड़ारा पैंतीस गाव ज्यां मॉहलो है पछै रावळजी ले लियो ।

१३०७. सायवखान वाहड़मेरासू वचन लेय वीकमपुररो राव हरनाथसिघ मरायो. टुटिया हाथरो किसोईकी ।

१३०८. सं० १६९० भाटी गोपाळदास आसावतरी साडिया नीवरा खारिया कनै चरती चाणरा मैणा ले गया ।

१३०९. माडमे बारह गांव जडां भाटियारा जडे कहावै. माडमे अडकमलां भाटियांरा गांव बारह भभारो कहावै ।

१३१०. गाव पैंतीस माडमे जसोडा भाटियारा, ठरडासू आथमणा खाडाळमे गाव हवूर भाटी ऊनड़ ज्यारा ।

१३११. चाहड़ू ग्राव छपाळो अै गाव दोय माडमे हमीरा भाटी धीरां सीहडा भाटियांरो गाम अेक ब्रह्मसर जठै ब्रह्मकुड है ।

१३१२ माडमे गाव दोय पाहू भाटी ज्यारा है ।

१३१३ गांव अेक काछो रूपसिया भाटियांरो है ।

१३१४ मावत सीहा भाटियारो गाव अेक कोटडी माडमे है ।

१३१५. सोमगांव वगेरै आठ गाव गोगली भाटी ज्यारा माडमे है ।

१३१६ अेक गाव साहको अणगा भाटियारो है ।

१३१७ घाणैली १, सूजियो २, दहो ३, अै तीन गाव रायधरा भाटियारा है ।

१३१८ भीरमदेवोत भाटी ज्यारै पटै जाणियाणो मराणो हुता जाणियाणो तेजसिघ आईदानोत ले लियो सराणो रुघनाथसिघ सुजाणसिघोत ले लियो ।

१३१९ वीकमपुर कनै गाव ढावरियाळो टाबरिया रजपूतारो है ।

१३२०. देवराज समरोटू अै ठिकाणा वावल खानखानैमे खारखरा भाटिया कनांसू लिया ।

जादू

१३२१ जादू राजपूत केईक मुसळमान है जाटवारो वडेरो पीर हुवो है जिणरो नाव लोड।

करोली

१३२२ करोलीरो राजा मानपाळजी जादव महराज प्रतापसिघजीरो मुसरो जैपुर आयो जिण कही अभैकुवरबाई म्हारी भाणेज है।

खेजडलारा भाटी

१३२३ खेजडलारा सिरदारारी पीढिया लिखते - जेसळमेर देवराजरै बेटा दोय हुवा - वडो केहर सो तो रावळ, दूजो हमीर।

१३२४ केहररै बेटा तीन– लखमण १, कलकरण २, केल्हण ३ रावळ केहरर भाई देवराजरो बेटो हमीर, हमीररो लूणकरण, लूणकरणरो सतो।

१३२५ हमीर १, लूणकरण २, सतो ३, अरजुण ४, सावळ ५, मीहो ६, रायपाल७, आसो ८, गोपाळदास ९, दयाल्दास १०, केहरसिंघ ११, सूरसिंह १२, हठीसिंघ १३, किसनसिंघ १४, देईदास १५, जसवतसिंघ १६, मादूळसिंघ १७।

१३२६ भाटी रायपाळ मीहावत राव मालदेजीरै चाकर रहतो पटै सीवसर, अटवडो, खेजडलो नागोररा गाव इतरा हुता रावजी चद्रसेणजीरी चाकरीमे रह्यो रायपाळ।

१३२७ भाटीरायपाळोत राजा भगवानदास कछवाहेरो चाकर।

१३२८ भाटी गोपाळदास आसावत पातसाही चाकर हो सो सवत १६७१ रावळै वसियो सिनाईरा गावासू दुधोड पटै पायो।

१३२९ दयाळदास गोपाळदासोत सवत १६७७ रावळै वसियो डवैरीरो पटो दियो पछै सवत १६७८ भाद्राजण गावा २४सू पटै दियो पछै जाळोररी रारमो दियो।

१३३० जाळोर हाकम जद दयाल्दास महेचा रायमल उदैसिघोतनू पकड रोकियो सो पछै छोडिया दुधोडसू बाहर गुडो दियो हो उण गुडामे दयाल्दास हो रायमल मेवाडसू महेचा नादा बाघावतनू ले दुधोड दयाल्दास माथै आयो दयाल्दास मारणो दयाल्दासरो वडो ढोल हो।

१३३१. भाटी दयालदासरा बेटांरी विगत – केसरीसिंघ १, राजसिंघ २, छीतरदास ३, तेजसी ४, भगवानदास ५ ।

१३३२ भगवानदास दयालदास भेळो काम आयो ।

१३३३. छीतरदास पहलां गोपाळदासजीरै वदळै चाकरी करतो संवत १६९२ छाडाणो कर अमरसिंघजीरै गयो. पछै जोधपुर आयो भाद्राजण राजसिंघ भेळी पटै पायी. पछै राजसिंघ छीतरदासनै मारियो ।

१३३४ केसरीसिंघ दयालदासोत खेजडलो पटै पायो ।

१३३५ केसरीसिंघरा बेटारी विगत - हरीसिंघ १. सूरसिंघ २, उदैभाण ३, चतुरभुज ४, वोड़ांरो भाणेज ५, सुजाणसिंघ ६, हरिसिंघ ७ ।

१३३६. केसरीसिंघ राव रायसिंघोत समरसिंघोतरै चाकर रह्यो ।

१३३७ हरिसिंघरै बेटारी विगत – वीरमदे १, लाखो २, दुरजणसिंघ ३ ।

१३३८. भाटी आसा रायमलोतरा बेटारी विगत – नारायणदास १, रूपसी २, डूगसी ३, ठाकुरसी ४, सुरजण ५ ।

१३३९ नराणदास रायमलोतरो कछवाहा राजा मानरै आंवेर चाकर रह्यो ।

१३४० भाटी रायमल सीहावतरा बेटारी विगत – जैसो १, राणो २, अखैराज ३, भाखरसी ४, किसनदास ५ ।

१३४१. जैतमाल सीहावतरै काम आयो छोरू न हुवो ।

१३४२. मावत उरजणोतरै बेटो आपमल, आपमलरै आल्हण, कूपो महाराजोतरै चाकर हुवो सो कूपै साथै काम आयो ।

१३४३ आपमलरो वीरम मोहलांसू झगड़ो कर काम आयो लाडणू सीहाजीरै वैर ।

१३४४ भारमल मावंतरो ।

लवेरारा सिरदारांरी पीढियां

१३४५. कलकरण १, जैसो २, आणद ३, नीवो ४, मान ५, सुरताण ६, रघुनाथ ७, भीम ८, इंद्रभाण ९, साहबखान १०, सुजाणसिंघ ११, अणदसिंघ १२, दोलतसिंघ १३, जैसिंघ १४, केसरीसिंघ १५, उमेदसिंघ १६ ।

१३४६. भाटी केहररो कलकरण, कलकरणरो जैसो जैसारै चार बेटा हुवा – अणंद १. जोधो २, भैरूदास ३, वणवीर ४ ।

१३४७ पहलां लद्रवो भाटियांरो वास हुतो. पछै गोइददास मानावत आवादान कियो नाम लवेरो प्रसिद्ध हुवो ।

१३४८ भाटी जेहो हडवू माखलारो दोहितो ।

१३४९ जैमाजीरी वेटी लखमीवाई रावजी सूजाजीरी राणी कवर वाघाजीरी मा ।

१३५० अणदरै नीवा, नीवारै मानो, मानारै गोइददास ।

१३५१ लवेरारा मिरदाररो वडेरो भाटी नीवो जैनाजी कूपाजी साथ समेळ काम आयो ।

१३५२ महाराज सूरजसिघजीरै कवरपदै ही गोइददास प्रधान हुता ।

१३५३ सवत १६६३ लवेरो आसोप दोनू महाराज सूरजसिघजी गोइददासजीनू पटै दिया ।

१३५४ सवत १६७१रा जेठ सुद ८ अजमेर काम आया ।

१३५५ पतो भादावत वडो डील हो गोइददासजी साथ अजमेर काम आयो ।

१३५६ गोइददासरै वेटो जोगणीदास पटै गावा च्यारासू गाव बीजवाडियो महाराजा सूरजसिघजीरो उमराव जिणानू राजा मान कछवाहारा चाकररो हाथी मस्त जिणा घोडासू उठाय सूडसू दातासू मालियो जोगणीदास दातामे पोयोडै तीन कटारी हाथीरै कुभायल वाही राम कह्या सवत १६६८ पातसाहरी फौज दिखणमे आवै जद ।

१३५७ राममिघ १, प्रथीराज २ गोइददास मानावतरा वेटा महेची पूरावाईरी कूख उपन्या पाचवो वेटो वेणीदास गोइददास मानावतर ।

१३५८ भाटी नरहरदास गोइददास मानावतरो माता गावासू डावर पटै ।

१३५९ ओ हाथी राजा मान राजा सूरजसिघजीरी निजर कियो विताईस वरसा पछै ऊ हाथी उदैपुरमे साहजादा खुरमरी निजर सूरजसिघजी कियो ।

१३६० भाटी सुरताण मानावतरो मुहतो केसो जिणनू गोइददास मानावत रावळरै वापो सवत १६६८ महाराज सूरजसिघजी दिखणमे हुता उठासू बीख सुरताणजी घरै आय केसो मुहतानू मारियो गोयददासजी सुरताणजीनू धरती माहेसू वढाया ।

१३६१ सुरताणजी नागोर राणा सगररा चाकर रह्या सगरजी भीवडा दिवी राठोड नरसिघदास वला गयमलोतरो सूरसिघ सुदरदास रामसिघोत आसू भावका खानाजगी हुई नरसिघदास सूरदास सुदरदासनू मार मुवो सुरताणजी सवत १६६८ रा जेठ सुद ८ ।

१३६२ भाटी रघनाथ उजैण धावो पाडियो जद वुदेलै भावसिघ सुखपाळमे घाल उठायो जतन किया किसनो पातो रघनाथरै साथ धावा पडियो हो ।

१३६३ भाटी प्रथीराज गोइंददासोतरी मोढा मोढै भगवानदास झिवी सोढांरी वार झगडो कर भाटी सुंदरदास काम आयो।

१३६४. नरहरदास गोयंददासोत जिणरै पटै डावर गावा मानसू।

१३६५ वेणीदास गोयंददासोतरै पुरामे है जिणसू बेटा दोय हुआ – सामसिंघ १, प्रथीराज २।

१३६६ भाटी सुंदरदास सुरताणोत काम आया जिणरो उवाको संवत १७०४ वरसे माह वद ५ हुवो।

१३६७. नागोररो गांव डेह भाटी सबळदास सुंदरदास सुरताणोतरो सत्ताईस जणासू काम आयो. गाव डेह लाडणूंसू जोधो इंदरभाण केहरसिंघोत माथै आयो जद।

१३६८. उण हीज दिन सबळसिंघरा रजपूतां जोधा इंद्रभाणनू मारियो।

वीकमकोररा भाटी

१३६९. भाटी सुरताण १, अचळदास २, महेसदास ३, किसोरसिंघ ४, जैतसिंघ ५, गुमानसिंघ ६, हिंदूसिंघ ७, पहाडसिंघ ८, जुझारसिंघ ९ – अै वीकमकोररा सिरदारांरी पीढिया।

वालरवारा भाटी

१३७० भाटी जैसो १, जोधो २, रामो ३, किसनो ४, कान्ह ५, हरिदास ६, मुकददास ७, रामसिंघ ८, रणछोडदास ९, उदैभाण १०, जैतसिंघ ११, रतनसिंघ १२, बुधसिंघ १३, कंवर सादूळसिंघ १४– वालरवारा सिरदारारी पीढियां।

माणकळावरा भाटी

१३७१ भाटी जैसो १, भैरूदास २, सूरो ३, साकर ४, डूगरसी ५, हरदास ६, ईसरदास ७, कूभो ८, राम ९, जैसिंघ १०, सूरतसिंघ ११, सगतसिंघ १२, रतनसिंघ १३ – अै माणकळावरा भाटी भाया भैरूदासोतरी पीढियां।

१३७२. राम कूभावत भाटी गांव रामपुरो वसायो।

वालरवो

१३७३. रुघै मुहते पातारा विसर वणाया हुता जिणसू पाता रुघानू मारियो. वालरवारै सिरदार रुघनाथसिंघ भाटी रुघारा वैरमे पातानू मारिया।

सरढ

१३७४ रावजी जोधाजीरी वारमे सरढरो धणी जसाभाई भाटी रावत भादो हो हमैं सरढ वरसिंघा भाटियारैं है ।

सेत्रावो

१३७५ रावत लूणो सेत्रावारो धणी रावजी जोधाजीरो माहडो जिण सारण घोडी जोधाजीनू दिवी ।

गुडो

१३७६ ईसररो ठाकुरसी जिण दुरगदासरी मदतसू चवरी पोतरारा किवाड गुडैं आणिया, राणाई पायी ।

१३७७ ठाकुरसी १, सायवखान २, भाखरसी ३, मालदे ४, जीयो ५, जैसिंघ ६, ठाकुरसिंघ ७ ।

१३७८ सवत १७४० रो जनम कनीराम रामसिंघोतरो सवत १८३२ रा जोधपुरमे राममरण हुवा वरस तयाणूरी ऊमर हुई सवत १८२५ कानीरामजी मनीवज बीकानेरसू जोधपुर आया ।

१३७९ राठोड प्रथीराज प्रभुओत, राठोड महेसदास दळपतोत, ऊदावत भीम कल्याणदासोत - या तीनानू अेक सरीखी लिखावट महाराज शिवजीरा खास रुकामें पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसू लिखावट आगैं न रही प्रथीराजरैं मनसब घगो हो जिणसू वचनान् नही नै लिखावत् लिखीजती ।

जसोल

१३८० रावळ तेजमाळ भारमलोत फाटा तळाव माथैं सालवीसू जसोळठाकुराई कीधी।

समा यादव

१३८१ वेळावल समो सिंधमें वडो दातार हुवो ।

१३८२ समारैं जिसी सखावत किणमें ही न हुयी ।

१३८३ वगो वलार मेळा वतळायीजैं ।

जाडेचा यादव

१३८४ माहोरमें

१३८५ सिकदर फीरोज फतेखा वगेरा प्रतापीक जाम हुवा जामा कनासू भाटी ऊनड सिधा सात ही लिवी ऊनड जाम कहाणा ।

१३८६. जाम ऊनड साढा तीन करोड़ रुपियांरो सिंघासण छत्र दे सात ही सिंध सूधा कवी सांवळनूं दिवी ।

१३८७. जाम ऊनड़रा बेटां चावड़ां कनांसूं कछ लिवी ।

१३८८. जाडेचा हमीररा बेटा तीन – खंगार १, गहिव २, साहिव ३ ।

१३८९. रावळ जामरै नै राव खंगाररै वडो जंग हुवो है ।

१३९०. झारो सिरहर डूगरां, कारो वेकाणांह ।
मांझी खेगो वंकड़ो, नमै न सुरताणाह ॥

१३९१. समहर छूटो सिंघ ज्यू, वूटो वडी वलाय ।
चोखी करि-करि चाकरी, खाग-तणै वळ खाय ॥

१३९२. मुसळमान वूटो चचर राव खंगाररी चाकरीमे रह्यो. पवो, मोकळसी – अै ही राव खंगाररी चाकरीमे रह्या ।

१३९३. राव खंगार हालांनू कछ मांहेसू काढिया. उवै जाय हालाहर वसिया ।
खाटी राव खंगार, भारमल भुगती धरा ।

१३९४. भारमल दिलीरा पातसाह आगै वाघ मारियो. पातसाह राजी होय मोरवीरो परगणो दियो ।

१३९५. जाडेचांमे साहव थाटरो धणी, खंगार पाटरो धणी ।

१३९६. भुज सहर राव खंगार वसायो ।

१३९७. भुजरा रावांरी पीढी लिखते – फूलो १, लाखो २, हमीर ३, सूमल ४, लाखो ५, ऊनड़ ६, सिधराज ७, जाम ८, लाखण ९, भीम १०, अमर ११, जेहो १२, हमीर १३, नगराज १४, खंगार १५, भारो १६, मेघ १७, तमायची १८, रायधण १९ पराग २०, गहडर २१, देसल २२, लाखो २३, गहडर २४, रायधण २५ ।

१३९८. पावर कछरो परगनो है ।

१३९९. चवदै चाळा कछ चवदै पड़गना है. पड़गनानू चाळ कहै. कछ धरा खावै परा जीतै नगो कोम. आसापुरारो वर हो कछनूं कोई जीतसी नहीं ।

सरवहिया यादव

१४००. सरवहियो नवघण गिरनार-पती जिणरी धाय वहन नाम जायल, अहीरण जात, अति रूपवंती, देवीरो अवतार, घणो वित्त ले सिंधमे गयी सोरठ त्रिण-काळ पड़ियां. सिंधरो पातसाह सूमरो जिण जायलनू घरमे घालणी

विचारी अै समाचार जायल नवघणनै लिखिया नव लाख घोडासू नवघण सिंधमे आयो नव लाख लोवडियाळरी कामू सूमरानू मार सिंध लिवी ।

१४०१, आघो अरव सरवहियै राव खगार लूणपाळ मिहडनै दियो ।

१४०२ गिरनार राव खगार सरवहियो हुवो जिण पचास कोड नै नवमी सोरठा महडू लूणपाळनू दिवी दूजो राव खगार जाडेचो हुवो जिण भुज वसायो ।

१४०३ जूनागढरो धणी राव खगार जिणनू बावळरी डाळ माथै वैठै छुमण चारण दया पाळण तयार कियो–

हू जाणू द्रह वञ्जडी, जिण भाखे जिण लग्ग ।

ओ दूहो सुणाय नै ।

१४०४, राव खगार गिरनाररो धणी सरवहियो हवो कछरो धणी जाडेचो हुवो ।

कछवाहा

१४०५ कछवाहारो राज थेटू पूरवमे रोहितासगढ जठै उठासू नरवर वसिया नरवरसू दोमै ठकुराई वाधी दोसासू आवेर आवेरसू जेपुर ।

१४०६ आवेररा राजारी पीढिया लिखते–राजा दूलैराय १, राजा काकिल २, राजा हणुमनसी ३ राजा महड ४, राजा पजून ५, राजा मलैसी ६, राजा वीजळसी ७, राजा राजळ ८, राजा कल्याणसी ९, कुतल १०, जूणसी ११, उदैकरण १२, वीरसिंघ १३, वणवीर १४, चद्रसेन १५, प्रिथीराज १६, भारमल १७, भगवतसिंघ १८, मानसिंघ १९, जगतसिंघ २०, महासिंघ २१, जैसिंघ २२, रामसिंघ २३, किसनसिंघ २४, विसनसिंघ २५, सवाई जैसिंघ २६, माधोसिंघ २७, प्रतापसिंघ २८, जगतसिंघ २९, सवाई जैसिंघ ३० ।

१४०७ राजा उदैकरण कछवाहो आवेर-पत जिणरै तीन वेटा हुवा – वरसिंघ १, नरसिंघ २, बालो ३ वरसिंघ आवेररी गादी वैठो जिणरा राजावत नरसिंघरा नरूका बालारो मोकळ, मोकळरै सेखो सेखारा सेखावत ।

१४०८ कछवाहारी वसावळी–कुतल १, जीवणसी २, उधरण ३, चादणो ४, प्रिथिराज ५ राजा प्रिथीराजरा राजावत कहाणा

१४०९ राजा प्रिथीराजरै वेटा तेरह–भारमल १, रतनसी २, भीव ३, सागो ४, वळभद्र ५, सुरताण ६, परताप ७, जगमाल ८, रूपसी वैरागर ९, डूगरसी १० कल्याणमल ११, गोपाळ १२, चत्रभुज १३ ।

१४१० नाथो गोपाळरो जिणरा नाथावत कहीजै जगमालरो खगार जिणरा खगारोत कहावै ।

१४११. कछवाहा राजा प्रिथीराजरो भीव, भींवरो राजा आसकरण ।

१४१२. प्रिथीराजरो राजा भारमल संवत् १६३० सीकर मुवो, सती हुई ।

१४१३. राजा भारमलरा वेटा – भगवंतदास १, भगवानदास २, राजा जगनाथ ३, सिलहदी ४, सुदरदास ५, सादूळ ६ ।

१४१४. राजा भारमलरा वेटा – छत्रसिंघ १, हिंदूसिंघ २ ।

१४१५. सूरसिंघ १, माधोसिंघ २, प्रनापसिंघ ३, राजा मान ४, अै राजा भगवंतसिंघरा वेटा ।

१४१६. भारमलरो राजा भगवंतदास. भगवंतदासरो राजा मान. राजा मानरै वेटा– जगतसिंघ १, भावसिंघ २, सगतसिंघ ३, दुरजणसिंघ ४, सबळसिंह ५, कल्याणसिंघ ६, हिम्मतसिंघ ७, स्यामसिंघ ८ ।

१४१७. मानसिंघ भगवंतसिंघोत परमार पचायण करमचंदरो दोहितो ।

१४१८. कछवाहो राजा मान राव मालदेजीरो रायमल जिणरी वेटी सतभामावाई परणियो ।

१४१९. महाराजा रायसिंघजीरी वेटी अहजनकंवर जैपुररो राजा मानसिंघ जिणनूं परणायी ।

१४२०. कछवाहै राजा मान वांधूगढरा राजा रामसिंघ कनांसूं पेसकसी लीवी नही ।

१४२१. अटकरो किलो कछवाहै राजा मान करायो अकवररै नवाव ।

१४२२. कंवर जगतसिंघ मानसिंघोत कछवाहै खुरासाणियांरै तरवारांरै लोहरी मूठ दूर करायी, काठरी मूठ दिरायी ।

१४२३. मान राजा कछवाहो जिणरो वेटो जगतसिंहजी जैतारणरो धणी रतनसिंघ खीवा ऊदावतरो दोहितो कुंवर पदै देवलोक हुवो ।

१४२४. मानसिंघ भगवंतसिंघोत. महासिंघ जग(त)सिंघोत ।

१४२५. संवत १६७३ महासिंघजी देवलोक हुवा जद द्योसारो टीको जैसिंघजी पायो, छव वरसरै द्योसो पायो ।

१४२६. संवत १६७८ भावसिंघ मानसिंघोत राम कह्यो जद इग्यारै वरसरै वडै जैसिंघ आंवेर पायो ।

१४२७. संवत १६७८ राजा भावसिंघ राम कह्यो जद आंवेर जैसिंघ पायो ।

१४२८. राजा जैसिंघ महासिंघोत संवत १६६८ जनमियो आसाढ वद १ वार सुक्र संवत १६७३ राजा महासिंघ राम कह्यो जद द्योसारो टीको राजा जैसिंघ पायो, आंवेर राजा भावसिंघ मानसिंघोतरै हुवो ।

१४२९ सवत १६६८रा प्रथम आषाढ वद १रो जनम कछवाहा राजा वडा जैसिघरो।

१४३० मानसिघ भगवतसिघोत महासिघ जगतसिघोत मेडतिया मघोदासोत जैमलोतरो दोहितो जैसिघ महासिघोत सीसोदिया साहजी उदैसिहोतरो दोहितो जैसिघ विसनसिघोत खेरवे जोधो कासीदास जिणरो दोहितो।

१४३१ कछवाहे राजा वडे जैसिघजी दिलीमें जैसिघपुरो वसायो।

१४३२ आवेररो राजा जयसिघ महासिघोत राजा सूरजसिघजी उदैसिघोतरी वेटी मरगावतीवाई परणियो जोधपुरमें।

१४३३ वुरहानपुर हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरा हुवा वडा जैसिघजीरै मास दोय असमाध रही, पक्षाघात हुवो।

१४३४ सवत १७२४रा आसोज वद ५ वुधवार रात घडी ६ पाछली हुती जद सहर वुरहानपुरमें राजा जैसिघजी राम कह्यो पक्षाघात हुवो हो, दोय महीना खेद रही।

१४३५ सवत १७२४रा आसोज वद ५ वुधवार रात घडी ६ पाछली रही जद राजा कछवाहै वडे जैसिघ राम कह्यो वुरहानपुरमें।

१४३६ तपती नदीरै माथै मोहणी-सगमरै घाट दाग दिराणो।

१४३७ राजाजीनै दाग पडियो तपती नदी ऊपर मोहणी-सगम जठै।

१४३८ हाडा राव रतनरी हवेली कनै डेरो हुतो राणी अेक राठोड वीकावतजी सत कियो वडारण पातर खवास अै ११ वळी।

१४३९ राणी अेक राठोड वीकावत साथ वळी इग्यारै पातर खवास साथ वळी।

१४४० राजा जैसिघ सात हजारी जात सात हजारी अरदुअस्पा सह अस्पा मनसव हो।

१४४१ जैसिघजी देवलोक हुवा जद आपरै सात हजारी मनसव हो च्यार हजारी मनसव कुवर रामसिघरै हुतो दोय-हजारी मनसव कुवर कीरतसिघरै हुतो।

१४४२ कवर रामसिघ जैसिघोत मनसव च्यार-हजारी जात च्यार हजार असवार।

१४४३ कवर कीरतसिघ जैसिघोत मनसव दोय-हजारी जात अठारहसौ सवार।

१४४४ कुल मनसवरा दाम वीस करोड इकताळीस लाख ज्यारा रुपिया इकावन लाख अठाईस हजार।

१४४५ जैसिघ विसनसिघोत खेरवे जोधो कासीदास जिणरो दोहितो।

१४४६ सवत १७८८ सवाई जैसिघ जैपुर वसायो आवेर राज करता कछवाहानू हजार वर्ष हुआ जठा पछै जैपुर राजधानी ठहरायो।

१४४७. राजा सवाई जैसिंघजी वैरागणियानूं परणाय मथुरामें, वृदावनमें वैरागपुरो वसायो ।

१४४८. विवाह करम जान करमादी करतां देख हित राधा वर लेलियानूं व्रंदावन मांहेसू सवाई जैसिंघजी काढ दिया हा ।

१४४९. सवाई जैसिंघ हाडा महाराव भीमसिंघजीनू भीमड़ो कहतो ।

१४५०. पछै गोपाळसिंघ भदावररो जिणरो वेटो भदोरियो राजा जिण कनै अठारै लाख रुपया ले सतारै गयो ।

१४५१. पछै सवाई जैसिंघजीरा लिखणमूं वाजेराव उजीण आयो. उजीणरा सोवेदार नागर ब्राह्मण छवीला वहादुर, दया वहादुर ज्यां दोनांनू मार मालवा सतारा लारै घालियो ।

१४५२. दीपसिंघ कुंभाणी पुसकरजीमें महाराज जैसिंघजीरै हाथरो संकळपरो जल ले रतनवारो सासण नागल जवत हुवोड़ो वहाल करायो ।

१४५३. गगवाणै राजाधिराजरै नै सवाई जैसिंघरै राड़ हुई जद सेरसिंघजी कुसळ-सिंघजी राजा जैसिंघजीरै काम आया ।

१४५४. जैपुररो राजा माधोसिंघजी हाथरी दसही आंगळियांमें वीटियां राखता, आ राणाजीरी चाल ।

१४५५. जिलायरा राजावतजी राम-सरण हुवा. माधोसिंघजी काण करावण आया. राघवसिंघ सभामें नाला मारिया ।

१४५६. तुवरावाटीरो गांव मांवड़ो मडोली जठै जाटरै जंग हुवो कछवाहांसूं ।

१४५७. वुलारो धणी दलेलसिंघ रथसू उतरतो हो. गोळारी लाग रज-रज हो गयो ।

१४५८. वारै हजार घोडो जाटरै कनै हुतो कछवाहांसूं जंग हुवो जद ।

१४५९. संवत १८२४ जाटसूं कछवाहां राड़ कीवी ।

१४६०. मालपुरारो गाँव ईंदोळी झगड़ो हुवो. लखुआ आगै राजा प्रतापसिंह भागो जैपुररो धणी ।

१४६१. हकीम पैदरुसजीनूं आगरासू महाराज जैसिघजी आणिया जैपर. वां फिरंगीरो दारू काढियो ।

१४६२. जैपुररो राजा पाट वैसै जद मैणो तिलक करै.

१४६३. आंवेरमें मुदे मानका केकान केकानरा पोता पारीक पुरोहित कछवाहांरा गुरु है ।

१४६४ जैपुररो राजा सदा रामानुजरो तिलक करै गोविंद-देवजीरै मदिर जावै जद माधव सप्रदायरो तिलक करै गोकुळचद्रजी १, मदनमोहनजी २, गोकळनाथजी ३, आरै मदिर जावै जद वल्लभकुलरो तिलक करै सिव मकती, गणेसरै दरसण जावै जद छव तिलक करै ।

१४६५ वेस्यारी, भाडारी चौथाई जैपुर राज्यमें लिरीजै आ रीत जैसिघजीमू बधी उण चौथाईरो पईसो वार-तिहुवार वेस्यावानू दिरीजतो राजरै हराम हुतो ।

१४६६ आवेर थाप-उथापरा धणी खगारोत नाथावत हैं सेखावत नरूका नगारारा चाकर है ।

१४६७ आवेर सात उमराव जिके साता किलेदार हैं किलेदारी उतरै नही ।

१४६८ ढूढाडमें वारहे कोटडिया है जिके लिखीजै है नाथावत १, खगारोत २, सुरताणोत ३, कल्याणोत ४, कुभाणी ५, पूरणमलोत ६, बळभद्रोत ७, सिव ब्रह्म-पोता ८, पचारसोत ९, वाकावत १०, मारमलरा ११ ।

१४६९ वाडी नदीरो उगवणो तट तो राजावतारो, आथमणो मेखावतरारो ।

१४७० जैपुररा सारा उमराव जैपुर राजारी खिदमतमें रहै, उणियारै राव राजा रहै ।

१४७१ नगरसू उठ रावत ईसर गोडोन वसायो ।

१४७२ राजावत सग्रामसिघरै पाच वेटा हुवा – गजसिंह १, विजैसिंघ २, अणदसिंघ ३, रूपसिंघ ४, हिम्मतसिंघ ५ ।

१४७३ कछवाहो राजावत फतैसिंघ मूळी कहीजतो मूल नक्षत्रमें जनमियो हो तिणसू वरवाडा वगैरै ठिकाणा राजावत फतैसिंघोत है ।

१४७४ वरवाडै राजावत मोहनसिंघोत विक्रमादितजी हुलकर मल्हारावसू आछो लडियो जद महाराज माधोसिंघजी राव पदवी दीवी ।

१४७५ विक्रमादीतरो जवाहिरसिंघ, जवाहरसिंघरो रामसिंघ, रामसिंघरो सलामत-सिंघ हमें वरवाडै भलो दातार है ।

१४७६ धुलारा राजावत दुर्जणसिघोत ।

१४७७ नराणारो धणी खगारोत भोजराज पातसाही चाकर दिखणमें गढ नळदुर्ग जठै काम आयो ।

१४७८ गीजगढ ठिकणो ढूढाडम चापा सामसिघ देवीसिंघोतरो ।

१४७९ खाचरियावासरा सिरदाररै पहला रामगढ हो, खाचरियावास ढूढाडरो है ।

१४८०. मनोरपुररो धणी सेखावत लूणकरणजी ज्यांरो छोटो भाई रायसलजीनूं अेक गाँव दियो. रायसलजी पातसाहरी चाकरी लागा. दिलीरै पातसाह बारह-हजारी मनसब दियो रायसलजीनै ।

१४८१. सेखावत रायसलजीरै बारा बेटा जिणमे पांच निरवंस गया, सातांरो वंस रह्यो ।

१४८२. गिरधरजी १, भोजराजजी २, लाडखानजी ३, ताजखानजी ४, हमीरमलजी ५, फरसरामजी ६, हररामजी ७ – आं सातांरो वंस रहयो ।

१४८३. निरमलजीरा सेखावत रावजीका वाजै. निरमलजी रावजी कहाणा. सीकर रावजीरा है ।

१४८४. लाडखानजी, ताजखानजी अै पातसाहरा दिया नाम है ।

१४८५. खंडेलारो राव सेखावत केहरसिंघजी नवाव अवदुल्लाखांसूं जंग कर काम आयो–जद साथ नव चारण काम आया ज्यांमे दोय वारट, दोय नगरीरा काम आया ।

१४८६. खंडेलै राजा केहरसिंघ अवदुल्लाखां नवावसूं जंग कर काम आयो. इण साथ नव चारण काम आया.

१४८७. सीकररा धणीरी पीढियां – रायमल्ल १, निरमलराव २, गंगाराम ३, सामराम ४, जसवतसिंघ ५, दोलतसिंघ ६, सिवसिंघ ७, चांदसिंघ ८, देवीसिंह ९, लिछमणसिंघ १० ।

१४८८. सेखावत सिवसिंघ सीकररो धणी जिण नवाव कनांसूं फतैपुर लियो वीकारो भाणेज सेखावत सादोजी जिणनूं मासीरै धणी जूंजणूंरै धणी दिवाणजी पुत्र कर राखियो. दिवाणजीरै पुत्र नही जिणसूं जूजणूं सादाजी अपणायी ।

१४८९. सेखावत सिवसिंघ फतैपुर लियो जिण ठाय फतैपुररो नवाब कयामखानी जानी साहव तीन महीना सीकर लड़ियो, सीकर छूटी नही.

१४९०. सेखावत सादा महाराज वखतसिंघजीरी तावीतमे रामसिंघजीसूं झगड़ो हुवो जद गांव रियां डेरा सेखावातांनू खवर आयी– क्यामखानी गुड पाखर फतैपुर आया, मदन करण वेगा आवज्यो, हाल तो म्हे गंतिया छै. जद कुंवर चांदसिंघ सिवसिंघोत नै किसनसिंघ सादावत दोनूं पांच हजार लोक ले चढिया. क्यामखानी भागा सेखावतां वटका कर वगाय दिया ।

१४९१. तीस हजार सिपाही ले पठाण भोडै चढ़ मुरतजाखां दिलीसूं खिलत ले ढूंढाड़ माथै आयो. सीकररै धणी सेखावत देवीसिंघ भायानूं साथ ले खाटू

कजियो कियो रिख-पूनमरै दिन तीन हजार दादूपथी काम आया, वलारारो धणी खेतावत काम आयो देवीसिंहरा भुजरै तीर लागो मुरतजाखा भागो पठाण घणा मारणा फौज लूटी गयी फतै सेखावत कीवी ।

१४९२ इण चाकरीसू पचास रुपिया देवीसिंघरी थाळीरा रोजीना जैपुरसू कर दीना ।

१४९३ सीकर सेखावत सिवसिंघरो वडो वेटो समरथसिंघनै अेक वाई जोधारी भाणेज वाईनू साहपुरै उमेदसिंघजीनू परणायी

१४९४ कीरतसिंघ १, उमेदसिंघ २, पालीरा चापावतारा भाणेज सेखावत सिवसिंघरा कवर वडा जोरवान ज्यानू सिवसिंघ मराया समरथसिंघरै हाथ ।

नरूका

१४९५ पाघरगा पातसाह–ओ नरूकारो विरद ।

१४९६ राजगढ १, प्रतापगढ २, रामगढ ३, लिछमणगढ ४, गोवदगढ ५, किसनगढ ६, वळदेवगढ ७, पिरोजपुरो ८, गाजीरो थाणो ९, माला खेडो १०, अलवर ११– इत्यादिक वावन गढ माचेडीरा रावराजारै है ।

१४९७ माचेडीरो रावराजा प्रतापसिंघ जैतावतरो भाणेज वारणा वालारो ।

१४९८ रावराजा वखतावरसिंघ माचेडीरो पहला कुचामण परणीज पछै त्रिसिंगिया वडगूजरारै पर्णियो ।

१४९९ कछी सिंधरी गाया, कछरी साढा, पटियाळ ह्यरफरी भैसिया, घोडिया काठियावाडरी, हजारा रावराजा वखतावरसिंघ मगायी ।

१५०० पथ हर देव ओझो १, माणक मैथीलनो २, मवळनाथ जोगी ३, पालावत वारट उमेदजी ४–आ च्यारानू रावराजा वखतावरसिंघ मानिया ।

१५०१ समरथसिंघ मर गयो सीकररो धणी नाहरसिंघ समरथसिंघोत जैपुर हुतो जद चादसिंघ वुधसिंघ वैरीसू आया पठाण मसतेखानू मार मैसरी चितलागियो जात नाव दीपचद नाहरसिंघरो कामेती जिणनू मार सीकर लीवी ।

१५०२ मेडतियो सेरसिंघ लुळवारो धणी जिणरी वेटी साहिवकवर सिवसिंघजी परणियो चादसिंघ, वुधसिंघ दोय वेटा हुवा ।

१५०३ भडेचसू कजियो हुवो जद परसरामजीको उमेदसिंघ और चादावत भाई जालमसिंघ दोनू आछा हुवा सीकर देवीसिंघजी आनू वचाया ।

१५०४. जूंजणूंरा भोजराजोत ज्यां हेटै नव सौ गांव है ।

१५०५. खलारै सलार ठिकाणो. गुवाररै जैसिंघ, जैसिंघरो वाको, वाकारो वीरम, वीरमरो रतनो, रतनारो भुजवळ, भुजवळरो साकर. ठिकाणो मांडो ।

१५०६. साकररो साडल, साडलरो सांवळ, सांवळरो देईदास. पटै मोडी ।

१५०७. सेखावाटीमे करनोतांनूं नीवावत कहै ।

१५०८. झटकैरो मारियोड़ो सांकररो जानवर सेखावत न खावै. सूर न खावै. नगारारै झालरी नीळी राखै. ऊंटांरी जुन नीळी राखै. नीला निसाण राखै. सेख वुरहानरी दवासूं मोकळजीरै सेखो हुवो जिणसूं।

१५०९. सौ गांव कासलीरा. तीन सौ गांव फतैपुररा, दोय सौ गांव खंडेलारा, छव सौ गांव सीकर हेटै छै।

टोडा

१५१०. रामसिंघ तोडारो राजा भीव अमरसिंघोतरो, राठोड़ जेतारणिया नराणदास पता डूंगरसिंघोतरो दोहितो –

तोडा-वाळा रसिया ! म्हांरै अमल कियां घर आव ।

पड़िहार

१५११. पड़िहारांरै गोत्रजण देवी ।

१५१२. पडियार नाहड़राय मंडोवर गढ करायो, पुसकरजी वंधायो ।

१५१३. पड़ियारां कनैसूं रायपाळ धूहड़ोत मंडोवर लियो, छूट गयो ।

१५१४. अेह न मदची रूपड़ा,
वुध घर पडियार।

१५१५. पड़ियार रूपड़ियै राणै अग्यारमी वेटी वुधा भाटीनूं परणायी ।

१५१६. पड़ियार राणो रूपड़ियो जिणरै वारै वेटी हुई गयाजीमे इण कही – वारै ही कन्या वारै रावांनूं परणावसूं. इग्यारै कन्या तो इग्यारै रावानूं परणायी. वारमी कन्यानूं राव न मिळियो जद भाटी राव केल्हणनूं वारमी वेटी परणायी उण दिनसूं पड़िहारां भाटियांरै सनमंध हुवो ।

१५१७. पड़ियार वेळो वीकाजी साथै गयो वीकानेर. उठे वेळासर गांव वसायो ।

१५१८. पड़ियार अेक भाई तवेलारो, दूजो भाई तोपांरो दरोगो जोधपुर।

१५१९. पडियार नाहड़राय पूरवसूं आय नजणरो वर पाय मारानूं मारि मारवाड़ लिवी ।

ईंदा पड़िहार

१५२० ईंदारी वसावळी—नाहडराय १, रूपदे २, मालदे ३, दूलहराव ४, जीवराज ५, भीमो ६, काकू ७, सूर ८, ईंदो ९—ईंदादा ईंदा कहाणा ।

१५२१ ईंदो सूररो बेटो नाहडरावजी उरै आठ पीढिया हुवो जिणरै वसरा ईंदा कहावै ।

१५२२ सूजे पडिहार ईंदारा बेटा गोपाळनै मारियो गोपाळसर गाव जठै—गोपाळ ईंदारो देवळ है जाझैरीरो जुहार कहावै ।

१५२३ जाझैरी झगडो हुवो, चित्तो वाग ग्रहेह ।
सूजो मागै झोडकी, भट गोपाळ न देह ॥

१५२४ ईंदो १, वीजळ २, महासिंघ ३, बूटो ४, राणो ५, भीमाळियो ६, टोहो ७ तुरका कनैसू मडोवर रोहै ले दीवो चूडाजीनू ।

१५२५ गोगूदे उगूणावत जैतमाल सलखावतरो दोहितो नै रावजी चूडाजीरो सुसरो ।

१५२६ भीमलियारै बेटै ईंदै टोहै रावजी चूडाजीनू मडोवर ले दियो ।

१५२७ टोहो रावत कहाणो टोहारो लाखणसी राणो कहाणो ।

१५२८ राणो १, बूटो २, भूमळियो ३, रावत ४, सगरामसी ५, अमणो ६ जिण उगणरै सगराममीहोननू गवळ माल टीको दियो—लाखणसी टोहावतरै आठ ही बेटा कपूत हुआ जिणसू ।

१५२९ राणा बूटावतरो बेटो हरभू, हरभूरो लाखो वीका जोधावत साथै ईंदावाटीसू वीकानेर गयो लाखो १ गजधर २, रूपसी ३, गोगादे ४, दूदो ५—वीकानेर रिया रामसिंघरै जोधपुर हुतो जद ईंदो दूदो गोगादेओत सीरदार हुतो ।

१५३० दूदारै बेटो हरदास वीकानेरसू छाड जोधपुर चाकर रह्यो पछै नवाव खानखानै माग लियो वडो डील, वडो धरमातमा, वडो पाटाबध ठाकर हुतो सवत १६७७ वुरहानपुर राम कह्यो ।

१५३१ कानो राणो उदैसिंघरो परमार करमचदरो भाणेज ।

१५३२ ईंदा जैतसिघरै बेटै विजैसिंघ असू सोढानू मारियो चारण वणि पछै वडगूरा ऊहडारै परणियो हुतो सामरै गयो ऊहडा मार नासियो जदसू ईंदारै ऊहडारै वैर छै ।

१५३३ धनो हरराजोत गायजादारै चाकर रह्यो।

वालणोत

१५६६. मांडळगढ आगै वालणोतां सोळंकियांरै हुतो ।

वीरपुरा

१५६७. सोळंकी अणहलपुर पाटणसूं लूणावाड़ा कनै वीरपुर है जठै वसिया जिणसूं वीरपुरा कहाणा ।

१५६८. लवणेस्वररी क्रपासू पांच सै गांवामे अमल कियो. पावागढरा. सुतरामपुररा, रांधणपुररा गांव वीरपुरां दबाया !

१५६९. वीरपुरांरी वेटी अवस्य पतिसहगवन करै, वर हैं ।

नाथावत

१५७०. हाडोतीमे नाथावतां सोळंकियांरो ठावो ठिकाणो पतारां ।

१५७१. हाडोतीमे नाथावतां सोळंकियांरो ठावो ठिकाणो पतारां है. राव राजा वडो मुलायजो राखै है ।

१५७२. तोडै मिहलूं वास कियो. मिहलू १, दुरजणसाल २, हरराज ३, सुरताण ४, ऊदो ५, वैरो ६, ईसरदास ७, दळपतिराव ८, आणंदराव ९, राव साम १०, वतन तोडड़ीजी ।

१५७३. वहूजी गोड़जी कंवरजी श्रीपिरथीसिंघजीरो राजलोक ज्यांरो नानो राव स्याम ।

१५७४. राव स्यामरो राव महासिंघ जिणरा वेटांरी विगत – जसवंत १, भींव २, अरजण ३, हरराज ४ ।

१५७५. सोळकियांरी ख्यात लिखंते. सगरो १, सगरारो देवो २, देवारो त्रिभुवण ३, त्रिभुवणरो भोजो ४, भोजारो पतो ५, पतारो रायमल ६, रायमलरो सावंतसी ७, सावतसीरो देवराज ८, देवराजरो वीरमदे ९, वीरमदेरो जसवंत १० ।

१५७६. जसवंत वीरमदेओतरै वेटा च्यार – दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४ ।

१५७७. सोळंखी रायमल पतारो पाटणथी राणा रायमल कनै आयो मेवाड़ मांहे जद पहलां भोज गांव दियो थो पछै मादड़े सोथा आल्हण अमरानूं मार देसूरी लिवी ।

१५७८. सोळंकी सावंतसी रायमलोतरी वेटी मोटो राजा उदैसिंघजी परणिया. सावंतसीरो दोहितो कुंवर नरहरदास ।

१५७९ सोळकी वीरमदे देवराजोत राणाजीरो चाकर पटै देसूरी हुती अेक वार रावळै चाकर रहतो जद पटै धणालो दियो हो पछै राणोजी मनाय लियो ।

१५८० वीरमदे सोळकीरै बेटा आठ हुवा – जसवत १, आसकरण २, सादूल ३, अखैराज ४, किसनसिंघ ५, भावसिंघ ६, हिंगोळदास ७, वीजो ८ ।

१५८१ जसवत वीरमदेवोतरै पटै देसूरी हुती सवत १७०२ विस हुवै मुवो ।

१५८२ जसवत वीरमदेवोतरै बेटा च्यार – दळपत १, दयालदास २, अचळदास ३, चतरभुज ४ ।

१५८३ सोळकी सादूल वीरमदेवोतनू मेरा मारियो ।

१५८४ सोळकी किसनसिंघ वीरमदेवोत रावळै चाकर रहतो जद पटै मोसरो दियो हो ।

१५८५ किसनसिंघरै बेटा ७ – राजसी १, उरजण २, वळू ३, पीथो ४, राघोदास ५, सूजो ६, सबळसिंघ ७ ।

१५८६ राघोदास काम आयो सबळसिंघ काम आयो ।

१५८७ सोळकी गोपाळदास देवराजोतरै कचरो १, कचरारो रतनो २ जसवतरै वास ।

१५८८ सोळकी सावळदासोत देवराजोतरै बेटा दोय – धरमराज १, पचाइण २, पचाइणरै मोहणदास ।

१५८९ सोळकी खेतसी सावतसिंघोतरै राजा सूरसिंघजी परणिया कवर गजसिंघजी भाटी गोइददासजी फौज ले गया जद खेतसी सावतसिंघोत राणा अमरसिंघरै काम आयो ।

१५९० सोळकी सागो खेतसीरो नै सोळकी भोपत खेतसीरो राठोड रामसिंघ करमसेणोत वालीसा माथै फौज ले गयो जद भोपत राजा जगतसिंघरै काम आयो ।

१५९१ सोळकी पूरणमल खेतसिंघोत रावळै रहतो पछै मिरियारी दिवी हुती ।

१५९२ सोळकी वैरसी खेतसिंघोत रावळै चाकर ।

१५९३ पूरणमलरै बेटा – हरीदास १, केसोदास २ ।

१५९४ सोळकी वैरसीरै बेटा – सूरजमल १, उरजन २ ।

१५९५ सोळकी कचरो खेतसीरो प्रथीराज कचरारो, भलो रजपूत, राणाजीरै चाकर ।

१५९६. सोळंकी खान सांवतसिघोत सो खंभणोर राणा प्रतापरै नै पातसाह अकवररै वेढ हुई जद राणाजीरै काम आयो।

१५९७. हमीर सांवतसिंघोत सोमेसररो धणी ।

१५९८. हमीररो राणो. कांधल राणारो, भोपत राणारो, मोहणदास राणारो, सहसमल राणारो, महेमदास राणारो, लाखो राणारो, कान्ह राणारो।

१५९९. दुरजणसाल हमीररो. दुरजणसालरा वेटा – अमरो १, सुँदरदास २, भाण ३, रतनो ४।

१६००. सोळंकी सांकर रायमलोत. जैसिंघजी सांकररो. नारायणदास जैसिंघरो।

१६०१. नारायणदासरा वेटांरी विगत – जगमाल १ मैरां मारियो, जोधो २, भावसिंघ ३, कान्ह ४ पटै जवड़ियां।

पंवार

१६०२. परमारांरै यजुरवेद माध्यंदिनी साखा, वसिस्ट गोत्र, धारायसचियाय दीप देवी, मालाहेत पितर, पींपळरी पूजा।

१६०३. वाकळ १, सचियाय २, सालण ३, कल्याण कुंवर ४, कंपादे ५, जोग ६– औ छव देवी परमारांरा वंसमें हुई।

१६०४. परमारांरी पैंतीस साख लिखते – परमार १, पाणीस २, वलसी लोदा ३, घरिया ४, सुर ५, गोहलड़ा ६, सोढा ७, वहिया ८, जेपाळ ९, भाथी १०, ढल ११, कलोळिया १२, सांखला १३, वाला १४, फागुआ १५, कछोटिया १६, टेवल १७, कूकणा १८, भाभा १९, छाहड़ २०, काला २१, जागार २२, पीथळिया २३, भायल २४, मोटसी २५, ऊमर २६, कालमुहा २७, दूठा २८, सूवड़ २९, धध ३०, खेर ३१, डोड ३२, पेल ३३, गूगा ३४, फावा ३५ ।

१६०५. परमार राजा श्रीहरस जिणरो वडो वेटो मुंज छोटो वेटो सिधुराजरो भोज।

१६०६. करनाटकरो राजा तेलपदेव जिणा म्रणालवती बहनरा कहासु घर घर भीख मगाय मुजनू सूली दियो।

१६०७ परमार राजा मुंज मत्रियां वरजतां गोदावरी उलांघि करणाटकरा राजा तेलपदेव माथे गयो जंगमे तेलपदेव इणनु पकड़ लियो. भाखसीमे दियो. किताईक वरसां वहन म्रणालवतीरा कह्यासुं आपरा सहरमे घर-घर भीख मगाय मुंजनु सूळी दियो।

१६०८. रिख कपाट जड़ि गुफामे वैठो हुतो. राजा जाय कह्यो – किवाड़ खोलो. जद रिखि कह्यो – कुण है ? राजा कह्यो – हूं राजा छू. जद रिखि कह्यो –

राजा तो इन्द्र है जद भोज कह्यो – किंवाड खोलो, हू दाता छू जद रिखि कह्यो – दाता तो करण हुवो भोज कह्यो – किंवाड खोलो, हू क्षत्रिय छू जद रिखि कह्यो – क्षत्रिय तो अर्जुन हुवो जद भोज कह्यो – खोलो किंवाड रिख कह्यो – कुण छै ? भोज कह्यो मिनख छू जद रिखि कह्यो – मिनख तो धारापति भोज हैं तो हाथ लागा विना खोलिया किंवाड खुल जासी यू हीज हुवो ।

१६०९ सालवीनू धारारै कोटवाल कहायो – अमुको कवि भोजराज पास आयो सो पावसमें थारै घरे उण कविरो डेरो हुसी तू कवि नही जिणसू थारो घर कविनू दिरीजै सालवी राजा कनै जाय काव्य सुणाया –

कवयामि वयामि यामि च ।

१६१० आबूरै धणी पाल्हण परमार सरब धातू माहे भरतरो भरियो थीतकररो वीख हुतो सू मलाय अचळेसर हैं नादियो भरायो जिण विख घालणरा पापसू पाल्हणरै कोढ उघडियो जीददेवरो नावो लिख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो

१६११ राव जगमलरो बेटो मेहाजळ जिणरा बेटारी विगत– रायमल १, पचायण २, जैतमाल ३, कान्ह ४, करण ५, परवतसिंघ ६, परवतसिंघरो सूजो ७, सूजारो लूणो ८ धीगाणै रहे ।

१६१२ रायमलरो बेटो केसौदास राणाजीरै चाकर ।

१६१३ पचायणरो लिखमण जाळोर रहै ।

१६१४ कन्हरै केसरीसिंघ ।

१६१५ परमार मालदेरो सादूळ जिण सादूलरै बेटो रायसलरा बेटारी विगत – जुझारसिंघ १, गजसिंघ २, अजबसिंघ ३, वखतसिंघ ४, आणदसिंघ ५, केसरीसिंघ ६ ।

१६१६ परमार आणदसिंघनू राठोड गिरधरसिंघ करमसिंघोत मारियो राणाजीरी धरतीमें ।

१६१७ परमार जगमाल सादूळरो ।

१६१८ परमार कलो मालदेओत जिणरा बेटारी विगत – रामचंद १, मानीदास २, गोरखदास ३, किसनदास ४, भगवानदास ५, वीठलदास ६, रामदास ७ ।

१६१९ मालदेरै वडो बेटो कलो ।

१६२०. भानीदास कलावतरा वेटांरी विगत – नारायणदास १, नरवद २, अखैसिंघ ३, मेवाड़ मांहे छै, सूरसिंघ घोड़ांरो चाकर देईदास जगरूप मेवाड़ मांहे छै।

१६२१. परमार आसकरण मालदेरो अऊत गयो ।

१६२२. परमार सुजाणसिंघ मालदेरो. काम आयो कछवाहा मानसूं वेढ हुई जठै।

१६२३. परमार रावत जैसो पंचायणरो जिणरै ठाकुराई जैतरै हुती. पुत्र किणरै ई हुवो नही ।

१६२४. परमार रावत उदैसिंघ पचायणोत जैसा पछै पाट पायो संवत १६५२ रा सावण सुद १ ।

१६२५. रणथंभोर चहुवाण हमीरदेव साको कियो।

१६२६. परमारांरी ख्यात – रावत सांगो १, उणरो रावत महपो २, उणरो रावत राघो ३, उणरो रावत करमचंद ४, उणरो पचायण ५, राजा कछवाहा मानरो नानो ।

१६२७. संवत १५८९ विक्रमादीतजीसूं चितोड़ पळटियो जद जैठ सुदी २ पचायण काम आयो।

१६२८. पचायणरो रावत मालदे पातसाहसूं छाड राणा उदैसिघरै वसियो, जाजपुर राणाजी पटै दियो।

१६२९. सादूळ माळदेरो. सांगो ही माळदेरो जिणरी वेटी सूरजसिंघजी अराई जाय परणिया. इणरी दोहिती आसकंवरवाई।

१६३०. परमार सादूळ मालदेरो जिण श्रीनगर वसायो. पातसाह जहांगीर अजमेररो सोवो इणनूं दियो. सीसोदियो भीम अमरसिंघोतरा कहणासूं साहजादा खुरमरी आण मे वापराअजमेरय खुरम सामल हुवो।

१६३१. सादूळरै राथसल. रायसलरै जुझारसिह श्रीनगररो धणी १, रायसल २ ।

१६३२. श्रीनगररो राजा परवतराज कहावै. आगै लाख पायदळरी ठकुराई हुती– पहाड़में. राजा उमराव सरव झपानमे वैसै. वांसरी करड़ी झपान कहावै. च्यार जणा उपाड़ै।

१६३३. परमार राजा कलसाह धारा नगरीसू उठ कमाऊंरो राजा लखमीचंद जिणरी चाकरीमे रह्यो. लिखमीचंद लोहवोगढ इणनूं पटै दियो. पछै कलसाहवे फरमावरदार होय कमाऊरी आधी धरती दवायी, लोहयोगढ अपणायो. गढ़वार कहीजै ।

१६३४ कलसाहरा वसमें महीपतसाह हुवो जिणरी राणी चहुवाण करणावती जिण पातसाहारा उमरावा नीजावतखा पहाडा माथै आयो, तुरकारा नाक काटिया जिणसू नकटी राणी कहाणी करणावती महीपतसाह मर गयो हो, बेटो छोटो हो, जद करणावती फतैसिंघ ।

१६३५ कलसाहसू चोथी पीढी सहजसाह हुवो जिण श्रीनगर वसायो।

१६३६ कमाऊरो राजा गुसाई कहावै।

१६३७ परमार राजा दूल्हराव उजीणसू उठ भोजपुर वसियो भोजपुर पटणा उरै कोस पचीस।

साखला

१६३८ परमार बाहडरावरै घरवासै अपछरा हुती जिणसू बेटा दोय इणरै हुवा सो दोनै बाथवा सख वजायो जिणासू बाथरै वसरा साखला कहाणा।

१६३९ परमार बाहडदेरा बेटा दोय–अेक सोढो, दूजो साखलो बेटी मायदे सगत हुई।

१६४० तीजी बेटी देवी कल्याणकुवर अपछरासू हुई।

१६४१ रासीसर साखलो रीमसी रायमलरो बेटो रहै दहिया जागळू राज धरै दहियारो ब्रामण गूजरगोड केसो है जिण दहियानै कहियो–थे कहो तो हू जागळू अमक ठियाणै तळाई खिणाऊ दहिया कह्यो–अमको ठियाणो तो घोडा दौडावारो मराडो है, अठै तळाई मत खिणाव जद रीमसी साखलासू केसो मिलियो रीमसी कनैसू दहिया मराय जागळू रीमसीरो अमल करायो पछै केसो केसोनळाई जागळू खिणायी रायमलरो रीमसी चरूसू गाळ गाळ जिण पीठूनू दोयड पमार दिया, पोळपात थापियो इणरी बेटी ऊमा गढ गागुरण खीची अचळदासनू परणायी।

१६४२ रीमसीरो धनरसी, धनरसीरो जैसो, जैसारो मूजो, मूजारो ऊदो, ऊदासू साखला धनळा पडिया।

सोढा

१६४३ परमार धरणीवराहरो बेटो आसराव जिणरै वसरा सोढा पारकरा दूजो बेटो धरणीवराहरो दूजणराव जिणरै वसरा सोढा धाटेचा।

१६४४ पारकरा सोढा ज्यारै प्रोळपात मिश्रू।

१६४५ गुथेसरमें पुरकारै गाव ७०० रै धणी परमार राणो पदवी राणा रतनसिघ मारिडरै रजपुत उदैसिघ मारियो रतनसिघरा वंरस परमार रतनसिघ राणो कियो।

१६४६. पारकर राणो चंदण गोईदरावरो वाघेलांरो भाणेज ।

१६४७. दूहो –

पड़े छवाहड़ पांच सौ,
सोढा वीसा सात ।
अेकण तीतर वासतै,
इण राखी अखियात ॥

१६४८. छवाहड़ांनूं मार पारकरा सोढा मूळी . . . लीधी ।

१६४९. मूळीरै धणी रतन सोढै उवां साथ विया विचै परवत मीसणनै दीनो, पचास लाख नगद, पचास लाख भरणो ।

१६५०. ऊमरकोटरा सोढा पदवी राणा ज्यांरी परियावळी - राणो गांगो चांपारो, पातो गांगारो, चंद्रसेण पातारो, महाराजा सूरजसिघजी राणा चंद्रसेणरै परणिया हुता, भोजराज चंद्रसेणरो, ईसरदास भोजराजरो संवत १७१० रा भादवामें भाटी रावळ सबळसिघ ईसरदासने ऊमरकोट मांहेसूं काढियो. सोढा जैसिघदेनै ऊमरकोट राणो कियो ।

१६५१. गांगो १, मानसिघ २, जोधो ३, जैसिघदे ४, राणा गांगारो पड़पोतो जैसिघदै ।

१६५२. सोढो रतनसी राणा गांगारो जिणरी बेटी भाटी रावळ मनोहरदास परणियो ।

१६५३. सोढो करण राणा चांपारो तिणरो खीवो, खीवारो भाणो, भाणारो मनोहर-दास – पातसाही चाकर, ऊमरकोट परसोरण जठै रहै ।

१६५४. गोडै चांपारै गळै सोढा तणी सरम ।

१६५५. ऊमरकोट सोढ़ा सुरताण ज्यांरो ठिकाणो छाछरो १, फागलियो २ ।

१६५६. सोढा भोजराज ज्यांरा ठिकाणा तीन – छोळ १, खुहडा २, ठिगारी ३– अै ।

१६५७. सोढा गांगदास ज्यांरा ठिकाणा च्यार – राडरातो कोटू खीपरो मुथूण २, अवरसिया ३ ।

१६५८. सोढांरा ठिकाणा पाच – सुरताण उबुल वार सोढा राम ज्यांरा छै ।

१६५९. अेक दिन घोड़ा सातवीस ऊमरकोट राणै खीमरा चोपड़ा मइयानूं दिया विणसूं रीजी ।

१६६०. वीरवावरा सोढांरी पीढी – कांधल १, कांधलरो राम २, रामरो मनहर ३, मनहररो नोतो ४, नोतारो संतो ५, संतारो वीजो ६, वीजारो मोडो ७, मोडारो पजो ८ – ओ हमै वीरवावरो सिरदार है ।

१६६१ मनहररो पाचो, पाचारो अजो, अजारो जेहो जिण सताजी कनासू गोडीजी लिया, विरावाव लिवी ।

१६६२ पछै मोडाजी सताजीरै पोतै जेहाजीनू जेहाजीरा वेटा दुरगजी हाथीजीनू मारियो वीरावाव गोडिया रस माथनू लिया जगतसिंघ चहुवाणनू मदत आने ।

१६६३ पछै सोढो तेजमालजी हारो भतीज सहेत यह राणै सोढा वाकीजीरै सरणै गयो वीरवावसू निसरनै ।

१६६४ गोडीजी इष्ट सोढारै जिणसू वीरवाव कोटमे मद-मास वापरै नही जेहा सोढारो वेटो हाथी गुडे सूरजमल राणारी बेटी परणियो हो अेक दिन सूरजमलरी वेटी वोली मोनू म्हारै वाप वाणियानू परणायी उण दिनसू हाथी मद-मास छानै आपरै महलमे वपरायो जेहाजी माथै गोडीजी कोपिया नै मोडजी खानपुर हुता उठैसू पत्र दियो पछै जेहाजीनू मार मोडजी वीरवाव लियो ।

भायला पंवार

१६६५ भायल पदमसीरो सजन वडो रजपूत हुवो सीधल चापारी वहू देवडी इणरा घर माहे पैठी पछै किताहीक वरसा माहोमाह लड चापारे हाथ सजन रह्यो, सजनरै हाथ चापो रह्यो देवडी सती हुई हाथ वाढ नै चापारै धडमें नाखियो नै वळी सजनरै साथै ।

१६६६ सिवाणै सजनरा गिर छै सजनरै रावळ, चहुवाण सिवाणारो राव सातल जिणरो दोहितो इण अलाउद्दीनसू मित्र सिवाणो मिळायो पातसाह सिवाणो इणनू दियो पछै रावळनू पातसाह मरायो ।

चौहाण

१६६७ चहुवाणारी चोईस साख लिखते – हाडो १, खीची २, सोनगरो ३, वाली ४, सोभादर ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवाण ९, वाकुर १०, चील ११, येथा १२, दूदळोत १३, सेपटा १४, गरावा १५, पवइया १६, पावचो १७, सतवाळ १८, चाभुलेया १९, सेवर २०, चाहिल २१, मोहिल २२, भडारी २३ वाणियामें, चीतामेर २४ राठोडारा भाट रामचद कनै लिसी ।

१६६८ सोनगरा माहेसू देवडा निसरिया देवडा माहेसू वोडा निसरिया घालोत २, चीवा ३, अवीह ४–अै खापा निसरी ।

१६६९. चहुवाणांरै कुळदेवी अवाय है, माणकदे चहुवाणनूं साम्र भरी. तूठी लाखणसीनूं. आसापूरी तूठी जदसूं लाखणसीरा आसापूरांनूं पूजै है।

१६७०. संवत १६०८ सांभर चहुवाण माणक हुवो।

१६७१. संवत ८२२ वीसळदे चहुवाण अजमेर पाट वैठो।

१६७२. वीरपाळ साहरी वेटी गौरज्या विधवा वरस तेरहरी पुसकरजी ऊपर तप करती. नवे वरस च्यार हुवा जद जवरीसुं वीसळदे इणसूं रत कियो. गोरज्या वाणियाणीरै पुत्र वीसळदेसूं हुवो. नाव आनो. गोरज्यारा सरापसूं वीसळदे राकस हुवो।

१६७३. प्रथीराजरा सामंत ज्यांमे दोय सावंत खीची – पीळपीजर १, प्रसंगराव २।

१६७४. हम्मीरदेव रणथंभोररा किलामे लड़ै जद हमीरदेवरा उमराव रणमल १, प्रतापसी २, पातल ३, चाहड़दे ४, इत्यादिक अलाउद्दीनसूं मिल गढसूं निसर अलाउद्दीन कनै आया. हमीरदेव काम आया. पछै अलाउद्दीन आनूं मराय नाखिया।

१६७५. चोहाण गोगाजीरी मा वाछगदे, पिता जीवराज, घोड़ो नीलो, हरद देवरो।

१६७६. खीचियांरै वारठ नाथू, मोठियो ढोली, प्रोहित काथड़ियो, भाट तिलवाडियो, आसापूरा देवी।

१६७७. राघोगढ १, बजरंगगढ २, खिलचीपुरो ३ – अै खीचियांरा ठिकाणा।

१६७८. खिलचीपुररो खीची दिवाण कहीजतो।
राघोगढरो खीची राजा कहीजतो।

१६७९. खीचियां ... पको कोट करायो हो, पछै उवा पथररो पको कोट करायो हो. पाछै उवा पथररो पको कोट फळोधी हमीर नरावत करायो।

१६८०. खीची थारू जायलसूमे तीन कोट कराया. खीची गोपाळदास।

१६८१. मोटा राजारी वेटी जैतसिघरी वहन परणियो।

१६८२. खीची सारंगदेरो जींदराव वारूरां वुधांरो भाणेज।

१६८३. जायल खीची गोरधन वायांरो व्याव कियो जद चारणांनूं कह्यो – कृपा कर गीत कहो ज्यांमे जायल ठिकाणो वरस गुणचाळीसौ डायजै हाथी दियो इतो वरणन जरूर करसी।

१६८४. गांगुरणरो धणी खीची भोज जिणरै राणी सकळादे जिणसूं अचळदास पुत्र प्रगट हुवो।

१६८५ खीची अचळदासरी मा सलहृदे।

१६८६ राणा मोकळरी बेटी पोहपावती अचळदास खीचीरो राजलोक।

१६८७ माडवरो पातसाह महमूद बेगडो माथै आयो जद सवत १४८२ खीची अचळदास गढ गागूरण साको कियो।

१६८८ खीची अचळदास राणी पोहपावती चितोडरा राणा मोकल लाखावतरी बेटी।

१६८९ चापो १, माधो २, साडो ३– अै चारण अचळदास कनै घेरामें।

१६९० गागो १, तिलोकसी २– दोय वाणिया अचळदास कनै राऊ १, सेऊ २ – अै डूब घेरामें।

१६९१ पीपाजूके वसमें, पीपा सम नृप लाल।
भरम भजावै कै प्रगट, केहरि वुद्धि विसाळ ॥

१६९२ खीची राजा केहरिसिंघ भाखा ग्रथ सीतारामचरित्र नामा अठारै प्रवध करि वणायो रामायणरी कथा है।

हाडा चौहाण

१६९३ हाडारी पीढिया लिखते– सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, ब्रह्मपाळ ५, माणकराव ६, अणखपाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, वूदी वाघै लिवी वाघारो देवो ११, केलण १२, केलणनू तूठो केदार समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो १७, भाडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंघ २६, अनिरूधसिंघ २७, वुद्धसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२।

१६९४ हाडारी वसावळी लिखते – चहुवाण राजा सोमेसर १, प्रथीराज २, जोधो ३, हाडो ४, हाडाथी हाडा कहाया हाडारो ब्रह्मपाल ५, माणकराव ६, अणखपाळ ७, साधारण ८, विजैपाळ ९, वाघो १०, वूदी वाघो वसियो वाघारो देवो ११, केलण १२, समरसी १३, पटो १४, हामो १५, वरसिंघ १६, वैरो भाडो १८, नरवद १९, अरजुण २०, सुरजण २१, भोज २२, रतन २३, गोपीनाथ २४, चत्रसाळ २५, भावसिंघ २६, अनरुधसिंघ २७, वुधसिंघ २८, उमेदसिंघ २९, अजीतसिंघ ३०, विसनसिंघ ३१, रामसिंघ ३२।

१६९५ राव भाडारा बेटारी विगत – नरवद १, नराणदास २, साडो ३, नरसिंघ ४– अै च्यारु भाई अेक माया।

१६९६. वूंदी राव भांडारो १, नारायणदास २, सूरजमळ ३, प्रथीराज ४. भांडानूं दुख दियो जिणसूं हाडा प्रथीराजनूं गादीसूं दूर कियो ।

१६९७. हाडो राव नरवद भांडावत गोड़ मोटमरावरो दोहितो ।

१६९८. वूंदीराव नरवद भांडवतरा वेटांरी विगत– उरजण १, भीम २, अखैराज ३, पूरो ४, हरराज ५, मोकळ ६– अै छव वेटा नरवदरै वेटी करमावती चितोड़ सांगा राणानूं परणायी ।

१६९९. अै सातूं सूरजमल खेमावतरा दोहिता ।

१७००. वूंदीराव नारायणदासरो वडो भाई नरवद, नरवदरो उरजण ।

१७०१. राव हाडा नाराणदास भांडावत जोधपुर सांवतसी जोधावतरी वेटी खेतूवाई परणियो. खेतूवाईरो वेटो सूरजमल राणा रतनसीनूं मार मुवो ।

१७०२. सूर १, मलो २ – अै दोय सोलंकी, असोकमल परमार चहुवाण पूरवियो पूरणमल अेक पग मांहेसूं सांकळांरो काढणहार राणो रतनसी ४–इतानूं मार हाडो सूरजमल मुवो ।

भळको लीधो भूखियो,
चाव करै चहुवाण ।
सूजै धनस संभाळियो,
अंत समै अवसाण ।।

१७०३. भूखियो भळको ओ ही त्रियावियो कहीजतो ।

१७०४. सूरजमल नाराणदासोतरो वेटो प्रथीराज वूंदी राव जिणनूं उथप हाडां अरजण नरवदोतनूं वूंदी राव कियो ।

१७०५. हाडो राव उरजण नरवदोत देवळियो सीसोदियो सूरजमल खीमावत जिणरो दोहितो ।

१७०६. हाडा राव उरजणजीरै वेटांरी विगत – सुरजण १, रामजी २, कांधल ३, अखैराज ४ ।

१७०७. हाडै सांवत सेरसाहरी असवारीरो घोड़ो मैणां कनै चुराय मंगायो. पातसाह खवर पाय हाडोती माथै आयो. सांवत मरण मांडियो. पछै धूंधळीमलजी वर दियो – तूं जाय नै सेरसाहरी फौजमे तरवार चलाय, फौज विगड़ जासी यूं हीज हुवो. जद सेरसाहरै समररा जैतवार – ओ विरद हुवो सांवतरांनूं ।

१७०८. राव सुरजण उरजणोत गहलोतांरो भाणेज ।

१७०९ सवत १६२५ पातसाह अकबरनू सुरजण रणथभोर सूपवी ।

१७१० राव सुरजणरा बेटारी विगत – दूदो १, भोज २, रायमल ३ ।

१७११ दूदो सुरजणोत चापावत जैसिंघ भैंइदासोतरो दोहितो राव सुरजनरै कवर दूदो वडै डौल वडो रजपूत हुतो उणनू उणरा झारीवरदार विरामण जिणरै हाथ कवर भोज सुरजणोत जहर दिरायो दूदारै बेटो नरहरदास ।

१७१२ बूदी राव सुरजण जिणरो वडो कवर दूदो जिणनू विख दे कवर भोज मरायो राव सुरजण उदास रूप कासी गयो मणकरणकामें सिनान करता देह तजियो ।

१७१३ हाडा कवर दूदा सुरजणोतनू पातसाह अक्बर सिरपाव दियो ।

१७१४ राव भोज सुरजणोत अहाडा राव जगमाल उदैसिंघोतरो दोहितो ।

१७१५ सवत १६६० पातसाह अकबररी मा मुयी आगरा माहे जद सारा राजा-राव भद्र हुवा राव भोज हाडो नै राव दुरगो चद्रावत अै भदर हुवा नही ।

१७१६ बूदी राव भोज वडो अडपदार सिरदार हुवो हाथीरो वडो असवार हुतो पातसाहरा मसत हाथी किणीसू ही पकडीजता नही उवा हाथी राव भोज चढतो अकवर ज्यू ।

१७१७ राव भोज सुरजणोतरा बेटारी विगत – रतन १, रिदैनारायण २, केसोदास ३, मनोहरदास ४–अै च्यार बेटा भोज सुरजणोतरा ।

१७१८ राव रतन भोजरो वालोत सोळकी ज्यारो भाणेज ।

१७१९ रावराजा रतन राव भोजरो बेटो बूदी वडो ठाकुर हुतो साहजादो खुरम पातसाह जहागीरसू बागी हुवो जद सवत १६८० साहजादो परवेज नै नवाब महोबतखा बुरहानपुरसू पूरबनू रवाना हुवा खुरमनू हरावण तद बुरहानपुररो सूबो राव रतननू भोळायो पचहजारी मनसब दियो तदसू ठाकुराई बूदीरी वधी पछै बादसाहजी दिखणमें खानजहा लारै बुरहानपुर गया सवत १६८७ बालासुर माहे राव रतन रामसरण हुवो ।

१७२० कवर गोपीनाथ राव रतनरो कछवाहा भगवानदास भारमलोतरो दोहितो ।

१७२१ कवर गोपीनाथ राव रतनरो राव बैठा राम कह्यो राव सत्रसाल गोपी-नाथोत राव रतन आप बैठा इणनू रावाई दिवी पातसाह बूदीरो टीको सत्रसालनू दियो राव रतनरी अरजसू सवत १६६३ राव सत्रसालरा बेटारी विगत ।

१७२२. कंवर गोपीनाथरै वेटा – सत्रसाल १, राजसिंघ २, इंदरसाल ३, महोकम ४, महासिघ ५, वैरीसाल ६, सूरजी ७, केसरीसिंघ ८, स्यामसिघ ९, काकील काम आया ।

१७२३. राव चत्रसाल गोपीनाथोत सुनेर सोळंकियां भिलै ज्यांरो दोहितो ।

१७२४. वूंदीरो धणी हाडो चतरसाल गोपीनाथोत सवत १६६२रा आसोज सुद १५ जनम. संवत १७१४ जेठ सुद ८ आगरासू नजदीक धोलपुर वेढ हुई साहजादा दारासाहरै नै औरंगजेवरै जद दारासाह साथै हुतो. राव चत्रसाल औरंगजेवसूं लड़ काम आयो ।

१७२५. छव सतियां हुई राणियां. खवासां ३४ सती हुई. चत्रसालरी राजलोकां वांसे रही ज्यांरी विगत – जादम भारथसिघरी मा १, सीसोदणी वहूजी हाडीजीरी मा २, कछवाही भगवंतसिंहजीरी मा ३ ।

१७२६. हाडो भारथसिघ चत्रसालोत चत्रसाल साथै काम आयो ।

१७२७. बूंदी रावराजा चत्रसालजीरो करायोड़ो महल चत्रमहल कहावै ।

१७२८. सत्रसालरा वेटांरी विगत – भावसिंघ १, भींव २, भगवंतसिघ ३, भारथसिघ ४. भावसिंघ राठोड़ांरो भाणेज, भगवंतसिघ नरूकांरो भाणेज, भारथसिघ यादवांरो भाणेज ।

१७२९. वूदीरो धणी रावराजा सत्रसालजी ज्यांरी वेटी कल्याणवाई महाराज जसवंतसिघजी परणिया सासरारो नांव जसवंतदेजी ज्यां कल्याणसागर तळाव करायो. नांव श्रीमाळियांरो नाड़ (?) दियो ।

१७३०. वूंदी रावराजा भावसिघ राणा जगतसिघरो दोहितो ।

१७३१. रावराजा भावसिघ चत्रसालोत राठोड़ दळपत राजा उदैसिघ सालदेवोतरो जिणरो दोहितो ।

१७३२. वूंदी अजे रावराजा भावसिंघजीरी आण कहीजै ।

१७३३. रावराजा वुधसिघ अनरूधसिघोत नाथावत सोळंकी ज्यांरो भाणेज ।

१७३४. रावराजा उमेदसिघजी १, दीपसिघजी २, दीपकंवरबाई ३ – तीनूं वेगमरा धणीरा भाणेज ।

१७३५. रावराजा उमेदसिघ वुधसिघोत वेगमरा चूंडावतांरो भाणेज ।

१७३६. रावराजा उमेदसिघजी जोधपुर परणिया आया जद चवदा दिन नोलक रह्या. दिन पांच फतैमहलमे रह्या. दिन ११ तळेटी रह्या ।

१७३७ ईसरीसिंघजी पाट बैठा जद हाडा रावराजा उमेदसिंघजी बूंदीमें अमल कर जैपुररो नायब नारायणराव जिणसू जंग कियो पैली जैपुररी फौज भागी पछै उणियारारै रावराजा मिरदारसिंघजी घोडारी वाग उपाडी उमेदसिंघ रावराजारो लोक काम आयो पण हाडारा छूटा घोडो , रावराजा उमेदसिंघजीरो काम आयो ।

१७३८ उमेदसिंघजी तेरै घोटासू इदरगढ गया देवीसिंघ इदरगढरो धणी सत्रु वहे निवडियो बूंदी अपणाय देजीरी पूजारै मिस कवीला सहित इणनू उमेदसिंघ मारियो ।

१७३९ विखा माहे रावराजा उमेदसिंघजी हा जद ईडरिया राठोडा डोळो मेलियो ओ पैलो व्याव उमेदसिंघजी कियो ।

१७४० श्री जी उमेदसिंघजी देसूरी मैल करण पधारता जद भमरा वा कीपलारी कावडा जळेत्र वैती गावग डावडा मागता ज्यानै कीपला भमरा दिरीजता ।

१७४१ मिलानयीरो नै गोविंददेवजीरो दरसण कुवर उमेदसिंघजी जैपुर पधारिया महाराज प्रतापसिंघजी सामा पधारिया सनान कर अपसमें होय गोविंद-देवजीरो दरसण कियो फूल ठाकुरजीनू चढावण श्री जी बागमें गया, साथ महाराजा प्रतापसिंघजी जद श्रीजी आकोडियासू व्रक्षरी डाळ नमायी, फूल प्रतापसिंघजी वीण लिया जद श्रीजी बोलिया कयाहीक दिना फल भुगतियो वीण तो प्रतापसिंघजी कह्यो – म्हारै तो आप ईसरीसिंघजी माधोसिंघजीरै ठिकाणै हो ।

१७४२ कापणरो महाराजा दीपसिंघजी जिणारी बेटी प्रतापसिंघजी परणिया श्रीजीरै भतीजी जिणसू मिलण श्रीजी जैपुररा रावळामें पधारिया प्रतापसिंघ-जीरी राणिया मरवनै उमदा पोसाक दिवी मारी राणिया श्रीजीरो दरसण कियो छोटा भाईरी बेटीरै माथै हाथ फेरियो ।

१७४३ प्रतापसिंघजी श्रीजीरै डेरै आय कह्यो – आप कहो तो कोटा-बूंदी माथै फौज ले हू आपरै सग चालू श्रीजी कह्यो – इण कामसू तो म्हारा घोळामें धूळ पडै, दोनू ठिकाणा दोनू म्हारा पोता है जिणा माथै काई कोप करू ?

१७४४ पुस्करा तीरथ कर श्रीजी बूंदी पधारिया जद केशरनाथजी कनै आपरा डेरा उठासू प्यादल थका काधै गगाजळरी कावड रिवी, पगामें खडाऊ, हाथमें मालो सरब परिगह सहित रगनाथजीरै मंदिर पधारिया रगनाथजीनू गगा जळ चढावणनू ।

१७४५. श्रीजी साहब्र देव्र पूजता आ निसचै नहीं, आंरै मुख इस्ट कुण देवता है ? अेक दिन रंगनाथजीनूं श्रीजी पुसप चढावे है, पोतो रावराजा छानो थको लारै ऊभो. जद दुरगारो मंत्र पढ नै श्रीजी तुळसी-दल रंगनाथजीनूं चढायो. पछै देखै तो पोतो ऊभो है. जद फुरमाया – भगतियानैं मंत्र सुणियो कांई ? आं अरज किवी – सुणियो. आप फुरमाया – विखामें मैं ओ इस्ट धारण कियो हो, पांचूही देव अेक करि जाणां छां।

१७४६. उमेदसिंघजीरै आठ राणियां हुई।

१७४७. रावराजा उमेदसिंघजीरा कंवर अजीतसिंघजी, बहादुरसिंघजी दोनूं रासरो धणी ऊदावत केसरीसिंघजी जिणरा भाणेज।

१७४८. अजीतसिंघजी, बहादुरसिंघजी दोनूं रावराजा उमेदसिंघजीरा बेटा रासरा ऊदावत केसरीसिंघजीरा भाणेज।

१७४९. बळवंतसिंघजी बहादुरसिंघजीरो बेटो केसोरायजी पाटण कोटा वाळां चूक कर मारियो।

१७५०. उमेदसिंघजीरै बेटा सिरदारसिंघजी, रायसिंघजी ईडररा धणी जिणरा दोहिता।

१७५१. रावराजा अजीतसिंघ उमेदसिंघोत वांसवाळारा रावळरो दोहितो।

१७५२. हाडै रावराजा अजीतसिंघ अड़सी राणानूं मारियो सो प्रसंग लिखंते. लालस पीरदान कह्यो हुई सर चेलो अल्लारो बारटनूं।

१७५३. अजीतसिंघजीरी वूहरे यी वरछी दे मारियो सू राणारी पीठ फोड़ छाती फोड़ घोड़ाका घेरै आणी. वरछी लागा राणो बोलियो कीका लागां. जद कीकै धायभाई अजीतसिंघजी माथै तरवार चलायी. अजीतसिंघजीरो कमरबंधो कट चीलगत कट अजीतसिंघजीरै पसवाड़ारै खाणी।

१७५४. अजीतसिंघजीरी तरवारसूं कीकारा घोड़ारो पग कटाणो।

१७५५. रावराजा पदवी अजीतसिंघजी तीन वरस भोगवी. पछै राम-सरण हुवा।

१७५६. रावराजा विसनसिंघ वांसवाळारा रावळरो दोहितो।

१७५७. रावराजा रामसिंघ विसनसिंघोत किसनगढरा राजा प्रतापसिंघ बहादुरसिंघोतरो दोहितो।

१७५८. हाडो हालू हरराजरो आंरै रजपूत हुवो।

१७५९. वूंदी डावी मिसल नाथावतां सोळंकियांरी. जीवणी मिसल हाडांरी।

१७६० बूदी मीराजी जागतो पीर है राव घणी मानता राखै जिणसू बूदीरा राव आगै सूर खावता विखामे श्रीजी सूर खायो जिणसू हमै बूदी राव सूर खावै है ।

१७६१ हाडो राव बूदी तखत बैठो सो दारू न पीवै, भाई बेटा दारू पीवै ।

१७६२ सथूर बूदी कनै स्थान जठै अदतिका देवी विराजै है ।

१७६३ आगै बूदीरा रावराजा नवाब दरियाखारा नगारा खोस लिया अेकरो नाव वैरीसाल, दूजा नगारारो नाव रणजीत केसरिया निसाण उण नवाबरो लियो जदसू बूदी केसरिया निसाण रहै है ।

१७६४ बूदी तळहटीरा महला विवाहादिक महोत्सव हुवै ।

१७६५ कोटारा महारावारी पीढिया लिखते – राव रतन १, माधोसिंघ २, मुकुदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीमसिघ ६, दुरजणसाल ७, चत्रसाल ८, अजीतसिंघ ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२ ।

१७६६ कोटारा महारावरी पीढि लिखते – राव रतन १, माधोसिंघ २, मुकदसिंघ ३, किसोरसिंघ ४, रामसिंघ ५, भीवसिंघ ६, दुरजणमाल ७, सत्रसाल ८, अजीतसिंह ९, गुमानसिंघ १०, उमेदसिंघ ११, किसोरसिंघ १२ ।

१७६७ माधोसिंघ राव रतनरो रावजी बैठा पातसाहरी चाकरी लागी रावजी काळ कियो जद कोटो पलाइतो पातसाहजी दियो सवत १६५६रा जेठ वद ३ जनम ।

१७६८ राव माधोसिंघरा बेटारी विगत – मुकदसिंघ १, मोवणसिंघ २, जुझारसिंघ ३, राम ४, सूरसिंघ ५, राणो उमेदसिंघ ६ उदैपुर वसायो, उदैसागर तळाव करायो मवत १६२८रा फागुण १५ राम कह्यो राणै उमेदसिंघ ।

१७६९ हाडो मोवणसिंघ माधोसिंघोत जिणरा बेटा पाच कछवाहा मारिया ।

१७७० महा बूदी हेटेसू कोटा हेटै महाराव जीवसिंघजी घाळियो ।

१७७१ इण तरै महाराज अजीतसिंघजी कोटै रावराजा दुरजणसिंघजीरी गादी कोटै महाराव हुवो ।

१७७२ चत्रसाळजीरो बेटो न हुवो जद चत्रमालजीरी गादी चत्रसालजीरो भाई गुमानसिंघजी वैठो ।

१७७३ महाराजकवार फतैसिंघजी जोधपुरसू पधार कोटै गुमानसिंघजी महारावरी बेटी परणिया महाराव त्याग आछो चारणा-भाटानू दियो घणा घोडा सिरपाव दिया जस लियो ।

१७७४. रामदत्त नै त्रिजैमाणक दोनूं हाथी कोटारा महाराव गुमानसिंघजीरा लड़िया।

१७७५. अजीतसिंघजीरो तीजो बैटो सरूपसिंघजी अणतै रह्यो ।

१७७६. धधवाड़िया भोपतरामनू कोटारै माहरावजी कोटासूं तीन कोस गांव कोटड़ी, तीन हजार घरांरी वसती, उवा तांबापतर कर दिवी. कोटारा राजमें जालमसिंघ पहला भोपतराम मुसाहिव हुतो ।

१७७७. दिखणियांरी फौजसू जग्मे भागो सायद – भोपड़ो गूघरा तोड़ भागो ।

सोनगरा

१७७८. चहुवाण कान्हड़दे सांवलसिंघरो बेटो जिण संवत १३६८ वैसाख सुद ६ गुरुवार जाळोरगढ साको कियो ।

१७७९. संवत १३५६ सोनिगरै कान्हड़दे साको कियो जाळोर अलाउदीन लियो जद।

१७८०. सांचोर १, थिराद २, काकरणधर ३, वाराही ४, कच्छ ५, गेहड़ी ६, ऊमरकोट ७, वीकमपुर ८, जेसळमेर ९, वधनोर १०, पारकर ११, पूगळ १२, मारोठ १३, साळकोट १४, जांगळू १५, जाजासहर १६, सारण १७, हांसेर १८, वावरो १९, सोजत २०, डोडियाळ २१, रीणक २२, काछेल २३, त्रिसींगड़ो २४, आवू २५, भीलड़ी २६, सिवाणो २७, तारंगो २८, राड़द्रह २९, सूधो ३०, मेहवो ३१, भाद्राजण ३२, मंडोवर ३३, सूराचंद ३४ – इत्यादिक ठिकाणांसू कान्हड़दे भड़ तेड़ाया ।

१७८१. सोनगरा कान्हड़देसू जाळोररा महाजनां अरज कीवी. रामो साफड़ियो वोलियो – मूग चोखा जव काठा गेहूं साठ वरस तांई हूं पूरीस.जैतसी दोसी कहै – कपड़ा साठ वरस हूं पूरीस. भोळै साह कह्यो – असी वरस तेल हूं पूरीस. मोलहण साह बोलियो – तीस वरस ईंधण हूं पूरीस. भीमैसाह कह्यो – म्हारै इतो गुळ है, अठारै वरस तांई ढीकली गुळरा हीज गोळा चलावो. सादूसाह कहै – म्हारै दहीरा पहल भरिया है ।

१७८२. जाळोररो गढ दहियै वीकै भेळायो अलाउदीनरा नायबांसू मिलनै ।

१७८३. सोनगरा कान्हड़देरै भड़ – भाई मालदे १, बेटो वीरमदे २, जैत वाघेलो ३, जैत देवड़ो ४, लूणकरण माल्हण ५, सोभित देवड़ो ६, अजैसी ७, सहजपाळ ८ – इत्यादिक ।

१७८४. वीरमदे वांसै सुण काज, अउठ दिहाड़ां कीधो राज।
.................................॥

जै सुकळीण साहसी, मुवा न मूकै माण ।
मसतक उपराठो हुओ, तणो विसलहू आण ॥
अेक असभव सुण लियो, जळ तिरिया परवाण ।
मुवा अपूठो सिर फिरचो, दूजो अेह परमाण ॥

१७८५ कान्हडदेरै भाई मालदे, मालदेरो अवराजा, अवराजारो खेमसी, खेमसीरो अखैराजसू खनी हुवो ।

१७८६ मियाणै पहाडरी डाग ऊपर गढ चढता जीवणी तरफ गढरो नव चोकियारो गोख निकळस कहीजै जूनी ख्यातामें अलाउदीन आयो जद चहुवाण सात निकळम ग्राम वैठो हुरकणियारो नाच करायो हो ।

१७८७ सोनगरारी वसावळी – चाचगदेरो सावतसी, सावतसीरो मालदे, मालदेरो वणवीर, वणवीररो रणधीर, रणधीररो लोलो, लोला नै राव रिडमलजी जेसलमेरसू आण वाई परणाय पटै पाली दिवी ।

१७८८ चाचगदे १, सावतसी २, मालदे ३, वणवीर ४, रणधीर ५, लोलो ६, सतो ७, सीवो ८, रणधीर ९, अखैराज १० राव मालदेजीरै काम आयो सूर पातसाहसू जग कियो जैताजी कूपाजी सामल समेळरै खेत ।

मानसिंघ अखैराजोतरो वस

१७८९ मानसिंघ अखैराजरो राव चदरसेणजीरा विखामे राणा प्रतापरै गयो हो पातसाही फौजासू हळदीघाटी राणारै वेढ हुई सवत १६६३ जद मानसिंघ राणारै काम आयो ।

१७९० राम मालदेवोत सवत १६२१ चैत वद ४ हुसनकुलीखानू पाली माथै ले आयो जद मानसिंघ अखैराजोत राणाजीरै गयो ।

१७९१ जसवत मानसिंघोत वडो सिरदार हुवो मोटै राजा राणाजीरासू आणियो सवत १६२७ गावा २७ सू पाली पटै दिवी ।

१७९२ पालीरो गाव देईगेडो मागळियो धनराजरै पटै इण ठाय अहमदावादमें जसवतजी मोटा-राजाजीसू अरज करायी जद हजूर फरमायो – इण गावरै वदळै दूजो गाव देसा आ वात सुण सवत १६६५ राणाजीरै गया उठै हीज राम कह्यो ।

१७९३ सोनगरो जगनाथ जसवतोत सवत १६७७ राणाजीरासू आयो जद गाव मिणियारी विसीनू दिवो पछै गाव ११ पटै जगनाथजीनै दिया मणियारीसू सवाय दिया ।

१७९४. दळपत जगनाथोत, भोजराज जगनाथोत ।

१७९५. भाखरसी जसवंतरो १, वाघो जसवंतरो २, माधोसिंघ जसवंतरो ३, सोनगरो स्यामसिंघ जसवंतरो ४, रामचंद्र जसवंतरो ।

१७९६. राजसिंघ जसवंतोत राणाजीरासूं आय जोधपुर चाकर रह्यो जद संवत १६६६ गुदोचरा पटारो गांव कुड़नी दिवी ।

१७९७. संवत १६७९ सिवाणारो गांव निवाई सोनगरा भाखरसी जसवंतोतरै पटै हुई ।

भाण अखैराजोतरो वंस

१७९८. सवत १६३३ अकबररो उमराव सहबाजखां कुंभळमेर लियो जद सोनगरो भाण अखैराजोत काम आयो राणा उदैसिंघरै ।

१७९९. मोटा-राजा सोनगरा भाण अखैराजोतरी बेटी परणिया हुता सो मोटा-राजा साथ बळी ।

१८००. सोनगरो नारायणदास भाणरो पहलां पातसाही चाकर हुतो. पछै मोटा-राजाजी कनै आयो जद संवत १६४१ भाद्राजण पटै दिवी ।

१८०१. सोनगरो नारायणदासजी राणाजीरै चाकर गांव खोड़ पटै जद जाळोररो साथ खोड़ माथै आयो. नारायणदासजी निसरिया. तुरकां वसी वंद किवी जद वंदमे चतरभुज नमियो. वंदसू छूट दिन पाय महोबतखांरै चाकर रह्यो. पछै महोबतखारासूं छूट पातसाही चाकर हुवो. पूरबमे जागीर पायी ।

१८०२. मोटा-राजा संवत १६४५ सिरोही माथै पधारिया जद राव सुरताण कागद मेल नाराणदासजीनूं बुलाया. नाराणदासजी राणाजीरै गया. खोड़ पायी. उठै हीज राम-सरण हुवा ।

१८०३. सोनगरो सांवत नाराणदासरो. भीम सांवतसिंघोत राणाजीरै काम आयो ।

१८०४. प्रताप १, सुजाणसिंघ २, अरजुण ३ – अैही सांवतसिंघरा बेटा ।

१८०५. सोनगरो सातल नाराणदासोत रावळै चाकर संवत १६८६ भाद्राजण गांव २१ सूं पटै पायी. पछै संवत १६८३ नवसरो गांव १० सूं दियो. पछै संवत १६८८ बुरहानपुररा डेरा छाड गयो ।

१८०६. जैतसी सातलरो १, सूरसिंघ सातलरो २, जैसिंघ सातलरो ३ ।

१८०७. सोनगरो किसनसिंघ सातलोत ।

१८०८. सोनगरो मालदे नाराणदासोत, नाराणदास भाणोत ।

१८०९ सोनगरो चतुरभुज नाराणदासोत ।

१८१० पातसाह साहजहांरै हिंदू चाळीस मनसवदार ज्यामें सोनगरै चतरभुज नाराणदासोत ही गिणीजै है ।

१८११ चतुरभुजरै गरीबदास ।

१८१२ सोनगरो प्रथीराज नाराणदासोत रावळै चाकर सवत १६७८ गुदोचरा पटारो गाव अेदळा पटै सवत १६८९ कुरनो गुदोचरो गाव ४ सू पटै पायो ।

१८१३ सोनगरो केसोदास भाणोत ।

१८१४ माधोदास केसोदासोत भलो राजपूत हुवो सवत १६९४ रावळाथी गाव भवराणी गावा १० सू दिवी हुती इणरा चाकर जैमल मुंहणोत जानाजगी किवी जद भवराणी छोड सवत १६८८ मोहब्बतखांरै वसियो पछै अमरसिंघजीरै पछै राजा जैसिंघरै वसियो माधोदास ।

१८१५ सोनगरो कल्याणदास भाण अखैराजोतरो ।

उदैसिंघ अखैराजोतरो वस

१८१६ सोनगरो उदैसिंघ अखैराजोत जिणरै सगतसिंघ, सगतसिंघरै मुकनदास हुवो सवत १६८४ गाव दासण जाळोररो पटै पायो ।

१८१७ सोनगरो सूरजमल उदैसिंघ अखैराजोतरो जिण सवत १६५७ पालीरो पटो भाई सगतसिंघ उदैसिंघोत सामल पायो ।

१८१८ सोनगरो देवीदास सूरजमलोत वणवीर सूरजमलोत ।

भोजराज अखैराजोतरो वस

१८१९ सोनगरो भोजराज अखैराजोत कूपाजीरै वास थो सो कूपाजी साथ काम आयो ।

१८२० भोजराज अखैराजोत कूपाजीरै वास हुतो सो कूपाजीरै साथ काम आयो ।

१८२१ सोनगरा अखैराज रणधीरोतरो भोजराज, भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जगवत राजा दळपत रायसिंघोतरै काम आयो भटनेर।

१८२२ भोजराजरो सिंघ, सिंघरो जगवत भटनेर दळपत रायसिंघोतरै काम आयो ।

जैमल अखैराजोतरो वस

१८२३ सोनगरो जैमल अखैराजोत बीकानेर मारण गयो ।

१८२४ जमलरो आसदास, आसदासरो रामदास जाटूर्में मारियो ।

१८२५. वळभद्र १, पिराग २, अनरुध ३ – अै ही अचळदासरा ।

१८२६. सोनगरो सारंगदे जैमलोत. सारंगदेरो नरहरदास ।

रतन अखैराजोतरो वंस

१८२७. रतनसी अखैराजोत. कानो रतनसीरो ।

देवड़ा

१८२८. सोनगरा महणसीरै घरवासै देवी रहै. उणरै पुत्र हुवो नांव देवो. देवरा वंसरा देवड़ा कहाणा ।

१८२९. महणसी रावरै दूजा च्यार वेटा हुवा ज्यांरी विगत – वालोजी १ जिणरा वालोत, चीवो महणसीरो २ जिणरा चीवा है, महणसीरो अभो ३ उणरा अभा, वोड़ो महणसीरो ४ तिणरा वोड़ा – अै च्यारुं वेटा ।

१८३०. सिरोहीरा रावांरी वंसावळी – कीतू १, समरसी २, महणसी ३, पतो ४, वीजड़ ५, लूभो ६, सलखो ७, रिड़मल ८, सौभो ९, सैसमल १०, राव लखो ११, ऊदो १२, रणधीर १३, भाण १४, सुरताण १५, राजसिघ, उदैसिघ, चत्रसाल, मानसिघ, जगतसिघ, वैरीसाल, हमैं सिवसिघ ।

१८३१. कीतू १, समरसी २, पतो ३, वीजड़ ४, लूंभो ५, सलख ६, रणमल ७, सोभो ८, सहसमल ९, राव लाखो १०, ऊदो ११, रणधीर १२, भाण १३, सुरताण १४, राजसिंघ १५, अखैराज १६, उदैसिंघ १७, सत्रसाल १८, मानसिघ १९, जगतसिघ २०, वैरीसाल २१, सिवसिघ २२ ।

१८३२. देवड़ांरी पीढियां लिखते – सवत १२१६ माह वद ११ परमारां कनासू देवड़ै कीतू आवू लियो ।

१८३३. संवत १५८९ राव सहसमल सिरोही वसायी. सीहनू मार वसायी जिणसूं सीहरोही नाव दियो. आगै देवड़ा ईडररी चाकरी करता ।

१८३४. सिरोहीरो धणी आगै ईडररी चाकरी करतो ।

१८३५. लाखोराव १, राव जगमाल २, रतनसी ३, गोपाळदास ४, केसोदास ५ ।

१८३६. केसोदासरो नरहरदास जिण कुल खानत देवड़ा राम भेळी राख अखैराज मरायो ।

१८३७. कुवरसा चावमे हरीदास नरहरदासोत, चापो प्रिथीराजोत सामल रै ।

१८३८. जगमाल १, हमीर २, सांकर ३, मांडण ४, ऊदो ५ – अै पांचूं राव लाखारा वेटा ।

१८३९ जगमाल १, हमीर २, साकर ३, माडण ४, ऊदो ५ – सिरोहीरा राव लखारे ।

१८४० देवडो हमीर राव लाखैरो जिण राव जगमाल कनासू आध वटाय लियो हमीरनू जगमाल मारियो ।

१८४१ हमीर अपुत्र हुवो ।

१८४२ देवडारै अेक अखैराज उडणो घणा भील मारिया घणा भोमियारी धरती लिवी धरतीयारा सरापनू मुवो ।

१८४३ उडणो अखैराज राव मालदेरो मामो ।

१८४४ अखैराजरै पाट दूदो अखैराजोत जिणनू ऊदै रायसिंघोत भतीजै मारियो दूदो कहिय कसानीयो हो ।

१८४५ सवत १५७५रा पोम सुद ८रो जनम रायसिंघ अखैराजोतरो इणरी गादी उदैसिंघ बैठो सवत १६१६रा चैत वद ६ नै ।

१८४६ राव उदैसिंघ, रायसिंघ अखैराजोतरो रावजी गागाजीरी बेटी चपाबाई जिणरो बेटो ओ मुवा मानसिंघ दूदा अखैराजोतरो सिरोही राव हुवो ।

१८४७ सवत १६२०रै आसोज सुद ११ पेट दूख उदैसिंघ मुवो सिरोहीमे ।

१८४८ देवडो वीजो १, हरराज २, दूदो ३, तेजसी ४, आल्हण ५, भीवो ६, गजो ७, झाझो ८, डूगर ९, रावत सहसमल १०, सोभो ११ ।

१८४९ ढीकरी देवो आयो कलो मार राव मानसिंघनू मारियो मानसिंघ मरतै वीजा हरराजोतनू क्यो – सुरताण भाणरानू राव कियो ।

१८५० मानसिंघ पछै राव कलो सिरोहीरो धणी हुवो राव सुरताण देवडै वीजै गाव कालदरी राड किवी कलानै कुभळमेरीमे हराय नै काढ दियो वीजै राव सुरताणनू रावाईरो टीको दियो ।

१८५१ सवत १६४१ गाव नोसरा गाव ७२ सू मोटो राजा दियो ।

१८५२ सवत १६६६ मोटै राजाजीनू परणाया सवत १६६७ सूरजसिंघजीनू मथुराजीमें परणाया राव कलै सवत १६६१ भाद्राजण राम कह्यो ।

१८५३ भाणरो सुरताण गाव पमेरा जठासू आण देवडै वीजै हरराजोत सिरोही राव कियो भाणरो सुरताण पामेरासू आण वीजै हरराजोत सिरोही राव कियो ।

१८५४ राजा रायसिंघ वीकानेरियै राव सुरताणरा कहणासू देवडा वीजा हरराजोतनू

सिरोही मांहेसूं काढ दियो. पछे वीजो जगमाल उदैसिघोतसूं मिलियो. जगमालजी पातसाह कनांसूं सारी सिरोही ही लिखाय दिवी ।

१८५५. संवत १६४६ मोटा राजा पातसाही चाकर जामवेग जिणनूं साथै ले वीजा हरराजोतनूं साथै ले राव सुरताण ऊपर गया, राव रायसिघजीरो वैर वालण ।

१८५६. वीजाजी आपरा साथसूं आवूरी गाळमे गया. राव सुरताणरै साथरा मारिया।

१८५७. राव सुरताण संवत १६६७ रा असाढ वद ८ रामसरण हुवो नै राणी ७ रजपूत ५ साथै वळिया ।

१८५८. राव सुरताणरी गादी राजसिघ ।

१८५९. देवडो भैरव समरारो वडो रजपूत हुवो ।

१८६०. महादेवजी जातानूं राव राजसिघरी वारमे देवड़ा प्रथीराज सूजावतरा भाई भतीजां मारियो ।

१८६१. राव सुरताणरो वेटो सूरसिंघ जिणनूं राव कियो. अहमदावादसूं दिखणरै मुहिम पधारतां महाराज सूरजसिघजी सिरोही पधारिया. संवत १६६९ जद सुरताणरी गादी राव रायसिघ हुतो जिणनू काढ दियो ।

१८६२. पछै राव रायसिंघजी सिरोही लिवी. सूरजसिघनूं देस मायसूं काढ दियो । संवत १६७२ रावळासू भाद्राजण पटै दिवी गांव २५ सू संवत १६७५ राव सूरसिघजी भाद्राजण रामसरण हुवो ।

१८६३. सूरसिघरै वेटो सवळसिंघ गांवां २४ सू भाद्राजण पटै पायी पछै संवत १६७७ भाद्राजण छूटी जद सवळसिघ राव अखैराजरै चाकर रह्यो. गांव काछोली दियो ।

१८६४. जगमालरो अखैराज उडणो राजसिघरो अखैराज पाडरो कहाणो ।

१८६५. सिरोही राव अखैराजरो कंवर उदैभाण, महगसिया राठोड़ांरो भाणेज जिण रावनू पकड़ कैद कियो ।

१८६६. कंवर उदैभाण गांव मंठाड़ थाणो हुतो उठै रजपूतांनूं लालच दे आपरै अधीन किया. मुदै ठाकुर पांच – डूगरोत रामो भैरवोत १, डूगरोत ठाकुरसी मैरावत २, डूंगरोत उगरो जसवंत वीजावतरो ३, राजसी चीवो ४, उदैसिघ दूदाणी ५, वीजा ही डूगरोत सौ, चीवा सौ, देवळ वाघेला जेठुआ भेळा. सीसोदियो साहिवखान, महेसदास गोपाळदासोत. आधाइक मालणसूं आनै अवसी भेळा हुआ नही. कंवर उदैभाण मंठाड़सूं चढ राणकवाड़ै डेरा किया.

रावनू लिखियो – भीलवाडा माथै जाऊ छू, सोर, सीसो मेलावसी राव मेलियो पछै हजार सवारासू चढिया सवत १७२० पोस वद १२ घडी अेक रात पाछली थका सिरोही आयो रामा भैरवोतरो पोतरो साथ रामारो मेलियोडो सारा जिणमा लिया थका सिरोही पोळमे बैठा, हटवडाट सुण जाळीमें मूढो काढ रावजी पूछियो – साथ किणरो ? जद नाहरखान परवतोत बोलियो – साथ कवर उदैभाणजीरो है राव कह्यो अठी कठी जावो हो ? परवतोत कह्यो – कवरजीरा हुकमसू आवा हा, राव कह्यो – लालै म्हासू आ विचारी, कोई रामजीनै सदै सोदै नाहरखान कह्यो – रामजीरो पोतरो साथै है सारो साथ महलरै चौगिद फिरियो महलरै नीसरणी लागोडी राव ऊची खेच लिवी महलरा किवाड आडा जडिया जिणसू रावनू मार सकिया नही पछै रावरा सारा माणस उण घरमे घालिया राव आडो ताळो जडियो ऊपर महोर छाप दिवी कवर उदैसिघनू दूजा महलमे कैद कियो सूतो हो जठै हीज ताळो दे महोरछाप किवी पछै रामजी तिरवाडी, भगोतीदास पटणी हुजदार हुता सो यानू कैद किया, आपरी तरफरा नव हुजदार खडा किया रावजी सात दिन धान न खायो उदैभाण विचारियो – रामो भैरवोत रावनू मरण न दै जिणसू कैदमें हीज बैठा राखणो ठोड-ठोड कागद लिखिया ज्यांमे लिखियो – जमीमे भोमिया, ग्रासिया धध मचायो, रावजी देसरी निगै राखै नही, जिणसू पाचा ठाकुरा मोनू चाटी भोळायी है सो हू करु छू पछै सवत १७२० रा माह वद ८ टीकारो महोरत हुतो सो रामो टीको होण दियो नही यू करता महीनो डोढ वतीत हुवो जद राणाजीनूं चूक लेवडियो घोडा पाच ठाकुरानू दिया नै कह्यो जण पीठनू हजार रुपिया देसू राम भैरवोतनू, साहबखान परवतसिघोतनू, ठाकुरसी चीवानू, उदैसिवनू, उगरानू साठ सिरपाव दूजानू दिया आढो रूपो, आढो भीमराज दुरसावतरो, आसियो सुरताण मेघराजरो, चाचाळो देदो – अै चारण च्यार ज्यानू सिरपाव दियो, भाट सहसमलनू सिरपाव दियो सारा ही सलाम किवी हसमरो डोढो रातब कियो रोज रुपिया ३००) भुजाईरा लागै सिसोदिया नाहरखान दुरजण-सालोतनू घोडो-सिरपाव दे मठाड थाणै मेलियो।

१८६७ सीसोदियो साहबखान परवतोतनू राणैजीरा सारा समाचार लिखिया जद घोडो सिरपाव पाछा फेर पिंडवडै गयो देवल वाघानै घोडो – सिरपाव दिया, नगारारी जोडी दिवी, डूमाणी गाव वधारै दियो जद रामो भैरवोत वेराजी हुवो – मो वरोजर देवळरो समाधान कियो ठोड-ठोडरा कागद रामाजीनू आया – रावजीनू बाहर काढो रामाजीरी ठकुराणी राडधरी

जिणरी रावजीनूं कह्यो – रावजीनूं बाहर काढो. जद रामो भैरवोत सिरोही आयो माह सुद ११ कंवर उदैभाण दारू पी नै जिण महलमें सूतो हो उण महलरै ताळो जड़ राव कनै रामो आयो. जद राव जाणियो मोनूं मारण आयो. जद राव पेट मारण कटारी काढी. जद रावरै राणी वाघेली अणमानैती तिण कह्यो – यूं कांई करो हो, रामो थांनै मारसी तो हूं रामानूं मारसूं. जद रामो हथियार छोड जाय रावरै पगां लागो. कंवर उदैसिंघ छूटो. दूजा ही रावरी तरफरा कैदसूं छूटा. कंवर उदैभाणनूं कैद कियो. दूसरा उदैभाणरा चाकर मांय हुता जिणनूं अटकिया – डगरो जसवंतोत १, ईसरदास नीबावत २, सीसोदियो नाहरखान परबतसिंघोत ३, सीसोदियो नाहरखान दुरजणसालोत ४, मोहणदास भैरावत ५, माधो राजसीरो ६, जैसिंघदे नाराणोत ७. अै दिन सात कैदमें रह्या. कंवर उदैभाण च्यार दिन जीमियो नहीं. सातवें दिन राव कंवर उदैसिंघनूं विदा कियो. इण जाय कंवर उदैभाणनूं मारियो. उदैभाणरा वेटा दोय मारिया. अेक सीसोदिणी सुजाणसिंघ सूरजमलोत राणा अमरसिंघरो पोतो तिणरी वेटी जिणरै पेटरो कंवर कल्याणसिंघ वरस छवरो उदैभाणरो वेटो उदैसिंघ मरायो, दूजो वेटो उदैभाणरो च्यार मासरो जिणनूं उदैसिंघ मारियो. पछै सीसोदणीनूं राणैजी बुलाय लीधी. अखैराजरी गादी उदैसिंघ सिरोही धणी हुवो सो आबू माथै मुवो संवत १७३२ रा आसाढ़ सुद ११ ।

१८६८. सिरोही डावी मिसल राणावतांरी, जीवणी देवड़ांरी देवड़ांमें सिरै पाडीवरो धणी, उण हेटै कळंदरी, उण हेटै प्रभूजीरा गाँवरो धणी, नेजावाळरो धणी वैसै ।

१८६९. तेजावत १, सांगावत २, प्रथीराजोत ३, कलावत – इत्यादिक देवड़ा लाखावतांरी खांपां है ।

१८७०. रणवीर देवड़ो जिणरै वेटा तीन – भाण १, सूजो २, प्रताप ३ ।

१८७१. संवत १६३० देवड़ो लाखावत सूजो रणवीरोत प्रथीराजरो पिता जिणनूं डेरै वैठानूं देवड़ै वीजै हरराजोत मारियो।

१८७२. देवड़ो प्रथीराज सूजावत वखेला परणियो हुतो जिणसूं सिरोहीरा राव छाडणो कर वेच लेनापर हुयो. राव अखैराज देवड़ा जीवराजसीनूं महल प्रथीराजनूं चूक करायो ।

१८७३. चांदै अखैराज राव कनै सिरोहीरो आव लियो ।

१८७४ रणधीर १, पतो २, तेजो ३, मेघराज ४ ।

१८७५ मेघराजनू राव अखैराज राम साईदासोत भेळो मारियो मेघराजरा भटाणै।

१८७६ मेघराज सीसोदियो परवतसिंघरो जवाई ।

१८७७ देवडा मेघराजरा बेटारी विगत – नाटो १, भाखरसी २, डूगरसी ३, नरहरदास ४ नाटानू राम देवडारै बेटै मारियो भाखरसी चादा प्रथीराजोत कनै छै नरहरदासनू राव भटाणो दियो ।

१८७८ राव लखो १, जगमाल २, मेहाजळ ३, कलो ४, पतो ५, हरिदास ६ ।

१८७९ देवडो मेहाजळ राव जगमालरो भाखर माथै अखैगढ जठै रह्यो राव मानसिंघ मेहाजळनू मरायो मानसिंघ मुवो जद कलो मेवाजळरो सिरोही राव हुवो काळदरी वेढ कर विजैजी राव सुरताण कलासू भाजियो ।

१८८० मेहाजळरा बेटारी विगत – कलो १, रायमल २, पचायण ३, जैतमाल ४, परवत ५ ।

१८८१ देवडा मेहाजळ जगमालोतरा बेटारी विगत – राव कलो १, परवतसिंघ २, जैतमाल ३, रायमल ४ ।

१८८२ लखावत राव कलो मेहाजळोत देवडो जिणरा बेटारी विगत – पातो १, आसकरण २, महेसदास ३ ।

१८८३ पातारा वीसळपुर, आसकरणरा बाम्ली नै कोटडै, महेसदासरा अेके गावमें है कोरटो जुआचार है ।

१८८४ देवडा पता कला मेहाजळोतरै वालीसानू मार वीसळपुर लियो ।

१८८५ देवडो डूगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सिमरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।

१८८६ डूगर १, रुदो २, हरराज ३, वीजो ४, रामसिंघ ५ ।

१८८७ हरराज रुदावतरा बेटारी विगत – वीजो १, लूणो २, मानो ३, अजैसी ४, वणवीर ५, धनो ६, जैमल ७ ।

१८८८ देवडा हरराजरा बेटारी विगत – वीजो १, वणवीर २, धनो ३, अजैसी ४, भगवानीदास ५, मानो ६, लूणो ७ ।

१८८९ देवडा वीजारा बेटारी विगत – रामसिंघ १, अमरो २, जसवत ३, भोजराज ४ ।

१८९० वीजैजी महाराणा जद जाम वेगरा भाईरै ल्होडा लागा राव चद्रसेणरी बेटी जामवतीबाई वीजाजी लारै वळी ।

१८९१. वीजारा वेटांरी विगत – भोजराज १, खीवराज २, रामसिंघ ३, जसवंत ४, अमर ५ ।

१८९२. देवडो केसोदास खींवराज वीजावतरो राव रायसिंघ साथै माराणो ।

१८९३. अमरावत १, वीजावत २, सूरावत ३, सिखरावत ४, भैरावत ५, कुंभावत ६ - अै खांपां देवड़ा डूगरोतांरी सिरोहीमें ।

१८९४. रहवाड़ै अमरावत डूंगरोत है ।

१८९५. उथपण माचाळ वगेरै ठिकाणा डूगरोतां भैरावतांरा है ।

१८९६. रामपुरासूं तीन कोस वरगयो ठिकाणो देवड़ारो मालमराव वाजै अै देवड़ा सामतसीहोत है. चद्रावतांरा चाकर ।

१८९७. राव पातसाह कनै गयो जद देसमे लूणा हरराजोतनूं राख गयो हो. कटार मारी. अकवर राव सुरताणसूं कहायो – लूणानूं मार नाखजे. राव सुरताण सिरोही महलांमें लूणा हरराजोतनूं मारियो. मानो हरराजोत ही लूणा साथै माराणो.

१८९८. लूणारो महेस, महेसरो भोपत ।

१८९९. मानारो सादूळराव रायसिंघ साथै काम आयो. राव मया घणी राखतो ।

१९००. सादूळरो ईसरदास ।

१९०१. वणवीर हरराजोत राव सूरसिह सुरताणोतरै काम आयो ।

१९०२. धनो जैमल माहो-मांहरी वेढमें माराणा ।

१९०३. देवडो डूगर १, रुदो २, नरसिंघ ३, सिखरो ४, भैरव ५, रामो ६ ।

१९०४. डूंगर १, रुदो २, नरसिघ ३, सूरो ४, सावतसी ५, जसवंत ६, करण ७ ।

१९०५. देवडा सूरा नरसिघोतरा वेटा तीन – सांवतसी १, तोगो २, पतो ३, वगड़ीरा धणी जैतावत वैरसल प्रथीराजोतरा वचनसू हटे मोटै राजा मारिया आप सिरोही ऊपर पधारिया तरै ।

१९०६. सवत १६४४ मोटो राजा सिरोही माथै गयो जद देवड़ो सांवतसी सूरावत, पतो सूरावत, देवडो तोगो सूरावत, राड़धरो हमीर कूभावत, राड़धरो वीदो सिखरावत, नेनो चीवो - अै मारिया ।

१९०७. आवू मत कर और तोपां, देखे फौजां डाणै ।
जव लग ऊभो पातड़ो, तव लग मूछां ताणै ।।
ओ दूहो पता सूरावतरो है ।

१९०८. नरसिघ देवड़ारो वैटो कूभो, कूभारो मेगळ जिण देवडा वणवीरनूं वांह दे आण मारियो ।

१९०९ डूगर १, रूदो २, नरसिंघ ३, सूरो ४, कलो ५, भैरादो ६, ठाकुरसी ७।

चींग्रा देवडा

१९१० चींवो १, खीमो २, जैतसी ३, दूदो ४, उदैसिंघ ५, देवडा चींवारा वेटारी विगत – खेतसी १, खीवो २, रूपो ३, राजसी ४।

१९११ चींवा चहुआण भीले सिरोही गाव महेसर जिणरो धणी चींवो खीमो जिण लखावत देवडा कलानू सिरोही रावाई दे गादी वैसाणियो।

१९१२ खीमारो जैतो, जैतारो करमसी राव अखैराजरो उमराव करमसीरा वेटा दोय – गोयददास नै भगवानदास।

निरवाण देवडा

१९१३ देवडो निरवाण जिणरै वसरा निरवाण कहावै।
कुकारसी डाहलिया कनैसू खडेलो लियो।

वागडिया देवडा

१९१४ सिरोहीमे अेक खाप देवडा वागडिया कहीजै।

१९१५ देवडो केमरसिंघ वैजनाथोत सिरोहीरै गाव फळवद हुवो बडो सतपुरस इणरै रसोलो चाकर हो।

बोडा चहुआण

१९१६ बोडो चहुवाण, बोडारो लाखो, लाखारो बीकलदे, बीकलदेरो महीपाल, महीपालरो करमो, करमारो बीजो, बीजारा वेटारी विगत – वाघो १, वैरसाल २, सीहो ३।

१९१७ वाघा बीजावतरी बेटी फूलाबाई महाराज सूरजमलजी परणिया।

१९१८ सवत १६७४ गावा १० सू गाव मवाणो नाराणदास वाघावतनू महाराजा दियो।

१९१९ नाराणदासरै वेटा दोय – केसरीसिंघ नै कल्याणदास, राव रतन महेसदासोत जाळोररो धणी हुवो जद कल्याणदास कनासू सवाणो खोस लियो।

१९२० हरीदास कल्याणदासोत सिरोही राव अखैराजरै चाकर रह्यो।

१९२१ चहुवाणा के काल वार रजपूतानै मार दोय मो पैतीस गावासू वाव लिवी।

१९२२ चहुवाण वीकमसी राणुआ जातरा रजपूत मार पाच मो सत्ताईस गावासू सूराचद लियो।

१९२३. चहुवाण हाफो वीकमसी सगा भाई. हाफै कालवांनूं मार साचोर लिवी. वीकमसी राणुवांनू मार सूराचंद लिवी ।

१६२४. भीनमाळ चहुवाण भिलै लाखणसीरा वंसमे है ।

राणा नींबावतरो वंस

१९२५. चहुवाण राणो नीवावत राव मालदेजीरै चाकर रह्यो. सिवाणारो गांव समदरड़ी पटै पायो ।

१९२६. राणारै वडो वेटो लूणो वडो रजपूत हुवो. १८९० चहुवाण मांडण राणावत ।

१९२७. चहुवाण मेहकरण राणावत दळपत उदैसिघोतरो नानो तुरकाणीमें काम आयो ।

१९२८. चहुवाण महकरण राणावतरा वेटांरी विगत – सिखरो १, देवीदास २, रायसल ३, रतनसी ४, रावत ५, सावंतसी ६ ।

१९२९. दळपत उदैसिघोतरो सगो मामो सावंतसी ।

१९३०. चहुवाण सिखरो महकरणोत महाराज गजसिंघजीरो सुसरो ।

१९३१. सिखरा महकरणोतरा बेटांरी विगत – दयालदास १, रामसिघ २ ।

१९३२. पीपरली चहुवाण देईदास महकरणोतरा है ।

१९३३. चहुवाण सावंतसी महकरणोतरा वेटांरी विगत – सादूळ १, गोपाळदास २, वळू ३, अचळदास ४, भीव ५, कलो ६, अजो ७ ।

१९३४. सादूळ महोवतखानरै चाकर. दिखणमे काम आयो, गोपाळदास दोलतखान आगै दोलतावाद काम आयो ।

१९३५. भीव जुभारसिघ दळपतोत आगै काम आयो ।

१९३६. वळू सामतसीहोतरा तीन वेटा – नरहरदास १, सहसमल २, वेणीदास ३ – आं तीनांरै वसरा सांचोररै परगनै चहुवाण है ।

१९३७. साचोरीमे वळू सावतसिघोतरा वेटा तीन ज्यांरी तड़ां तीन – नरहरदासोत १, सहसमलोत २, वेणीदासोत ३ ।

१९३८. ईडरमे चहुवाण फतैसिंघोत है – देईदास १, फतैसिघ २, प्रथीराज ३, दयालदास ४ ।

१९३९. कागनड़ै चहुवाण भोजराज दयालदासोतरा है ।

१९४०. चहुवाण जैसिंघरो भैरूंदास, भैरूंदासरो जांजण, रावजी मालदेवजीरै चाकर पहोकरण रहतो. देवराजोतसूं वेढ हुई जठै काम आयो ।

तेजसी वरजागोतरो वस

१९४१ वरजाग १, तेजसी २, प्रथूराव ३, वाघो ४, सिंघो ५, वणवीर ६, सूजो ७, रामो ८।

१९४२ राव वेगडो वरजाग, वरजागरो तेजसी, तेजसीरो प्रथमराव, प्रथमरै रावजी सूजोजी परणिया सेखोजी, देईदासजी प्रथम रावजीरा दोहिता।

१९४३ प्रथूरावरो वाघो जिण कोढणावाटीमें वाघावास गाव वसायो वाघारै सिंघो, सिंघारै वणवीर, वणवीररै मोटो राजा परणियो।

१९४४ वणवीररो सूजो, सूजारो रामो वडो सीकाई वडो रजपूत हुवो थोभरी ग्वारडी पटै रही।

१९४५ चहुवाण अजो प्रथूरावरो बेटो, देईदासजीरो मामो चित्तोड भिळता देईदासजीरै काम आयो।

वागडिया चहुवाण

१९४६ सरणो देवी कुळदेवी वागडिया चहुवाणारै।

१९४७ कालो भीमसिंघजी ईडर परणीजण जावै जठै महीरै घाट जान आयी वागडिया प्रण माडियो उण घाटानू छोड दूजै घाटै जान उतरी

१९४८ मही नदीरो अेक घाट वागडिया चहुवाण तोलक है उण घाट माथै वागडिया काम आया ज्यारी छत्रिया है।

१९४९ राकसिया चहुवाण लवेरै भाटियारै पेटसू ठावा आदमी है।

१९५० दूहो—

रिपु भगतणरो राडियो, जाजक रिपु सी जाण।
कोयलरो रिपु कागलो, चारण रिपु चहुवाण।।

अै पूरविया चहुवाण।

चावडा

१९५१ चावडा जादवामें मिलै सुणीजै है।

१९५२ अणहल ग्वाळैरा कहणासू वामे वनराज चावडै नगर वसायो नाव अणहलपुरो पटण मुसळमान पीरान पटण वहै।

१९५३ चावडारा ठिकाणा च्यार-माणसा १, वरोहीडो २, लाकरोडो ३, वमी ४।

१९५४. चावड़ो रावळ आसो जिणरी लुगाई वाघेली उघळ नै राव मालदेजीरो बेटो गोपाळदासजी हेडर जाय रह्या जिणरा घरमे बैठी ।

तुंवर

१९५५. तुंवर चंद्रवंसी ज्यांरी साख नव – जनवारीअट १, चांद २, लवो ३, डाणा ४, कळपा ५, भमर ६ – इत्यादिक ।

१९५६. यजुरवेद माध्यंदिनी साखा, पंच प्रवर यग्योपवीतरा, व्याघ्रपद गोत्र, चील कुळदेवी खेजड़ी सहित आसोज सुद ८ रै दिन पूजीजै तुंवरारै ।

१९५७. खतान जातरो ढाढी, सीवोरो जातरो भाट, श्रीमाळ जातरो पुरोहित तुंवरारै ।

१९५८. दिलीमंडळमें तुंवरांरी चौरासी है. गांव दोयसौ गहलोतांरा दिलीमंडळमे है. राणो नरपतसिंघ उठै हुवो. हमै अेक राणो वाजै, दूजा गहलोत चौधरी वाजै ।

अरजुणवंसी

१९५९. डूंगरपीठामे नूरपुर सहर है उठारो राजा चंद्रवंसी है. अरजुणरा वंसमें. निसाण झंडामे कपिरो चिह्न मांडीजै ।

कठोछ

१९६०. चंद्रवंसी सुसर्मा राजा जिणनू पांडव पकड़ियो. आ कथा महाभारतमें है. सुसर्मारा वंसज खत्री कठोछ कहावै है. ज्वाळाजीरै राजा कठोछ है ।

१९६१. संसारचंद कठोछ ज्वाळाजीरो राजा जिणरा निसाण झंडामें त्रिसूळरो चिह्न मंडित हुवै ।

१९६२. सहंसारचदरी गादी सहंसारचंदरो बेटो अनिरुधचंद्र हमे है ।

झाला (मकवाणा)

१९६३. मारकंडे मुखर वंसमे हुवा जिणसूं मकुआणा कहाणा ।

१९६४. उत्तरमे कुंतळपुर जठै राज कियो किताईक पीढी. उठांसूं उठ करांटा ठिकाणो जठै राज कियो. पछै केहर मकुआणो गुजरातमें आयो. केहर देहर पाळवण गूजरखंड आया आसापद है ।

१९६५. वांकानेररो धणी झाळो राजा कहावै. धांगधड़े झालो महाराणो कहावै. नीवड़ी वढवाणरो धणी झालो ठाकुर कहावै ।

१९६६. हेम झालारै राजधानी धांगधड़ो हहेल वदनी ।

१९६७ झाला जालमसिघरो दादो माधोसिघ झालावाडमे वढवाण ठिकाणो है जठासू सावर सगतावता कनै आयो सावररै धणी मोडी नावै गाव दियो सायद—
मोडी माधोसिघरी, वतै न ऊजड थाय ।

१९६८ छोटी धागड मुहरा सगतावत ज्यारो भाणेज झालो जालमसिघ ।

१९६९ पछै कोटारा महारावजीनू बेटी परणायी कोटै नानतो ठिकाणो पटै पायो सायद—

माधो अटक न ऊतरै, माधो कटक न जाय ।
बेटी साटै बेगडो, घर बैठो घर खाय ॥

१९७० झालो जालमसिघ कोटासू जाय राणा अडसीजीरै चाकर रह्यो जद सगतावतारो ठिकाणो गाव चीताखेडो पटै पायो ।

१९७१ उजैण माह् राडसू झालो जालमसिघ भागो मैंदपुरमे दिखणिया पकडियो पछै ईगाळियै नवकजी छोडाय कोटै पोचतो कियो ।

१९७२ वढवाणरा धणीरै बेटो हुवो नाम जालमसिघ दियो आ वात सुण राजा जालमसिघ कोटै वेराजी हुवो — मो बैठा जालमसिघ कवररो नाव वढवाण दिरायो सो अनुचित काम कियो ।

१९७३ वडवो मुसलमान जिणरी बेटी झालै जालमसिघ खवास किवी वा जवारण कहावती उणरो बेटो गोरधनदास ।

हुल

१९७४ हुलसार, हुलसाररै सीमाल, सीमालरै वाघल, वाघलरै जैतसी, जैतसीरै हरो, हरारै गैनो, गैनारै मेलो, मेलारै सिखरो, सिखरारै कीतो, कीतारै करण, करणरै भादो, भादारै पतो, पतारै केसोदास ।

१९७५ हुलसार १, सीमाल २, वाघुल ३, जैतो ४, हरो ५, गैनो ६, मेलो ७, सिखरो ८, कीतो ९, करण १०, भादो ११, पतो १२, केसोदास १३ ।

१९७६ हुल करण कीताउत बडी वेढमे काम आयो ।

गोड

१९७७ गोडारै कुलदेवी नारायणी केळम विराजै है केळा गोड न खावै केळारा पानरा दोनामे जीमै नही ।

१९७८ लाखण गोड भाट हुवो जिणरै वशरा लाखणोत भाट गोडारा व्रतेसरी ।

१९७९ करसाण जातरो ढोली गोडारो व्रतेसरी ।

१९८०. ढाकासू गोड राज वावनजी कछ राज दुवारका गया. पाछा आवतां पुसकरजी कनै दहियांनू मारियो. प्रथीराज चहुवाण वहन परणायी. दिली प्रथीराज गयो जद अजमेर गोडांनू दे गयो ।

१९८१. कुंतल आव न चक्खिया, थिरराज कटाया ।
आंव काटि आंवेररा, मारोठ मंगाया ॥
थिरराज गोड मारोठ हुवो ।

प्रकीर्णक राजपूत वंश

वालीसा

१९८२. हाथी, सूजो, मूजो, तग्गो, रणभू—अै वालीसांमें ठावा हुवा. खीमरो वालीसो नामजादीक हुवो ।

वाला

१९८३. वालै धवचै पहलां कुनवखाननू मारि पछै पुरदलखांनू सिवाणचीमें मारियो ।

१९८४. धवेचा दासारै भाखरसी हुवो दहियांरो भाणेज जिणनू पातसाह अकवर सांचोर सिवाणो अै ठिकाणा दिया ।

१९८५. अेभल वालो पडवाज घोड़ै चढि सेवड़ां मेह हिरणांरा सींगड़ां वंधो जिको छुडावण गयो ।

१९८६. कावांरो पड़गनो लूखो कहावै. सताईस गांवांरो. आंवातरी कावांरो दत्त सांवळांरो गांव. सांवळ कावारो वारट ।

वुंदेला

१९८७. राजा हरदेस वुंदेलै वंसीधर कनांसूं उदारा लड़णरा दूहा कराय रामचंद्रिकामें धराया. केसोदासरा वणायोड़ा नही है ।

कासी

१९८८. कासीरो राजा वळवंडसिघ तगो, जिणरी मूछ माथै कागदी नीबू ठैरतो ।

१९८९. वळवंडसिघ सूजा वुधौलारी सभामें गयो. सूजा वुधोलो वोलियो—वनसीनद. वळवंडसिघ समझियो नही. मुनसी वोलियो नवाव फरमावै है वैठो. वळवंडसिघ वैठो. उण दिनसू फारसी पढणी सरू किवी. किताईक वरसां फारसी वोलण लागो वळवंडसिघ ।

१९९०. वरान राजा कासीरो धणी नित्य पांच जवनांरै गळै कराय उवांरी छाती माथै पग धर पछै जमी माथै पग धरतो. जवनां काळपीरै खेत वराननूं

हटायो कासीरा कोटमें घालियो पछै पीरा हल्लो कियो कासीरो कोट भेळण जद वरानरी तिरिया दामिया नगन कागर माथै चढी पीरारै मनमुख हुई पीरा पीठ फेरी कासीरो किलो पडियो जमी भेळो हुवो वरान परियह सहत दटि मुवो कासीरी असती बिगड गयी ।

तिरहुत

१९९१ उरै पुसकर तिरोहितमें राजा सिवसिंघ बणायो जळ तळजीरी हुवो तळाव घोडा दोड अेन कोसरी गिरदमे बणायो उणमे कमळा नदी आय पडी ।

१९९२ तिरोहितरै राजा सिवसिंघ अैराकी घोडार अेड लगायी, ताजणारी दिवी, डोर काढी घोडो सिवसिंघनू ले भागो सो आज आवनी ।

नेपाल

१९९३ गणेसप्रसाद, भैरप्रसाद, विष्णुप्रसाद इत्यादिक हाथियारा नाम नेपाळरै राजारै ।

नेपाळ माथै चीणरो लसकर आयो हो जिणरो पार नहीं हुतो—नेपाळरा कहै ।

मुसळमान रजपूत

१९९४ परमार १, पडिहार २, गीची ३, तुवर ४, सोळकी ५, भट्टी ६, सम्मा ७, जोडया ८, दहिया ९, मोहिल १०, जल्ला ११, चहुवाण १२—इत्यादिक रजपूत मुसळमानामें है वरसिंघ भाटी मुसल्मान हुवा ज्यारा घर पूगळमे है ।

१९९५ जैतमाल राठोड मुसळमान हुवा ज्यारा घर छैन्यात नागोरमें है ।

१९९६ वाघेगो वेट दहियो देसोन दीठो नही ।

जाट

१९९७ रघनाहागू जग वर जाट जवाहरसिंघ अठारै दिन अलवर रह्यो जद अलवर जाटरै हुतो ।

मराठा

१९९८ दिखण इलोळरी सूरत सुभारै गढ़ तोप १३० तठी सिवा दिखणीरो नायर नैसूजी जादोराय तीन हजार असवार पांच हजार पाळा ले सायं नै संमत १७२० रा माह वद ५ सूरत मारी पांच दिन रह नै साथ लूटियो, बाळियो पतास भारी मता ले गयो पेदीर असरी वहै छै ।

१९९९. विलंदां अंगरेजियांरी कोठी वची. अै संभ ऊभा रह्या ।

२०००. गांव वुदड़ादे सौ वाळियो. पातसाही थाणादार हुतो जिण कोट पकड़ियो सो पातसाहजी दूर कियो. पातसाहजी फुरमाया – च्यार लाख रुपया लगाय सूरत दोळो कोट करावणो. अेक वरसरी जगात वोपारियांनूं माफ किवी ।

२००१. वालाजी पंडितरो वेटो पेसवो वाजेराव. पिगळिया जातरो मरहटो छत्रपतीरै पेसवो हो वाजेराव पहलां ।

२००२. कोकणरै नै गुजरातरै विच डाभाड़ांरो अमल हुतो ।

२००३. त्रंवकजी डाभाड़ानूं वाजेराव पेसवो मारियो ।

२००४. त्रंवकजी डाभाड़ानूं वाजेराव पेसवो मारियो. हैदरावादरो नवाव आपरै माथासूं पाग उतार दिवी. कह्यो – हमारा दस्तार भाई त्रंवकरावकूं मारा जिणकूं मार मैं पाग वांधूंगा पछै वाजेराव नवावसूं मिलियो है. नवावनूं राजी कियो जद नवाव कह्यो – मांग, तूठो. इण कह्यो – पाग वांध लीजै. नवाव पाग बांध लिवी ।

२००५. साहू राजारो नव वाजेराव सवा लाख रावत ले वंगालै गयो. सरजंगनूं भजायो, पछै लखणेऊरो नवाव मनसूरअली वसीण कनै अढार लाख रुपया पेसकसीरा लिया ।

२००६. पूनै दिखसु आनि वाजेरावरै तीन वेटा हुवा – नानो १, भाऊ २, रुघनाथराव ३ ।

२००७. नानारो वेटो वडो विसवासराव काका भाऊ साथै गिलजांरी राड़में काम आयो ।

२००८. संवत १७७२ छठ वुधवार दिखणी भाऊ माराणो. अहमदसाह दोजथी जीतो ।

२००९. अजमेररो सूवैदार संताजी वावळियो दिखणी भाऊरा जंगसू कंगालरै भेख किसनगढ छतरीमे आय वैठो हो. म‌ाळी कनांसू मूळा मांग खाधा ।

२०१०. पेसवा नानारी गादी नानारो छोटो वेटो माधोराव वैठो ।

२०११. पेसवा माधोरावरी गादी माधोरावरो वेटो नारायणराव वैटो ।

२०१२. पेसवा नारायणरावरी गादी नारायणरावरो गरभावास छोटो माधोराव वैठो ।

२०१३. नानो फड़नवीस रात-दिनमे दोय घड़ीरी नीद लेतो ।

२०१४. दोनूं पेसवांका उमराव अम्रतरावजी कासी रहै, वाजेरावजी विठूर रहै ।

२०१५ मानकरी उमराव सवा सै पेसवारै हुता

२०१६ 'उभाड गायकुहाडा जोडैज हुता ।

२०१७ नागपुरका भोसळा श्रीवतका दिया हुआ मुलकमें मुहम मालकी करै गायकवाड ही अै से सीधिया हुलकर पेसवारा अमलमें सर्वत्र मुहम मालकी करै।

२०१८ नागपुररा धणी वडा रघूजी, ज्यारै तीन वेटा हुवा – जानूजी १, मूधाजी २, सोवाजी ३ ।

२०१९ मूधाजीरा वेटा तीन – रघूजी १, चिमना वापूजी २, मानिया वापूजी ३ ।

२०२० रघूजीनू जानूजी खोळै लिया जानूजीरी राणी दरियावाई।

२०२१ सोवोजी खोळो उथामणनै फोज ले आया जगमें मूधाजीरै हाथरो घमाको लूटो हाथी चढिया महावत नूरमोहमदरा कह्यामू सोवाजीरै गोळी लागी हाथीरै होदै खेत रह्यिा।

२०२२ लालप्यारो घोडो, नगीनो हाथी नागपुररा राजारी मरजीसू हुवा ।

२०२३ दस हजार घोडो सासतो नागपुर तत्रेलै हुतो ।

२०२४ सिंधिया दिखणी सावतारा पायपोस वरदार नै हुलकर सावतारा उमराव है।

२०२५ सिंधियारो सेस-कुळ कहावै झडामें सरपरो चिह्न है आरै ।

२०२६ सिंधिया मानाजी फाकडा वडा वहादुर हुता टीपूरी नोकरी करी करणाटकसू दरव रोजगारको जवरीसू दिखणमें लाया ।

२०२७ मानाजी फाकडरा वेटा अगदराव फाकडा धाडा किया सिरजीत रावरा मारणमें सामल हुता गुजरातमें गया, उठै हीज मुवा अणदराव फाकडारा वेटा मुकदराव हमै दोलतरावजीरै खोळै गादीनसीन हुवा।

२०२८ कनेर खेडामू उठ चमार गूदो सिंधिया अपणायो चमार गूदारो नाव श्रीगूदो प्रसिध दायो कियो ।

२०२९ दिखणमें किनेरखेडी उतन सिंधियारी जयाजी, जोत्याजी, दत्याजी तीनू राणोजीरा वेटा राणोजी जनकूजीरा, जनकूजी दत्याजीरा।

२०३० जयाजीरै लुगाई मसूवाई, जोत्याजीरै लुगाई सगुणाबाई, दत्याजीरै लुगाई भागीरथीवाई।

२०३१ सिंधिया जमायानू लोक आरो कहै ।

२०३२ दोलतरायरी वायकू वायजावाई, सरजैरावरी वेटी, हीदरावरी वहन दूजी वायकू रुकमावाई ।

२०३३. सिंधिया राणोजीरै खवासरो वेटो पटेल माघजी केदारजी. सिंधियारी लुगाई मेणावाई जिणसूं पुत्र प्रगट हुवो दोलतराय।

२०३४. माघजी पटेळरी त्रिया पारवतीवाई जिण दोलतरायसूं जंग कियो।

२०३५. भाऊगरदी हुई जद पटेल माघजीरो पग कटाणो. पठाण राणैखां आपरै घोड़ै चढाय ले निसरियो. पूनै गयां पछै पटेळ वडो भाग पायो।

२०३६. दिखणी जगू वापूजी ओ दादोजी लखू ओ दादो किसनजी गोपाल भाऊरायजी पटैल राणोजी वांयठाण वगेरै माघजी पटैलरै ठावा आदमी हुता।

२०३७. हुळकर मलारराव दिखणमे वेटीरो व्याव कियो जद भेळपरै तावै वुलायोड़ां व्याव ऊपर वूंदीसू उमेदसिघजी रावराजा दिखणमें गया हुता।

२०३८. संवत १८२३ रा वैसाख वद ११ मलारराव मुवो।

२०३९. धनगर नराणराव वारगळरी वेटी गोतमांवाईनै विलाड़ै दिवाण मोहणदासरी वेटी ननूवाई दोनू हुलकर मलाररावरी त्रियां सत कियो।

२०४०. हुलकर मलाररावरी लुगाई गोतमांवाई. वेटी वेटो खांडेराव भरतपुररा जाटां मारियो. खांडेरावरै अहल्यासूं पुत्र भालेराव पुत्र हुवो. महा नीच उण मुवां तकूजी खोळै आया।

२०४१. अहल्यारै मूकतावाई वेटी फणसियानूं परणायी।

२०४२. अहल्यारी वेटी ऊदावाई फणसियानू परणायी हुती।

२०४३. कासीराय १, मलारराय २ – दोय वेटा तकूजी हुलकररै।

२०४४. माधवारो वेटो वापू हुलकर।

२०४५. संतावारो वेटो भीखाजी।

२०४६. तकूजीरी तिरियारो नांव रुकमावाई।

२०४७. तकूजीवा १, माघजीवा २, सताजीवा – अै तीत सगा भाई।

२०४८. पाटणकर आभाजीराव वडो उमराव हुवो है. पेसवांरै उठणरो कुरव हुतो।

२०४९. गढमंडळामे गूडरो राज हुतो सो दिखणियां खोसियो।

२०५०. सोलापुररो राजा ढेढ है सो वेडर कहावै हमै हैदरावादरै नवाव सोलापुर ले लियो।

पिंडारा

२०५१. पिंडारा करणाटकरा कदीमसू. पछै करणाटकसूं आया. सांवतांरै चाकर रह्या. आं हिंदुसथान माथै हुलकरांनू विदा किया जद पिंडारा तईनात किया जदसूं हुलकरांरा चाकर ठैरिया पिंडारा।

२०५२ पिंडारारी वाईस ढाल हुलकररै तावीतमे हुती खरडारी राडमें हैदरावादियानू लूटी पिंडारा धनाढ्य हुवा ।

सिख

२०५३ गुरु नानगरै वहन हुई नानगी ।

२०५४ चमार तेगवहादुररै सामल माराणो उणरा सिख रैदास कहावै रैदास गुरदे पास ।

२०५५ मिरासी नाम मरदानो तेगवहादुररै साथ माराणो, जिणरा मिरासी मरदानारा पथरा सिख रवावी है सिख हजारीरो माल उणानू दैवै ।

२०५६ चडाळ तेगवहादुररै साथ काम आयो उणरा सिख रगरेटा कहावै रगरेटा गुरुदा बेटा ।

२०५७ लाहोररो राजा सिख रणजीतसिंघ जिणरै दोय कपू तिलगारा, अेक कपू गोरखियारो, अेक कपू हिदुस्तानियारो, जुमले च्यार कपू ।

२०५८ सिखारी हाल दस लाख बदूक है ।

२०५९ सिख मसीतमें ग्रथसाहब पधराय मसीतनू मसूगढ कहै सेवापथी सिख दयावत विसेस हुवै, सवकी सेवा करै, दुखीकी विसेस सेवा करै भीख न मागै वडी वट नै आजीवका करै ।

२०६० गुरु नानकरा भेखमें अकाली हरामजादा हुवै ।

२०६१ सिख सिखनू कहै — मुडितका विसवास न करणा ।

२०६२ सिख चक्रवर्ती हुसी — ग्रथसाहव कहै है ।

२०६३ सिखारै ग्रथसाहबमें कहै ह — चवदै सौ वरस ताई सिखरो प्रताप वधबो करसी ।

२०६४ चवदै सौ वरस सिखारो राज रहसी — यू सुणीजै है ।

जोगी

२०६५ द्वादस गुरू, द्वादस शिष्य, जुमलै चौवीस कापालिक हुवा है ।

२०६६ उगरभैरव कापाळिकरै नै शकराचार्यरै विवाद हुवो है ।

२०६७ जोगी गरीवनाथ सिववाडी आयो भागढभूतड थका रहै कहै हमीर पतरपुरो जिणकू सिववाडीका राज दे ।

२०६८ अेक दिन चापै पेटियो गरीवनाथजीनू दियो आ कह्यो तू सिहवाडीरो मालक हुसी आ वात सुण रणधीर सिववाडी माहेसू चापानै काढ दियो ओ नगर जाय रावळ वीदारी चाकरीमें रह्यो ।

२०६९. जोगी गरीबनाथजी सोव आसण बांधियो चांपा दूदावतरी वारमें. नागुड़दो भांडरवे गरीबनाथजीरा जोगी है।

२०७०. गोरख टीलासूं पीर नदीनाथजी अखंड वस्ती अटकरै तट वारै तट जठै आण आसण बांधो. सवा लख हिंदू आंरा सेवक है. अटकसूं किलासूं मखंड नजदीक है।

२०७१. मखंडा नवीनाथजीरी गादी पीर सीतळनाथजी. सीतळनाथजीरा चेला हुसियारनाथजी जोधपुर आया संवत १८८५रा सावण सुद १२।

२०७२. मखंडा सीतळनाथजी पीर कहता – जोगी हमारे वरसमें अेक वार आवै सो हमेसा गुरूनै वरसमें दोय वार आवै सो हमारो गुरुभाई।

२०७३. संवत १८८४रा आसोज सुद १५ आयसजी महाराज श्री लाडूनाथजी महा-मंदिर हाथी पचीस दिया- ज्यांरी विगत – हाथी १ भांडियावासरा आसिया वाकीदासनू दियो, हाथी १ मूंदियाड़रा बारट अनाड़सिघनूं दियो, हाथी १ कोटड़ारा वणसूर भैरानू दियो, हाथी १ लोलावसरा बारट गोकळदासनूं दियो, हाथी १ मोरटउंकारा बारट चालगदाननू दियो, हाथी १ भदोरारा सांदू गिरवरदाननै दियो, हाथी १ कंबाळियारा खड़िया जालानूं दियो, हाथी १ मिहरूरा महियारिया नंदलालनू दियो, हाथी १ मथाणियारा बारट वगसीरामनूं दियो, हाथी १ खुरलारा सुरताणिया ·वीजानूं दियो, हाथी १ धडोईरा रतनू केहरानूं दियो, हाथी १ खारावाररा बोगसा सुरतानूं दियो, हाथी १ कसूबलारा बारट सिवदासनू दियो, हाथी १ धबूकड़ारा गूंगा उदैरामनू दियो, हाथी १ भोजग मनोहरदास जोधपुररो जिणनूं दियो, हाथी १ जोधपुररा भाटनू दियो, हाथी १ जोगियांरा भाटनू दियो।

२०७४. नाटेस्वर पथरा जोगेस्वर संतोखनाथजी अंजा भादारो कोढ गमायो।

२०७५. राजेन्द्रगिरजीरो चेलो उमरावगिरि, उमरावगिरिरो बेटो रूपगिरि खिताव दिलावरजग, रूपगिरिरो बेटो रामलालगिरि।

२०७६. कोटै उत्तमगिरजीरा विसणूगिरजी, वखतगिर दोयां चेलां भंडारो आछो कियो आं लारै।

२०७७. विसणूगिरिरै चेलो दयागिरि. वखतगिरिरो चेलो गैबगिरि।

२०७८. सूळी घोड़ी कठपीजरो नागोर आग्या करि प्रभातगिरजी दूर करायो।

२०७९. सन्यासी धूणीगिरि धूणीनाथ कहायो. वीकानेर सूरतसिघजी आंनूं गुरू कर मानिया।

२०८० चितोड मायँ रावत भीमसिंघजी जद आ आगँ समीचा खेडारा सध्यागिरिजी मनीजता ।

वैरागी

२०८१ पूरबमे मकसूदावाद चद्रकाणे रामावतारा वडा असतळ हैं दोय सँ वैरागी सासता रहैं, वटा सदावत दिरीजै है।

२०८२ पूरबमे पढै वैरागी टकसाळी कहावै, अपढे अडवगी कहावै ।

२०८३ वरधमान, अरणघटा आ दोना ठिकाणा नीवावतारा वडा असतळ हैं, वडा सदावर्त दिरीजै है।

२०८४ झालारो वाकानेर जठे कूवावतारो ठाकुरदुवारो हैं ।

२०८५ कवीर सवत पनरासैमे हुवो दादू पहला सौ वरसा पातसाह सिकदरनू परचो दियो सिद्धपुरादिक ठिकाणा नेमीस्वर विहारादिक जिन-मदिर सप्रति कराया गजधर, अस्वधर, नरधर मडित जोतिसिया अरज किवी – आपरी आयु सौ वरसरी है सौ वरसरा छत्तीस हजार दिन हुवा छत्तीस हजार जिन-मदिर सप्रति कराया मातारा उपदेससू आपरी ऊमररा दिना जिता जिन-मदिर कराया जुमलै सवा लाख जिन-मदिर कराया राजा सप्रति नवामी हजार जिन-मदिररो जीर्णोद्धार करायो सगती राजा परमार कलो भरत क्षेत्र राली क्षेत्र जीतो सिंध सौवीर देसरो राजा उदई नाम सो साधू हुवो जैनी ।

जैन साधु

२०८६ हीरविजय सूरि तपगछमें श्रीपूज, जिनचद्रसूरि खरतरगछमें श्रीपूज, अेक समैमें हुवा अकवरनू परचा दिया ।

२०८७ विद्या खरतरारै विसेस, धन तपारै विसेस ।

२०८८ तपागछमें तेरै वैसणा है, खरतरगछमें इग्यारै वैसणा है ।

२०८९ विजयदेवसूरिरा वसरो श्रीपूज जिणरा जती तपामें घणा है उण पछै विजयाणद सूरिरा वमरा श्रीपूजरै जनी घणा है ।

२०९० तपगछरो जती जानविजै महाराज अजीतसिंघजीरो विद्यागुर ।

२०९१ ग्यानविजै तपगछरो जती महाराज अजीतसिंघजीरो विद्यागुरू पळासणी पटै हुती उणरै सारा चेला कपूत हुवा ।

२०९२ ग्यानविजै अजीतसिंघरो गुर, जिणरो चेलो वीरमविजै, घरमें त्रिया घाली ही उणरी बेटी फळोधीरा मयेण श्रीचदनू परणायी ।

२०९३. हीरविजै जिनमतरो टीपणो वरतियो हो. पछै संवत १८४१ रै वरस नागोरी लूंकांरा गछरा श्रीपूज हरखचंद जिनमतरा टीपणारो वरतारो कियो ।

२०९४. कच्छ देसमें कच्छी ओसवाळ कख्खसूरी किया. उवै हमै आधाईक आंचळियामें वसै है, आधाईक तपांमे वसै है ।

२०९५. वीकानेरमे सात सौ घर खरतरगछरा स्रावकांरा है ।

२०९६. जिनदत्तसूरि परचा घणा दिया देवानुग्रहात् ।

२०९७. जिनदत्तसूरिरो पोतोचेलो जिनकुसळसूरि. दादागुरू पोतोचेलो दोनूं दादाजी कहावै ।

२०९८. रूपो-रंगो गुरू भाई. रूपारा वडा खरतरा, रंगारा रंगविजया ।

२०९९. खरतरो जीवण जती अेक महाराज अभैसिघजी आगै मनीजतो. चुगली घणी करतो. चेला इणरै कपूत हुवा ।

ओसवाळ

२१००. रतनप्रभ सूरि पछै कंवळैगछ कक्खसूरि हुवा ज्यां बहतर गोत्र ओसवाळ किया वाघरेचा, वाघसार इत्यादीक ।

२१०१. कवळैगछ रतनप्रभसूरी गांव ओसियामे अठारै गोत्र ओसवाळ किया – तातेड़ १, वापणा २, करणावट ३, वलह ४, मोराक ५, कुळहट ६, विरट ७, लोहड़े साजने ८, श्रीश्रीमाळ ९, श्रेष्ठ १०, संचेती ११, आदित्यनाग १२ इत्यादिक ।

२१०२. श्रेष्ठ गोत्र साखा – वैद्य १, विरट गोत्र साखा भुरट २, बहल गोत्र साखा चोरड़िया ४ ।

२१०३. साह भैसो माडूगढ, हमीर लालाढो इलवर तजारै, सुराणो सोम सैभर, लोढा रामो भैरव दोनूं भाई आगरै, कोठारी रणधीर मेड़तै, मुहणोत जैमल जाळोर, कोठारी आसकरण मेड़तै, परवत लूणियो जाळोर, कांकरियो वालो कुंभळमेर, रतनसी गांधी जाळोर, मलकसी विहारी आगरै, थिरो भंडसाळी जेसळमेर, वछावत करमचंद सगरामोत वीकानेर, कावड़ियो भाभो भारमलोत उदैपुर–अै आछा दाता हुवा ।

२१०४. जगदेव परमाररो वेटो मधुदेव, मधुदेवरो सुर जिणनूं श्रीपूज धरमघोसाचार्य वाणियो कियो. सुररै वंसरा सुराणा कहाणा ।

२१०५. संवत १११५ सुराणा नागोर वसिया ।

२१०६. नागोररै सुराणै सहदेव चूहड़मलोत लाख रुपिया आफरा घरसूं राजमे भर मुहणोत नैणसी सुंदरदासरा छोरू कबीला कैदसूं कढाया ।

२१०७ नागोररो सुराणो पूजो, पूजारो कुजो, कुजारो सतीदास, सतीदासरी वेटी सुसाणी जिणरी सगाई दुगडारै किवी ही उवा कवारी हीज वीकानेररै गाव मोरखाणै जमीमें प्रवेस कर गयी इणरो वडो देवळ है–मूरखाणै इणनू सुराणा दुगड दोनू पूजे है।

२१०८ खाटूरो परमार खीवसी जतीरा उपदेससू वाणियो हुवो उणरै वसरा खीवसरा वीमळपुर अेकण जोधपुररा अेकणरा उदैपुर राणाजीरा कामेती है।

२१०९ पूगळियो मुहतो फळोधी राव हमीररो कामेती राव हमीररी सभामें वैठो उणरै वेटो हुवो जद वधाई दिवी उण वेळा भैरवी बोली रावजी पूगळिया मुहतानू कह्यो–इणरो नाम कोचर दीजो, इणरो घणो परवार वधसी, ओ भागधारी हुसी, यू हीज कियो कोचर मुहतारा हमैं मारवाडमें तीन सै घर है।

२११० अेक जगड्‌ वधमानरो, दूजो जगड्‌ सोळावत हुवो।

२१११ विमळसा उदै भाणरो पोरवाळ।

२११२ वसतुपाळ, तेजपाळ, मालदे, लूणा–च्यारू आसराजरा वेटा।

२११३ वस्तुपाळ तेजपाळ देलवाडै जिणमदिर करायो जिणनू अठारै करोड रुपिया लागा।

२११४ आबू मायँ गाव देलवाडो विमळसाह जिनमदिर करायो जिणनू नव किरोड नै किताईक लाख रुपिया लागा है।

२११५ सरवै तपरो वेटो भैंसोसाह आभानगरी हुवो।

२११६ माडूरो नाम आभानगरी है।

२११७ भैंसोसाह जातरो गवइयो हो जिण सवत ९८८ ।

२११८ अणलपुर पाटणमें गुजरातरा वाणियानू वैक छकिया।

२११९ रायमल वैद मुहतो सोजत हुवो वीरमदेजीरै काम आयो सिर पडिया जूझियो कमध हुय वेटानू मारियो सायर–

मुहता माटी मारका, घररा गणै न पारका।

२१२० पनो वैद मुहतो मिवाणै राणा रायमलोतरै काम आयो।

२१२१ वैद मुहतो पनो अजावत मिवाणै कलाजीरै काम आयो सायर–

पडियँ सिर दीधो पातो कुभट गिरवर।

२१२२. पता वैद मुंहतारै नराणदास ।

२१२३. पळसी वैद मुंहतो महाराजकुमार गजसिंघजी जाळोर लियो जद विहारियांरै काम आयो ।

२१२४. संवत १६८५(?) करमचंद डोमी सैत्रुंजयरो जीरणोद्धार कियो उदैपुरवासी ।

२१२५. मुहणोत नैणसी जाळोर आमल जद बाड़मेररो कामदार कुमो जिणरी बेटीरी सगाई नैणसीजीसू किवी. नैणसी परणीजणनै गयो, खांडो बाड़मेर मेलियो. कमो मूसळ खडग सामो मेलियो. डावड़ी औरठै परणायी. जिण कारणसू नैणसी बाड़मेर हदबाट मेलियो बाड़मेर प्रोळरै कगाररै काठरा किंवाड़ हुता जिके आण जाळोर गढरी पोळ चढाया. सायर—

बाहड़मेर जुगां लग डूबो, कमल्ला - तणी कमाई ।

२१२६. मुहणोत सुंदरदास जैमलोत गांव कवळै सींधल सीवलांरा आदमी कट पांच सै जणा मारिया. पचीस सती हुई वडो राहचक हुवो ।

२१२७. गांव सूजासररो वाणियो जात भंडसाळी करणीरै दरसण आयो इणरो रंग भूरो हुतो. आप फरमायो — आव म्हारा भूरिया ! जदसूं उणरो नांव भूरो प्रसिद्ध हुवो. भूरारै वंसरा भूरा कहावै. देसणोकमें माताजीरा खजानांरी कूंचियां आं कनै रहै छै ।

२१२८. जगनाथ १, रायमल २ — अै दोय बेटा लूणा गोरावतरा ।

२१२९. भंडारी जगनाथजीरा बेटा दोय — अेक जीवराज, दूजो हेमराज ।

२१३०. चतुरभुज भंडारी जीवराजोत है ।

२१३१. गंगारामजी नै वछराजोत भंडारी — अै हेमराजोत ।

२१३२. सिवाणै भंडारी मेघराज रावडैरारी पीढियां लिखते — लूणो १, जगनाथ २, हेमराज ३, वछराज ४, खीवराज ५, जुझारमल ६, मेघराज ७, जीवमल ८।

२१३३ मेड़तारो लूणियो तिलोकचंद जिण रुपिया तीन हजार आपरा घरसूं दिखणियांनू दे नै पुरोहित हरजीवण, भंडारी सोभाचंद नै मुहणोत ग्यानमल, मुहता बांकीदास वगेरै जोधपुररा मुसद्दी आगरै ओळिया हुता ज्यांनूं छुडाया ।

२१३४. भंडारी भगवानदास रायमलोत वीठळदासरो पिता खैराडू राड़ सईदासूं हुई जठै काम आयो ।

२१३५ साहजी सय्यद पटेलरै मुखतार हो जिणरो बेटो मोहमद मीरखा दिली फिरगीरी सिरकारमू पाच सौ रुपिया महीनारा - महीनै पावै मिकल अकल आछी है ।

२१३६ सीघोजी वाघोजी दोनू भाई मारवाडमें आया सीघोजीरै पारसजी नै चापसीजी दोय बेटा ।

२१३७ पदमोजी राणोजी भैरूजी, सोभोजी दोनू पदमाजीरा ।

२१३८ सुखमालजी १, रायमलजी २, रिडमलजी ३, प्रतापमलजी ४, प्रिथीमलजी ५, नयमलजी ६, सुखमलजीरा ।

२१३९ प्रिथीमलजीरा बेटा दोय — विजैमलजी १,   ।

२१४० सीघोजी १, पारसजी २, पदमोजी ३, सोभोजी ४, सुखमलजी ५, प्रिथीमलजी ६, विजैमलजी ७, तखतमलजी ८, धीरजमलजी ९, तिलोकमलजी १०, सुमेरमलजी ११ ।

२१४१ भीमराजोत चापसीजीरा जोरावरमलोत राणाजीरा ।

२१४२ फतैचदजीरा रायमलोत पीपाडरा सिंघवी ।

२१४३ चैत वद ९ सिंघवी धनराज चलियो चैत सुद ९ सिंघवी भीमराज चलियो ।

२१४४ वनो वाघनेर हालाकूडी इत्यादिक ठिकाणा सिंधमें ओसवाळ रहै है ।

सरावगी

२१४५ जैपुर सरावगी मनीराम टूकियो वडो धनाढ्य रहै दोलतरामरा लमकरसू बाधियो ।

ब्राह्मण

२१४६ सुध द्राविड पचधा — वडम द्राविड १, अकडतिमड द्राविड २, वृहच्चरण द्राविड ३, अष्ट सहस्र द्राविड ४ इत्यादि ।

२१४७ श्रीमाळी ब्राह्मण ज्यारा चवदै गोत्र चौरासी अवटक है श्रीमाळिया अणहल्लपुर पाटणमू आणि भीनमाळ मोळवियानू वसाया ।

२१४८ श्रीमाळियारै च्यार फेरा वीद-वीदणी नाय परणै जिण दिन फिरै दूजै दिन सासररा लाडूरा तरा गान वीद वीदणीरा मुखमें दियै, इना ही तरा वीदणी वीदरा मुखमें देवै छै वीदणीनू मळाया माया लेनै च्यार फेरा फिरै ।

२१४९ विणतीक महरमें पान जणा श्रीमाळी श्रीमाळियांरी पचायती करता उवै देवजोगसू पाचू ही गमेरपान हुवा तिणाईक वरमा माहोमाह मनो कियो—

पंचायती कियानूं आपानूं घणा वरस हुवा सो हमै निहचो करो, पंचायती करणी आपै भूला क न भूला. इत्तामे एक ब्राह्मण विनती किवी – आज म्हारै घर आरोगजो. जद आं कह्यो – थारी मा डाकण है जिणसूं थारै घर न जीमा. जद उण कही – इण बातरी मोनूं प्रतीत नही. थां कही तू जागतो सोय घोरावजे, आ थारो रातरै ममै मूंडो सूघसी ।

२१५०. त्रिवेदी १, चतुर्वेदी २, जैठी ३, धीरेजा ४ – इत्यादिक खट मोढ ।

२१५१. नेड़ियाभू पीपरलो पीथराई – अै पलीवाळारा गाव तैमडा करै है ।

२१५२. पलीवाळ जाट धाम नाम तोतो जिण वीकमपुररी हदमें गाव वाप वसायो. तोतारा बेटारी विगत – भवडो १, लखो २, वेहरो ३, मेघो ४ – वापमें मेघडासर तळाव करायो ।

२१५३. कनोजियामे व्यास पदवी नही, मरवरिया व्यास कहावै है ।

२१५४. गौतम-गोत्री श्रीमाळी, गर्ग-गोत्री पोहकरणा ।

२१५५. महेस्वरियारी साढी सात जातरी विग्न पोकरणा छोगाणियारै है हाल नक ।

२१५६. व्यास तेजो, गंगो, तिलोकसी तीनूं सगा भाई तेजारो तापी, गंगारो गिरधर, तिलोकरो कछरो ।

२१५७. गंगाराम-सुतेनाऽत्र द्विजेन हरिशर्मणा ।
कृतस् तार्क्ष-पुराणस्य सारोद्धार-समुच्चय. ।।

२१५८. गगारामरो वेटो पारीक हरदेव ज्यारा वसमे प्राणनाथ वीकानेर दरवारमे कथा करे हमै ।

२१५९. हरजीजी, हरदेवजी सगा भाई. मेड़तै लोकमणजी आंरै कड़ूवै भाई-भतीज लागै ।

२१६०. डडी श्रीधर चितोड़ा नागररो दूध हुतो ।

२१६१ पारख गोकळ मोढ जातरो वाणियो हो गुजरातरा सेठ खुसालचद अभया-दासरो गुमासतो दोलतराय आगै कुलकुला ।

२१६२. भागरा जातरा रैवारी खारोड़ा हुवा. उवारै हाथ देवळजीरा खजानारी कूचिया रहती ।

२१६३. मारोतरा जातरा, मलिक खिताव, सगा भाई दोय ललू १, जगता २ वडा धनाढ्य मुलतानमे हुवा ज्या खत्रियारै वहन बेटीरो नातो होण दियो नही, पातसाही आग्या उथापी ।

२१६४ नाहर डैररा भील सिदूररी आड किया, कमरे गूघरमाळा वाधिया वैस नै पगा धुणामे पाल तीर चलावै झगडै गाढा अलवाणा पगा अेक वैत च्यार आगळ भाळ तीररी, अढाई आगळ भोई ।

२१६५ पहाडमे नीवार जात हिंदू भैसो मार खावै है नीवारानू मार नै सिसोदिया नैपाळ लियो ।

२१६६ धनगरारी जाता लिखते – हुलकरी १, वारगल २, वाघ ३, वाघमारिया ४, ढमढेरिया ५, भागवत ६, सैनगिया ७, खोळिया ८, गाडला ९, घोरापत १०, खटकिया ११ इत्यादिक गाडरी वनगर कहीजै ।

चारण

२१६७ दागल १, गोलमा २, मीसण ३ – अै तीनू भाई है ।

२१६८ टापरिया १, मिहड २, केसरिया ३ – तीनू मकुआणा माहेसू निसरिया माहेमाहे सबध हुवो छै ।

२१६९ रोहडियारी बारै साखा – रोहडिया १, घूना २, कुरडिया ३, पायेड ४, धीरण ५, मावळ ६, मीकस ७, कळहट ८, हाहणिया ९, वीठ १०, भाणू ११, गूगा १२ ।

२१७० महियारियामे सुदरगाई बैलाई कहावै कदीमसू कुळदेवी जाणगाव सादुवारै महमाय वरदेवी छै ।

२१७१ पहला नरूका मुजरो करै, पछै आढा सुभराज करै ।

२१७२ मोरठिया वडा चारण है सासणारा धणी ।

२१७३ बारट ईसर सूरावत, सूरो दीतावत ।

२१७४ सीवाणो १, हाफा २, वीरवद्रका ३, राजपीपळा ४, कुहाटिया ५, इत्यादीक ईसर पोतारा गाव हालाहारमें ।

२१७५ मादू गोयद १ राव गागाजीरै काम आयो ।

२१७६ सादू चागारो गोयद, गोयदरो ऊदो, ऊदारो माळो, मालारै च्यार बैटा हुवा – जसवत १, मावनसी २, ईसरदास ३, आसकरण ४ ।

२१७७ लाडणू परै गाव जोगठियै सामोरारो वास जठारै सामोर महेसदास महाराज गजसिघजीनू राजी कियो ।

२१७८ डणरो भनीज हेमो गणेसदासरो बेटो जिण जोवनेर जाय महाकाळीरो वर पायो, चत्रभाषरूपग वणाय गजसिघजीनू रिझाया ।

२१७९. भीमराजरा वंसमे आसिया हरराम उदैभाणोत हुवो ।

२१८०. गांव जोगलियारो मामोर महेसदास जिण महाराज गजसिंघजीनूं जीभ दिखाड़ी. महाराज मामोरांरी जानमू ऊदावत हुवा. महेसदासरो भतीजो हेमो, गणेसदासरो वेटो जोवनेर जाळपादेवीरी क्रिपासू विद्यावान हुवो. भाखा चत्र रूपग महाराजरो वणायो ।

२१८१. वेलारो अमरो, अमरारो राणो, राणारो सूरो, सूरारो करमसी, करमसीरो वैरो नै कांवळ, कांवलरै भीमराज जिण दारोली नै जीतावास दोय सांसण पाया ।

२१८२. वैलो १, अमरो २, राणो ३, सूरो ४, करमसी ५, कांवळ ६, भीमराज ७, अखैराज ८, उदैभाण ९, हरराम १० जीतावत हुवो ।

२१८३. भारमल १, सादूळ २, जगमाल ३, किसनो ४, कमो ५—पाच वेटा आढा दुरसारै हुवा ।

२१८४. भारमलरा गांव पेसुवै १, जगमालरा गांव झारवां २, सादूलरा गांव लुगीमे, किसनारा गांव पांचेटियै, रायपुरियै ।

२१८५. भारमल दुरसावतरै च्यार वेटा हुवा—रूपजी १, भीमजी २, नंदोजी ३, चदोजी ४, वडी डोढी रूपजीरी चालक नै चरोमढ रूपजीरो डोडीमे ।

२१८६. वरायळ १, हींगोळो २, लासोळ ३, पांचेटियो ४—च्यार गांव किसनै दुरसावत पाया. किसनारै वेटा दोय—महेसदास १, मेघराज २. वरायळ, हींगोळो मेघराजरै रह्या. पाचेटियै । -

२१८७ पसायत गाडणरी वेटी नाम मेली आढानू परणायी. मेलीरो सावकुत वेटो हो जिणनूं मार पसायतरा वेटां आढांरी जमी अपणाय गांडणां वसायी वाय कनै ।

२१८८. लालस पीरदानरी वहन नाम कामळ. उवा गांव खारड़ै महेवामे वारट कुंभानू परणायी हुती. वडो धन हुतो. लालसजी कहाणी. वडा लाहा लीधा ।

२१८९. संवत १७८४ जेठमे राणै अजैसी सोदा वारूनू प्रोळपात कियो चितोड़ ।

२१९०. महपैरा धधवाड़ियै धधवाड़ासूं चितोड़ जाय सांगा राणानूं रिझाय गांव ढोकळियो लियो सवत १५५३ सासण पायो ।

२१९१. मूळीरै धणी सोढै रतन ऊंगा-आंयवियां ताई मीसण परवतनूं कोड़पसाव दियो. पचास लाख नगद, पचास लाखरो भरणो नै लाख रुपियांरो माल नवैनगर वाई सोढीनूं मेलियो ।

२१९२ गाव राडद्रहरो दुगहदो महिरेळण रायपाळ घूहडियारो दत्त चद पायो ।

२१९३ महावड निकस काछेलानू कूपै मलीनाथोत दियो ।

२१९४ कपार तळाव मडावेर काछेलारो वीत जीवण सादू कूपैजी खिणायो ।

२१९५ राणै परताप लखा बारटनू गाव मनसुओ दियो ।

२१९६ कवियो गगादास रूपसिघोत गाव वासणीसू उठ गोड वीठळदासजी कनासू गाव कुभारियो तावापत्र दियो ।

२१९७ रावत वळू नगर हुवो जिण देवानू गाव मुडग्वळो दियो ।

२१९८ गाव धूधाउर रावत खीमकरण जैतमालोत रोहडिया कान्हनू दीनो ।

२१९९ गाव बोर रावत खीमकरण जैतमालोत चारण कूपानू दियो ।

२२०० गाव पडगनै वडगाव सासण चारणानू गाव कुहाडी आसिया दला सोभावतनू देवडै रामै मेघराजोत दियो ।

२२०१ गाव डोडवाडियो सवत १६९१ देवडै चतुरै चारण पता जोधाउतनू दियो ।

२२०२ गाव जालहेडो देवडा राव मानसिघ, दूदा, अखैराजोत, जगमोतगे दत चारण निभवणनू ।

२२०३ गाव पुळियो राव सुग्ताण भाणरै दियो ।

२२०४ महियारिया लिखमीदासनू रावजी माधोसिघजी चोईस गावासू तुणपुर दियो ।

२२०५ कोटारै गाव माधोसिघ चौईस गावासू तुणपुर लखमीदास महियारियानू दियो ।

२२०६ मीसण ईसरदासनू गाव बाटासू हीरणा क्वरपदै भोज दिवी हाडावा नेग दियो ।

२२०७ ठीकरियो मिहडू वळूनू रावराजा चत्रसाळजी दियो ।

२२०८ नीलराहडो कविया गगादासजीरै पटै हुतो सो श्रीजी उमेदसिघजी मिहडवानू दियो ।

२२०९ बारा गावसू गाव हिरणा मीसण ईसरदासनू दियो भोज कवरपदै बूदीरा नेग दिया ।

२२१० कवियो गगादास रूपसिघोत वासणीसू उठ गौड वीठळदासनू रिझाय गाव कुभारियो मालपुरारो सासण पायो ।

२२११ इणनू गाव मोरटहूको राजा भोज सासण दियो नीलहडो पटै दियो ।

२२१२ सैसपुरी वावी वनवा — अै बूदीरा रावराजारा दियोडा गाव सगेलिया भावूनू ।

२२१३. मीसणनू सासण खंडेला खड़ीसो अेक, पुररा घोड़ा दो वूंदीरी हुईन गांव हरियाणा हाडारो दियोड़ो ।

२२१४. चावड़ पूजै वनरलोत सासण देवरा हरण दियो ।

२२१५. राव खगार कछमे तूवेरांनूं साठ सासण दिया ।

२२१६. मोटैरो १, सैंग्रावड़ो २, पीपार गुडो ३, माणको ४ – इत्यादिक गांव कलहरांरा धाणाधारमें विहारियारा दियोड़ा ।

२२१७. हरभमरो पातल, पातलरो दामो, दामारो भाखरसी जिण गाव आगड़ाऊओ रोहड़ियांनू दियो ।

२२१८ दूदा जोधावत कनै वारट पातो महराजोत खोरीसू गयो जद चारणवास दूदैजी पाताजीनूं दियो ।

२२१९. नागोररो गाव डैहरवो सूडायचांनू राणै सगर उदैसिघोत दियो ।

२२२०. सरवाड़रै परगनै गांव गुदाळी भादानू परमारा दियो ।

२२२१. सेखावत मनोहरपुररै राव पालावत वारट गिरधरदासनै गोविंदपुरो दियो. भूधरदासनूं हणमतियो दियो, केसवदासजीनू किसनपुरो दियो, वनमाळीदासजीनूं कल्याणपुरो दियो ।

२२२२. कछवाहै रूपसी वैरागर कविया अलूजीनूं गाव जसराणो सासण कर दियो. सो मारोठरा गेडा जसराणो वैताळीस जवत राखियो. पछै मेड़तिया रुघनाथसिघजीनू मारोठ पटै हुई जद रुघनाथसिघजी जसराणो कवियानू दियो ।

२२२३. मकराणारो धणी कछरो करमचंदोत जिण चौरासी गावरी चौथाई चारण, भाटा, वामणांनू दिया ।

२२२४. हरळाया वधाउड़ै घोड़ारणियै दासोड़ी भोजा रतनू है ।

२२२५ मीमण अणंदनू धायलजी पोळपात कियो ।

भाट

२२२६. राजोरा भाटानू सुरताणपुरो वेदळारा रावरो दियोडो है, सुरजणियावास राणाजीरो दियोड़ो है ।

२२२७. टाक जातरा भाट ज्या मांहे पाळूपोता सेखावतांरा ताटीसेवी ।

२२२८. टाक विष्णुदासोत राजावतारा ताटीसेवी. टाक काळू करमसीरा नरूकांरा. ताटीसेवी ।.

प्रकीर्णक

२२२९ अेक सौ तुरी अेकै दिवस सूरै सपलाण दिया मेवाडरो गाव आदोळो जठै गलूंडियो सूरो नगराज हासावतरो जिण भोजगानू सौ घोडा अेक दिन दिया ।

२२३० मगतो ओसवाळ ओसवाळारो है जिको वीकानेरमे भ्यारियो कहावै ।

२२३१ म्रतक ओसवाळ आगे झालर बजावै उवै ओसवाळ उवानू पुष्परो दै ।

मुसलमान

२२३२ नजूमिया अगाऊ नजूमरी किताबामे लिखियो हो–आखर जमानारो पैंगबर सुतर सवार होसी ।

२२३३ सो मुहम्मद हुवो मक्कासू कुरेसी तीन सै तेरह मुहम्मदरै साथ मदीनै आया उवे शेख मुहजर कहाया ।

२२३४ अगाऊ नजूमिया किताबमे लिखियो हो इत्ता वरसा आखर पैंगबर जनमसी, सुतुर सवार होसी ।

२२३५ नबियामे सुतर सवार महमद हुवो ।

२२३६ नजूमिया प्रमुख मेछा ज्यारो वचन है–आसमानरी जवरी देखो मसूरान्न खावा वाळो, ओठो दूध पीवा वाळो अरबरो आदमी आपरी किवी किताबरो जहानमे मत चलावण लागो ।

२२३७ मौलवी इग्यारै कवीला सहित महमद साथै मदीनै आय वसिया ।

२२३८ तीहामा गावरो वासी महमद पैंगबर मक्कासू महमदरै साथ आया मदीनै उवै सेख मुहाजर मदीनारा सेख अनसारी कहावै महमदरी उमत ।

२२३९ मदीनारा सेख अनसारी कहावै ।

२२४० दुह्ह कुतुब आसमानरा आधार है–नजूमी कहै ।

२२४१ जवनारा नजूममे कहै है–आसमानरो बारमो है सो बुरज खरबूजा है लकीर ज्यू यू आसमानरै बुरज है रामरो नाव बुरज जावन्या ।

२२४२ मुसलमानरै किताबामें लिखै है–अगरेजारै आगै रूमरो पातसाह भाजि हिलबमें जावसी, पछै इमाम महदी हुसी, कित्ताहीक वरस पातसाही करसी, पछै अगरेजारै हाथ ओ सहीद पछै कयामत हुसी ।

२२४३ मक्कारो नाम अरबीमें अेसरव ।

२२४४ मदीनारो नाम वतहा ।

२२४५. मुहमद मुवां पछै छटै महीनै खातून जन्नत हुई ।

२२४६. मुरकब सैपुर कैवरांरी लड़ाईमे महमदरै आयो हो सो महमद मुवां पछै घास दाणो पाणी तज तीजै दिन मुवो ।

२२४७. अलीरा खुदा न मे दानम. अज खुदा जदो न मे दानम ।

२२४८. अहमद महमूद अै दोय नाम पेकंवररा फरेस्ता पढै. महमद ओ नाम पैगंवररो जमी ऊपररा लोक पढै ।

२२४९. फार कलीता ओ महमदरो नांव तोरेतमे है, याजुन माजुन ओ नांव महमदरो अंजीलमे है ।

२२५०. मैहम नबीनै वडै पीर किणनू ही सराप न दियो. मुहम्मद ईसम, अवुल वासुम लकव, मुस्तफा खिताव ।

२२५१. सूरत नूर १, सूरत फिजर २, सूरत इखलास ३, सूरत तुलवर ४ इत्यादीक सूरतां कुरानमे है ।

२२५२. कुरानमे खुदा कहै है – वोल महमद खुदा १, खुदा किसीसे पैदा हुवा नही २, खुदासू कोई पैदा हुवा नही ३, जात जमातसू पाक खुदा ४ ।

२२५३. कुरानमे कहै है – रोजा राखै, नमाज पढै, नित खुदारो जिकर करै सो खुदा कहै, म्हारो वंदो ।

२२५४. कुरानमें कहै है – मुसलमानरी त्रिया विधवा हुवां पछै मनमें आवै तो च्यार महीना दसां दिना पछै अन्य पुरससू निका करै, दूसण नही ।

२२५५. सेख, मुगल, पठाण – आं तीन खांपारै आ रीत है – कुराणरी अग्या मुजव पितारो चाळीसो कर अवृद्धा मातानू पुत्र जाय कहै – म्हारो पिता थारो भरतार मर गयो उण माथै ईमान राख तू-वैठी रहै तो भलां ही, नही तो थारा मनमे आवै जिणसू निका कर. पछै उणरी मातारै मनमे आवै ज्यू करै ।

२२५६. अळी जीवता खातून जनमता मर गयी जिणसू सईदांरै आ रीत नही ।

२२५७. मुसळमानारै कहै है कितावमे – पुरख आपरी त्रियासूं भोग करै गुदा तरफ तो उणसू कियो निका सो टूट जावै ।

२२५८. यवनरै चाळीस हाथ कपड़ो चाहीजै म्रतक सरीरमे. जनाजा कहै म्रतकरथीनू यवन ।

२२५९. ईदुलजुहा वकरीदरो नाम. ईदुलफितर रोजा ईदरो नाम ।

२२६० चित्र लिखणो, मूरत वणावणी मुसळमानांरै मनै है ।

२२६१ यमनरा पातसाहरी वेटी परीजादी, वलक्सि नाम, जिणनू पातसाह सुलेमान परणियो ।

२२६२ वलकिसरी भुवारी नजर घणी दूर पहुचती ऊची जायगा माथै वैठी निगा राखती, कित्ताईक कोसा नजर पहोचती पर चकरी खवर देती अेक समै सनुवा वृक्ष काटि हाथमें ले लिया इण देखि भाई पात जिणानू कह्यो– वृक्षारो लसकर आवै है उण वात न मानी पर चक्र सहरमें आयो फतै पाय ऊभो वलकिसरी भुआनू पकडी पूछियो–इत्ती रोसनी चसमरी किण कारणसू इण कह्यो–पहला म्हारी मा आखमें सुरमो घालियो जिणसू दूर नजर दोडै सनुवा इणरी आखा काढि निगै कीवी आखारै हेटै सुरमारो दळ जमियोडो हो ।

२२६३ याकूत जजीरामें आदमनू खुदा पैदा किया उठै गेहू पैदा कियो उठासू काढि सरनदीप जजीरामें आदमनू राखियो ।

२२६४ याकूत जजीरामें रूमरा पातसाहरो अमल है आगै तुरगारी वढी आफत हुती इण जजीरामें ।

२२६५ अथ यवनारा तीर्थ लिख्यते – मक्को १, मदीनो २, करवलो ३, वगदाद ४, स्थान जफ ५, काजमैन ६, ममहद ७, रूकनावाद ८, वैतुलमुकद्दस ९, तखत रसुल आलमीन १०, कोहनूर ११, दमिस्क १२, कोहे लुवनान १३ ।

२२६६ अथ नवी पीरा प्रमुख यवनारो प्रसग दौलतावादरो जामें पीर जरजरी जर वक्स १, दौलतावादरै किलाम पीर साकडे सुलतान २, औरगावादमें पीर वुरहानुद्दीन ३, अेलचपुरमे पीर रहमान मादुला ४, गिडदमें पीर वावा फरीद ५, अल्वरमें पीर ईमानसाह ६, वासममे पीर दावलसाह दरियाई ७, हैदरावादमे मुरतजा अली ८, मिरचमे पीर मीदामसता ९, पूनामे सेख सलाउद्दीन १०, पूनामे वुरहानसाह ११, वीजापुरमे पीर अमीनुद्दीन आला १२, नजरवागम पीर आमासाह १३ ।

२२६७ गोस १, कलन्दर २, कुतव ३, अवदाल ४ – इत्यादीक अवलियारा भेद है ।

२२६८ अजमियावी रमजान पैगवरकी मोज जो वहावै लात मसान उजानी तीनू योत मासमें होसी ।

२२६९ नासीरद्दीन चिराक दिल्लीरी दिल्ली अवलिया हुवा है ।

२२७० सुलतान नासरोन कुतुब साहिव दोनू मुरीद ख्वाजा मुईनउद्दीनरा ।

२२७१ नागौर हीरावाडीरी पोसाळामें हमीनुद्दीन रह्या तिण जतोरा भेसमें ऊमर पूरी करी इणनू दफनाया हमीनुद्दीन नागोरी ।

२२७२. सेख हमीदुद्दीन रेहानी १, सेख हमीदुद्दीन खोही २, सेख हमीदुद्दीन खालिस ३, सेख हमीदुद्दीन मुवैलिस ४, सेख हमीदुद्दीन कांसालेस ५ – यां हमीदांरी रैलत नागोरमें हुई. सेख हमीदुद्दीन नागोरीरी रैलत दिल्लीमें हुई. जवन कहै सातूं हमीदांरी रेलत नागोरमे होती तो नागोर खुर्द मक्को होय जातो।

२२७३. ख्वाजाजीरै चौरासी सागिर्द ज्यां माहे तरकीनजी गिणीजै सारांसू छोटा।

२२७४. ख्वाजैजी मुलतान, सुलतान तारकीन कहि वतळाया. अरथ पातसाह त्यागियूका।

२२७५. ख्वाजैजी जमात सहित नमाजमे रजू होते जद तारकीनजी इमाम होते नमाज गुजरा सरवां दवा मागि ऊंचो जोवते जद अरसको कांगरो सारांकै नजर आवतो. ओ भेद पाय ख्वाजैजी मुलतान तारकीननूं कह्यो – तुम हमको ठगे सो हमकू आपका सागिर्द न किया आप हमारे सागिर्द होय. ने फेर कह्यो – तुमारी औलादकै अर हमारी औलादकै परसपर परणीजणा परणावणा होहिगा।

२२७६. ख्वाजाजीरा पोता नै ख्वाजाजीरा मुजावर सारा सीया होय गया हमै आगै च्यार वारी हुता।

२२७७. गुजरातमे तुरकिया वोहरा सारा सीया है. मुसळमान कहै – सीयांरै मुकर दोलत होय, सुन्नी फतैनसीव होय।

२२७८. इलवरस्याई रसूलस्यारी गादी हिनीफस्या, हिनीफस्यारी गादी फिदाहसन, फिदाहसनसूं खलता कीवी रावराजा वखतावरसिंघ।

२२७९. पातसाह लोदी वहलोलखा जिण मुलतानमे मोलवी सेख यूसफनूं वेटी परणाय दिवी नै कह्यो – धन्य भाग म्हारी वेटीरो जिणरै इसो विद्यावान भरतार।

२२८०. सिंधमें लकारी सइयदांरी मानता विसेस है।

२२८१. अमान हजरत अवासकूं लखनऊरो नवाव विसेस मानै।

महदी

२२८२. पूरवमें जीवणपुर सहर जठै महदी हुवो नवीअत महमद ऊपर खतम हुई. व वलायत महदी ऊपर खतम हुई।

२२८३. महदवी कहै – कुराणमें आयत है महमदकी रैलतसूं नव सै पांच वरसां महदी दावो करसी।

२२८४. कितावमे महदी कहै – जिण दुनियामें महमदनूं भेजियो उणरो भेजियोड़ो हूं ही दुनियामे आयो छूं।

२२८५ नवाज गुजारनै हाथ पसारै नही महदवी ।

२२८६ रमजानरी सत्ताईसवी तारीख सारी तारीखामे उत्तम मानै ।

२२८७ दूजा मुसळमान सारा महीनारी सत्ताईसवी तारीख उत्तम गिणै ।

२२८८ महदी नावमे बैठा तरीरै राह किणही विलायतनू जावै इणरा मुरीद नाव बैठा किताईक कोस गया नाव दरियावमे डोलण लागी नावमें बैठा जिका धूजिया महदी कह्यो—यूनस पैगबरनू मच्छी मात दिना पेटमे राखियो, पछै खुदारी आग्या उगळ दियो, मोनू निवाजस हुई नही जद वही हुई—महदीरो तोनू दीदार होसी इण वचननू साचो करण खुदा नावनू ऊची करै है, मच्छी जळ माहेसू परवत परिमित सरीर जाहिर कियो है सो मोनू देखी जलमे लीन होय जामी, नाव डुलती रह ज्यामी यूहीज हुवो ।

२२८९ महदीरी औलादसू आल वहोत है महदीरै वसरा पीरजादा कनै महदवियारा दिनरी किताव है ।

२२९० पठाण महदवी विसेस है ।

२२९१ कुराणरा हदीसरा सरारी विद्दत मेटण महदी जनमियो—महदवी कहै ।

२२९२ महदवी दरवेसारो थान दायरो कहावै, तकियो कहावै नही ।

२२९३ गुजरातमें महदवी घणा रहै दिखणमे घणा रामराजारा देसमे देसमें महदवी है ।

२२९४ कपडा वगैरै चीजारो व्यापार ज्यादा करै ।

२२९५ रातरो भजन विसेस करै ईरानी तूरानी गैरमहदी कहै महदवियानू ।

२२९६ हैदरावादरा नवावरै कानडी वेगम उणरो गुरु मौलवी महदविया मारियो चदूलाल हैदरावाद माहेसू लोक चढायो महदवियारो गाव चतुर गुडा माथै गयो महदी मारिया गया लाखा रुपियारी दोलत लुटाणी ।

पठाण

२२९७ वनी इसराइल यूसफरो भाई जिणरै वसरा पठाण—पठाणरी जात लिखते—सूरी १, सरवानी २, खिरचाती ३, लोदी ४, वावर ५, गिलजी ६, मीराजी ७, तोपा ८, करमली ९, वरली १०, लगा ११, मोहा १२, असाल्जई १३, ईसपजई १४, महमदजई १५, वारकजई १६, सदोजई १७, यसाल्जई १८, दराजई १९, काकडजई २०, तोआजई २१, उमतरानी २२, समानी २३, गोरी २४, खिल्जी २५, आफ्रोज २६, उमरखेल २७ आफरीदी २८, महब २९, वगस ३०, नूरजई ३१, लोहानी ३२, वानो ३३

विहारी ३४, पणी ३५, गजफूर ३६, तरनी ३७, मुसाखेल ३८, बुदैलवार ३९, दिलाजाक ४० ।

२२९८. अेक समै हसनवसरी १, वीवीरा विया २, सेखमकी कवलकी ३, मालिकदीनार ४ – च्यारूं अवलियांरो मिलवो हुवो हो ।

२२९९. पणी पठाणारी बावन खेळ है ।

२३००. पणी सेरसाहरै वखतरो है. विलायतसू हिंदमे आया ।

२३०१. पणी नागड़ भाई है ।

सीदी

२३०२. अंवर कंवर अयाज रयाज वगेरै सीदियांरा नाम है ।

२३०३. अयाजनू केई कहै सीदी. केई कहै कसमीररा राजारो कंवर, खूवसूरत ।

ख्वाजैजादा

२३०४. कासमीररा उठियोड़ा मुसळमान ख्वाजैजादा कहावै ।

तुरकांरी जात

२३०५. उजमक़ १, किलमाक २, कजलवास ३, ताजी ४, चंगेजखानी ५, हस्तरखानी ६, सीरानी ७, ऊव ८, मुगल ९, चिकता १०, गुरगानी ११, सुबतगी १२ ।

अलाउद्दीन खिलची

२३०६. अलाउद्दीन कहो – गोड १, चोळ २, गाजणो ३, कनोज ४, मरहट ५, पलाड़ ६, सिध सपादल ७, गूजर ८, सोरठ ९, माळवो १०, चंदेरी ११, मांडव १२, सारंगपुर १३, रणथंभोर १४, चितोड १५, नागोर १६, मणिपुर १७, मथूरा १८, अंतरवेद १९, काकपुर २०, भुजपुर २१, उड़ीसो २२, हिदुसथान २३, जाळंधर २४, कसमीर २५, कामरू २६, हिमाचळ २७, खुरासाण २८, ठठा २९, मुलताण ३०, चीण ३१, भोट ३२, तिलंग ३३, वंग ३४, विदरभ ३५ – इत्यादिक ठिकाणा अलाउद्दीन जीतो ।

२३०७. तुरकां वतै हिदुआं गमियां न जाय २० वतै हुत ।

२३०८. रळियो भायल आगेवाण होय भीनमाल माथै अलाउद्दीनरी फोज ले गयो. पैताळीस हजार श्रीमाळियांरा घर धनाढ्य चहुवाणांरी वणायी ब्रह्मपुरी ।

२३०९. देवगिरिरै राजा रामदे बेटी दिवी अलाउद्दीननूं ।

२३१०. अलाउद्दीन गिलची लोक खिलची कहै ।

तैमूर

२३११ अमीर तिहमूर बलख सहरमें पाट बैठो ।

२३१२ अमीर तिहमूररो वेटो मीगसाह साहजादो थको मुवो ।

२३१३ जात मुगल बरलास नख चकता गोरगा ।

बाबर

२३१४ हिंदरो पातसाह लोदी इब्राहीम, सुलतान सिकदररो बेटो, सुलतान बह-लोलरो पोतो, जिणनू बाबर मारियो ।

२३१५ सुलतान इब्राहीम दाना वजीरनू मारियो, अनहरखा काकानू उदास कियो, कोल तोडन लागो, झूठ बोलण लागो, दारू पियै थो, पर स्त्रियासू गवन करतो, जगतनू वेराजी कियो बाबर जिसी आफत इब्राहीम माथै आयी ।

२३१६ पाच हजार वरकदार, बारै हजार सवार उजवक मुगलारा साथ ले कावुलसू पाणीपत आयो उठै ही सुलतान इब्राहीम आयो सात हजार पठाणासू खेत पडियो सुलतान इब्राहीम फतै बाबररी हुई ।

२३१७ बीकानेर, सिरोही, मेडतो, गागुरण, बूदी, भीलवाडो, आबेर, मेवाड, माळवो, रायसेण, चदेरियारा ठिकाणारा मालक, अजमेररा जमीदार, मेवाडरो लोक सू सागै सीकरी बाबरसू जग कियो जोधपुररो धणी साथ नही हुतो जिणसू फतै हुई नही सागा राणारी सुलतान इब्राहीमरो साहजादो, डूगरपुररो रावळ—अै पिण सागा राणा कनै हुता ।

२३१८ सेरसाह तमाम पठाणासू अेको कर बिहार देसमे फिसाद किवी दिलीरो राह बद कियो हुमायू अै समाचार सुण चाकरारी सलाह लोपी, वरसातमें सेरसाहसू जग करण चालियो सेरसाह जग करि जण नै खिस गयो पछै पाछली रात प्रभातरो पाछडी ऊपर आय पडियो हुमायू सभाय सकियो नही कवीला छोड भागो नीठ लाघि नीठ वचियो धणो लोग नदीमें डूब मुवो ।

२३१९ माळवा-गुजरातमें, बगालमें पहलै हुमायूरो अमल होय गयो हो गुजरातरा थाणा छोड हुमायूरो भाई मिरजा अमकरी जाय सेरसाहसू मिळियो ।

२३२० हुमायू दिली आयो भायारी फूटसू नै सेरसाहरा डरसू सिधमें गयो भाई इणरो लाहोर पातसाह होय बैठो ।

२३२१ सेरसाह दिली आय पातसाह हुवो पछै लाहोर गयो लारै घर माहसू हुमायूरा भायानू काढ दिया सिध मुलताना ई जबत किवी ।

२३२२. हुमायू सिधसूं राव मालदेजीरो बुलायो फळोधी चिराई आयो. वात दगा भरी देखी. उमरकोटनू गयो. पछै सिध लांघि ईरानमे इसपाहन गयो ।

२३२३. ईरानरै पातसाह खधार गजनी कावुलमे वदखसा हुमायूरो अमल कराय दियो ।

२३२४. गुजरात घघ विण सौ देस लड़ि-लड़ि लिया सेरसाह ।

२३२५. काळिजररै गढ लागो सेरसाह. उरड़ आघो गयो गढ माहला हल्लारै वखत सोररा होका उपरसूं नाखिया. नीचै सोर हुतो सू आंग पड़नासूं भभकियो. सोरसू वळ सेरसाह मुवो ।

२३२६. सेरसाह सांचो, सीळवंत, आदिल, नेक, नीतवंत, खबरदार अवलियो रैतरो पीहर, सिपाहरो मित्र, चाकरां ऊपर मिहरवान वडो पातसाह हुवो ।

२३२७. पाट इसलामसाह बैठो. वडो पातसाह हुवो. सो देस वारे पजवनमे रह्या. इण मुवां इणरै पाट इणरो वेटो गढ गवालेर वैठो. पछै इण डावड़ारो मामो सेरसाहरो भतीज नै जमाई सो इसलामसाहरा वेटानू मार गादी वैठो जिणसू दिली, लाहोरमे सेरसाहरा भतीजजंवाई पातसाह होय वैठा. पूरवरा ठोड़-ठोड जुदा-जुदा पठाण आप मतै हुवा. जद पातसाह हुमायूं सोळै वरसरो विखो काढ दिली ऊपर आयो. सिकंदरसाह जंग करण आयो. सो जंगमे घणा पठाण मराय भागो ।

२३२८. हुमायूं दिली आय तखत वैठो. कितोईक कनलो देस जवत कियो. सिकंदर-साह लाहोररा पहाड़ांमे पैठो. इण ऊपर साहजादो अकवर नै वहरामखां हुवा. जाय लाहोर लिवी. पहाड़ा ऊपर चलाया. उण समै पातसाह हुमायू दिली पुराणीरा कोटरी मैड़ीसू पड़ि मुवो. आ खवर लाहोर पहोची. कला-नोरमे अकवर तखत वैठो ।

२३२९. दिलीमे सूवै उमराव हुमायूरा हुता ।

२३३० गवाळेर मवारजसाह अदली पातसाह हुतो. तिणरै सारो चलण वाणिया हेम ढूसररो हुतो. तिको वडो दातार, जूझार सिरदार हुतो तिण वडी-वडी लड़ायां करी. पठाण जेर किया. मवारजसाह दुखी हुतो जिणसू वडो सामान करि दळ वळ करि हेमू ढूसर दिली ऊपर आयो ।

२३३१. दिलीसू अकवररा ऊमराव दळ ले हेमु सामा आया युद्ध हुवो. आखर हेमू जीतो अकवररा उमराव हुमायूरी लोथ ले, पातसाहरा कबीला ले, अकवररी तरफ चालिया. हेमू दिलीमे अमल कियो. मवारजसाहरै पूत नही हो नै आप चाकर नही हुतो जिणसू हेमू ढूसर दिली तखत बैठो. राजा विक्रमाजीत कहायो. ओ खिताव पायो ।

२३३२ आ खबर पाय अकबर आगै फोज मेली दिली तरफ बहरामखारी सल्लाह उदी अकबर पाछै आवै हेमूनू खबर हुई उण समै हेमू कनै पचास हजार सवार, वीस हजार पाळा, हजार हाथी, हजार गाडी तोपखानारी ।

२३३३ अकबरनू दूर जाणि ममलत चूकि तोपखानो अकबररी फोज सामो पहला वहीर कियो सो तोपखानो दिलीसू तीन कोस पाणीपत पायो हेमू चढणरी त्यारी करतो हो उण समै अकबररी फोजरा हरोळ हलकार करि अजाणिया तोपखाना माथै आय पडिया लोक तोपखानो छोड भागो ।

२३३४ पातसाह अकबर आपरी जणणीनू काध दियो हो ।

२३३५ सिपहसालार खानखानारो खिताब ।

२३३६ सिपहसालार ओ खिताब खानखानानै अकबर दियो ।

२३३७ मुबारज नाम पहलवानरो है मुबारजुद्दीनखा खानखानारो खिताब है ।

२३३८ अंतजादुलमुलक खिताब खानखानारो अतभुजरी अंतजाद कहावै ।

२३३९ उम्दतुलमुल्क राजा टोडरमलरो खिताब ।

२३४० सवत ९९० पातसाह अकबर फिरगरा पातसाह कनै सय्यद मुजफरनू वकील मेलियो, खत लिख दीनो, तौरात अजील जबूर आ किताबारो तरजुमो मगायो ।

२३४१ सिपहसालार खानखानारो खिताब मुबारज पहलवान मुबारजुद्दीन खानखानारो नाम ।

२३४२ बीरबल मारणो जद पातसाह अकबर कसमीर हुता खानखा गुजरातमें हुता खानखानानू खत इनायत कियो अकबर जिणमें लिखियो – म्हारी सभानू नजर लागी जिणसू म्हारी सभारी जेब बीरबल मारणो हु बीरबलनै साथ राख ले चालतो तो उणरी चाकरीसू उरिण होतो खुदा-तालारी रजासू बीरबल मोनू मिळिया हो म्हारा दिल माहली बात बाहर आणतो दार ज्यू म्हारा [illegible] गुणगाण हुतो बीरबल जीव तन रूप मागियोडो पट [illegible] दो अबल पहदा मानू हम मामो बर्नेसू निवाजस पाया रो हू तासू फायदा लेतो बर हमेसा खुदारी महरसू म्हारी नजर तो माथै पडै म्हारा [illegible] नू [illegible] है बीरबलरो जीव ना रूप मागियोडो पटो [illegible] अपर [illegible] दागर हुवो ।

२३४३ [illegible] खिताब है ।

२३४४ [illegible] ।

२३४५. खानखानारी अरज कसमीर आयी. गुजरातरो मालक मुजफ्फर गुजराती चाळीस हजार सवारारो धणी जंगमे पकड़ कैद कियो है. सेख इब्राहीमखां सीकर वाळेनूं अठै मेलसी सो ओ मूवो उणनूं भोळायनै हूं दिखण माथै जाऊं।

२३४६. च्यार गुजरातरा उमराव ज्यानूं मैं वचन दिया है सो उवांनूं नवाजस कीजै. जाम खंगार १, ऊदो २, जगन्नाथ ३, साहिमखां ४. आप दिखणरा हाथी मंगाया सो दुरस्त पिण प्रतीत वाळा हाथी-महावत अठै मेलजे साथ हाथी मेल देसूं ।

२३४७. पातसाह अकवर वेराजी हुवो खानखानासूं जद खानाखान राव कल्याणरै सरणै वीकानेर आयो हुतो ।

२३४८. अकवर कसमीरमें जद खवर मक्कारी हज करण मुसळमान जाता हा हिंदसूं ज्यांनूं वलोचां लुटिया. आ वात सुणनां ही अकवर नाक सळ घालियो तीरै मार वफादार राजा वीरवल वलोचां माथै विदा होतो हुवो ।

२३४९. नीराह् १, विजो २ वगेरै च्यार ठिकाणा जवर वलोचांरा वडा पहाड़ांरा घेरमे राजा वीरवल फोज ले गयो. पहाड़ांरा घाटा भांजिया. वलोचांनूं मारिया. पकड़िया, गांव लूटियो. फोज धनसूं अभरी हुई फतै कर पाछी वली. वलोच पहाड़ां चढिया. घाटा वंद किया. मारगमे खाड़ा खणिया. फोज ले वीरवल घाटांमे आयो जद तीर, गोळी, गोफणांसूं पत्थर वलोच लावता हुवा. भाठारी लाग वीरवर मुवो. सिपाह वेसुमार माराणो. आ वात सुण अकवर राजा टोडरमलनूं जैस दे नै विदा कियो. इण वलोचांरो देस ले लियो. वलोचांरा ठिकाणा तोडिया।

२३५०. तिरीह १, विजोर २, किकली ३, दंतोर ४—अै च्यार ठिकाणा वलोचांरा जैस वडी फोज, तीराह, तरवारां, आछी घड़ीजै है।

२३५१. मिरजो सरफुद्दीन अलवर किलेदार हुतो, अकवररो उमराव. आंवेररा राजारा भाईवेटा दोय सरफुद्दीन पकड़िया ।

२३५२. द्योसारा डेरां भगोतसिंघजी, जैमलजी, जगमालजी, आसकरणजी वगेरै सात कछवाहा पातसाह अकवररा पगां लागा ।

२३५३. माहम नंगा नामा अकवररी धाय जिणरी मारफत संभररा डेरां कछवाहा अकवरनूं डोळो दियो ।

२३५४. दोय वडी नोवत, दोय वडी देग रकवाई घड़ियाल, सोनारी पीलसोज, रुपारा किवाड़ चितोड़सूं आण अकवर अजमेर ख्वाजैजीरै भेट किया ।

२३५५ जोरागढ अकवररा उमरावा लियो जद राजा वीरसिंघ गढपतीरी राणी कळावती भली तरै गढ भिलता काम आयी आऊ गढ हमै नागपुर हेटै है ।

२३५६ पातसाह अकवररै बारह सूवा हुता ।

२३५७ भारतरो तरजुमो फारसीमे अकवर करायो, नाम रजवनामो रसायणरा सोनारी लाखा मोहरा अकवर पडाय अेक ही ओरियामें राखी हुती, आखर-वत धान सारु अकवर अकसमात मर गयो जहागीर वागी थको प्रयागमें हुतो मोहरा धरी हीज रही

धरे घराये रह गये, चौकुटे अर गोळ ।

२३५८ अकबर कुटवाळानू लिखियो – लुगाईनू घोडा माथै चढण मत दीजो ।

२३५६ विन घगरो नगरो गये, अकवर साह जलाल ।
लाल कहै इक तालम, भये विराणे माल ॥

२३६० सवत १८७८ साहजादा खुरम भीव सीमोदियानू मेडतो दिरायो ।

२३६१ राजा ईदो राउ सवत १६६१ कातो सुदमे भीम परवेजसू मोहवतखासू जग कर काम आयो खुरम आगै ।

२३६२ भीवरै कुवर किसनसिंघ मेडतै रामसरण हुवो ।

२३६३ मवत १६८३ परवेज बुरहानपुर मुवो ।

२३६४ दसहजारी दारासिकोह नवहजारी साहसुजा नवहजारी औरंगजेव पाच-हजारी मुरादवकस ।

२३६५ साहजादा दारासिकोहरो बेटो मुलेमान सिकोह ।

२३६६ हरिवसरो, योगवासिस्टरो, सिंहासणवत्तीसी वररुचि कृत जिणरो फारसीमे तरजुमो दारासिकोह करायो नाम गुलपसा ग्रन्थ राजावळी मिस्र विद्याधर कृत, ग्रन्थ राजतरंगिणी पडित रुघनाथ कृत फारसीमें तरजुमो दारासिकोह करायो ।

२३६७ श्रीमत भागवतरो ही फारसीमे तरजुमो दारासिकोह करायो राणा रतनसेनरो नै पदमावतीरो अहवाल फारसीमें करायो दारासिकोह नाम कितावरो रतनसेन-पदमावती ।

२३६८ भिदारियै राजा ओरगजेवनू चावळ पगार वतायी उणरा चावळ उतरि घोळ-पुर आ ओरगजेव जग कियो साहजहारी फोजसू ।

२३६६ धोळपुररा झगडामें गोळासू पजि हाथी भागो, चावळमें पैठो ओरगजेवरो साहजादो जहादारसाह हुतो सो चावळरा पाणीमें डूब मुवो ।

२३७०. गुमा वीवी नोरंगजेवरै मरजीरी वेगम हुती ।

२३७१. सवत १६७३ रा फागुण सुद १ ओरंगजेव फोत हुवो ।

२३७२. नादिरसाहरो वकील दिली हो उण नादिरसाहनूं लिखियो – वेगा पधारिजे मारगमे काटो भाटो है नही ।

२३७३. नादर पातसाहनू महमदसाह मिरजा कहतो. महमदसाहनू नादरसाह मिरजो कहतो ।

२३७४. ईरानियां धन वास्तै दिलीरी जायगावां अति ऊंडी खणी, जमीग हाड काढ लिया हा ।

२३७५. अहमदसाह दुरानी लाल किलामे विलायती याकूवखांनू राखियो. पातसाह अलीगोहर जद पूरवमे हुतो. याकूवखां कनै पनरै हजार सिपाह हुतो ।

२३७६. साहआलम नाम अलीगोहररो है ।

२३७७. दिलीरा हिंदुवांनू लाल किला मांहली जायगावां पातमाही वाग, याकूवखां दिखाया, जस लियो ।

२३७८. ईब्राहीमखां और मल्हारराव हुलकर भाऊ सामल न हुवा. अजी तै अहमदसाह अवदाली भाऊसु जग न कियो ।

२३७९. दोयसै तोपां वारह हजार गारदां इवराहीमखां तालकै हुती ।

२३८०. च्यार दस्ता साह कनै हुता. जुमलै चाळीस हजार असवार साह कनै हुता ।

२३८१. हाफिज रहमतखां नजीमखा रूहेलो, अहमदखां वंगस लंगड़ा वावनहजारी सुजा वुधोलो इत्यादिकां मिल भाऊसू झगड़ा किया. फतै न पायी. अहमदसाह अवदाली मदत आया. जव न जीता ।

२३८२. दिलीसू नजदीक साहरी फोजसू दिखणियांरै जग हुवो. साहवसिंघ १, दत्ता २, काम आया. जनकू भरतपुर आयो पेसवानू अरज लिखी – म्हारी मदत कीजै नही तो साह दिखण माथै कमरवंधी करसी ।

२३८३. आ वात सुणनै पेसवै विस्वासरायनू नै भाऊनू हिंदुसथान माथै वडी फोज दे विदा किया. दिखणसू दिली आया. जुमा मसजिद ऊपर इवराहीमखां गारदी तोपा चढायी लाल कोटमे गोळा पडण लागा. याकूवखां मरहटांरी वाह लेने लाल किला वारै निसरियो. लाल किलामे भाऊरो अमल हुवो भाऊ दिखणी नारूसकरनू लाल किलामे राखियो ।

२३८४ दिली लाल किलामे खास दिवाणरी छत सोनारी हुती. उवा नादिरसाह लेगो. आम दिवाणरी छत रूपारी भाऊ ले लीवी ।

२३८५ भाऊ दिली निगमबोधरा घाट ऊपर यग्य करायो देवीरी आग्या हुई– हमै भाऊ पाछो दिखणनू परो जावै, दूजै महीनै आय साहसू जग करै तो भाऊरी फतै हुवै विरामणा ओ व्रतात भाऊनू सुणायो भाऊ न मानियो ।

२३८६ साहरी फोज भाऊ माथै आयी भाऊ विसवासराय सामा मोरचा माडिया वहरामखा गारदी आरावो दागियो अहमदसाहरो लोग गोळासू घणो खेत पडियो रघारियारै भाजणरी ताकीद ही इतै सुतरनाळरो गोळो लाग विसवासराय हाथीरा होदामें मुवो आ खबर पाय भाऊ विसवासरायरै मोरचै जावणनू हाथीसू उतरियो लोका जाणियो भाऊरै ही सुतरनाळरो गोळो लागो रघारिया घोडा उठाया भाऊ काम आयो दिखणी घणा माराणा भाऊरी कतल भाऊ–गरदी कहाणी ।

[पातसाहां, वजीरां, नवाबांरा प्रसंग]

सिंध

२३८७ सिधरो मिया नूरमहम्मद जिणरो नाम स्याहकुली नादरसा दियो ।

२३८८ अवैराज १, हदैराम २, जगतसिंघ ३, अभजी ४, सेरसिंघजी ५, महमद ६, अलीपास सिंधमे आयो सगासू नूरमहमदरो वडेरो ।

२३८९ आरै मुहमदम्या इनायत फकीरनू मारनै झोक नामै ठिकाणो लियो ।

२३९० स्या इनायतनू लोग इनायतुल्ला कहै ओ बारह सय्यदारो मुरसद हो ।

२३९१ पैगबररो काको मीर हमजा जिणरी औलादमें बलोच है ।

२३९२ मीर वहरामरो बेटो मीर बीजड, दूजो मीर मोभदार सोमदाररो बेटो पर- मीर फतैअली बीजडरी बेटी परणियो ।

२३९३ इलायरो धणी माडणोत हरनाथसिंघ १, करणरो धणी पातो मोहकमसिंघ २, लाडणूरो धणी गैनू साखलो ३, धीरो सहलोत ४, मथाणियारै बारट जोगी- दास – आ पाचा खुदावादमें मीर बीजडनै मारियो ।

२३९४ बीजडरो बेटो मीर अवदल्ला, मोभदाररी बेटी परणियो अवदल्लारो मीर गुलाम, मोहराबरै परणियो ।

२३९५ मीर मोहरावनू फतैअली मिलवानू तेडियो – इण चूक तेवडनै फतैअली रनै आवण लागो सोगार जद वेगी फतैअलीरी मा मोरावनू कहायो – मीर बीजडनू चूक हुवानू किता वरस हुवा तोनू याद है कै नही ? अ समाचार सुण पाछो मोगार जावटियो फतैअलीसू मिळियो नही ।

२३९६. सोराव फकीर कहावै, कागदांमें फकीर लिखीजै है. जईफ है. कड़प करावै नहीं. सलूकरी कितावां सुणै है, आदल सखी जिणसू ।

२३९७. सोरावरै च्यार भाई, पांचवो आप. अेक भाई मीर सोरावरो ऊमरकोट काम आयो हो. मीर सोरावरा मुलकसूं दिखण हैदरावाद आथमणो सिंवुरो दरिया पंचनद मिल हुवो जिकै उत्तर दाऊद-पोहरा, पूरव जेसळमेर ।

पालणपुर

२३९८. हयातखांरै वंमग विहारी पालणपुररा धणी ।

२३९९. पाल्णपुररो दीवाण कमाल्लुद्दीखां, जिणरै वेटो पीरोजखां. पीरोजखांरो करमखां पातर-जादो पालणपुर दीवाण हुवो जिण धधवाड़िया दुवारकादासनू खासो घोड़ो दियो गुजरात पधारतां अभैसिंघजीरा डेरा पालणपुर जद ।

२४००. दीवाण पीरोजखांरो वडो वेटो फतैखां पालणपुर दीवाण हुवो ।

नागौर

२४०१. सन ७८५ ममसखा विजदुलमुलकरो वेटो गुजरातसूं नागोर आय मालक हुवो ।

कालपी

२४०२. काळपी मुसळमान काम आया ज्यांरी चौरासी गुमटी है ।

२४०३. जवन कहै—पांच पीर जो काळपी जुझनै मरता तो काळपी मक्को हुतो ।

लखनऊ

२४०४. लखनऊरो नवाव गाजूरदी हैदर जहांपना कहावै. सात करोड़ रुपियांरो मुलक लखनऊ हेटै हुतो. आधो मुलक अंगरेजां अपणाय लियो. साढी तीन क्रोड़रो मुल्क वजीररै रह्नो ।

२४०५. हस्तरजाखां हैदरवेगखां आसद्दोलारै मुखतार हुता. तासीन १, अपरीन २, इल्यास — तीन खोजा मनीजना आसउद्दोलारै ।

हैदरावाद

२४०६. हैदरावादरा नवावरै नव क्रोड़रो मुलक हो. क्रोड़ रुपियांरो मुल्क अंगरेजा लीधो. आठ क्रोड़ रुपियांरी पैदासरो मुलक हैदरावादरा नवावरै है ।

२४०७. वहराई छव हैसारी नागपुर हेटै ही, दस हैसारी हैदरावाद हेटै हुती. हमै सारी हैदरावाद हेटै है ।

२४०८ हैदराबाद मीर आलम तीन लाख रुपिया लगाय भारी तळाव करायो सहरमें जळरो पुर हो गयो ।

२४०९ कनकरी १, अेळचपुर २ पठाणारै पटै है हैदराबादरा नबावरा दियोडा ।

२४१० हैदराबाद मीर आलम वजीर हो उणरो भाई मीरसाह टीपूरो वजीर हुवो ।

२४११ घोडोर, परेडी, आसरे–अै किला हैदराबादरा नवाब कनासू सतारारै धणी लिया ।

टीपू

२४१२ टीपू आपरा देसरो धन परायै देस जावण देतो नही सिपाह वगेरा इणरा अमलमे हीज रहता ।

[फिरंगी]

२४१३ अग्रेज १, पुर्तगीज २, विलदेज ३ फरासीस ४, फिरंगी ५, डीगमार ६, गुरजी ७, इस्काटलेंड ८, जरमनी ९, चिलवी १०, कुतबी ११, उरैसी १२–अै बारै टोपी निसारारी ।

२४१४ चीणा पटणरा नवाबनू अगरेज किंग करनाटक कहता पछै उणरो राज खोस लियो ।

२४१५ आगै सूरतमें च्यारारो अमल हुतो नवाबरो १, अगरेजरो २, गायकवाडरो ३, पेसवारो ४ ।

२४१६ पटेल गवालेर तोडियो जद पापन साहब फिरंगी पटेलसू जग कियो ।

२४१७ अगरेज कपतान मिस्टर आन स्काट साहब नै बगलरामरै मोलविया दोनू मिल हफ्त अकलीम किताब बणायी जिणमें कहे है कितीक जमी झडा हेटै, कि पहाड हेटै, कि बरफ हेटै, कि खारमय, कि आधारा माहे, कि जळ हेटै, कि वळियोडी है ।

२४१८ पूरबमें गगारै तट किलकत्रासू बारह कोस उलदे जाब चौडो सहर बसायो फरासीसा फरासडागो सहर बसायो दोनू सहरा अधकोस बीच है ।

२४१९ पहला लालमडी सहर हो गगारै तट महा काळी देवी विराजै जठै सहर कलकत्तो अगरेजा बसायो ।

२४२० नेघडालन साहब नीमचरी न्हावणी मुवो ।

२४२१ मिमटर मटकलबरो छोटो भाई तामस मटकलब ।

२४२२ इफ अवरगम नाम गवर जेलरो, व्यामजी जिणसू मिळिया ।

२४२३. फरांसीस मरियमनू मानै, अगरेज ईसानू मानै. फरासीस कहै जमीसू आछी वसत प्रगट हुई. उण वसतरी तारीफ नही, जमीरी तारीफ है ।

२४२४. अंगरेज कहै सीपसू मोती प्रगट हुवै. सीपनू चीर मोती लोक लियै तैरी ऊपर काढ्या पवन ऊपर है. इणनू पायदार मत जाणो. मांस खाणो ईसे कितावमें कह्यो है नही नै थे सरव जतुआरो मास खावो सो क्यों ? ओ प्रश्न कियो. अंगरेज उतर दियो – कासमीरियारै धरमरी किनावांमे त्रियांरै माथै पाग वाधणी न कही है, पिण कासमीरमे सरदी वहोत, इण कारणसू प्रथम अेक औरत पाग वांधी, पछै देखादेखीसू सारी कासमीरणियां पाग वांधो, हमैं देसांतरमे रहै जिकेही कासमीरणियां पाग वाधै है, परंपरा ठैरायी, यूं फिरंगमे सरदी वहोत जिणसू हकीमां मास खाणो अंगीकार कियो, अव देसांतरमे ही फिरगी मास खावै है ।

२४२५. अगरेज अेक अजमेर छावणी हुतो व्यापारी सो महा झूठो हो. अेक चाकूरै मोलरा पचास रुपिया कहतो. दूजा चाकुवां जिसा उणरै चाकू हुता ।

२४२६. अेक कुत्तारा मोलरा हजार रुपिया करतो ओ अगरेज. दो सै रुपिया तो घणा जणां धामिया हुता ।

२४२७. जैपुर अंगरेज रहतो असटरजी जिणरो अेक हाथ टीपूरी राडमे गोळासू वढ गयो हो ।

२४२८. अंगरेज कहै – छोटा मछनू मोटा मछ गिळ जावै, छोटा मछनू क्या सुख हुवा ।

२४२९. फिरंगमे डूक पदसू वडो पद किंगरो है ।

२४३०. तुरमनामो अंगरेजांरै वाजो हुवै ।

२४३१. वाजा जितरा फिरगमे इता वाजा और विलायतमे नही ।

२४३२. अगरेज हुंडीनू विल कहै ।

२४३३. अंगरेजांरै वीवी मेम साहव कहावै ।

२४३४. फिरगण वीवी मुतसद्दी अंगरेजनू अंगीकार न करै, जंगी अंगरेजनूं अगीकार करै ।

[प्राचीन इतिहासरी वार्ता]

नंद

२४३५ पाटलीपुत्र पुरे राजा नवनद हुवो (? हुवा) ज्यारी लक्ष्मी दानाभावात् गगा तीरे पीत पाखाण हुई अजू है ।

२४३६ जैनरा ग्रथामे कहै है नव ही नद थणकरा वसमें जनमिया ।

२४३७ राजा नदग ठावा आदमिया वनमें पाटळा व्रखरी डाळ बैठा पखी नीळ टाच, जिणरा मुखमें विना उद्म किया लटा पडै, जिका देखिया हा विचारियो — अठै सहर वसावजै तो इण सहररा लोकनू आपहीनू रजक मिळै पछै सहर [वसायो] पटणो कहे मुसळमान अजीमाबाद कहै ।

विक्रमादित्य

२४३८ विक्रमार्कनू अगनी वेताळ दोय सोनारा पोरसा दिया था जिणसू जगन अन्हण (?) कियो हो ।

२४३६ विक्रमाक महज दानविधि आरतियानू हजार, जिणनू वतळावै उणनू दस हजार, वाणी सुण हसै तिणनू लाख, जिणरी विक्रम तारीफ फुरमावै उणनू क्रोड सोनइया दिरीजै ।

२४४० गळीमें पडियो अन्नकण जिणनू गजसू उतरि विक्रम माथै मेलियो जद अन्न — धिष्ठानको लक्ष्मी वर दियो तेण वरेण माळवै दुर्भिक्ष्याभाव ।

२४४१ सू गळीमें पडियो धानकण गजसू उतरियो विक्रम माथै धरियो धान देवतारो वर हुवो माळवामें दुकाळ पडै नही ।

२४४२ विक्रमादित्यनू राजा साळवाहण मारियो कठैईक लिखै — समुद्रपाळ जोगी, जिण मारियो केई कहै विक्रमार्कनू साळवाहण मारियो, कोई कहै समुद्रपाळ जोगी मारियो ।

[धार्मिक वार्ता]

वैदिक धर्म

२४४३ गगाजीरै वाहण कूर्म, जमनाजीरै वाहण मच्छ ।

२४४४ नैमखार मिश्रमें सव तीरथ आया, पुसकर प्रयाग न आया अेक गुर, अेक राजा, तीरथारो जिणसू ।

२४४५ अरवुदवासी भील मरि नळ हुयो, भीलणी मरि दमयती हुई, सन्यासी मरि हस हुवो ।

२४४६. राजा सागर पुत्रांसू धापो नही ।

२४४७. रामचद्र दस हजार वरस राज कियो ।

२४४८. पुराण लिखै है – आंनै ग्यानवापीरो जळ आगला जुगांमें कासीमे लोक पीवता आमे ग्यानलिंग प्रगटी. लोक त्रिभंग हो जातो ।

२४४९. पुराणमें कळपांतर मानै. पूरव मीमांसामें होणहार मानै. वेदांतमे ईश्वरेच्छा मानै ।

२४५०. वेदांतमे वावन मत है ज्यांमे अद्वैतवाद प्रवळ है ।

२४५१. अद्वैतवादी चक्रवर्ती कहावै ।

२४५२. सोयगकार यथा सोय देवदत्त ।

२४५३. नैयायिक भनित मानै सव्दनू ।

२४५४. सेयं दीपज्वाळा स्मद स्यात् दीसै न तु वास्तव ।

२४५५. मीमांसक वैयाकरण सब्दनू नित्य मानै ।

२४५६. न्यायरा प्राचीन पंडितोंरा मतमे नै आधुनिक पडितांरा मतमे फरक है ।

२४५७. दक्षिणात्याका न्याय, मैथिलूका न्याय, वगालियूका न्यायमे कही-कहीं फरक है ।

२४५८. वनमे आठ वरसरो खोडो व्रामणरो डावडो आयो. उण समै सिविकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उण वनमे आय निसरिया, इण डावड़ासू पूछियो गांव अठासू नेडो है कै दूर है ? जद ओ बोलियो – हू वालक छू, खोड़ो छू, बकरियां वित्त है, दिन किंचित आय रह्यो है, गाव अति नेडो है जिणसू अजे वनमे खड़ो छू. अकलसू लोक ईश्वरनै जाणै है, मोनू वनमे खड़ो देख गांव अति नेडो जाण लेणो. इण डावड़ानू कनै राख पढाय भट्ट प्रभाकर नाम दियो इणरो कुमारळ भट्ट ।

२४५९. कवीर संवत पनरासैमे हुवो. दादू पहला सौ वरसां पातसाह सिकदरनूं परचो दियो ।

जैन-धर्म

२४६०. जिनागममे कहै है – सैत्रुजा ऊपर दस कोड़ मुनिराज काती सुद १५ सीधा ।

२४६१. सारी तीरथांमे आमाक श्रेष्ठ तीरथ है ।

२४६२. जिन प्रतिमा जिन सरावी, कही जिनागम माहि ।
ये जाकै दूखन लगै, वदनीय सो नांहि ॥

२४६३ धुलेव रिखभदेव केसरियानाथ कहावै सोळ जणा फरासी पखारा चाकर हैं ।
२४६४ दोय जणा दोय पखा फरासी सासता धुलेव रिखभदेवजीरै चलायवो करै ।
२४६५ बीइंद्रिया त्रीइंद्रिया प्राणी कहावै ।
२४६६ पचेंद्रिया जीव कहावै ।
२४६७ नव भूत कहावै अन्य सत्त्व कहावै ।
२४६८ अेक घडीरी साठ पळ, पळरा साठ उपपळ जिन मते ।
२४६९ अेक वरसरा तीन सै चौपन दिन मानै जिनमते ।
२४७० जिनमते पाच वरसरो जुग मानै ।
२४७१ भरत चक्रवर्ती आपरी हाथरी मूंदरीरा माणकमें आदीस्वररी प्रतिमा खुदायी नाम उणरो माणिक्य स्वामी दक्षिण देसमें कुलापाक नगरी जठै अज्यू विराजै सुवर्णद्वय पुरुष प्रमादात् विज्ञक जगत अनण कियो ।
२४७२ सैणक मरता पुत्र माथै कोप कियो जिणसू पहली नरक गयो चौरासी हजार वरस नरक में रहसी ।
२४७३ घर आगण जायो उठै ।
श्री सैणक महाराज ॥
२४७४ राजा सप्रति माळवेस्वर हुवो ।
२४७५ सोलै हजार मुगटबध राजा सेवा करता सप्रतिरी ।
२४७६ सवा क्रोड जिनबिंब कराया राजा सप्रति ।

[भौगोलिक वार्ता]

राजस्थान

२४७७ जोधपुर ईदगाह दिखण तरफ है, उतरनू पहाड है जिणसू ।
२४७८ मडोवरमें भैरू विराजै है ।
२४७९ परमार भरमेन राजारी बेटी सेजळदेवी हुती मोजतमें सेजळरै नामै मोजत सहर वसियो हो ।
२४८० लाडणू डाहळिया राजपूत वसायो डाहळिया पछै जोहिया मालक हुवा जोहियां रा हाथसू मोहिला, मोहिलां रा हाथसू राजजी मालदेवजी लाडणू ठिकाणो लियो ।
२४८१ वडला जानरा जाता ओ गाव वसायो जिणसू वडलू नाम प्रगट हुवो ।
२४८२ वडलू पहाडीरी गुफामें भूतेस्वर विराजै है, नडराणा ब्रामण सेवा करै है ।
२४८३ मेडतै चतुर्भुजजीरा मंदिर पछै मंदिररा कोट माहे मोलगरो सूरजमलजी पूरोजै है चतुर्भुजजीरै भोग लागोडो थाळ सूरजमलजीरै भोग लागै, पछै ओ थाळ ठाकुरजीरा भोगरा सामल हुवै ।

२४८४. गुडामें सोनार ठगांरा संगसू ठग-विद्या करै है ।

२४८५. गुडारो ठग महमदियो करणाटक माहेसू साडी तीन मण सोनो लायो हुतो. सोजतरा डेरां वडा महाराजरै पगां लागो अस्सी मोहरां नजर किवी. गुडा छोड वातै वसियो. आठवारा सिरदार सिवसिघजीनू मनवार किवी हुती ।

२४८६. थेटू ठगांरा घर वगड़ीमें हुता. जैंतावत सूरजमल वगड़ीसूं गुडां वसियो जद ठगांरा घर साथै ले गयो ।

२४८७. वगडीसू ठग देवगढ़ जाय वसिया. घर इग्यारै सिरयारी जाय वसिया ।

२४८८. गांव धारवी कोटड़ारो है ।

२४८९. आगै ठठारो मारग कोटड़ा होय निसरतो. लाखांरो माल वहतो. दाण कोटड़ारा धणीरै घणो आवतो ।

२४९०. आगै वापड़ाऊ नामै गांव हुतो उण जायगां नवो वाहड़मेर वसियो. दोय कुवा तीस पुरस. घणो पाणी, मीठो. पूठनू भाखर छै. भाखर निरूंखो छै जूनो वाहड़मेर जठै पहाड़ है गढ छै भाखररै आधोफरै. भाखररी गिरद वाई कोस पररै छै. भाखरमे गढमे कुवा, तळाव, झरणा, वावड़ी घणा छै. भाखर निपट संझाड़ो छै. थोहर, वोर, गूदी, गांगड़ी, लोकस, गूगळ निपट सझाड़ो छै ।

२४९१. वाहड़मेरथी पचीस कोस वाळेतो, पचीस कोस नीवळो, तीस कोस ऊमरकोट, वाहडमेरथी कोस छव विसाळो, तीस पुरस, मीठो पाणी, त्रणो ।

२४९२. कोटड़ो गढसू भाखरी ऊपरै कुवा गढमे छै, तीस पुरस. मीठो घणो पाणी. अेक कुवो गांवमे है ।

२४९३. फळोधी किरड़ारो जोहड़ जठै नाना प्रकाररी सुगंध आवै. लोक कहै इणमें पोसता रहै है ।

२४९४. वाळारा पाणीसूं महेवा मे गेहू हुवै ज्यां गेहूंवारी साखमे पाणीरो हासल हाथी वाळीसैं लियो वैड़ारो धणी ।

२४९५. भूरीघाट ऊपर पाबूजीरो थान है. अठै माडरो नै मालाणीरो कांकड़ है ।

२४९६. गुडा हेटै वाडमेर हेटै केईक गांव सूराचदरा, केईक सोढां दाविया ।

२४९७. सूराचंदरा गांव २७ सासण, ५०० सूराचंदरा धणीरै. सूराचदरा गांव पांच सौ सत्ताईस ।

२४९८. डैराठरसू अवकोस ऊपरै ठिकाणो जोधो है. उठै मधु राज करता, ओ मधुरो राजसथान हो. हमै जोधो सूनो है ।

२४९९. वीकमपुर कनै लूडीरो हेडर कहीजै है. ऊ विक्रमादित्य गायां, भैसां, सांढां, छाळियांसू भिळायो. आपरो पण राख लियो ।

२५०० सिवाणै गढ सीह लको है, सरासियल जायगा है ओ किलो कडतोडो है जिणसूं राजवियारै रहण योग्य नही ।

२५०१ सिवाणारो खेडो पहला पोरवाळा वसायो मुसळमानारा वासमें सोनाणारा पत्थररो जिनमंदिर नै आथूणो भाखरी हेठै सिवाणारो सिंदूरियो पत्थर जिण रचित पारसनाथरो मंदिर, जुमलै दोनूं जिनमंदिर सिवाणै । -

२५०२ गाधो तेरागेप छाड परा गया पछै जाळोरीरो गाव वाघरो जठासूं वाघरेचा ओसवाळ आय सिवाणै वसिया ।

२५०३ भीनमाल नगर रतन महेसदासोतरै समै स्वप्न देनै श्री वराहजी प्रथी बाहर आया ।

२५०४ जुजाळासूं गुसाईंजी सेघाळै प्रगटिया भाखर माथै मंदिर है सेखलासूं खिरजा प्रगटिया मीठो नेवज चढै भैंसा चढै गुसाईंजीनूं गुसाईंजी घोडे असवार रहै आ मूरत देवळमें गोगादे गुसाईंजीनूं पूजै ।

२५०५ जेसळनेरसूं गाडाळ पश्चिमनूं है ।

२५०६ गाडाळसूं आथमणा वन्ना मंदिर है कुत्ता घणा रहै गाया, भैंसा, साढियारी वार चढै जद ढोर माहसूं कुत्ता काढ देवै कुत्ता दौड आपडनै धाडैतारा घोडा ज्यारा अडकोम पकड लै पछै घोडा चढिया मैहर आवै वारू परै वलमें अेक जाळ है उण जाळ कनै वारूरा भाटियारै नै वारूरा मैहरारै मत वडा झगडा हुवा है, मैवडा मानस मारणा है ।

२५०७ ऊटडिया महादेवसूं बारह-बारह कोस चौतरफ हर वरस सुगाळ रहै ।

२५०८ बीकानेरीमे कोडमदेसर तळाव है, गाव नही है ।

२५०९ कांकरोळीरा गुसाईंजी ज्यारा सेवक आनूं पूजै, और गुसाईंजीरा बाळकनूं न पूजै हरिरायजीरै घररा सेवक हरिरायजीरै वसरा गुसाई ज्यानूं पूजै, दूजा गुसाइयानूं न पूजै गोकुळेसजीरा सेवकही इण हीज प्रकाररा है ।

२५१० उदैपुर आथमणो पीछोलो है, उगवणै सहर वसै है पीछोळारी पाळ रहो है माटी रही है रहा माथै राणाजीरा महल है ।

२५११ सलाळियो पीछोळारो अेक देस ।

२५१२ जगमंदिर जगनिवास पीछोळै मे रहो जिण ऊपर राण जगतसिंघजी कराया ।

२५१३ राणोजी जगमिंदर जावै मागै असवारीरो लोर नटवमा मोटा पीछोळामें रगे पीछोळारो पाणी सहर पीवै ।

२५१४ उदैपुर मालरारै आगार छोटो डूगर है – उत्तरनूं पूरब दिखणनूं सूनो ऊ मालरो मगरो कहाव ।

२५१५ सपेरै रुगनाहजीरो मंदिर जेसमें पाणी तातो रहै सेप करायो ।

२५१६. भीलवाड़ो मेवाड़रो जठारा भील माथारा केस खुलियां झगड़ो करै, पीठ लारै ऊभी भीलड़ियां वोलै – धीरो पाखरिया !

२५१७. मेवाड़ी गांव दूधुवो जठै वालो वघेरामें रावत मेरो ।

२५१८. तोड़ासू च्यार कोस पहाड़ ऊपर वनासरा दरहछ्वांळ नाडी ऊपर सिसोदिया रायसिंघ भीम अमरसिंघोतरै महल कराया, गाव वसियो जिणरो नांव राजमहल ।

२५१९. ईंदावाटीमे धूतांबर गांव चीमड़ विराजै खांडो देवळ. वडो देवळ है ।

२५२०. ईंदावाटीमे गांव दूगर माता दुगाय भाखरमे विराजै है हाल तक ।

२५२१. जांगळी नामे भील राठोड राजानू वेटी परणाय आवू दियो. राठोड कनांसूं आबू गोहिला लियो दोय सै वरस गोहिलारै रही. गोहिला कनांसूं परमारां लियो. परमारां कनासू प्रीतू देवड़ै लियो ।

२५२२. अवायजी अेक सिरोहियो दरवाजो है ।

२५२३. अवावजीरी सेवा करै उदवर जातरा वांमण ।

२५२४. दांतारा धणीरी दुकान अंवायजीरा पगां है. घ्रतादिक वस्तु यात्री उण दुकानसू खरीदै ।

मालवा

२५२५. मालवै सहर रुणीजो जठै देवड़ा मोकळोतरो राज है, भोजकराव वाजै आ मांडवारा पातसाहरा चाकर हुता ।

गुजरात

२५२६. गुजरात मे वडा-वडा तळाव है ।

२५२७. हडियारो घाट १, मडोळोररो घाट २. सतवासरो घाट ३, मरदानारो घाट ४, घोडा घाट ५, इत्यादिक त्याहीरा घाट है ?

२५२८ आवारो पेड़, महुवारो पेड़, रायणरो पेड़, आमलीरो पेड, गुजरातमे करसणी थीत गिणै ।

२५२९. गुजरातमें गरवो गावै – वेगळो रहे वरणागिया रे, वरणागियो रसियो ।

२५३०. महतारी गरवारी तुक अेक वार कहै, दूजी त्रियां दोय वार कहै ।

२५३१. गुजरातमे रोवणनू रड़नो कहै ।

२५३२. गुजराती काकानै काचा कहै ।

२५३३. गुजराती आपरी त्रियारो जार होण आवै विणनू कहै – च्यार रुपिया आलसै तो अमांनी वेर ढोय सेर सोनो पहर तुमारे पास आवसै, रुपियामे दोय सेर सोनो घसावसै नही ?

२५३४ कुणवी गुजरातमे हाड माडै, मनोती करै, करसण करै, सालवी पणो करै, छेमाई पणो करै ।

२५३५ गुजरातमें पालीमूको नदर कहावै ।

२५३६ डट, मुड अर डाम – द्वारकानाथरी यानारो वणन ।

२५३७ कोरी न नाल मुल द्वारका ।

२५३८ वेचराजीरा चरणा कूकडा है ज्यानू मिनी न मारै ।

२५३९ पावानी पटराणी भवानी काळिकारै लोग गरवा रियै ।

२५४० डभोईरो भलो तळाव है तेलरो भलो तळाव है वडनगर, वीसळनगर वडा तळाव है ।

२५४१ डभोई सहरी पच महालामे है ।

२५४२ नादोल राउपीपळा अेक घर है ।

२५४३ राधणपुररो परगणो वढियार कहियै आवूरो पाणी वढियारमें लावै इण पाणीसू गेहू चणा सेवज हुवै अर वढियारमें आवूरा पाणीरो हासल लियो राव अखैराज भालो पाण ।

२५४४ आलीराजपूर १, उदैपुर २, वाग्यिो ३ – अै ठिकाणा चहुवाणारा गुजरातमे ।

२५४५ आली मोहण राठोडारा ठिकाणा आ ठिकाणासू नजदीक है ।

२५४६ सवत १७१६ भावनगर वसियो ।

२५४७ गुजरातजी नटवरजी वाळा व्रजरायजीरा पुत्र व्रजभूखणजीरै खोळै व्रजभूखणजी गुजरातम वावोजी कहावै ।

२५४८ सीमाणियामू व्रजभूखणजी, व्रजरायजी, रघनायजी पाटणपुर सेररा दीवाण भूतडी गावमें गोसिया ।

२५४९ गोरखमढी प्राग्नाथजीरा घरमे व्रामणी गिरनारी है ।

२५५० पाटणम वैजनाथ वानू वडो धनवान है, वल्लभकुलरो सेवक है ।

२५५१ रेवा कूटारो नाम लुणावडा धनै वीरपुर वसती है जठ हाजी मोहमद दरियाईरी वडी दरगा है हजारा ज्यारतनू आवै है ।

२५५२ नवगाम १, धणदेवी २ – अै परगना कोवण सूरत विचै–ज्यामें लारला दिना गायकवाडरो अमल हुनो ।

२५५३ सही वडी नदियामें गिणीजै है ।

२५५४ अैमदावाद कांकरियारो चपायाटो पावगियो तळाव वडो सरोवर है ।

२५५५ अैमदावाद सवरै दरवाजा है इना री दरवाजा सूरत है ।

२५५६ सायपुररो, खेड़ारो, अैमदावादरो दिली-दरवाजो, वडो दरियो दरवाजो, समतोड़ियो दरवाजो, कळूपुररो दरवाजो – इत्यादीक चवदै दरवाजा अैमदावादरा है ।

२५५७. अैमदावादरा आठ दरवाजा सावरमती नदी वहै है. अैमदावाद जुमै–महजीतरो वडो कमठो है ।

२५५८. ममोई दरवाजो, वरियारो दरवाजो इत्यादीक चवदै दरवाजा सूरतरा है ।

२५५९. वरिया परिया दोय वडा सहर है सूरत कनै ।

२५६०. हमै माडवै रजपूतारो राज है ।

२५६१. ईडररी हदमे सावळियै भील सावळियो सहर वसायो ।

दक्षिण

२५६२. गुजरातमू दिखण ऊंची है ।

२५६३. पडरपुरमे प्रथम परचाधारी नामदे छीपो हुवो ।

२५६४ कोकणम खानदेसमें वगलाणानू वागलाण कहै ।

२५६५. देव पूजामे ही विरामण तमाखू वाटियोडी सरव दिखणरा व्रिरामण तमाखू सूघै ।

२५६६. मूळा १, मोठा २–अै दोय नदी पूना हेटै वहै है ।

२५६७. दिखणमे भीम नदी भीम सकरी कहावै ।

२५६८. कृष्ण वेणी कृष्णा कहावै ।

२५६९. दक्षिणमे वेदारण तीरथ है ।

२५७०. इकावरेस्वर पृथवीरा लिग १, जंवुकेस्वर जळ-लिग २, त्रिण मळय वहे-लिग ३, काळास्थि वायु-लिग ४, चिदवरेस्वर आकासलिंग ५, चिदंवरेस्वर द्वितीय नाम सभापती ।

२५७१. कावेरीरै तट पाच वडा सिवरा थान है–पचनद १, कुभको २, मध्यार्जुन ३, मायुर ४, स्वेताणय ५ ।

२५७२. वाळार्क १, सिघार्क २, तरुणा ३, वाघार्क ४, सिघार्क पिगळस्वामी कहै ।

२५७३. अेक सिघलदीपमे कुवो है. उणमे नर-नारी झाकै जद मांहेसू काकरा चालिया आवै जाणजे कोई मनुस्य माहेसू काकरा चलावै है ।

२५७४. हैदरावादमे गुजरातियारो पुरो कारवान कहावै. कैई गुजराती वणिक जैनी, कैई वैसनव है. केसोमदनू क्रोड़ीमल वगेरे ठावा आदमी हुता ।

२५७५ मसीरुलमुलक उमरतुल उमराव असतु जहा प्रमुख छाईस मसीरुलमुलकनू हैदरावादरै नवाव दिया ।

२५७६ मोटार वधार नराडरा मूवा माहे छै, लाग्ला वरमा वधाररो धणी गोड भीमेस्वरजी ज्यारी बेटी वेगमरा धणीरो छोटो भाई सवतसिंघजी परणियो हो ।

२५७७ नर्मदारो अेक देस धारा-क्षेत्र है जठै वाणनाथ सिव नीसरै है, रेवाश्वर ।

२५७८ नर्मदा माहेसू नीसरी कावेरी जिका वुवा कहावे पुराणम ।

२५७९ इलगावाद इडिया गाम सत वास प्रमुखार्क थाटू लनार उतरै है ।

सिंध

२५८० सिंधम मार्थरो मैहरारो वता है ।

२५८१ मीर वाह, तमीर वाह, मनूर वाह, वहराम वाह, ज्यादोव वाह सिधम है ।

२५८२ मुराद गजे वाह चलायो सो मुराद वाह वहायो सिधमें ।

२५८३ मुराद गजो वेवे भत जद फकीरणोनू इण कह्यो – हमवू दवा कीजे इण कह्यो घोड़ा सियाररो मालव हुसी फेर कह्यो – दवा करो इण कह्यो फीरोज जम हुसी इण कह्यो–फेर दवा करो जद फकीरणी कह्यो– पातीसू थारी मोत हुसी ।

२५८४ गंग्पुर मीर गोराव वसायो ।

२५८५ गुमायादनू महमद वसायो ।

पंजाब

२५८६ वहावळपुरसू आवी मुलर सर हुवा तामीर ताई सीससरा वृक्ष उठै गहोर घणा छाया है ।

२५८७ सगपुर १, हरपुर २, सामपुर ३, मुल्तानपुर ४–अे च्यार गाम च्यार जुगरा है मुल्तानरा ।

२५८८ मुलतानरा किलारै च्यार दरवाजा ,–लेरो १, पीरथी दूजो २ सिदरी तीजो ३ चौथो ४ ।

२५८९ पगोपुरी मुल्तानी जैसल वट आवाजनी ।

२५९० सगापुरी मुल्तानी जीवा मुल्तानरा मलाध रिधी सदालिय र जठै ।

२५९१ पीर सगावुहरगो रोजा मुल्तानरा किल्लामें पीर साह मुल आलमरो ही रोजो मुलतानरा किलाम है ।

२५९२ मुलतानम किलै पीरम शम्सुद्दीनसर ताप धर पड़ो आयो ।

दिल्ली

२५९३ दिल्लीम गाजा आसपुरा सायपुरो, तमरापुरो आलिपुरो पीरापुरो इत्यादिक ।

२५९४. दिली सहर मैना वाहर पठाणारी करायोड़ी ईदगा है, साहजीरी करायोड़ी ईदगा है, महम्मदसाहरी करायोड़ी ईदगा है, दिलीसूं दिखण तरफ. जुमलै तीन ईदगा. हदीसमे कहै है ईदगा सहर उत्तर तरफ करावणी. दिली ईदगा दिखण दिस है. उत्तर दिस जमना आयी जिण कारणसू ।

२५९५. लाट समसुद्दीन मुतसल दरगाह कुतुवसाह. मुतसल, समीप ।

२५९६. सुई प्रमुख सजातीय वारह वसतां मिलियोडी दरजन कहावै दिलीमें ।

२५९७. दिलीनू आगरैरा रणवासमे जोगमायारो थान हुतो पका कुडमें सिवलिंग जिसी सभ उठाऊ जोगमायारो सरूप है ।

पूरब

२५९८. फतैपुर पातसाह अकवर वसायो ।

२५९९. मय दाणवरो वसायोडो मकान, मेरट ।

२६००. गणमुकतेस्वरनू गढमुकतेस्वर लोक कहै ।

२६०१. काळपीरा वावन पुरा है ।

२६०२. व्रदावन हेटै जमना सोभा घणी दे, गंगा कासी हेटै सोभा घणी दे ।

२६०३. तिल भंडेस्वरी १. मूल टकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, अै तीन सिव प्रयाग वट कनै है ।

२६०४. संध्यावट हेटै हणूमान पौढै है, वडी मूरत है ।

२६०५. वेणीमाधव प्रमुख नवदै माधव है प्रयागे ।

२६०६. सरस्वतीकूपरो जळ लाल है प्रयागे ।

२६०७ लोपा मुद्रा दोय देवी प्रयागे ।

२६०८. मणिकर्णिकेस्वर सिव मणिकर्णिका विसै ।

२६०९ कर्दमेस्वर सिवकास्या ।

२६१०. दुर्गेस्वर सिवकास्या ।

२६११ केदारेस्वर कास्या ।

२६१२. कुमार राज विनायक कासी समीपे कपिळ समीप ।

२६१३ कासीमे उदैपुररा राणारी करायोड़ी जायगा खालसैपुरो वाजै है ।

२६१४. वूंदी रावजीरा करायोड़ा महल कासीमे राजमदिर कहावै. हाडारो वगीचो कासीमे है ।

२६१५ कासीमे कछवाहै मान महल करायो, उवै मानमदिर कहावै ।

२६१६ सेहरसाह जवन पूरवमें जवनेद्र हुवो जिणरा आतंकसू कासी सूनी हुई. । विरामण विस्वेस्वररो लिंग जमी ऊंडी खिण भडार दियो पाछै किताईक वरसा दिखणसू विरामणा देसस्थ रामेस्वर भट्ट वेटा नारायणभट्ट सहित

स-कुटुम्ब कासी आय वसियो जवनरी कन्यानू जवर लागो हुतो सो नारायण भट्ट काढ दियो जवनेंद्रनू रिझाय इण कासी वसावणरो आरभ कियो कासी-वासी जमीदार कासी तेडिया कह्यो—सारा अठै आय वसो, जवनेंद्र आपोरी रछ्रिपाल करसी पछै कासीमें वस्ती होण लागी इण परपरासू कासीमे वसै है उवै कासी उजाड हुवाही कासीमें रह्या उवारा कहणासू विस्वनाथरो लिंग वाहर थापवा जमी देखी सिवलिंग नही पायो जद कासी-वासी तीन दिन अनसन ले वैठा सिव सप्रेम आज्ञा किवी-ऊ लिंग कैलास गया ओर रैवास कर आणि उठै स्थापित करो यूं-ही-ज कियो।

२६१७ वैद्यनाथ सिव वैजनाथ कहावै।

२६१८ झूलनारो उत्सव ठाकुररो वगाली विसेस करै हजारा रुपिया खरच करै।

२६१९ जलापानात् अेक वा दोनू चरण क्रमस-गळ-स्थूळ हुवै वगालियारै।

विलायत

२६२० कधार खुरासाणरी हदमे है, कावुल हिंदरी हदमे है।

२६२१ विलायतमे खातून जन्नतरो नाम आख मीचनै लेवै।

२६२२ कमरकोहसू नील नदी चालै मगरवमे होय, जगवारमें होय, मिसरमें होय, रूमरा समुद्रमें मिलै।

२६२३ अमरीके वरसन नवी दुनियारो नाम है।

२६२४ नवी दुनियामे उत्तरनू अगरेज है, दिखणनू इसपेन है।

विविध स्थानारी प्रसिद्ध वस्तुवा

२६२५ खुटिया लखनऊको, गटा कनोजको, पेडा मथुराको ओळा सिकदराका अदभुत हुवै है।

२६२६ अभ्रक कपूर लोयान कृष्णागुरु प्रमुख यवनारै देसासू हिन्दमें आवै।

२६२७ कासी पीतळ प्रमुख धातु मारवाडसू सिंधमें जावै।

२६२८ बीकानेररा जोहडरी घोडिया हमेसा जगळमे चरै हिरणिया ज्यू।

२६२९ जेसळमेर भूरो पत्थर सावटू कहावै नै भूरै पत्थरमे धोळासा चाठा हुवै सो वीछियो कहावै सरळ वीछियारी आछी हुवै।

२६३० जैसळमेर वाडीगे वाग जठै मिसरी नामै आवो है घणा मीठा मोटा आवा लागै येनकी इण वागमें है।

२६३१ नीरमपुररी हदमे मुगनी आछा है उठै गायारो रात जिसो दूध है।

२६३२. कछमें चितराणा अंगियारा ऊंट आछा हुवै है ।

२६३३. सिंधरी तमाखू नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर विकै ।

२६३४. आंवा मुळतान आछा हुवै ।

२६३५. गुजरातमें चद्रकळा साडी उमदा हुवै. धनवंतांरी त्रियां ओढै ।

२६३६. पावागढरो पाखाण गुजरातमे है. इण पत्थर सिवाय और खाणरो पत्थर नही ।

२६३७. सूघणी तमाखू पूनै अति चोखी हुवै है. पांच रुपियां सेर विकै ।

२६३८. काफरी वदूकां दुरपलारी दिखणमे वोह मोली ठावा वहादुरां कनै पावै ।

२६३९. पांच सेर घास पांच सेर दाणो उजवकांरो घोड़ो आठ पहरमें खावै अेकमें सौ कोस जावै ।

२६४०. मरकव यवन देसां वाहण हुवै सो नित सौ कोस जावै. घोड़ासूं ही मजवूत हुवै है. रुमयोड़ो कान, आवाज गधांरै सरीसी ।

प्रसिद्ध गीत

२६४१. व्रह्म-मूहूर्त्त समै लाखो फूलाणी गवीजै. दोय घड़ी दिन चढियां धनासरीमें वाघो कोटड़ियो, तीसरै पोर सामैरीमें रिड़मल, रातरो सोढो महदरो गीत गवीजै ।

२६४२. दोय घड़ी रात लारली रहै सो व्रह्म-मूहूर्त्त. इण वेळा विभास वेळावळमे लाखों फूलाणी गवीजै – प्रह लाखो सु विहाण ।

२६४३. दोय घड़ी दिन चढियां धनासरीमें कोटड़ियो गवीजै ।

२६४४. सामहरीमें दुपहरी पछै रिड़मल गवीजे ।

२६४५. जेही मावत जनमियो, लाखणसी सोनल्ल । गांगणियाणी जेहीरै मावत वेटो हुवो. लाखो फूलाणी सोनल अपछुरारी कूख जनमियौ ।

२६४६. पच्छमरा गांवां वीद चवरीसूं परणीज उतरै जद, चारणांरै रीत है, लाखो फूलाणी गवीजै, रुपियो गायक पावै. ऊ लाखाणीरो रुपियो कहावै ।

प्रसिद्ध व्यक्ति और वस्तु

२६४७. जाम तमाईची नूरी गवीजै, हीर-रांझो गवीजै, पनो ससुई गवीजै, मिहर-सोहणी गवीजै, मूमल महदरो गवीजै, मारवी ऊमर गवीजै सिधमे ।

२६४८. नूरी मीर वहररी वेटी, जाम तमाइची घरमे घाली हीर-रांझारा गीत जोग कहावै. तमाइची नूरीरा गीत कामेमन कहावै ।

२६४६ विरामणरै बेटी हुई जोतिसिया कह्यो इणरो पत मळेछ हुमी जद सिंदूकमे घाल दरियामें वहाय दिवी आगे धोबी वडो धनवान हो उण पाळ मोटी किवी नाव ससुई दियो केचमे वलोचामें जातहोत वममे पनो होत हुवो, जिण केचसू आण ससुई परणी ।

२६५० भैसारो चरावा वाळो मिहर कहावै सिंधमे मिहरसू सनेह हुवो सोहणीरै ।

घडो भागो तो घोलियो, भग्गो जान धडीह ।
उणो मझा अमी चवै, कर दरियाव दडीह ॥

२६५१ जैसळमेर परै मूमलरी मेडी है – काकनै ऊपर मूमल, सूमल, सहजा अै तीन बहना है ।

प्रसिद्ध गढ

२६५२ आमेर १, गवाळेर २, चितोड ३, चापानेर ४, भाभेर ५, माडव ६, सालैहर ७, माल्हैर – अै वडा गढ हैं ।

२६५३ चहुवाणा सातल सोमरै घर जनम हुवो गढ सिवाणैरो ।

२६५४ जाळोर सोनगरा कान्हडदे घर जनम हुवो ।

२६५५ रणथभोर चहुवाण हठीला हमीररै घर जनम लियो ।

२६५६ चितोड राणा अडमीरै घर जनम हुवो ।

२६५७ सिहोर गोहिलारै घर जनम हुवो ।

२६५८ जेसळभेर दूदा तिलोकरै घर जनम हुवो ।

२६५९ गागुरण खीची अचलदासरै घर जनम हुवो ।

२६६० अकवर चितोड लियो जद राणारै घर जनम हुवो ।

२६६१ सिवाणो कला रायमलोतरै घर जनम हुवो ।

प्रसिद्ध हाथी घोडा

२६६२ श्रीकलस हाथी सिधराव जैसिंघरै, दळवादळ आसफुदोलारै, श्रीप्रसाद नैपालरा राजारै, जगतिलक उदयपुर, फतै मुमारख जोधपुर – अै हाथी वडा कारणीक हुवा ।

२६६३ पाबूरै घोडी काळवी, वहलिमारै पीवळी, दूदा जसहडोतरै रीमी, सागणरै वैरवोर, भोजरै बोळी, वीरमरै समाध, वैरसी रायपाळोतरै ताजण, वालणरावरै हिरणी–इत्यादिक अग्यारै घोडी जग-जाहर हुयी ।

प्रसिद्ध राजा, बादसा, मंत्री आदि

२६६४ हैदराबाद मसीरलमुलक १, नागपुर देवजी वापू २, पूनै सखाराम वापू ३ –अै तीनू वडे मंत्री भये हैं ।

२६६५. सितारो १, मलैबार २, हैदराबाद ३, श्रीरंगपट्टण ४ – अै च्यार राज श्रीसै छक हुता लारला वरसा ।

२६६६. श्री रगमें टीपू, सितारै भोंसळो राजा, मलैबार रामराजा, हैदराबादमें वर्तमान हजरत मुडा पातसाह नवाब ।

२६६७. आसामरो मालक १ नैपाळ पती २ रणजीतसिंघ लाहोर – पती ३ – अै हिंद अहद अकलीममें वडे जोर है ।

२६६८. इण जमानांमे चीणरा पातसाहरो नै असतबोलरा पातसाहरो वडो जोर है. लसकर खजानो जर रुपियांरो पातसाह असतबोलरो मालक ।

मुसलमान

२६६९. साह अब्बास ईरानरो पातसाह १, अबदुल्ला उजबक तूरानरो पातसाह २, अकबर हिंदरो पातसाह – तीनू अेक वक्तमे हुवा ।

२६७० ख्वाजा हाफिज, अत्तार फरीदुद्दीन, मौलाना रूमी वगैरै अेक सदीमे हुवा ।

२६७१. सतरंजरी रामत, केसारो कळप, पचाख्यान ग्रन्थ – अै नौसेरवारै वकत तीन चीजां हिंदसू ईरानमें गयी ।

प्रसिद्ध कवि और लेखक

२६७२. काळीदास नामै पडित तीन हुवा है अेक काळीदास विक्रम आगै, दूजो भोज आगै, तीजो काळीदास वळे हुवो है ।

२६७३. कविरमरुः कविरमरुः ।

२६७४. उत्तरराम चरित्र नाटक राजा भोज व भवभूती दूना मिले कियो ।

२६७५. पुरसोतमदेव पुरसोतमपुरीरो राजा जिण नवा सिलोक वणायनै गीतगोविंदरी अस्टपदियारै अत धरिया, च्यार सौ सिलोक भागवतरा अध्यायरै आदि अत धरिया ।

२६७६. अब्दुरहमान जामी मसनवी ऊपर टीका किवी ।

२६७७. खड़ियै तेजसी भोपतोत सुजाण-रासो वणायो है जिणमें सुजाणसिंघजीरा परवाड़ा है ।

इतिहास

२६७८. तवारीख साहबुद्दीनी, तवारीख नासिरुद्दीनी, तवारीख अलाउद्दीनी, तवारीख फीरोजसाही, तवारीख अफगानी ।

२६७९. तैमूरनामो, जफरनामो, तैमूररी तवारीख है ।

२६८०. तवारीख अकबरसाही, अकबर-नामो, तबकात-अकबरी, इकबालनामो जहांगीर, जहांगीर नामो, जहांगीर आप वणायो, तवारीख साहजहानी, तवारीख

आलमगीरी, तवारीख कासमीरी, तवारीख वहादुरसाही, जिणमें गुर्जरेस, मालवेस, सिंधुपति, मुलतानपति, दिखणरा पातसाह ज्यारो हाल हैं।

२६८१ इतिहास पुराणाभ्या वेदार्थ-निर्णयो भवति।

विविध

२६८२ सौ सुरगामें अेक सपूत नैं सौ कुमेतामें अेक कपूत।

२६८३ सुरग रग पायदार हैं।

२६८४ सुर्ख १, सफेद २, रग दोनू ही होय सो करडो रग कहावै।

२६८५ स्याह् चमर, स्वेत चमर, स्याह्-स्वेत चमर हुवै है।

२६८६ सुरह गायरी ग्रीवा इण गायसू लाबी हुवै बैळै ही लाबी छै सुरह गाय इण गायसू १३ लाख चमर प्रमुख देसासू हिंदमें आवै हैं।

२६८७ घनेरियो पछी कबूतर जिसो हुवै लाल पग हुवै, पाखा लाबी हुवै, दिनरो दिखायी न देवै, रातरो बोलै, सबदवेधी बदूक चीडननू मारै, उणगी पाखवा, उणरो मास वा रुधिररो चीथरो पाणीमें उकाळ त्रियानू पाया सूवा-रोग हरै।

२६८८ विहारी, गूदडियो, कागदी तीन जातरा नीबू।

२६८९ हीगमें, किसतूरीमें मेळ हुवै इसो और चीजमें न हुवै।

२६९० राळनू रायाल कहै यवन रायाळनू गाळै जद सोमलरी वास आवै घुवामें राधाळ घाले वडो जतन आखियारो राखनै सोनार।

फुटकर वाता

२६९१ ईसवर निरकुस है, चाहै स करै।

२६९२ खुदा इरादो करै अेक चीजको, पैदा करै असवाव उसको।

२६९३ ग्युदा तालारी पातसाही वे जवाल है।

२६९४ अैतजादुल मुलक।

२६९५ ईस्वरमें मतसाधन फोडा मिल जावणो औ काम आछो नही।

२६९६ पच वकारसू पडित पूज्य होय — सुवपु करि, वित्त करि, वाणी करि, विद्या करि, विनय करि।

२६९७ जाहल इलम विन सोभै नही, पातसाह अदल विन सोभै नही।

२६९८ असील विद थकोही लोगारी अदव वजावै, कमीना आडै दिनही अदव वजावै नही।

२६९९ पातसाह कह्यो आलैकम सलाम आर्घ साह।

उण कह्यो – आलैकम, पातसाह !
वजीर कह्यो – आंधे फकीर !
इण कह्यो – कहो, वजीर !
काजी कह्यो – अंधे राजी !
उण कह्यो – काजी !

२७००. थाढो पाणी पीनै खुदारी सुकरगुजारी न करै जिणनू परलोकमें खुदा सजा दै ।

२७०१. पोसाक, धन, पुत्र, त्रिया दुनिया नही है, खुदानू न जाणनो आ दुनियां है ।

२७०२. वलकी घोड़ै न चढणो, वासतो न पहरणो, मैंदारी रोटी न खाणी, जवन कहै तीन चीजां अै अगीकार किया वदो मौत वीसर जावै ।

२७०३. सूरज यू न कहै मै सूरज. नू जगत उणनू सूरज कहिनै वांदै है ।

२७०४. आपमे दूसण हुवै सो दूसण औरमे काढ़िया वंदो निरदूसण हुवै नही ।

२७०५ तू वडाई न पावै जित्तै वडांरी ठोड़ वैस मत ।

२७०६. उठ मत. जो उठनै चालै तो सनै सनै चाल । अेक पग हेटै हजार जीव जावै है ।

२७०७. वाकरो कहै मै कांटा खाधा जिणरो गळो करीजै है, सदा खीर खांड खावै ज्यांरो कांई हाल होसी ?

२७०८. न दखल होहिगा विच वहिस्त वहिस्त कै दयूस ।

२७०९. जहान तव कामो फलक यार वाद जहां आफरीन त निगाह दार वाद ।

२७१०. हकीम सिकंदरनूं कहै गुपत्दान दै, असमानसूं आवै जिका आफत गुपत-दानरा पुण्य प्रभावात मिटै ।

२७११. गुपतदानसू खुदा प्रसन होय ।

२७१२. स्त्र वस रंकपण ही भलो, नहि पर वस रंगरोळ ।
वर पोतानी पातळी, नही परायो घोळ ॥

२७१३. सोगात पत्र नेलणो, जाय मिलणो, तारीफ करणी, मदत करणी प्रगट मैत्री ।

२७१४. दिलसू भलो चाहिवो, दिलरी प्रीत – गुप्त मैत्री ।

२७१५. आपरो नही जिणनूं आपरो मित्र जाणनो आ नादानगी है. कुळक्षयकार कुळांगार कहावै ।

२७१६. वहादुरी, सखावत, आदली – अै तीन गुण अवस्य पातसाहमें चाहिजै ।

२७१७ नेक सिरदार ज्यानू लाजम है आप जिसा आदमी कनै राखै ।

२७१८ राजा पातसाह कनै खुसामद गोय अवस्य रहै, आ कनासू खुसामदगोय दूर होणरो उपाय ही नही – अबुलफजल कहै ।

२७१९ मालिकनू लाजिम है चाकर चाकरीसै वेपरवाह होय जाय इत्तो चाकरानू न देणो ।

२७२० कुलीन, स्निग्ध, साधु, कार्यार्थीसू सामोपाय करणो ।

२७२१ नृपरो भृत्य हुवै, बाधव हुवै, अत पुरचारी सेनापति हुवै वो जिणसू दामोपाय करणो ।

२७२२ विनादीव व्यसनी होय ज्यासू दामोपाय करणो ।

२७२३ भय उपजाय भेद उपाय करणो ।

२७२४ रणमाल सो राजासू रूसै ।
राजा सो रणमाल विघूसै ॥

२७२५ नीत – सास्त्ररो रहस्य अेक पादमें कह्यो – लाभादल्पतरो व्यय ।

२७२६ दुनिया मकररूप है मकरसू वस होती है ।

२७२७ तू विना वतळाया सभामें वोलै है सो दातवसोलैसू सुरतन मोतीनू फोडै है ।

२७२८ ईसरा करसण सिवाय करसण नही, हाथरा वणज सिवाय वणज नही ।

२७२९ सुदर तो दाता नही, दाता तो नहि सूर ।
सैद फतामें तीन गुण, सुदर, दाता सूर ॥

२७३० अेकसौ वरस जीवै भो वाणूं क्रोड सास लेवै ।

२७३१ गीताया 'पडिता समदर्शिन' न तु 'सम-र्वात्तन' ।

२७३२ मुरगी आण, मुरगा खाव ।

२७३३ मीर वहर मुहाणो नै माछी माही फरोस – अै नाव कीररा सिंधमें ।

२७३४ लसणियारो नाव अैनुल्होर है, अैनुलहूर नही ।

२७३५ सिकम पेटनूं कहै फारसीमें ।

२७३६ खुर्द छोटानू कहै, कला वडानू कहै ।

२७३७ गिलवत गोसै वैसणो ।

२७३८ जिलवत चोडै वैसणो ।

२७३९ निवरार धिक्कार अेक अरथ है ।

२७४० देवदत्तस्य गुरो कुल देवदत्तगुर कुलम् ।

२७४१ पाणीपतरा मारगमें अेक सिपाह राहजनारै हाथ मारियो गयो । सो लारला वग्मा वोल्तो – अे मिपाह गिरोही तलवार मत राखज्यो, राखै तो दोय राग रणनू मिरोही तरवार दगो दियो जाणीजै है ।

वात, दूहा, श्लोक आदि

२७४२. गीत—

वीरा रस तणो न भावै वरणण,
नह भावै मोनू जस – गीत ।
गरज नही म्हांरै गीतांरी,
गढवा ! काय सुणावै गीत ?

मोद मचै कर चढिया माया,
माथा - पच नह मोद मचै ।
रच थारा घरकांरा रूपग,
रूपग म्हांरा काय रचै ?

खोटी हुवै, किसूं गुण खोलै,
गांठ बांवियां राख गुण ।
वणियो तूं कायवरो वकना,
कायव - स्रोता अठै कुण ?

आखर बावन करे अेकठा,
तै कागळ लिख कीना त्यार ।
लापरपणो कियो तो लड़सू,
चिड़सूं दियू न कोडी च्यार ।

२७४३. फूलां ! थारो फूलियै, वळोवळी जस वाग ।
तूं सिव पुरख महंत तै, भारथिया सिर भाग ।।

२७४४. डाढी डाढाळाह, चांपा चहराड़ी नहीं ।
की तिल - तिल काळाह, दुजड़ा मुहड़ै देदउत ।।

२७४५. तूटै नीर तळावड़ा, खूटै आकां खीर ।
भाणू वन पावै भुटो, नगियो पालर नीर ।।

२७४६. भोजनं देहि, राजेंद्र ! घृतशाकसमन्वितम् ।
माहिषं च शरच्चंद्रचंद्रिकाधवलं दधि ।।

२७४७. धिक् धिक् शक्रजिता प्रबोधितवता, किं कुंभकर्णेन वा ।

२७४८. पंचाशत्पंचवर्षाणि सप्तमासान् दिनत्रयम् ।
भोजराजेन भोक्तव्यं.............................. ।।

शेष रयोडी, अस्पष्ट और अधूरी बाता

२७४९ मायजादो अेक डोळीसू आयो, जिणनू तीन सलाम कर कतुह मेरा बिछायन माथै बैठा ।

२७५० अेक कागद वाच आप फुरमायो – ठाकुरजी दाढी वाळारो मूडो नही दिखावै ।

२७५१ गुजराती नटणी उमेदी जिणरी जात वडगूजर दे उमट अचळसिंघ घरमें घाली ।

२७५२ गूजरारी नटणी उमेदीनू उमट अचळसिंघ खवास किवी जात वडगूजर दिवी ।

२७५३ झामर राड हुई जद सूरजमलजी हरीसिंघजी भाटूरो धणी, वातारो धणी इत्यादिक पहोर दिन चढिया काम आय गया मेरा वगैर समसत ताप खाय रह गया फेर जग कीयो नही ।

२७५४ झामर राड हुई जद सारा सिरदारारी असवारीमे देसी घोडा हुता उवा खता किवी ।

२७५५ रणमल वीलवै हुवो खावडिया वीलवो छोड गराज वसिया ।

२७५६ रेवामागररै सनान जाता पीपळा दसरावारो प्रबन्ध दीठो जिणसू आनें भाई भावनगर दसरावारो वडो उच्छव ठैरायो चारणा-भाटारो समाधान आठी विध है ।

२७५७ वहेडारा धणी राणावत ज्यारी वसावळी लिखते–१ राणो प्रतापसिंघ, २ चतुर भज, ३ महासिंघ, ४ रामसिंघ, ५ अनोपसिंघ, ६ सिरदारसिंघ, ७ उदैसिंघ, ८ वीरमदे, ९ विसनसिंघ, १० दौलतसिंघ, ११ हेम राणो धणी है ।

२७५८ सवत १५११ वैसाख वदीमें नीम दिराणी ।

२७५९ जफर खार फीरोज जग ।

२७६० खार भुटो नगो ।

२७६१ मीराजी लुमा परीम्हा ।

२७६२ गफ सू घोट तरवार ।

२७६३ हदीर तुर्ई नानीम ।

२७६४ रतनी गदरा नेत्र गुजरै गत नत्रैर मूल ।

२७६५ सीरसिंघ काया–प्रतापसिंघजीरै हवारो बेटीरा म हाटो र जानै कुळथी पड्दायतरो रथ गढावगू ।

२७६६ श्रीराजी बेटो सिरसिंघ महर जूनागढरा नवाबरो हाथ भेजो गुजळवाघो रियो गासारजी रामेलोरी मगजी ।

२७६७. नवमा नंद नाईसू घर वस रहियो पछै न रहियो ।

२७६८ लिज महासतीरी कोर दरोतरा लोक थळरा गोवै पांण पर मुख कोई विस-
धर वता न करै ।

२७६९. काळाउवा वड तळाई जठै पोळ माथै चूंडोजीरो करेह् मी अजू पुल्के न्हे नही।

२७७०. नेमसुख खवासनु रुको राजा अजवेसादूळ दियो जिणमे अति निर्लज्ज समाचार।

२७७१. साडा सोढारा मूमा मालारा ।

२७७२. आपो आपी जद वोड़ां जाळोर भेळायो ।

२७७३ मूजो मूजो हाथी तोगो वाजीसांमे सपून हूवो ।

२७७४. जीवणसिंघ पाहाड दिली राज कियो ।

२७७५. गाव नजीणरी वेटी राणी रूपादे वाजां परमारा भिळै. नदी गोमती राणै ।

२७७६. वखतावरसिंघ वडारो भाई रामसिह ।
